मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-१४

प्रथम आवृत्ति ३

जहां जगतके कल्याणकी
साधना हुअी
अुस पुण्यभूमिको

निवेदन

सत्याग्रहकी दूसरी लड़ाअीके कैदीकी हैसियतसे मुझे सन् १९१२ के अप्रैल महीनेमें साबरमती सेंट्रल जेलसे विसापुर जेलमें बदल दिया गया। वहां परिचित और अपरिचित बहुतसे मित्र थे। धर्मशाला जैसी बैरकोंमें ८ से १०   आदमी रहते थे। रातको ब्यालूके बाद बातचीत होती थी। कुछ मित्रोंने दक्षिण अफ्रीका की वहांके सत्याग्रह-आन्दोलनकी और फिनिक्स आश्रमके जीवनकी बातें पूछीं। मैंने सारी बातें दिलचस्पीके साथ सबको सुनाअीं। तीन-तीन चार-चार दिन तक रातको देर तक जागकर सब लोग रसपूर्वक मेरी बातें सुनते रहते। अिस कथाके बारेमें दूसरी बैरकोंवाले भाअियोंको मालूम हुआ। मुझे वहांका बुलावा भी मिला। अिस तरह अेक-अेक करके कअी बार बैरकोंमें भाअियोंने मेरी कथा सुनी। स्वर्गीय श्री फूलचन्दभाअी बापूजी शाहको यह कथा बहुत पसन्द आअी। अुन्होंने मुझसे आग्रह किया कि मैंने जो बातें मित्रोंसे कहीं अुन्हें मैं अपनी भाषामें लिख डालूं। लेकिन मेरे पास समय कहां था? सुबहके छह बजेसे शामके छह बजे तक जेलकी रसोअीघरकी देखभाल मेरे जिम्मे थी। और बैरक बन्द हो जानेके बाद तो थका-मांदा होनेके कारण आराम लेनेकी अिच्छा होती थी। परन्तु स्व. फूलचन्दभाअीने मुझे थोड़ा नहीं लिखनेके साधन लाकर मुझे दे दिये। दक्षिण अफ्रीकाकी बातें और फिनिक्सके पूज्य महात्माजीके जीवनकी बातें लिखना आसान नहीं था। वे मनसे जरा भी दूर नहीं होनी चाहिये। अिसके सिवा महात्माजीके कितने ही जीवन-प्रसंगोंका वर्णन भी अुसमें आता। अुनका वर्णन करनेमें मुझे बहुत सावधान रहनेकी जरूरत थी। दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास के दोनों भाग 'आत्मकथा' के दोनों भाग आदि पुस्तकें मैंने पुनः लीं। अुन्हें मैं पढ़ गया और बादमें लिखने बैठा। अिस तरह अनियमित समय निकालकर ये प्रकरण मैंने लिख डाले। सन् १९११ के नवम्बरमें जेलसे निकलनेके बाद पूज्य गांधीजीसे मिलने मैं वर्धा गया तब अिन्हें हम प्रकरणोंकी बात मैंने अुनसे कही। अुन्होंने अिस रचनाको देखनेकी अिच्छा प्रगट की और सूचना दी कि अुनके देखे बिना मैं अुसे न छपवाअूं। रचनाकी

मूल प्रति मैंने अुन्हें सौंप दी। लगभग दो वर्ष तक यह रचना अुनके पास पड़ी रही। पिछले साल ८ जुलाओको अुन्होंने मुझे अचानक सेवाग्राम बुलवाया। चार-पांच दिनमें जैसे-तैसे समय निकालकर अुन प्रकरणोंमें से जो प्रकरण अुनके निजी जीवनके सम्बन्धमें कुछ प्रवृत्तियोंके सम्बन्धमें और साथियोंके जीवनके विषयमें थे अुन्हें मैं अुनके सामने पढ़ गया। कुछ प्रसंगोंके बारेमें अुनसे स्पष्टीकरण कर लिया। अिसी तरह प्रकरणोंमें से दो प्रकरण निकाल देनेकी और दूसरोंमें कुछ कमी-बेशी करनेकी मुझे सूचना मिली। स्वर्गीय अिमामसाहब बावजीरकी बात अुन्होंने जैसी मुझे बताओ अुस परसे मैंने यह प्रकरण लिखा। दक्षिण अफ्रीकाके साथियोंमें से मिस श्लेशिन सम्बन्धी अेक मनोरंजक प्रकरण पूज्य बापूजीने निकलवा दिया और सुझाया कि अुस प्रसंगका वर्णन करनेके लिअे मुझे अुन बहनसे ही प्रार्थना करनी चाहिये। जैसा न हो तो शायद मैं अुन बहनके साथ न्याय नहीं कर सकूंगा। मैंने अुन बहनसे वह दिलचस्प प्रसंग लिख भेजनेकी विनती की। मगर मेरी विनती अुन्होंने स्वीकार न की। अिन प्रकरणोंमें जो हकीकतें लिखी गयी हैं अुनकी सचाओके बारेमें और भी निश्चित होनेके लिअे श्री छगनलाल गांधीके पास ये प्रकरण भेजनेकी सूचना मुझे बापूजीने दी। अुस सूचना पर मैंने तुरन्त अमल किया। श्री छगनलाल गांधीने भी अिनकी जांच-पड़ताल कर दी।

अिस तरह अिन प्रकरणोंमें पूज्य गांधीजीके जीवन-मर्म और अुनके साथ बीती हुआी हकीकतें मेरी यादके आधार पर लिखी गयी हैं। अुनकी सचाओके बारेमें यथाशक्ति सावधानी रखी गयी है। जेलमें ये प्रकरण लिख लेनेके बाद मेरे स्नेही श्री नरहरिभाओ परीख और श्री गोकुलभाओ भट्टने मेरी रचनामें रही भाषाकी अशुद्धि और अव्यवस्थित हिज्जोंको सुधारा। पूज्य गांधीजीका कुछ प्रकाशित और अप्रकाशित पत्र-व्यवहार मेरे पास था। अुसका समावेश भी अुससे सम्बन्ध रखनेवाले प्रसंगोंमें मैंने कर दिया है।

अिन प्रकरणोंके अेकत्र समूहको क्या नाम दिया जाय यह प्रश्न भी मेरे सामने था। अिसमें श्री नरहरिभाओ श्री किशोरलालभाओ और श्री काकासाहबने मेरी मदद की। गांधीजीका तपोवन सत्याग्रहका पौधा स्वराज्यकी साधना स्वराज्यकी पूर्व-तैयारी दक्षिण अफ्रीकामें २१ वर्ष और गांधीजीकी साधना आदि अनेक नाम सुझाये गये। अिनमें गांधीजीकी साधना मुझे सब तरहसे अुपयुक्त नाम लगा। अिस प्रकार अिस पुस्तकके

तैयार होनेमें अनेक स्नेहियोंका प्रयत्न रहा है। अुनके लिअे मैं अिस स्थान पर अुनके प्रति आभार प्रदर्शित न करूं तो मेरा अविवेक होगा। और अिस पुस्तककी प्रस्तावना लिखना स्वीकार करके श्री काकासाहबने मुझे अत्यन्त ऋणी बनाया है।

गांधीजीके बत्तीसतनामेवाले प्रकरणमें मूल पत्र पहले रूपमें न मिलनेके कारण अुस पत्रका सार लिखनेका मैंने अुल्लेख किया है। परन्तु बादमें मूल पत्र मिल जानेसे वह पूरा दे दिया गया है। आशा है पाठक अुसकी भूल सुधार लेंगे।

मैं जानता हूं कि अिस पुस्तकमें बहुतसे दोष हैं। मैं लेखक या साहित्यका मर्मज्ञ नहीं, जिसमें जो टूटी फूटी भाषामें मैंने लिखे लिख डाला है। अिस लिअे अिसमें जो भूलें रह गयी हैं, अुनके लिअे मुझे क्षमा करनेकी विद्वान पाठकोंसे मेरी प्रार्थना है। अिस पुस्तककी बड़ी कमी तो यह है कि गांधीजीके जीवनके कितने जैसे कभी प्रसंग अभी अधूरे रह गये हैं। यह पुस्तक हिन्दुस्तानकी जनताको रुचिकर हुअी तो अिसके फिर संस्करणमें वृद्धि करनेकी मैं कोशिश करूंगा। अभी तो जितने प्रसंग पर मनन करनेकी पाठकोंसे मेरी विनती है।

सेवा-मन्दिर, नडियाद
आषाढ़ सुदी ७ १९९४

रावजीभाई मणिभाई पटेल

दूसरी आवृत्तिके निवेदनसे

अिस नये संस्करणमें पूज्य बाके अवसानके बाद अेक प्रश्न अुपस्थित हो गया था जिसके सम्बन्धमें सफाअी देना जरूरी है।

दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहकी आखिरी लड़ाअीमें पू बा शरीक हों अिसके लिअे बापूजीने कोशिश की थी। पुस्तकके शुभ आरंभ नामक प्रकरणके बारेमें थोड़ी सफाअी देनेकी जरूरत है। दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास में अिस सम्बन्धमें बापूजीने कुछ और ही लिखा है। अुन्होंने लिखा है कि "सत्याग्रहकी लड़ाअीमें स्त्रियोंको शामिल करनेका विचार होने पर श्री छगनलाल गांधीकी पत्नी काशीबहन और श्री मगनलाल गांधीकी पत्नी संतोकबहनसे मैंने पहले बात की और अुन्हें तैयार किया। बादमें बा अुसमें शामिल हुअी। परन्तु ये प्रकरण प्रकाशित करनेसे पहले मैं अिन्हें बापूजीके सामने पढ़ गया था। अुस समय मैंने बापूजीकी स्मृतिकी भूलके बारेमें अुनका ध्यान खींचा था और अूपरके प्रकरणके बारेमें मैंने अुन्हें विश्वास दिलाया था। बापूजी भी असमंजसमें पड़े। अुन्होंने पू बाकी गवाही परसे अिस बारेमें फैसला करनेका निश्चय किया। अुन्होंने बाको बुलाया और हम दोनोंकी बात अुनके सामने रख दी। बाने बताया रावजी भाअीकी सारी बात सच है। यह तो मुझे अितना स्पष्ट याद है जैसे कल सवेरे ही हुआ हो। अिस परसे बापूजीने कहा तब तो मेरी याददास्तकी भूल हुअी है। अुस पुस्तक (द अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास) के नये संस्करणमें यह भूल सुधारनी होगी।

साबरमती-मन्दिर, अहमदाबाद — रावजीभाअी मणिभाअी पटेल

मार्गशीर्ष बदी १२, २

पार्श्वभूमि

दक्षिण अफ्रीकाकी विजयके अन्तमें वहांका काम समेट कर गांधीजी विलायत चले गये थे और फिनिक्स आश्रमके तमाम आश्रमियोंको अन्होंने हिन्दुस्तान भेज दिया था। गांधीजीके आने तक अिन सबकी देखभालका काम मि॰ अेण्ड्रूजने अपने सिर ले लिया था। फिनिक्स-दलके लोग पहले कांगड़ी गुरुकुलमें थोड़े दिन रहे और बादमें कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुरके शान्तिनिकेतनमें आये। अिसी अर्से (सन् १९१४) में मैं भी शान्तिनिकेतन जा पहुंचा। अिस लिअे स्वाभाविक रूपमें ही मैं फिनिक्स-दलके लोगोंमें मिल गया। वहां सुबह शाम मैं प्रार्थना कराता, अपनी हिमालय-यात्राकी बातें सुनाता और शामके समय अिन लोगोंके साथ ही खाता और सुबह-शाम जमीन खोदनेमें या अैसे ही और कामोंमें भाग लेता था। अैसे वातावरणमें फिनिक्सकी मंडलीके मुखिया श्री मगनलालभाई गांधीसे मेरा परिचय हुआ। दक्षिण अफ्रीकाकी लड़ाभी अनके लिअे ताजी ही थी। अिन आश्रमवासियोंने असाधारण विजय प्राप्त करके देशके लिअे अेक नया रास्ता खोला था। सिर्फ राज-नीतिक क्षेत्रमें ही नहीं परन्तु जीवनके सारे अंग-प्रत्यंगोंमें विशेष पद्धतिसे रहनेके प्रयोग वे कर रहे थे। अैसे वायुमंडलमें रोज शामको और कभी कभी रातके बारह बजे तक मैं श्री मगनलालभाईके मुंहसे बापूजीकी बातें सुना करता था। कोअी कट्टर सनातनी जिस श्रद्धासे रामायण और महाभारत सुनता है अुसी श्रद्धासे मैं यह कथा सुनता था। मगनलालभाई अपने स्वभावके अनुसार अपनी बातें अेक तरहसे कहते थे। मगनभाई पटेल दूसरी तरहसे कहते थे। देवदास रामदास और प्रभुदास तीसरा ही सुर छेड़ते थे। सब जेलमें जानेके लिअे ट्रान्सवालमें कैसे घुसे? श्री मणिलाल मिस्टर कैलन कैसे हो गये? सन्तोकबहनने क्या क्या किया? छोटेसे रामदासने जेलमें अुपवास करके गोरोंको कैसे चकित किया? स्वार्थत्यागपूर्वक जेलसे बाहर रहे हुअे भी मगनलालभाई छोटेसे देवदासकी मदद लेकर हजारों आदमियोंको कैसे संभालते थे? सुरेन्द्र मेढ़ और प्रागजीभाई जेलमें कैसे तिकड़म करते थे?

पर अटल विश्वास रखकर जिन्होंने आशाकी अेकमात्र किरण दुनियाके सामने रखी है अुनकी जीवन-साधना केवल व्यक्तिगत महत्त्वकी नहीं बल्कि सामाजिक महत्त्वकी वस्तु है यह हमें जानना चाहिये।

सत्याग्रहका रहस्य जाननेकी जिज्ञासा रखनेवाले दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहके अितिहासका अध्ययन करना चाहनेवाले और गांधीजीके जीवनकी गहराअीमें अुतरनेकी जिज्ञासा रखनेवाले सभी लोगोंको यह पुस्तक अवश्य ही पढ़नी चाहिये। हम लोगोंके सामने अूसकर देशको स्वतंत्र करनेवाले शालिवाहन राजाके बारेमें यह दंतकथा प्रचलित है कि अुस राजाके पास अेक अद्भुत रसायन था वह अपने कुम्हारके यहां जाकर मिट्टीके सिपाही बनाकर अुस रसायनसे अुन्हें जिन्दा कर लेता था और लड़ाअीमें अुनका अुपयोग करता था। अिस दंतकथाका रहस्य हम चाहें जो समझें। परन्तु गांधीजीके पास हम जैसा अेक रसायन अवश्य दखल है जिससे वे मिट्टीके आदमियोंसे तेजस्वी आत्म-परायण सिपाही तैयार कर सके हैं। अतः प्रत्येक शिक्षकको अनिवार्य रूपमें यह ढूंढ निकालना चाहिये कि गांधीजीकी अिस कला या कीमियाका रहस्य क्या है। चारदीवारीके बीच छोटे-बड़े बच्चोंको पकड़ बैठ गये और अुनमें थोड़ी-बहुत जानकारी भर दी या अुन्हें भाषा-प्रवीण बना दिया यह सच्ची शिक्षा नहीं है। परन्तु आबालवृद्ध स्त्री-पुरुषोंको जीवनके द्वारा शिक्षा देकर अुनके भीतरका गुप्त दैवी अंश जाग्रत करना अुन्हें अपने अमृत अुत्तराधिकारका भान कराना और वैसी सज्जनता वैसा पराक्रम और वैसी शान्ति अुनके जीवनमें पैदा करके बताना जिसकी कल्पना भी नहीं हो सकती अिसीका नाम सच्ची शिक्षा है। जैसे शिक्षक अब तक दुनियामें दस-बीससे ज्यादा शायद ही हुअे होंगे। जिन सबमें गांधीजीकी विभूति विशेष रूपमें सामने आती है। अपने ही जीवन-कालमें करोड़ों आदमियोंवाले संपूर्ण राष्ट्रको हाथमें लेकर अुसके अैतिहासिक अमिट दुर्गुणोंको जानते और अनुभव करते हुअे भी अुसकी जनता पर विश्वास रखकर अुन्होंने जो अेक बड़ा व्यापक प्रयोग करके दिखाया है अुसकी मिसाल विश्वके अितिहासमें दूसरी नहीं मिलती। जिस प्रयोगके आरम्भमें जिन्हें प्रौढ़ विद्यार्थी बननेका सम्मान मिला है अुन्हीमें से अेक जीवनार्थिक अनुभवका यह वर्णन है।

गांधीजीका माहात्म्य अुनके कार्यका स्वरूप और अुसका विस्तार लोगोंके सामने है। परन्तु गांधीजीकी अपनी जीवन-साधना और साथ ही दूसरोंका

मुश्किल कहीं नहीं मिलता। और निर्णय हो जानेके बाद भी शरीरको अुसकी आदतोंको चित्तवृत्तिको और वासनाओंको शुद्ध दिशामें मोड़नेमें कितनी मेहनत करनी पड़ी कितनी घाटियां पार करनी पड़ीं और अुसके लिये आत्मशक्ति पैदा करनेमें हार-जीतके कितने अुतार चढ़ावोंमें से गुजरना पड़ा यह सब अुन्होंने कहीं नहीं लिखा है। मानो निश्चय और सिद्धिके बीच कोओ अन्तर ही न था। और अैसा ही हुआ हो तो भी अितनी प्रबल संकल्प-शक्ति पैदा करनेके लिये अुन्होंने क्या क्या किया यह तो हमें मिलना ही चाहिये।

शुरूसे ही गांधीजीके साथ रहनेवाले और गांधीजीकी सारी जीवन-प्रेरणा समझनेवाले कुछ साथियोंने निरीक्षण करके गांधीजीका आन्तरिक चरित्र लिख दिया होता तो वह अुनकी आत्मकथा पर प्रकाश डालनेवाला अेक महाभाष्य हो जाता। और दुनियाने अैसे ग्रंथका अुनकी आत्मकथा से भी अधिक स्वागत किया होता। परन्तु यह कार्य अैसा कोओ अपर गांधी ही कर सकता था जिसकी विभूति गांधीजीकी विभूतिके बराबर हो। अिसके अभावमें साधारण श्रेणीके साथियोंमें से जो गांधीजीके साथ रहे और श्रद्धा तथा निष्ठाके साथ जिन्होंने गांधीजीके कार्यमें भाग लिया है अुन्हें अपने-अपने अनुभवकी जानकारी मानव-हितके लिये सम्बद्ध करनी चाहिये। और गांधीजीकी फुरसतका लाभ मिले तो अुनसे अुसकी जांच करवा लेनी चाहिये। अिस दृष्टिसे संगम पर रावजीभाअीने यह साधन-ग्रंथ लिखकर हमारी अुत्तम सेवा की है और गांधीमन तथा गांधीकार्यका अध्ययन करनेवालोंके लिये कीमती सामग्री प्रस्तुत की है।

हम लोग अितने बेपरवाह न होते तो किसी न किसीने पूज्य बापूके चरणोंमें बैठ कर अनेक सवाल पूछ-पूछ कर अुनसे मिल सकनेवाली जानकारी लिखकर रख ली होती। आत्मकथा में और सत्याग्रहके अितिहास में भिन्न-भिन्न लोगोंका जिक्र आता है अनके पास पहुंच कर अुनके तत्कालीन संस्मरणोंको विस्मृतिके प्रवाहमें बह जानेसे बचा लिया होता। जिन्होंने मनुष्य-जातिके अुद्धारका अिस युगका अेकमात्र मार्ग ढूंढ निकाला है अुनकी जीवन-साधना की अेक अेक किरण भी यथासंभव हमें अेकत्र कर लेनी चाहिये। चीन और भारत, अिटली और जर्मनी, अिंग्लैंड अमेरिका और फ्रांस, रूस और [illegible] आजकलकी हालत देखनेसे सहज ही खयाल हो सकता है कि मनुष्य जाति विनाशके किनारे पर कैसे पहुंची है। अैसे समय आत्मा

जीवन बनानेकी अुनकी जीवन-कला अुनके अपने लिखे हुअे ग्रंथोंमें पूर्णतया प्रकट नहीं हुअी है और न कभी होगी। जब अुनके असंख्य पत्र छपेंगे तभी गांधीजीके जीवन-प्रयोग और अुनकी आत्मकथा अपने विश्वतोमुखी अनंत पहलुओं द्वारा चमकेगी। और अुसमें जो कुछ कमी रहेगी वह अैसे साधन ग्रंथोंके द्वारा पूरी होगी।

अेक संज्ञा मनमें अुठे बगैर नहीं रहती। शीशमहलमें जब चन्द्रज्योति जलाअी जाती है तब शीशेके अुभरे हुअे असंख्य टुकड़ो द्वारा दसों दिशाओंमें अुसके प्रतिबिम्ब चमक अुठते हैं और अैसा मालूम होता है मानो चारों ओर दीपोत्सव हो रहा है और अनन्त चन्द्रज्योतियां पृथ्वी पर अुतर आअी हैं अब तो कभी भी अिस सीमित संसारमें अंधकारका प्रवेश फिरसे होगा ही नहीं। हम भूल जाते हैं कि चन्द्रज्योति तो यहां अेक ही है और आसपास जो चमकता और चमकता दिखाअी देता है वह केवल अुसकी महिमा ही है। प्रतिबिम्ब कितने ही क्यों न हों दुनियाकी समृद्धि तो मूल बिम्बोंकि जितनी ही होती है। कहीं अैसा ही अनुभव करना तो अिस जमानेके नसीबमें नहीं लिखा है? श्रद्धा कहती है कि अैसा नहीं होगा। ये प्रतिबिम्ब नहीं हैं परन्तु चिरागसे चिराग जलता है अिस न्यायसे छोटे-बड़े असंख्य दीपक जल अुठे हैं। अिनमें से कुछ थोड़े जलकर बुझ जायेंगे कुछ धुआं ही पैदा करेंगे परन्तु जिनके पास अपार स्नेह होगा वे तो अपनी ज्योतिकी किरणें अंधकारपूर्ण भविष्यमें दूर-दूर तक पहुंचाकर भविष्य कालको अुज्ज्वल करेंगे। अितना ही नहीं वे आगे आनेवाले स्नेहहीन मिट्टीके दीपकोंको भी जलाकर दीपमालाकी परंपराको अखंड बनाये रखेंगे।

और गिरी अवस्था भी अैसा आश्वासन देती है कि भले ही यह दुनिया दीप-सम्मेलन न हो और केवल शीश-महल ही हो परन्तु जिस कारीगरने मिट्टीकी दीवारकी जगह दर्पणके ये गोल टुकड़े बनाकर अुन्हें दीवारमें जड़ा और अुनके पेटमें रसायनका लेप करके अुन्हें ज्योतिसे प्रदीप्त होनेकी शक्ति प्रदान की अुसकी भी विश्वसेवा कुछ कम नहीं है। भविष्यमें आनेवाले प्रत्येक दीपकके प्रत्येक चन्द्रज्योतिके कृतार्थ होनेके लिये जिसने यह परिस्थिति सुलभ की वह भी कम विश्व-कल्याणरत् नहीं है।

हम आर्य लोगोंके अेक सनातन सिद्धान्त पर गांधीजीका अटल विश्वास है। और वह सिद्धान्त है पिण्ड-ब्रह्माण्ड न्यायका तथा 'श्रेष्ठ और अितरजन'

का। यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे के न्याय पर ही गांधीजी चलते आये हैं। अुनकी यह अेक अटल श्रद्धा है कि अपने आसपासकी प्रत्यक्ष परिस्थितिके प्रति हम सत्यनिष्ठासे वफादार रहेंगे तो विश्वकी सारी समस्याओंका हल हमें जरूर मिलेगा। अुनकी दूसरी अुतनी ही अटल श्रद्धा यह है कि श्रेष्ठ लोग जैसा आचरण करेंगे वैसा ही आचरण अितरजन यानी साधारण जनता भी करेगी। अर्थशास्त्रमें ग्रेशामके अिस सिद्धान्तका अुल्लेख आता है कि जब खोटा सिक्का चलनमें आ जाता है तब खरा सिक्का या तो देश निकाला भोगता है या सुनारकी कुल्हड़ीमें पिघल जाता है। जब जब समाजमें जड़ता फैलती है तब तब अिसी ग्रेशामके न्यायसे धर्मकी ग्लानि और अधर्मका अभ्युत्थान होता है। परन्तु यही सिद्धान्त यदि सार्वभौम होता तो दुनियाके लिअे कोअी आशा ही नहीं रह जाती। ज्यों ज्यों समय बीतता जाता त्यों त्यों युगशक्तिका ह्रास होता जाता और अन्तमें दुनियाके भाग्यमें विनाश ही रह जाता। अधर्माभिभवके अिस सिद्धान्तके विरुद्ध अवतार-दर्शनका सिद्धान्त काम करता है। अतअेव दुनियाके लिअे कुछ आशा रहती है। कुछ लोगोंमें धर्म-प्रेरणा गहरी पैठ जाती है कुछ लोगोंमें केवल अुसका प्रतिबिम्ब ही पड़ता है। जो केवल प्रतिबिम्बके ही अधिकारी हैं वे अपने हिस्सेमें आया हुआ या भाग्यमें लिखा हुआ युगकार्य पूरा करके फिर पहले जैसे ही बन जाते हैं। और जो युग-प्रेरणाको अपना लेते हैं और जिनमें स्थायी जीवन-परिवर्तन हो जाता है वे अप्रतिम युगकार्य तो करते ही हैं, साथ ही अपना स्थायी अुद्धार भी कर लेते हैं।

यह भेद क्यों होता है? यह निरा संयोग नहीं है। यह कोअी दैवकी अकल लीला नहीं है। यह अेक अटल सिद्धान्त है आसानीसे समझमें आने लायक है और अैसा है कि अुसे समझकर प्रत्येक मनुष्य अुससे काम ले सकता है।

मानव-जीवन साधनाके लिअे है सिद्धिके अुपभोगके लिअे नहीं है। जो साधनामें दृढ़ हैं अुनकी शक्ति बढ़ती ही जाती है। जो शिथिल बनकर या साधनाके व्यायामसे थक कर शिथिल हो जाते हैं वे नीचे गिर जाते हैं। पुरानी पूंजी पर थोड़े दिन वे अपनी प्रतिष्ठा कायम रख सकते हैं, अपने अधःपतनको अेक हद तक छिपा भी सकते हैं परन्तु ठंडम ठिठुरती दुनिया यह जान जाती है कि अिन खोटोंमें गरमी नहीं रही।

गांधीजी जबसे हिन्दुस्तानमें आये हैं तबसे हिन्दुस्तान गांधीजीकी साधनाके पीछे चलनेकी कोशिश करता रहा है। यह साधना जारी रखी जाय तो अुसके अन्तमें क्या क्या मिल सकता है अिसकी झांकी भी भारतने कर ली है। परन्तु दुर्दैवसे अब साधना-निष्ठा कुछ मन्द पड़ गयी है। तत्त्वदर्शन अस्पष्ट हो गया है। श्रद्धा डगमगा गयी है। अैसे समयमें आशा है गांधीजीकी यह साधना ग्रन्थरूपमें पढ़के हजारोंको सावधान करेगी और अनजान लोगोंको नयी दृष्टि प्रदान करेगी।

पूना
१-१-१९

दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर

अनुक्रमणिका

तीसरा भाग

गांधीजीकी साधना

पहला भाग

१

दक्षिण अफ्रीका

पृथ्वीके पांच खंडोंमें अफ्रीका अेक विशाल खंड है। सारा खण्ड कुदरतकी बख्शिशोंसे भरपूर है। नील नदी तो मिस्रका गौरव मानी जाती है। मिस्रके लोग नील नदीके नामका गुणगान करते हैं, अुसे देवत्व प्रदान करते हैं, अुसकी पूजा करते हैं। मिस्रके राष्ट्रीय गीतोंमें नीलका नाम बोलते ही मिस्र वासियोंका रोमांच होता है। अुसके नामसे देशभक्तिकी बाढ़ आ जाती है और अुसकी गोदमें मिस्रवासी अपना सर्वस्व अर्पण करते हैं। खण्डके पूर्वी किनारे पर तो मिस्रके पूर्वी किनारेसे लगाकर ठेठ केप आफ गुड होपके अन्तरीप तक कुदरतने मानो हरा गलीचा बिछा दिया हो अैसा सुन्दर और सुखद दृश्य नजर आता है। मीठे फल-फूलोंसे लदी हुअी सुन्दर वाटिकाओंको देख-देखकर हमारी आंखें तृप्त हो जाती हैं। पूर्वी अफ्रीकाके भीतरी हिस्सेमें विक्टोरिया न्यांजा और अल्बर्ट न्यांजा नामके दो विशाल और सुन्दर सरोवर हैं और अुनके आसपासका हराभरा प्रदेश जीवमात्रको आह्लाद देता है। अिस खण्डकी कुदरती बख्शिशोंमें जैसी विशेषता है वैसी ही वनभूमिमें भी है। वनभूमिमें रहनेवाले वनराजकी गर्जना अुसके गौरवमें वृद्धि करती है। हाथियों और हथिनियोंके झुंड छोटे-छोटे सरोवरोंमें जलक्रीड़ा करते हुअे जहां तहां पाये जाते हैं।

दक्षिण अफ्रीकाकी रमणीयता तो अनोखी ही है। अुसके अुदरमें क्या नहीं है? मिठासका भूखा कोअी मानव पृथ्वीतल पर भटकता भटकता निराश हो गया हो परन्तु यहां अुसकी भूख मिट जायगी। यहां मनचाही मिठास पाकर वह प्रसन्न हो जायगा। अभी तो यहांकी जमीन जितनी चाहिये अुतनी तैयार भी नहीं की गयी है। अैसे किसान अभी काफी संख्यामें मिले नहीं हैं जो अुसके पेटमें अपने बहुमूल्य पसीनेका खाद देकर अुसे पूरी तरह अुपजाअू बनायें। फिर भी आम केले अननास पपीते नारंगी और सन्तरे, पीनापल्म रामफल और सेबसे लेकर स्वादिष्ट अंगूर तक यहां बहुतायतसे पैदा होते हैं। दुनियाके और किसी हिस्सेमें फलोंके लिये शायद ही अितनी अनुकूल भूमि और आबोहवा होगी। फिर और क्या चाहिये? सोना यहां होता है हीरा यहां

मिल सकता है। कोयला भी वहां होता है। जमीन समतल नहीं है परन्तु अुपजाअू है। अुसमें भी नेटाल प्रान्त तो अलौकिक है। समुद्रके किनारे होने पर भी वह सूखी और सामान्य ठंडी हवावाला जमीनों और झाड़ियोंसे भरा हुआ देश है।

नेटाल ट्रान्सवाल केप कालोनी और आरेंज रिवर फ्री स्टेट अिन चार प्रान्तोंसे दक्षिण अफ्रीका बना है। ये चार प्रान्त यूनियन आफ साअुथ अफ्रीका नामक राज्यसंस्थाके अधीन हैं। अिन चारों ही प्रान्तोंके प्रतिनिधित्ववाली संयुक्त राज्य सभा अुसका राजकाज चलाती है। यह राज्य सभा यूनियन पार्लियामेण्ट के नामसे प्रसिद्ध है। दक्षिण अफ्रीका 'रिपब्लिक'—प्रजासत्ताक—नहीं माना जाता। वह ब्रिटिश साम्राज्यका अेक भाग समझा जाता है। फिर भी ब्रिटिश राज्यकी सत्ता वहां नाममात्रको ही है। यह नाममात्रकी सत्ता दक्षिण अफ्रीकाकी जनताके हितमें बाधक नहीं है बल्कि वहांकी जनताको अुससे लाभ ही होता है। दक्षिण अफ्रीकाके मूल निवासी सीदी (हब्शी) लोग हैं। हुकूमतकी बागडोर जनरल स्मट्स और हर्ट्जोग जैसे कुछ लोगोंके हाथमें है। व्यापारका धन अंग्रेज लोग लूटते हैं। और साथ साथ हिन्दुस्तानी लोग भी धन कमानेके लिअे वहां बसे हुअे हैं। अिस पचरंगी आबादीके बारेमें हम आगे विचार करेंगे।

२

दक्षिण अफ्रीकाके मूल निवासी—जूलू

दक्षिण अफ्रीकाके मूल निवासियोंको अमरीकाके हब्शियोंकी तरह नाम नाम लेकर नहीं पुकारा जाता। गोरी और दूसरी जनता अुन्हें काफिर कहती है। परन्तु यह संबोधन अपमानसूचक होनेके कारण सार्वजनिक रूपमें अिसका अुपयोग नहीं होता। अुन्हें खुद यह नाम सुनकर अपमान महसूस होता है। सरकार अपने कामकाजके लिअे नेटिव शब्दका अुपयोग करती है। गोरे और हिन्दुस्तानी घरलू भाषामें अुन्हें काफिर कहते हैं। नेटाल प्रान्तके मूल निवासियोंके लिअे वहांके अेक जूलू नामक प्रदेश परसे जूलू शब्द काममें भी आता है। अिस प्रकरणमें मैं नेटालके मूल निवासियोंके सम्बन्धमें लिखना चाहता हूं अतः अुनके लिअे जूलू शब्दका प्रयोग करना ठीक

है। जहां जहां पाठक ज़ूलू शब्द पढ़ें वहां वहां समझ लें कि यह सारे दक्षिण अफ्रीकाके मूल निवासियोंके लिअे काममें लिया गया है।

हिन्दुस्तानके कितने ही भागोंमें बसनेवाली भील जाति सूरतकी तरफकी कालीपरज (जिसे आजकल रानीपरजके नामसे पुकारते हैं) और किसी तरहकी दूसरी जातियोंमें बहुत साम्य है। ज़ूलू लोग मानते हैं कि वे और अमरीकाके हब्शी अेक ही जातिके हैं और अिसलिअे यह मान लेना चाहिये कि अुनकी आदतों रिवाजों और मान्यताओं वगैरामें सादृश्य होगा। परन्तु सूरत जिलेके रानीपरज लोगोंकी और भील जातिकी आदतों मान्यताओं विवाहके रीति-रिवाजों और संगीत आदिकी पद्धतिमें और अिस ज़ूलू जातिकी आदतोंमें बहुत साम्य है। दक्षिण अफ्रीकाके मेरे निवास कालमें मैंने अिस ज़ूलू जातिके बारेमें काफ़ी ज्ञान लिया है और अुसे ज्ञान लेनेके बाद मुझे अिस सारी जातिके प्रति आदर अुत्पन्न हो गया है। संसारकी जातियां आज तो अुत्क्रान्तिके पथ पर अग्रसर हो रही हैं। प्रत्येक जाति प्रगतिके मार्ग पर कूच कर रही है। आज जंगली मानी जानेवाली ज़ूलू जाति कभी न कभी संसारकी महान जातियोंमें अपनी गिनती करायेगी। क्योंकि यह जाति भी प्रगतिके मार्ग पर बढ़ती चली जा रही है। फिर भी आज सभ्य होनेका दावा करनेवाली जातियां अिस ज़ूलू जातिको जंगली जाति मानती हैं अिसके बारेमें हम अच्छी जानकारी प्राप्त कर लें तब हम जरूर विचारोंके चक्करमें पड़ जाते हैं तथा सोचने लगते हैं कि हम सभ्य कैसे और ये जंगली कैसे? अिसमें पाठकोंको थोड़ा धीरज रखना पड़ेगा। यहां हमें कुछ तफ़सीलमें जाना पड़ेगा।

ज़ूलू लोग आज भी ज्यादातर जंगलमें ही रहते हैं। दक्षिण अफ्रीकामें राज्य करनेवाली गोरी जातिने जहां जहां छोटे या बड़े गांव बसाये हैं वहां घर बनाकर रहनेवाला ज़ूलू शायद ही मिलेगा। और जो मिलेगा वह शौकीन भी बन गया होगा। अीसाअी पादरियोंने अिस जातिमें पैर फैलाकर अुसके दो भाग कर दिये हैं — (१) नंगे ज़ूलू (२) कपड़े पहननेवाले ज़ूलू।

नंगे लोग जंगलमें ही रहते हैं। वे बिलकुल नग्न तो नहीं रहते। स्त्री और पुरुष मर्यादा ढकनेके लायक ही कपड़े या दूसरे साधन काममें लेते हैं। जहां जहां गोरे लोगोंकी बस्ती होती है वहां अैसी असभ्य (अर्धनग्न) हालतमें आनेकी अुन्हें कानूनसे मनाही कर दी गई है। अिसलिअे बाज़ारमें

बीचमें खाने कचहरीके काम निबटाने या और किसी कामसे अैसे प्रदेशोंमें जंगलवासी जूलू लोग कपड़े पहनकर जाते हैं। कुंवारी कन्यायें लहंगेके बजाय १२ से १८ अिंच पनेका अंगोछा काममें लेती हैं और छाती ढंक जाय अैसे चौकोर कपड़ेके टुकड़ेसे छाती ढंक लेती हैं। विवाहिता स्त्रियां बैलके चमड़ेका लहंगा पहनती हैं और कन्याओंकी तरह कपड़ेके बड़े टुकड़ेसे छातीका भाग ढंक लेती हैं। पुरुष बस्तीमें तो पतलून और कोट या कमीजसे अपना बदन ढंककर चलते हैं और जंगलमें बाघके चमड़ेसे अपनी मर्यादा ढंकते हैं। ये नंगे लोग अीसाअी बने हुअे नहीं होते। अीसाअी बने हुअे जूलुओंमें पुरुष यूरोपीय पोशाक पहनते हैं और स्त्रियां मलायी पोशाक पहनती हैं। गैर-अीसाअी जनताकी यह मान्यता है कि पोशाकमें गोरोंकी नकल करना गिरजोंमें विश्राम-दिवस यानी रविवारके दिन टीपटाप करके जाना गोरोंके बावर्ची या कुलीके रूपमें नौकरी करना शराब और व्यभिचारकी छूट प्राप्त करना अैश आराम और भोग-विलासमें निर्बंध बनना और जीवनमें नीति-अनीति या धर्म-अधर्मकी चिन्ता न रखना—ये अीसाअी धर्म स्वीकार करनेवालोंकी खासियतें हैं। नंगे जूलू अपने अीसाअी बने हुअे भाअियोंको शंका और तिरस्कारकी नजरसे देखते हैं। गैर-अीसाअी जूलू स्त्रियों और अीसाअी जूलू स्त्रियोंके झगड़े मैंने सुने हैं और सुननेके बाद जिज्ञासाके खातिर और कभी कभी मजाकके खातिर मैं गैर-अीसाअी जूलू स्त्रीसे पूछता था "तुमने अुस बहनको ताने मारे परन्तु कुछ भी हो वह सभ्य है और तुम जंगली हो। तुम मुझे अैसा कैसे कह सकती हो?" मेरा अुलाहना सुनकर वह बड़े गर्वसे जवाब देती "कौन सभ्य है? कैसी सभ्यता? वेश्याकी तरह कपड़े पहनकर नखरे करना विलायती शराब पीकर पागल बनना जवानकी बालाओंसे काम लेना व्यभिचार करनेकी छूट प्राप्त करना और फिर गिरजेमें जाकर भोला मुंह बनाकर भगवानको फुसलाना क्या सभ्यताके यही लक्षण हैं? अैसे लोग सभ्य कहलाते हों तो हमें अैसे नहीं बनना है। हमें अपना जंगलीपन ही मुबारक हो!

अुसकी चतुराईभरी दलील सुनकर मैं तो चकरा जाता था। फिर भी अुन बहनसे और बातें सुननेकी खातिर मैं अुसका खंडन करके कहता "तुम लोग तो जंगली हो। ये लोग तुमसे कितने ज्यादा साफ और सभ्य दिखाअी देते हैं? तुम लोगोंके कपड़े कितने गंदे और अरंडीके तेलमें भीगे हुअे होते हैं

और तुम्हारे शरीरसे भी अुस तेलकी बदबू आती है। तुम्हें न तो बोलनेकी तमीज है, न कपड़े पहननेकी तमीज है और न शहरी जिन्दगीको तुम समझती हो। जैसे मेरी बात सुनकर व्याकुल हो जाती हो जिस प्रकार वह बोल अुठी — कोअी हर्ज नहीं कोअी हर्ज नहीं। भले ही वे सुन्दर दीखनेकी कोशिश करें, भले ही वे शहरी जीवनमें स्वच्छ दीखती हों भले ही अुन्हें शहरमें रहना आता हो। परन्तु अुनके अन्तःकरण कितने काले हैं? तुम जानते हो वे कितने अधम और अनीतिपूर्ण हैं? हमारे शरीरसे चाहे बदबू आती हो परन्तु हमारा हृदय कितना शुद्ध है। हम अपने भगवानसे डरते हैं अुसे धोखा नहीं देते।

यह स्पष्ट अुत्तर सुनकर भी मुझे संतोष न होता तो मैं और भी स्पष्टताके खातिर अुससे जिरह करता — नीति-अनीति तो थोड़ी बहुत सभीके साथ लगी हुअी है। अुससे बिलकुल निर्लेप तो किसीको देखा नहीं। तुम अुन लोगोंके चरित्र पर आक्षेप करती हो परन्तु क्या तुम लोगोंमें सभी शुद्ध होंगे? बुराअी तो तुम लोगोंमें भी होगी। मेरा कहना पूरा होनेसे पहले ही वह बोल अुठी — हां हां तुम सच कहते हो। हममें भी बुराअी तो होगी। परन्तु नब्बे फी सदी बुराअी अुनमें और दस फी सदी बुराअी हममें होगी। कितना फर्क है। वे भी दस-पांच साल पहले हमारे भाअी-बन्द थे। अब भी वे हमारे भाअी-बन्द ही हैं। मैं अुन पर आक्षेप नहीं करती। मेरा आक्षेप तो जिसे तुम सभ्यता कहते हो अुस पर है।"

जिस निरक्षर, अज्ञान और जंगली मानी जानेवाली स्त्रीसे सभ्यता और असभ्यताका निरूपण सुनकर मैं तो ताज्जुबमें पड़ जाता। जैसी मान्यता और दलीलें मैंने बहुत-सी गैर-औसाअी स्त्रियोंसे सुनी थी। और बारीकीसे जांच करने पर मालूम हुआ है कि अुनमें अतिशयोक्ति नहीं थी। अच्छे-बुरे लोग तो सभी जातियोंमें होते हैं। परन्तु यह सभी जगह देखा गया है कि झूलू लोगोंमें औसाअी बन जानेके बाद अधिकतर लोगोंका जीवन जिस प्रकार कलंकित हो जाता है। जहां धर्म-परिवर्तन करना ही मनुष्यका मुख्य हेतु होता है वहां धार्मिकता लोगोंमें कम ही पैदा होती है। जितना ही नहीं धर्म बदलनेवाले लोग परधर्मावलम्बी समाजके प्रचलित दोषोंके शिकार बन जाते हैं। औसाअी बने हुअे झूल लोगोंकी जैसी ही दयनीय दशा है।

३

झूलू कौमकी राजनीतिक स्थिति

झूलू दक्षिण अफ्रीकाके मूल निवासी हैं। यह अुनकी जन्मभूमि है। वहां रहना, वहांका राज्य करना और वहांका ठाठ वैभव भोगना अुनका जन्मसिद्ध अधिकार है। परन्तु पश्चिमकी गोरी जातियां वहां जा पहुंची। अुनका रंग गोरा होनेके कारण ही अुन्होंने असा मान लिया है कि जिस पृथ्वीतल पर और सूर्य-मंडल पर भी अुन्हींकी सत्ता होनी चाहिये। अुन्हींका बोलबाला होना चाहिये। अमरीकामें ये लोग जब स्वामी हो गये तो अपनी बेगार करानेके लिये दक्षिण अफ्रीकाके निवासियोंको अपने गुलाम बनाकर ले गये और यहां जो लोग रहे अुन पर यहां आकर बसे हुअे गोरे लोगोंने अपना आधिपत्य जमा लिया। स्वाभाविक रूपमें ही मानवोंके मनमें यह अभिलाषा पैदा होती है कि हमारी सेवाके लिये या हमारे साथ जो जाति रहती है अुसकी भलाअी और अुन्नतिके लिये कोशिश करनी चाहिये। परन्तु जिन गौरांग जातियोंके हृदयमें असी कोअी मानव-भावनाका अुद्गम ही नहीं हो सका। अुन्होंने अपना स्वार्थ साधना शुरू कर दिया। अितना ही नहीं जिस घरके ये मालिक बन बैठे हैं, अुसके मूल स्वामीको अुन्होंने अूपर न अुठने दिया। पचासों वर्ष हो गये फिर भी मूल जातियोंकी शिक्षाका अुन्हें खयाल तक नहीं आया। मामूली पुलिसके सिपाहीसे अूंचे दर्जेकी नौकरीके लिये भी अुनमें से किसीको नहीं रखा जाता तब न्याय-विभाग, शिक्षा-विभाग और गृह-विभागकी तो बात ही क्या की जाय! अुन्हें लाठी या बरछीके सिवा जो औजार अुपयोगी हों अुनके सिवा अन्य कोअी हथियार भी रखनेकी अिजाजत नहीं है। किसी सरकारी नौकरीमें मैंने अेक भी झूलू नहीं देखा। वहांके गोरे लोगोंको शायद शंका होगी कि ये लोग मानव-जातिके हैं या तुच्छ पशु-पक्षी हैं? गांव-गांव म्युनिसिपैलिटियां होंगी परन्तु अुनका काम झूलूओंको क्यों मिलने लगा? जिन लोगोंके लिये किसी जिलेमें किसी जगह सरकारी दवाखाना मैंने नहीं देखा। फिर भी अेक साल जानवरोंमें प्लेगका रोग फैला तब अुसकी छूत लगनेके बहाने जंगलमें रहनेवाले झूलू लोगोंके हजारों जानवरोंको

गोलीसे मार दिया गया। अिस तरह सैकड़ों साधन-सम्पन्न जूलू थोड़े ही दिनमें साधनहीन बन गये।

सरकारको अुनके लिअे कुछ करना नहीं पड़ता। वे अपनी रक्षा आप कर सकते हैं। अिसलिअे पुलिस विभागको किसीसे अुनकी रक्षा करनी नहीं पड़ती। फिर भी सरकार अुनसे रुपया बहुत अुठाती है। वह अुनमें से पुलिसके सिपाहियोंकी भरती करके अुन्हें खास तौर पर गोरोंकी रक्षाके लिअे रखती है। जूलू लोगोंको कर तो देना ही पड़ता है। फिर भी अितनेसे गोरी सरकारको सन्तोष नहीं हुआ। अुसने फी आदमी अेक नया कर लगा दिया। अिसका हेतु अेक ही था। किसी भी तरह जूलू लोगोंको तंगदस्ती और कंगाल हालतमें रखना। कर या किसी भी कानूनके अमलके नीचे अुन्हें हमेशा दबाकर रखना। आज तक वहाँकी सरकार अैसे दुष्ट हेतुवाला व्यवहार ही जूलू जातिके प्रति रखती है। सन् १९ ४ में वहाँकी सरकारने जूलुओं पर जब मुण्ड-कर लगाया तो अुस जातिमें भारी असंतोष पैदा हुआ। जंगलके किसी क्षेत्रमें पुलिस सार्जेण्ट कर अुगाहने गया। वहाँ जूलू लोगोंने अुसे काट डाला। अितना कारण गोरी जातिके लिअे काफी था। अिसे गोरी जाति और सरकारने बड़ा रूप दे दिया। अुसे जूलू-विद्रोह नाम दिया। फौजी स्वयंसेवक सेनामें भरती हुअे नौजवानोंको तुरन्त अिकट्ठा कर लिया गया। जमा हुअे नौजवानोंके दिलोंमें अब तक जूलुओंके प्रति तिरस्कारका भाव ही पोषित किया गया था। अुनके हृदयोंमें अपने घरके पालतू कुत्तेके बराबर भी जूलू मानवकी गिनती न थी। अैसे नौजवानोंके दल नेटालका जूलू-विद्रोह दबानेको निकल पड़े। सत्ताके नशेमें चूर अिन गोरे सैनिकोंने सैकड़ों नहीं हजारों जूलुओंका शिकार किया मानो वे मनुष्योंका शिकार करनेका ही अवसर ढूँढ रहे हों। गांधीजी अिस जूलू-विद्रोहमें घायल होनेवालोंकी सेवा करनेकी अिच्छासे स्वयं-सेवकोंकी अेक टोली लेकर गये थे। अुन्होंने खुद बताया है कि यह जूलू-विद्रोह जैसा बिलकुल नहीं था। अिस बहानेसे जूलू जाति पर गोरोंका आतंक जमाना था। और गोरी सरकारने अपने अत्याचारोंसे भयंकर आतंक फैलाया। घायलोंकी सेवा करनेवाली टोलीको अेक भी गोरे घायलकी सेवा करनेका मौका नहीं आया। जो घायल हुअे या मारे गये वे केवल जूलू ही थे। गोरोंकी हथियारबन्द टोलीको रखकर अुसका आशय भेजना लिअे जानेवाले जूलुओं पर भी बिना हिचकिचाहटके अुस टोलीने गोली चलाओ और निर्दोषों ही को

निर्दयतासे मार डाला या घायल कर दिया। जिस तरह मिला हुआ मौका चूकनेवाली गोरी जाति नहीं थी। जिस प्रकार दक्षिण अफ्रीकाके सब प्रान्तोंका राज्यशासन वहांकी मूल जातिके खूनसे सनकर कलंकित बन गया है।

४

दक्षिण अफ्रीकाका औपनिवेशिक स्वराज्य

दक्षिण अफ्रीकामें रहनेवाले हिन्दुस्तानी लोगोंके बारेमें कोओी विचार करनेसे पहले हम वहांकी राज्यसत्ता पर अेक नजर डाल लें। दक्षिण अफ्रीकाके चार प्रान्तोंमें से नेटाल, केप कालोनी और आरेंज रिवर फ्री स्टेट—ये तीन प्रान्त अंग्रेजोंके अधिकारमें थे। ट्रान्सवाल प्रान्त डच लोगोंके पास था। डच लोग हालैण्डके मूल निवासी हैं। वे भी ट्रान्सवालमें 'सेटलर्स' के रूपमें गये थे और बादमें अुन्होंने अपनी सत्ता वहां जमाओी थी। परन्तु वे वहांकी भूमिके सगे पुत्र बनकर रहे, किसान बन गये और ट्रान्सवालकी अुन्नति और समृद्धिमें अपनी अुन्नति और समृद्धि मानने लगे। ट्रान्सवालके लगभग चारों ओर अंग्रेजी सत्ता थी। अुनकी आंखोंमें ट्रान्सवालका स्वतंत्र राज्य खटके बिना कैसे रहता? और अंग्रेज व्यापारके लिअे तो घुस ही गये थे। सोनेकी खानें वहां ट्रान्सवालमें अंग्रेज व्यापारियोंने खोजी थी और अंग्रेज कंपनियोंने जिन खानों पर अपना स्वामित्व जमा लिया था। फिर भी राजसत्ता डच लोगोंकी होनेके कारण सोनेकी खानोंका धंधा मनमाने ढंगसे चलानेमें अंग्रेजोंको अनेक कठिनाअियां महसूस हुओीं। जिस भूमिमें ये खानें हैं अुस भूमिका स्वामित्व मिलने पर ही अुनका पूरा लाभ अुठाया जा सकता है, यह बात मि. चेम्बरलेन जब दक्षिण अफ्रीका आये तब अुन्हें सूझी। अुन्होंने ट्रान्सवाल प्रान्त लेनेके लिअे पार्लियामेंटको अुकसाना शुरू कर दिया। परन्तु प्रश्न यह खड़ा हुआ कि ट्रान्सवालके साथ किस कारणसे लड़ाओी मोल ली जाय। परन्तु राजनीतिज्ञोंको कारणोंकी क्या कमी! तू नहीं तो तेरा बाप होगा, असी भेड़िया-वृत्ति तो अुनमें होती ही है। अुन्होंने लड़ाओीके कितने ही कारण ढूंढ निकाले। अुनमें से अेक कारण यह भी था कि ट्रान्सवालकी डच हुकूमत वहां रहनेवाले हिन्दुस्तानियों पर जुल्म करती है। परन्तु सच्चा कारण तो यह था कि सोनेकी खानोंके लिअे अुनकी

नीयत बिगड़ गयी थी। यह बोअर-युद्ध लगभग तीन साल तक चला। लार्ड राबर्ट्स प्रधान सेनापति थे। हिन्दुस्तानी फौजने भी यहां अपना खून बहाया। लड़ाअीमें कितने ही हत्याकाण्ड किये गये। और अुन हत्याकाण्डोंमें अंग्रेज फौजने निर्दोष डच स्त्रियों और बच्चोंकी निर्मम हत्यायें कीं। बहादुर होने पर भी मुट्ठी भर डच लोग आखिर राक्षसी ब्रिटिश सल्तनतके सामने कहां तक टिकते? फिर भी तीन सालमें डच लोगोंकी बहादुरीसे ब्रिटिश साम्राज्य थक गया। अन्तमें दोनों पक्षोंमें सुलह हुअी। ट्रान्सवाल प्रान्तने ब्रिटिश साम्राज्यका आधिपत्य स्वीकार किया और अुसे साम्राज्यके अुपनिवेशके रूपमें स्वीकार किया गया। अुस समयसे अिन तीन प्रान्तोंमें ट्रान्सवाल भी मिल गया। सन् १९१ तक अिन चारों प्रान्तोंका शासन स्वतंत्र रूपसे होता रहा। सन् १९१ में दक्षिण अफ्रीकाका संघराज्य बना। अुसके मुख्य अधिकारी जनरल स्मट्स और जनरल बोथा वगैरा डच लोग रहे। चारों ही प्रान्तोंके प्रतिनिधियोंकी संयुक्त राज्य-सभा अपने मंत्रिमंडलके जरिये सारा शासन करती है। अुस मंत्रिमंडल या राज्य-सभाकी सत्तामें हस्तक्षेप करनेका बड़ी सरकारको कोअी अधिकार नहीं है। साम्राज्यकी ओरसे अेक प्रतिनिधि वहां रहता है। वह दक्षिण अफ्रीकाका गवर्नर जनरल कहलाता है। राज्यसभा जो जो कानून बनाती है अुस पर वह नियमानुसार केवल हस्ताक्षर करता है। अस प्रतिनिधिका वेतन बड़ी सरकार देती है।

अिस तरह बड़ी सरकारकी सत्ता दक्षिण अफ्रीकामें नाममात्रकी ही है। यूनियन जैक वहांका राज्य-ध्वज माना गया है। अिसके बदलेमें ब्रिटिश सरकार दस हजार गोरी सेना दक्षिण अफ्रीकामें रखती है। अिस फौजका सारा खर्च अिंग्लैण्डके खजानेसे दिया जाता है। अितने पर भी अुसका अुपयोग दक्षिण अफ्रीकाकी सरकार अपनी जनताके हितमें जरूरत पड़ने पर कर सकती है।

हमारे मनमें सहज ही प्रश्न अुठ सकता है कि अिंग्लैण्ड अिस तरह घाटा सहकर भी दक्षिण अफ्रीकामें नाममात्रकी सत्ता किस लिअे रखता होगा? अिसमें अिंग्लैण्डको क्या लाभ? अैसे प्रश्नोंका हल बड़ा सहज है। दोनों पक्ष अिसमें अपनी अपनी मर्यादा समझकर अेक-दूसरेका लाभ अुठाते हैं। दक्षिण अफ्रीकाकी जनता यह मानती है कि अिंग्लैण्डका झंडा वहां रहे तो अिसमें अुसका कोअी नुकसान नहीं है। वह दक्षिण अफ्रीकाके हितमें बाधक नहीं

बन सकता। और जब चाहेगा तब घड़ी भरमें अुसे अुतारकर फेंक देनेकी शक्ति अुसमें है। अुस हालतमें अिंग्लैण्ड चुपचाप बैठे रहनेके सिवा और कुछ नहीं कर सकता। अिसके सिवा ब्रिटिश साम्राज्यकी हिस्सेदारीकी छायामें ब्रिटिश साम्राज्यमें और दूसरे देशोंमें भी दक्षिण अफ्रीकाके लोग व्यापारका और बसनेका लाभ अुठा सकते हैं। दूसरी तरफ अिंग्लैण्ड अिस तरह मनका संतोष कर लेता है कि अैसे अुपनिवेशोंके समूहसे बने हुअे साम्राज्यकी छाया तले वह विरोधी राज्योंके साथ अपनी प्रतिष्ठा बनाये रख सकता है। अिंग्लैण्डकी बढ़ती हुअी आबादी और अुद्योगोंके लिअे अुपनिवेशोंमें गुजर स्थान मिलता है। दक्षिण अफ्रीकामें होनेवाले विदेशी आयातमें अिंग्लैण्डको बिना भेदभाव दूसरे देशोंसे ज्यादा तरजीह मिल सकती है। अिस प्रकार अिंग्लैण्डके मालका विशाल बाजार खुला रहता है। दक्षिण अफ्रीकाके लिअे तो सभी बराबर हैं। जो चीज जरूरी होते हुअे भी वहां तैयार नहीं होती वह अिंग्लैण्डसे आवे या जर्मनीसे आवे या और किसी देशसे आवे अिसमें अुसका कुछ बिगड़ता नहीं। अिस प्रकार अेक-दूसरेके स्वार्थपूर्ण हेतु अैसी राजनीतिमें गुंथे हुअे हैं। अिन स्वार्थोंकी और अपनी-अपनी मर्यादाकी दृष्टिसे समझ-बूझकर दोनों पक्ष व्यवहार करते हैं। तथापि अिसमें अेक बात तो निश्चित है कि जब अिंग्लैण्ड जरा भी दक्षिण अफ्रीकाके हितके विरुद्ध जायगा तब दक्षिण अफ्रीका तुरन्त ही साम्राज्यका जुआ अुतार फेंकेगा। अैसा करनेमें अुसे कोअी रोक नहीं सकेगा। आजकल हिन्दुस्तानके लोग राष्ट्रीय कांग्रेसके जरिये दक्षिण अफ्रीका जैसा जो औपनिवेशिक स्वराज्य मांगते हैं वह अैसा ही औपनिवेशिक स्वराज्य होगा। जब जरूरी मालूम हो तब साम्राज्यके सम्बन्धसे अलग होनेका अधिकारवाला स्वराज्य ही औपनिवेशिक स्वराज्य है। आजकल दक्षिण अफ्रीकाको अैसा ही स्वराज्य मिला हुआ है।

अब यह देखें कि दक्षिण अफ्रीका अपने औपनिवेशिक स्वराज्यमें अपने अुन्नत हितकी किस तरह रक्षा करता है।

वहांकी जमीन अुपजाअू है — बहुत अुपजाअू है। जलवायु बहुत अनुकूल है। चौमासेमें जाड़ेमें और गरमीमें भी वहां बरसात होती रहती है। खेती अच्छी होती है फिर भी वहांकी जमीन पर कोअी लगान नहीं है। साधारण किसान पर तो कर जैसी कोअी चीज होती ही नहीं। बड़े किसानों पर आय-कर होता है। और वह आय-कर निश्चित आय पर

किया जाता है। खास तौर पर किसानोंके साथ सरकारी अफसरों और छोटे कर्मचारियोंका विशेष सम्बन्ध न होनेसे किसान अुनके जुल्मोंसे बच रहते हैं। वे किसी कोशिशमें लगे रहते हैं कि अुनकी जमीन अधिक अुपजाअू कैसे बने।

खेती नहरोंसे बहुत समृद्ध होती है। परन्तु जिस पहाड़ी देशमें नहरोंका अुपयोग नहीं हो सकता। अिसलिअे वहांकी सरकार किसानोंको यह काम नहीं दे सकती। फिर भी अिसके अलावा दूसरे बहुत काम वह किसानोंको पहुंचाती है। किसानोंको अच्छा बीज प्राप्त करनेमें कभी सुविधायें देती है। खेती-विभाग लोगोंका रुपया बरबाद करके निष्फल प्रयोग नहीं किया करता। परन्तु सालमें अेक दो बार खेती-बाड़ीका प्रदर्शन करके किसानोंका अुत्साह बढ़ाता है। अुनको आर्थिक सहायता देता है। यह तो खेती-विभागकी तरफसे मिलनेवाली मदद हुअी। अब यह देखें कि किसानोंको अप्रत्यक्ष रूपसे और कितनी सहायता मिलती है।

जो फसल दक्षिण अफ्रीकामें पैदा हो सकती है वह सरकार वहांके किसानोंसे पैदा कराती है। अैसी पैदावार विदेशोंसे आकर देशकी पैदावारसे स्पर्धा न करे अिसके लिअे सरकार विदेशी माल पर जकात लगाती है। यह जकात कितनी लगायी जाती है अिसके अुदाहरण मैं नीचे देता हूं।

जो तम्बाकू यहां पैदा होने लगी वह बिलकुल हलकी किस्मकी थी। फिर भी सरकारने अुस मालका स्वागत किया। आम तौर पर अिस तम्बाकूका बाजार-भाव चार या पांच पेनी फी रतल होगा। परन्तु विदेशी तम्बाकू यहां आये तो अुस पर जकात ही फी रतल पांच शिलिंग ली जाती है। अिसलिअे बाहरकी तम्बाकू यहां किसी भी तरह नहीं घुसती।

यहां जो गन्ना होता है अुसकी शक्कर बनती है। आम तौर पर अुस शक्करका भाव सौ रतलकी बोरीका आठसे दस शिलिंग होता है। अुसकी स्पर्धामें मोरीशसकी शक्कर आ सकती है। परन्तु बाहरकी शक्कर दक्षिण अफ्रीकाके बन्दरगाहमें घुसते ही अुस पर अितनी अधिक जकात लगायी जाती है कि वह बीससे आखिर शिलिंगकी सौ रतल पड़ती है। अिसलिअे दस-पांच वर्षमें कभी बरसातकी भारी कमीके कारण यहां गन्नेकी फसल न हो तो ही विदेशी शक्कर अन्दर आ सकती है। अिस प्रकार अनेकों हर पैदावारका सरकार विदेशी पैदावारसे संरक्षण करती है। यहां रक्षणे सरकारकी है।

अुसके जरिये भी यहांकी पैदावारको बहुत प्रोत्साहन मिलता है। रेलवे रसीद पर माल भेजनेवाला यह प्रमाणपत्र दे कि अुसका माल दक्षिण अफ्रीकामें पैदा हुआ है तो मालके रेलभाड़ेमें असाधारण फर्क पड़ जाता है। अुदाहरणके लिअे चावलकी दो सौ रतलकी बोरी डरबन स्टेशनसे बावन मील दूरके किसी स्टेशनको भेजनी हो तो अुसका रेल-भाड़ा दो शिलिंग होता है। परन्तु मक्काकी दो सौ रतलकी बोरी जोहानिसबर्गसे चार सौ मील दूरके स्टेशनको भेजनी हो तो अुसका भाड़ा आठ पैस होता है। अिस भारी फर्कका कारण सिर्फ यही है कि चावल विदेशकी पैदावार है। चावल देशमें पैदा नहीं होता अिसलिअे मजबूर होकर बाहरसे मंगाना पड़ता है परन्तु बन्दरगाहकी जकात अौर भारी रेल-भाड़ा लगाकर देशमें पैदा होनेवाले दूसरे अनाजका सरकार संरक्षण करती है। केप कालोनीमें बढ़िया अंगूर ढेरों पैदा होते हैं। जोहानिसबर्गमें अुसके लिअे अच्छा बाजार है। अिसलिअे रेलवे अुन अंगूरोंको अितने थोड़े भाड़ेमें जोहानिसबर्ग ले जाती है कि केप टाअुनमें अौर चार सौ मील दूर जोहानिसबर्गमें वे अेक ही भाव बिकते हैं। ये सब बातें दक्षिण अफ्रीका कर सकता है क्योंकि वहां स्वराज्य है। स्वराज्य हरअेक दुखकी रामबाण दवा है।

५

दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी — १

अिंग्लैण्डके साहसी लोग नेटालमें आये अौर बस गये। अुन्होंने देखा कि नेटालकी जमीनमें अनेक प्रकारकी फसलें पैदा हो सकती हैं। परन्तु जमीनमें जंगल बहुत है। अुसे साफ करना चाहिये। अच्छी तरह जमीनको जोतना चाहिये अौर फसलें पैदा करनी चाहिये। यह अेक हाथसे नहीं हो सकता था। आखिर धनवान लालचीको थोड़ी-सी जमीनके मालिक बनकर संतोष नहीं हो सकता था। अुन्हें तो जमीनके बड़े बड़े फार्म चाहिये थे। परन्तु अुनमें मजदूरी कौन करे? खेतीके काममें तो जिन्दगीसे ज्यादा मेहनत करनेवाले चाहिये। दक्षिणी अफ्रीकाके अुन लोग नियमित काम कर सकनेवाले साबित नहीं हुअे। जब तक गुलामीका कानून मौजूद था तब तक कानूनके जोरसे अैसी आम अुन मजदूरोंसे जबरन करा सकते थे। परन्तु गुलामीका कानून रद होने पर अुन मजदूरोंसे

स्थिरतासे काम नहीं लिया। अिसलिअे गोरे निवासियोंने वहाँकी सरकारके मारफत चीनसे मजदूर जुटानेका प्रबन्ध किया। परन्तु थोड़े ही समयमें अुन्होंने देखा कि ये मजदूर जमकर काम नहीं कर सकते, अिसलिअे अुन्हें वापस भेज दिया। अब अुनकी नजर हिन्दुस्तानकी तरफ गअी। हिन्दुस्तानके लोग खेती करनेवाले ठहरे और गरीब मजदूर खेती जानते ही हैं। हिन्दुस्तानसे काफी मजदूर मिल भी सकते थे। अिसलिअे नेटालका अेक शिष्ट-मंडल भारत-सरकारके पास हिन्दुस्तान आया। अुसने भारत-सरकारके साथ सलाह-मशविरा करके यहाँसे गिरमिटिया* मजदूर जुटानेके लिअे बाकायदा महकमा खोलनेकी भारत सरकारसे मंजूरी ले ली। मंजूरी देने और लेनेवाले मौसेरे भाअी ठहरे, अिसलिअे भारत सरकार अिनकार तो क्यों करने लगी? अैसी शर्तें तय हुअीं जो नेटालके जमींदारोंके अनुकूल हों। नेटालमें जो हिन्दुस्तानी मजदूर जाते अुनकी रक्षा करनेवाला अेक विभाग सन् १८६ में खोला गया। अुसके मुखियाको प्रोटेक्टर ऑफ् अिन्डियन अिमिग्रेन्ट लेबरर्स — हिन्दुस्तानी गिरमिटिया मजदूरोंका रक्षक कहा गया। अिस विभागका खर्च नेटालका कृषि-विभाग अुठाता था और रक्षककी नियुक्ति भी वही करता था। अिसलिअे अिन गरीब अर्ध गुलामीकी हालतमें गये हुअे हिन्दुस्तानी मजदूरोंका कैसा रक्षण होता होगा, अिसका अन्दाज हम आसानीसे लगा सकते हैं। अिन गिरमिटिया मजदूरोंका अेक कानून बनाया गया।

नेटालके जमींदारोंके अेजेंट हिन्दुस्तानमें मजदूर अिकट्ठा करते थे। हिन्दुस्तानके बड़े शहरोंमें अिन मजदूरोंकी भरती करनेके दफ्तर खोले गये। अिन दफ्तरोंकी तरफसे नियुक्त किये गये अेजेंट घूमते ही रहते थे। मेलोंमें रथयात्राओंमें या शहरोंमें भटक मारे मजदूरी या धंधा खोजनेवाले स्त्री-पुरुषोंसे मुलाकात हो जाने पर अेजेंट अुनसे खोद-खोद कर पूछते, अुनके मनकी बात निकलवाते और फिर लालच देते: "तुम्हें रुपया कमाना हो तो नेटालमें अच्छा मौका है। वहाँ सोनेकी खानें हैं। अुनमें काम करनेको मिलेगा, मजदूरी भी सोनेके सिक्कोंमें ही मिलेगी। सोनेके पासे भी मिलेंगे। गन्नेके खेतोंमें वहाँके जंगली लोग काम करते हैं, अुन पर देखरेख रखनी

* मजदूरोंके लिअे जो अिकरारनामा करना पड़ता है अुसे अंग्रेजीमें 'अेग्रीमेंट' कहते हैं। अिस 'अेग्रीमेंट'का हिन्दी अपभ्रंश 'गिरमिट' हो गया। अिस तरह गिरमिट करके जानेवाले हिन्दुस्तानी मजदूर 'गिरमिटिया' कहलाये।

होती है। वहां जितना ज्यादा वेतन मिलता है कि दो चार बरसमें तो रुपयोंकी दो-चार थैलियां लेकर स्वदेश भी लौट सकते हैं। लौटते समय या वहां जाते समय तुम्हें अेक पाओी भी खर्च नहीं करनी होगी। वगैरा लालच देकर वे अनेक युवक-युवतियोंको तैयार करते थे और खुद मानो अुनकी मदद करने वाले और रास्ता बतानेवाले कोओी हितैषी हों जिस तरह परोपकारी फरिश्ते बनकर भोले-भाले लोगोंको बड़े शहरोंके जिस विभागके भर्ती-केन्द्रोंमें ले जाते थे। वहां अुनकी खाव भगत बड़ा अच्छी होती थी। थोड़े मजदूर जिकट्ठे हो जाते तो अुन्हें मजिस्ट्रेटके पास ले जाते थे। मजिस्ट्रेटके सामने अिकरारनामे पर अुनके अंगूठेकी निशानियां ली जाती थीं। बस मामला खतम। वहांसे अुन्हें बन्दरगाहके मुख्य स्थान पर ले जाया जाता था। वहां अुस अेजेंटका मुंह भी नहीं दिखाओी देता था। वह स्थान मानो कैदखाना होता था। वहांसे जिन मजदूरोंकी बुरी दशा शुरू होती। वहां अुन्हें अपनी सच्ची हालतकी कुछ कल्पना होने लगती थी। परन्तु किससे कहें? कौन सुने? जिस तरह दो-चार दिन बीतते कि तुरन्त नेटाल जानेवाले जहाज पर अुन्हें सवार करा दिया जाता। जहाज पर अुन पर क्या क्या बीतती होगी जिसकी तो कल्पना ही की जा सकती है। *नेटालके डरबन बन्दरगाह पर अुतरनेके बाद जिमीग्रेशन-बोर्ड अुन मजदूरोंको* जमींदारोंमें बांट देता था। पांच सौ में तीन सौ पुरुष और दो सौ स्त्रियां होती थीं अुनमें कुछ विवाहित जोड़े होते थे। बाकीके लोगोंको अलग अलग मालिकोंमें बांट दिया जाता था। जिसकी जैसी तकदीर। हिन्दुस्तानी स्त्रियां विपत्तिके मारे जिस जालमें फंस जाती थीं परन्तु नेटाल पहुंचनेके बाद कहां जातीं? अेक महीनेकी महासागरकी यात्रा करनेके बाद तो जहाजसे अुतरती थीं अब वापस कब जायें? वापस लौटकर भी कहां जायें? कहां जात-पांत कहां समाज और कहां सगे-सम्बन्धी? सबसे बिछुड़ी हुओी हजारों मील दूर भिन्न वातावरणमें भिन्न संस्कारोंमें और भिन्न परिस्थितियोंमें आ फंसी हों तब अुनके लिअे अेक ही रास्ता रह जाता था। वह यह कि परिस्थितिके अनुकूल बनकर रहें। और वे वहमें वैसा ही करती थीं। अपनी नयी दुनिया और नया संसार वे बसाती थीं। कोओी ब्राह्मणकी लड़की चमारके साथ कोओी बनियेकी बेटी मीमेके साथ *कोओी कोलीकी लड़की ब्राह्मणके साथ जिस तरह अुनका संसार बसता था।*

जिस तरहके जोड़ोंको और दूसरे अकेले पुरुषोंको नेटालके जंगलोंमें जहां अुनके लिअे झोंपड़े बनाये जाते थे ले जाया जाता था। वहांके अुनरे दृश्योंका

वर्णन कौन कर सकता है? वर्णन करनेकी शक्ति हो तो दुःखके भोगनेवाला ही कर सकता है। स्त्री-पुरुष सुबहसे शाम तक ग्यारह-बारह घंटे सख्त मेहनत करते थे। सख्त गर्मीमें या बरसातकी झड़ियोंमें गोरे मुनीमोंके कोड़ोंकी मारके डरसे मनसे या बेमनसे हो सके या न हो सके मजबूरन अुन्हें मजदूरी करनी पड़ती थी। और अिसके बदलेमें अुन्हें मिलता क्या था? हर हफ्ते पांच सेर मक्कीका आटा और हर महीने दस शिलिंग वेतन। शिकायत किसी भी हालतमें नहीं हो सकती थी। मजदूरोंमें से ही कोअी थोड़ा बुद्धिशाली पर साथ ही स्वार्थी और चालाक होता तो अुसे जमादार बना देते थे। अैसे जमादारोंकी मददसे सैकड़ों मजदूरोंको काबूमें रखा जाता था। हिन्दुस्तानमें जैसे कैदियोंसे ही जेल चलते हैं वैसे वहां भी अिस तरहके स्वार्थी और बदमाश मजदूरोंको जमादार बनाकर अुनके जरिये और जरूरत पड़ने पर खूब जुल्म करके मालिक अुनसे बहुत ज्यादा काम लेते थे। कितना ही जुल्म क्यों न हो परन्तु जुल्म करनेवालेकी अिजाजतके बिना मजदूर बस्तीकी हद छोड़कर अदालतमें भी शिकायत करने नहीं जा सकते थे। अिजाजतकी चिट्ठीके बगैर कोअी चला जाय तो अुसे बिना किरायेकी कोठरीमें बैठना पड़ता था। अैसी गुलामीकी दशामें अुन्हें अपना जीवन बिताना पड़ता था। अिस प्रकार लगभग तीस बत्तीस बरस बीत गये। अिस बीच हिन्दुस्तानियोंकी आबादी भी बढ़ गअी। गिरमिटके नियमानुसार पांच बरस दुःख-दुःख अुठाकर पूरे करने पड़ते थे। अुसके बाद वे मजदूर वापस गिरमिटमें बंध जाते तब तो कोअी हर्ज नहीं था लेकिन सभी तो फिरसे गिरमिटमें जाते नहीं थे। कितने ही स्वतंत्र किसानके रूपमें रहते थे। और बुद्धिशाली हिन्दुस्तानी किसान खुशहाल हो यह गोरोंकी आंखमें खटकता था। अिसलिअे पहले तो अुन्होंने यह आन्दोलन करना शुरू किया कि गिरमिटिया हिन्दुस्तानियोंके पांच बरस पूरे हो जायं और वे दूसरा गिरमिट न लिख दें तो अुन्हें तुरन्त हिन्दुस्तान वापस चला जाना चाहिये। परन्तु अिकरारनामेकी शर्तोंके अनुसार अैसा नहीं हो सकता था क्योंकि यह भारत-सरकारके साथ हुअे हिन्दुस्तानी मजदूरों-सम्बन्धी अुनके अिकरारनामेके विरुद्ध था। अिसलिअे अुन्हें वापस भेज देनेकी अुनकी कोशिश बेकार साबित हुअी। परन्तु नेटालकी धारासभामें वहांकी सरकारने अैसा कानून पास किया कि गिरमिट पूरी करनेके बाद जो गिरमिटिया हिन्दुस्तानी अपने देश वापस न जाकर नेटालमें स्वतंत्र रहना चाहें अुन्हें हर साल पच्चीस पौंड यानी तीनसौ

पचहत्तर रुपया मुंड-कर देना होगा। यानी अेक कुटुम्बमें स्त्री-पुरुष दो हों तो दोनोंको मिलाकर ७५ रु. हरसाल मुंड-करके रूपमें सरकारको देना चाहिये। जितना भारी कर कोमी हिन्दुस्तानी नहीं दे सकता था। जिसलिये हिन्दुस्तान वापस जानेके सिवा अनके लिये और कोमी चारा न रहता। लेकिन अैसा कानून बनानेमें अनके लिये भारत सरकारकी मंजूरी लेना जरूरी थी। अस वक्तके वाजिसरायने जिस भारी करकी मंजूरी नहीं दी। अन्तमें समझौतेकी बातचीत होकर तीन पौंड मुण्ड-कर लगाया गया। यह कर सन् १८९४ में लगा। जिसके बुरे परिणाम और जिससे भोगनी पड़ती पीड़ा गिरमिट-मुक्त हिन्दुस्तानी मजदूरोंके लिये असह्य थी। यह कर न दे सकनेके कारण अैसे सैकड़ों हिन्दुस्तानियोंको जेलमें रहना पड़ता था। सैकड़ों वापस गिरमिटमें चले जाते थे। सत्तर-अस्सी बरसकी कितनी ही बुढ़ियां मजदूरी करके कर देने लायक रकम पैदा न कर सकनेके कारण बुढ़ापेमें जेलमें सजा काटती थीं और कितनी ही बहनें अैसा भयंकर कर चुकानेके पैसे जुटानेके लिये अपनी लाज लुटवाती थीं। जब यह कर लगाया गया तब गांधीजी डरबनमें रहते थे। अन्होंने यह कर न लगानेकी सरकारसे बहुत बिनती की परन्तु सब व्यर्थ गयी।

जिस प्रकार गिरमिटिया हिन्दुस्तानी गिरमिटसे छूटकर तीन पौंडका कर देकर भी स्वतंत्र होकर रहे। अैसे स्वतंत्र हिन्दुस्तानियोंकी संख्या दिनोंदिन बढ़ती गयी। अनमें से कुछ अीसाजी भी हो गये और अनके बच्चे मिशन स्कूलोंमें मिलनेवाली शिक्षा लेने लगे।

६
दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी — २

पिछले प्रकरणमें हमने देखा कि हिन्दुस्तानी मजदूरोंको दक्षिण अफ्रीकामें किस तरह ले जाया जाता था। अब हमें यह देखना है कि हिन्दुस्तानी व्यापारी और दूसरे लोग वहां कैसे गये। हिन्दुस्तानी मजदूरोंकी आबादी होने पर वहां हिन्दुस्तानी व्यापारियोंकी भी जरूरत जान पड़ी। शुरूमें तो हिन्दुस्तानी व्यापारियोंको निमंत्रण दिया गया। लगभग अुसी सालमें बम्बअीसे कुछ मुसलमान व्यापारी वहां गये। सूरतकी तरफके और काठियावाड़के मुसलमान व्यापारी वहां जाकर बस गये और अन्होंने व्यापार करना शुरू किया।

अुनके पीछे धीरे धीरे दूसरे व्यापारी भी गये। जो व्यापारी शुरूमें गये वे साहसी तो थे परन्तु अपढ़ थे। अिसलिअे अुन्हें अंग्रेजी पढ़े-लिखे बाबुओंकी जरूरत पड़ी। अिस प्रकार अंग्रेजी पढ़े-लिखे बाबू भी वहां पहुंचे। अुत्तर हिन्दुस्तानके और मद्रासकी तरफके गिरमिटिया मजदूरोंको कलकतिया और मद्रासी कहा जाता और व्यापारियों तथा बाबुओंको बम्बैया कहा जाता था। गोरे लोग अिन सबको 'कुली' मानते। गिरमिटियोंमें भी बड़ा हिस्सा मद्रासकी तरफका था। मद्रासी नामके अन्तमें 'स्वामी' आता अिसलिअे गोरे सभी हिन्दुस्तानियोंको कुली के अर्थमें स्वामी के अपमानभरे संबोधनसे पुकारते थे। यह अपमान पैसा कमानेका हेतु रखनेवाले व्यापारियोंको बहुत नहीं खटकता था। परन्तु धीरे धीरे अुन्हें भी अपने स्वाभिमानका भान हुआ। सन् १८९३ में गांधीजी वहां गये तब तक बहुतसे व्यापारी वहां जम चुके थे अपनी जायदादें भी अुन्होंने खड़ी कर ली थी और धीरे-धीरे गोरे व्यापारियोंसे व्यापारमें वे स्पर्धा भी करने लगे थे। अपने मिलनसार, अुद्योगी और मितव्ययी स्वभावके कारण हिन्दुस्तानी व्यापारी वहांके गरीब गोरे लोगोंमें और वहांकी जूलू जातिमें भी गोरे व्यापारियोंसे ज्यादा प्रिय बन गये। जैसा अुनका सादा मितव्ययी जीवन वैसा ही अुनके व्यापारमें खर्चका बोझ भी कम था। अिसलिअे हिन्दुस्तानियों और जूलू जातिके साथका व्यापार तो खास तौर पर हिन्दुस्तानी व्यापारियोंके हाथमें ही रहा।

अेक और महत्त्वकी बात यहां कह देनी चाहिये। जो हिन्दुस्तानी मजदूर गिरमिटसे मुक्त हुअे अुन्होंने जमीनके छोटे छोटे टुकड़े लेकर फल-फूलकी वाड़ियां लगा लीं। नतीजा यह हुआ कि अब सारे नेटालमें फलोंके बगीचे ही हिन्दुस्तानियोंकी सम्पत्ति नहीं हैं बल्कि नेटाल और ट्रान्सवालमें फलोंका व्यापार भी हिन्दुस्तानियोंके हाथमें है।

अिस तरह जैसे जैसे हिन्दुस्तानी लोग स्थिर बनकर बसे और अुद्योगी जीवनसे सम्पन्न होते गये वैसे वैसे अुनके प्रति गोरोंका द्वेषभाव बढ़ता गया। शुरूमें हिन्दुस्तानियोंको काले मैले गंदे केवल कुलीका धंधा करनेवाले और लगभग जंगली मानकर गोरोंने अुनके साथ तिरस्कार और अपमानका व्यवहार किया। परन्तु अब तो अुन्हें यह डर लगने लगा कि ये लोग अुनकी रोटीमें हिस्सा बंटायेंगे। अेक बात तो माननी पड़ेगी कि हमारा स्वच्छताका मापदंड बहुत नीचा था। गांधीजीके वहां जानेके बाद जो साधन-संपन्न हिन्दुस्तानी थे

अुनका स्वच्छताका स्तर बदला। परन्तु यह परिवर्तन गिने-गिने धावन-संपन्न लोगोंमें ही हुआ। हमारी हमेशाकी आदतें तो बहुत बेशर्मी ठहरी। हम कपड़े साफ नहीं रखते हमारे बर्तनोंका बाहर या भीतरका भाग गंदा और अव्यवस्थित होता है हमारा रसोड़ीघर धूंअसे भरा होता है। पाखानेकी तो बात ही नहीं की जा सकती वह तो नरक जैसा ही होता है। हमारी ये सब आदतें असभ्य हैं। हम ढोंग तो यह करते हैं कि हम धार्मिक हैं भावुक हैं परन्तु धर्मके मुख्य अंग स्वच्छता और पवित्रताको हमने भुला दिया है। जिसलिये विदेशी लोग हमारी बहुत निंदा करते हैं और हम अपमानित होकर अुसे सुनते आये हैं।

हमारी दूसरी बुरी आदतें तो बहुत हैं। अुन्हें यहां लिखनेकी जरूरत नहीं। परन्तु दक्षिण अफ्रीकामें गोरी जातिकी नजरमें आजी हुजी हमारी कमियोंके बारेमें लिखनेकी जरूरत आन पड़ी जिसलिये लिखना पड़ा। जिसके सिवा जो भाजी गिरमिटियाके रूपमें वहां बस गये अुनका नैतिक अध-पतन भी बहुत हो गया था। मनुष्य जब गुलाम हो जाता है तब अुसमें कौन सा गुण रह पाता है? अेक भी नहीं। सद्गुण और सद्व्यवहारको रहनेके लिये योग्य स्थान तो चाहिये न? स्वतंत्रता ही अेक अैसा अुचित स्थान है जहां सब सद्गुणोंका समूह निवास कर सकता है। जिस हद तक सद्व्यवहारमें त्रुटि होती है अुसी हद तक स्वतंत्र जीवनमें त्रुटि रहती है। हिन्दुस्तानी गिरमिटियोंमें अुनकी गुलामीकी अवस्थामें अनेक दुर्गुण घर कर बैठे थे जिनमें व्यभिचार करना शराब पीकर पागल हो जाना और लड़ाजी-झगड़ा करना मुख्य थे। जिसलिये वहांकी अदालतोंमें गोरों या हब्शियोंसे हिन्दुस्तानी अपराधी अधिक होते थे। लेकिन जो गिरमिटिये मजदूर न रहकर स्वतंत्र हो जाते और स्वतंत्र वातावरणमें अपनी जमीन पर स्वतंत्र किसानकी हैसियतसे काम करने लगते अुनका सारा जीवन बदल जाता था। आजकल नेटाल या ट्रान्सवालका बड़ा हिस्सा अैसे ही स्वतंत्र हिन्दुस्तानियोंसे बसा हुआ है।

जिन हिन्दुस्तानियोंके बारेमें भी थोड़ा परिचय कर लेना चाहिये। जो गिरमिटमें गये थे अुन्होंने तो अपने वतनमें लौटनेकी आशा छोड़ दी थी। जिस-लिये अुनकी तो जन्मभूमि ही मानो दक्षिण अफ्रीका हो गजी। जो व्यापारके लिये गये हैं अुनकी नजर हिन्दुस्तानकी तरफ ही रहती है। संतोषके लायक रुपया पैदा करके देशको और जल्द लौटें यही अुनकी दृष्टि होती है। जो मुसलमान

व्यापारी जायदादें बनाकर वहां बस गये हैं वे अब वहां आपसमें शादी-ब्याह करने लगे हैं। परन्तु पैसा वे रुपयेकी बचत और दूसरी सुविधाओंका लाभ अुठानेके लिअे ही करते हैं। जो गिरमिटमें गये थे वहां वतन बनाकर रह गये अिसलिअे अुनकी आबादी बढ़ी। धीरे-धीरे वे कुछ शिक्षा भी प्राप्त करने लगे। अिसलिअे व वहींके वाशिन्दों जैसे हो गये। अुनमें से जो वहां पैदा हुअे वे कोलोनियल बॉर्न (अुपनिवेशमें जनमे हुअे) कहलाते हैं। वे तो गोरे लोगोंकी स्पर्धा करनेकी अुम्मीद रखते हैं। पुरुषोंकी पोशाक और रहन-सहन तो लगभग गोरों जैसे ही हो गयी है। परन्तु अुनकी स्त्रियोंने अुन्हें आगे बढ़नेसे रोक दिया है। स्त्रियां चाहे अीसाअी बन गयी हों या हिन्दू रही हों अुन्होंने अपनी पोशाक रीति-रिवाज और धर्म-वृत्तिको नहीं छोड़ा है। और अिसलिअे ये कोलोनियल बॉर्न युवक जब घर जाते हैं और अपनी मां बहन और पत्नीको देखते हैं तभी अुन्हें पता चलता होगा कि वे हिन्दुस्तानी नौजवान हैं। बैरिस्टर जोसेफ रॉयप्पन मिस्टर लॉरेन्स मिस्टर क्रिस्टोफर और सत्याग्रही थंबी नायडू और पी० के० नायडू वगैरा सभी कॉलोनियल बॉर्नकी गिनतीमें आ जाते हैं। अिनमें से अधिकांश लोग सरकारी अदालतोंमें गोरे वकीलोंके यहां या व्यापारियोंके यहां मुनी-गिरी करते हैं। कुछ भाग स्वतन्त्र खेती और व्यापारमें लगा हुआ है।

७

दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी — २

दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके बारेमें कुछ विस्तारसे लिखनेका जी चाहता है। गोरे व्यापारी हिन्दुस्तानियोंके विरुद्ध जो शिकायत पुकार रहे हैं अुसका मुख्य कारण जीवनकी स्पर्धा है। हिन्दुस्तानियोंका रहन-सहन बहुत ही सादा और किफायती होनेके कारण अुनके जीवनका खर्च भी हलका होता है। छोटे मोटे व्यापारमें दस-पन्द्रह फी सदी नफेसे अनका काम चल जाता है। अिससे अुलटे गोरे व्यापारियोंको किसी भी चीजकी लागत कीमत पर १ % से कम नफा लेना पुसा नहीं सकता। अिस कारण हिन्दुस्तानी और जुलू स्त्री-पुरुष गोरे व्यापारियोंकी दुकान पर भूल-चूके भी नहीं जाते। अिसके सिवा गोरोंमें जो गरीब होते हैं वे भी हिन्दुस्तानी दुकानों पर ही खरीदारी करने जाते हैं, क्योंकि

अुनको यह अनुभव होता है कि हिन्दुस्तानी दुकान पर यूरोपीय दुकानसे हर चीज बहुत सस्ती मिलती है। जो बात व्यापारकी है वही कारीगरीकी मजदूरी की और छोटी-छोटी रोजकी फेरियोंकी है। सुबह-सुबह सागभाजी या फल बेचने वाले गोरे गोरोंके मुहल्लोंमें जाते हैं तो स्त्रियां अुन्हें भगवासे सूचना देती हैं कि आखिरा सागभाजी या फल बेचने न आना। क्योंकि अेक तो अुन्हें महंगा माल लेना पड़ता है और दूसरे सुबह-सुबह बिस्तरसे अुठते ही सागभाजी या फल लेने जाते समय गोरे फेरीवालेके पास पहने हुअे कपड़े ठीक-ठाक करके मर्यादाके साथ जाना पड़ता है, जब कि हिन्दुस्तानी फेरीवालेके पास तो वे कैसी भी अस्त-व्यस्त हालतमें जा सकती हैं, क्योंकि अुन्हें तो अुन लोगोंने मजदूर मान रखा है। मजदूर या अपने नौकर-चाकरोंके सामने मर्यादा न रखी जाय तो भी काम चल सकता है। अिस कारणसे गोरे फेरीवाले बेकार हो गये और अखबारोंमें हमेशा अुनकी शिकायत रहने लगी। अिस प्रकार सभी दिशाओंमें जीवनकी स्पर्धाके कारण गोरोंमें हिन्दुस्तानियोंके लिअे अीर्ष्या पैदा हो गयी। दूसरी तरफ हमारे स्वाभिमानरहित व्यवहारके कारण हमारे प्रति तिरस्कार भी पैदा हुआ।

और जैसा पहले कहा जा चुका है स्त्रियोंके लिअे बहुत झगड़े होते थे। वहांसे होनेवाली मजदूरोंकी भरतीमें ही स्त्रियोंकी संख्या पुरुषोंसे बहुत कम होती थी अिसलिअे स्त्रियोंके स्वामित्वके लिअे हर जगह झगड़े-टंटे हुआ ही करते थे। वहाकी फौजदारी अदालतें और वकीलोंके दफ्तर हिन्दुस्तानी मजदूरोंसे ही भरे रहते थे। अिस कारणसे गोरोंकी और हब्शियोंकी नजरमें हिन्दुस्तानियोंकी रीति-नीति बहुत ही नीचे दर्जेकी मानी जाने लगी। हिन्दुस्तानी गिरमिटियों या स्वतंत्र मजदूरोंका गृहस्थ-जीवन भी अधिकतर कलहमय था। फिनिक्समें अेक बुढ़िया बार-बार हमारे पास आया करती थी। अुसका शरीर भरा हुआ और चेहरा तेजस्वी था बोलनेमें वह मीठी और विवेकपूर्ण थी। सहज ही माना जा सकता था कि वह स्त्री किसी अूंचे घरानेकी होगी। बातचीतमें हमें मालूम हुआ कि वह मुख्य ब्राह्मण कुलकी थी। हिन्दुस्तानमें मजदूरोंकी भरती करनेवाले दलालोंके हाथों पड़ गयी थी और मजदूरोंके जहाजमें वहां जा पहुंची थी। अेक बार पहुंच जानेके बाद कहां जाय? अेक चमार मजदूरके साथ अुसने अुम्र गुजारी। स्वभाव संस्कार और आचार-विचारमें निरंतर असमानताके कारण सदा क्लेश रहनेके कारण सारा जीवन कष्टमय बन

तरफ दृष्टि कम रखी और अिसलिअे वहां बड़ी जायदादें बना लीं। अिस प्रकार हिन्दुस्तानियोंमें मुसलमान व्यापारी वहां काफी अच्छी तरह जम गये।

परन्तु हिन्दू हों या मुसलमान सभी वहां 'कुली' माने जाते थे। अुनके लिअे वहां कोअी सार्वजनिक स्थान नहीं था। अुनके करसे बनाये गये सार्वजनिक विश्राम-स्थानोंमें बाग-बगीचोंमें नाटक-सिनेमाओंमें या सभा-सम्मेलनोंमें हिन्दुस्तानियोंके लिअे कोअी जगह न थी। समुद्रतट पर जो चौपाटी बनायी गयी वहां कुदरती हवाका लाभ लेने जितना अधिकार भी हिन्दुस्तानियोंको न था। गोरे सेठका पानी भरने और अींधन जुटानेवाले मजदूरके रूपमें हिन्दुस्तानी भले वहां जीवन बिताये परन्तु स्वतंत्र नागरिकके रूपमें लाभ अुठानेवाला जीवन बिताये तो वहांके गोरोंसे सहन नहीं होता था। अिसलिअे हम अछूत अस्पृश्य जैसे और निर्धन लोग माने गये। अैसे लोगोंकी परछाईं पड़ने पर भी अुन्हें शर्म आती। अैसे हम हिन्दुस्तानियोंके लोकेशन यानी ढेढवाड़े भी अलग ही होते थे। अुनकी हदके बाहर हम रह नहीं सकते थे। हमारे हरिजन भाअी-बहनोंको अस्पृश्य समझनेवाले अुच्च वर्णके ब्राह्मणोंकी दशा भी वहां हरिजनोंसे गयी-बीती है।

अिस प्रकरणमें दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके सामाजिक जीवनकी रूपरेखा हमने प्रस्तुत की। अब अुनकी मुसीबतोंकी ओर नजर डालें।

८

हिन्दुस्तानियोंकी मुसीबतें

अिस प्रकरणका नाम 'हिन्दुस्तानियोंकी मुसीबतें' अिसीलिअे रखा है कि अुसे पढ़कर हम जान सकेंगे कि बस्तीमें हर जगह दुतकारे जानेवाले कुत्तों या आवारा ढोरों जैसी दशा दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानियोंकी थी और अब भी कुछ हद तक वैसी ही है। आज भी वहांके गोरोंके दिमागसे हिन्दुस्तानियोंके प्रति 'हेय कुली' की भावना मिटी नहीं है। अिसका कारण भी है — हम स्वाभिमानी प्रजा न बने। हिन्दुस्तानमें अभी तक हम पराधीन हैं, गुलाम प्रजा हैं। और जब तक हम बिलकुल निर्भय नहीं बन जाते तब तक दक्षिण अफ्रीकामें

बसनेवाला हमारा अेक अंग कितना ही बलवान हो तो भी हमारी मलिनताके छींटे अुस पर ज़रूर अुड़ेंगे। वहाँकी गोरी जनता हिन्दुस्तानकी पैंतीस करोड़ जनताकी गुलामीके मिसालसे भी वहाँके हमारे मुट्ठी भर भाअी बहुत कितने ही बहादुर क्यों न हों तो भी अुनको कुछ नहीं समझेगी। नेटालमें गोरी जनताके हिन्दुस्तानियोंके प्रति अभिमानपूर्ण अुद्धत व्यवहारसे और गिरमिटकी पद्धतिसे जो रंगद्वेष पैदा हुआ अुसके सिवा और कोअी रंगभेदका कानून नहीं बनाया गया था। नेटालकी धारासभाने हिन्दुस्तानियोंको वहाँ घुसनेसे रोकनेके लिये रंगभेदका कानून बनानेकी बहुत कोशिशें की थीं। परन्तु अुस समयके प्रख्यात राजनीतिज्ञ मिस्टर चेम्बरलेनकी कोशिशसे वैसा कानून न बन पाया। परन्तु अेक दूसरा कानून सन् १८९७ में बनाया गया था। अिस कानूनके अनुसार नये आनेवालोंको शिक्षाकी परीक्षा लेकर घुसने दिया जाता था। यह नहीं देखा जाता था कि आनेवाला किस जाति या रंगका आदमी है। अिस प्रकार नेटालमें जातिभेद या रंग-भेदके आधार पर कानून बनानेका सिद्धान्त अस्वीकार हुआ। परन्तु कानून द्वारा समानता स्वीकार करनेका यह सिद्धान्त ट्रान्सवालमें नहीं माना गया। ट्रान्सवालमें तभी तकलीफोंके प्रथम चिह्न दिखाअी देने लगे। वहाँके लोगोंने काले लोगोंके मामलेमें रंग भेदकी राजनीति अख्तियार की थी। अिस कुटिल राजनीतिको बोअर युद्ध लड़नेके अेक कारणके तौर पर सामने रखकर अंग्रेज सरकार ट्रान्सवालके राज्यकर्ताओंसे लड़ी। युद्धके बाद जब ट्रान्सवाल अंग्रेजोंके हाथमें आया तब यह आशा रखी गयी थी कि अंग्रेजोंकी हिन्दुस्तानी प्रजाके दुःखोंका बोझ अब कुछ कम होगा। परन्तु युद्धसे पहले बड़ी सरकार जिन अत्याचारी कानूनोंके विरुद्ध ज़ोरदार आवाज़ करती थी वही अत्याचारी कानून वही बड़ी सरकार हिन्दुस्तानी लोगों पर लादनेको तैयार हो गयी। युद्ध खतम होनेके बाद ट्रान्सवालमें बड़ी सरकारने पीस प्रिज़र्वेशन आर्डिनेन्स जारी किया और अुसके ज़रिये हिन्दुस्तानियोंके ट्रान्सवालमें प्रवेश करने पर अंकुश लगा दिया। ट्रान्सवालमें युद्धसे पहले हिन्दुस्तानियोंकी जो दशा थी और युद्धके बाद जैसी हो गयी यह अुसकी तुलनासे मालूम होगा। अुससे यह भी समझमें आ जायगा कि बड़ी सरकारको अपनी हिन्दुस्तानी प्रजाके हितकी कितनी चिन्ता थी।

तुलना

बोअर राज्यमें	ब्रिटिश राज्यमें
१ ट्रान्सवालके निवासीके रूपमें नाम लिखवानेकी कोअी भी फीस देना अनिवार्य नहीं था।	१ ट्रान्सवालके निवासीके रूपमें नाम लिखवानेकी १ पाअुंड फीस तय की गअी और न देने पर १ से १ पाअुंड तकका जुर्माना और कैद जिसमें छह महीने तककी सजा तय की गअी।
२ व्यापार करनेके सरकारी परवाने लेनेमें ट्रान्सवालके किसी भी भागमें हिन्दुस्तानियोंको कोअी अड़चन नहीं होती थी। बहुतसे अुदाहरण अैसे होते थे कि सिर्फ परवानेकी फीसके रुपये जमा करा कर व्यापार शुरू कर दिया जाता था। जिसमें कोअी कठिनाअी होती तो ब्रिटिश सरकारके राजदूतकी तरफसे संरक्षण मिलता था।	२ जिन लोगोंको युद्धसे पहले बोअर सरकारकी ओरसे व्यापार करनेके परवाने मिले थे वे ही पहलेकी जगहों पर व्यापार कर सकते थे। व्यापारके लिअे नया परवाना हिन्दुस्तानियोंको बसानेके लिअे जो 'लोकेशन' — विशेष मुहल्ले — बना दिये गये थे सिर्फ वहीं मिलता था।
३ ट्रान्सवालके किसी भी हिस्सेमें बिना किसी बाधाके रहा जा सकता था। अुसके लिअे खास अिजाजत लेनेकी जरूरत नहीं होती थी।	३ 'लोकेशन'के सिवा और किसी हिस्सेमें रहनेकी जिसने सरकारसे विशेष अिजाजत न ली हो वह वहां नहीं रह सकता था। अुसे लोकेशनमें ही रहना पड़ता था।
४ हिन्दुस्तानी अपने नामसे जायदाद नहीं खरीद सकते थे परन्तु गोरोंके नामसे खरीद सकते थे। और अैसी करोड़ोंकी सम्पत्ति हिन्दुस्तानियोंने खरीदी है।	४ अब गोरोंके नामसे कोअी भी हिन्दुस्तानी जायदाद नहीं खरीद सकता। ब्रिटिश राज्यके बाद अेक बालिश्त भी जायदाद नहीं खरीदी गअी।

५ लोकेशनमें ९९ वर्षके पट्टे पर जमीन मिल सकती थी।

५ आज तक ९९ वर्षके पट्टे पर मिली हुअी जमीन वापस ले लेनेका प्रस्ताव पास हुआ और आयन्दा जहां जहां लोकेशन बनाये जायं और हिन्दुस्तानियोंको जमीन दी जाय या नहीं अिसका कोअी निर्णय नहीं हुआ।

६ दूसरे प्रान्तके हिन्दुस्तानी ट्रान्सवालके किसी भी भागमें बिना रोकटोकके जा सकते थे।

६ लड़ाअीसे पहलेके ट्रान्सवालके सच्चे निवासीकी भी अर्जी देनेके बादजर तीन तीन महीने तक सुनवाअी नहीं होती थी तो फिर नये आनेवालोंकी तो बात ही क्या?

७ यहांके रहनेवालेकी हैसियतसे पास या परवानेके बारेमें चोंचली मचानेवाला अेशियाअी विभाग नहीं था।

७ नया अेशियाअी विभाग खुल गया और अुसके होनेसे हिन्दुस्तानी बड़ी मुसीबतमें पड़ गये और अुनके लाखों रुपये लुट गये।

८ लड़ाअीसे पहले ब्रिटिश राजदूत हिन्दुस्तानियोंकी रक्षा करता था और किसीके हक मारे नहीं जाते थे।

८ ब्रिटिश अफसरोंने जिन्हें व्यापार करनेके परवाने दिये थे अुन्हें भी कानूनके जालमें अैसी तरहसे तंग करके अिस बातके लिअे मजबूर किया जाता था कि व्यापार बन्द करके लोकेशनमें चले जायं और अिसमें हिन्दुस्तानियोंको लाखों रुपयेका नुकसान होता था।

अूपरकी सूचीसे पता चलता कि बोअर-युद्धसे पहले ट्रान्सवालमें हिन्दुस्तानियोंकी जो दशा थी अुसमें युद्धके बाद ब्रिटिश सरकारके हाथों अुनकी दशा अुलटी बिगड़ गयी। अिसमें भी ब्रिटिश सरकारको संतोष नहीं हुआ। लार्ड मिलनरने सन् १८८५ के कानूनके अनुसार हरअेक हिन्दुस्तानीका नाम फिरसे दर्ज करानेका आग्रह किया। अिस सम्बन्धमें बहुत चर्चा होनेके बाद हिन्दुस्तानियोंके नेताओंके साथ यह समझौता हुआ कि हिन्दुस्तानी स्वेच्छासे नाम दर्ज करवायें। लार्ड मिलनरने यह विश्वास दिलाया कि

अेक बार स्वेच्छासे नाम दर्ज करानेके बाद दूसरी बार नाम लिखवानेकी जरूरत नहीं पड़ेगी और नाम दर्ज करानेवालेको स्थायी निवासी माना जा सकेगा। लेकिन लॉर्ड मिलनरका यह आश्वासन गलत निकला। ट्रान्सवाल सरकारने कुछ सुना नहीं और सन् १९०६में 'ड्राफ्ट आर्डिनेन्स' पास किया। जिस कानूनके अनुसार समूची हिन्दुस्तानी जातिको स्त्री-पुरुष और बच्चोंका फिरसे नाम दर्ज कराना लाजिमी हो गया। यह नया कानून हिन्दुस्तानियोंके लिये बमके गोलेकी तरह चौंकानेवाला साबित हुआ। हिन्दुस्तानी तो लॉर्ड मिलनरके आश्वासन पर निश्चिन्त बैठे थे। परन्तु अुन्होंने देखा कि वह विश्वास धूलमें मिल गया। अितना ही नहीं पड़ोसके दूसरे प्रान्तोंकी सरकारें ट्रान्सवालकी नकल करके हिन्दुस्तानियोंका फैसला करनेको तैयार हो गयीं। दक्षिण अफ्रीकामें अैसी रंग-द्वेषकी राजनीति चलानेमें सभी प्रान्तोंकी सरकारें सफल हो जातीं तो हिन्दुस्तानियोंके लिये दक्षिण अफ्रीकासे भाग जानेके सिवा कोअी अुपाय नहीं रह जाता।

ये राजनीतिज्ञोंकी बातें हुईं। परन्तु सामान्यतः आम रास्तोंमें रेल-गाड़ियोंमें ट्राममें या बगीचोंमें जहां जहां गोरे-कालेका संघर्ष होता वहीं हिन्दुस्तानियोंको अपमान ही सहन करना पड़ता। अैसे अपमान गांधीजीने दक्षिण अफ्रीकाके अपने निवासकालमें अनेक बार सहन किये हैं। अुनकी विगत पाठकोंको गांधीजीकी 'आत्मकथा' में मिल सकती है।

९

'गांधी भाभी'

गांधीजी सन् १८९३ में नेटाल गये। अुसके बाद दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके सामाजिक जीवनके साथ गांधीजी जुड़े हुअे हैं। गांधीजी वहां *मेहमान बनकर लिये गये थे। परन्तु यहां सब कुछ हमारी अिच्छानुसार थोड़े ही हो सकता है? मनुष्य अपनी प्रकृति बन्धनसे अैसा बंधा हुआ होता है कि अुससे छूटना बहुत कठिन है। अथवा शायद तो विधाताके हाथका खिलौना है।* निश्चित हम यह कहते हैं कि जिन परिस्थितियोंने अमाप और हिंसाका नाश करके सत्य और अहिंसाके दिव्य शस्त्रसे संसारका अुद्धार करनेकी नैसर्गिक निधि ही विधाताने गांधीजीको दक्षिण अफ्रीका भेजा था। वे वहां २१ वर्ष रहे। अिन वर्षोंमें अुन्होंने भारी तप किया। परिस्थिति विविध आघातोंमें

स्थिर करके चारों ओर आग जलाकर देह-दमन करनेसे ही तपकी साधना होती हो सो बात नहीं। जीवनके हरअेक अंगका प्रतिक्षण निरीक्षण करके तथा चित्तशुद्धिके प्रयत्नमें लीन रहकर सत्यके परम ध्येयकी आराधना करते रहना और अैसा करते-करते अपने सम्पर्कमें आनेवाले अनेक पीड़ित मानव-बन्धुओंके हृदयको स्नेहयुक्त आश्वासन देकर अिस कष्टमय संसारमें अुनके घावोंको भरनेके लिअे आत्म-समर्पण करना यह श्रेष्ठ तप और श्रेष्ठ साधना है। गांधीजीने अैसी साधना दक्षिण अफ्रीकामें आरम्भ की। दक्षिण अफ्रीकामें २१ वर्षके अुनके कार्यकालका अेक-अेक क्षण अिस तपश्चर्यामें ही व्यतीत हुआ दिखाअी देगा। अुसमें आरम्भसे लेकर अन्त तक कहीं भी क्षति नहीं आअी। किसी भी कार्यमें अपना कर्तापन मानकर अपने व्यक्तित्वको आगे लानेका अुनका प्रयत्न दिखाअी नहीं दिया। अुस शुद्ध जीवनकी तपश्चर्याका वर्णन करनेकी शक्ति मुझमें नहीं। और अिन प्रकरणोंका यह हेतु भी नहीं है। परन्तु दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी लड़ाअीका कुछ भी वर्णन करते समय गांधीजीको केन्द्रमें रखना ही पड़ता। जैसे तिलोंमें तेल ओतप्रोत रहता है और दूधमें जैसे घी ओतप्रोत होता है वैसे ही दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके जीवनमें गांधीजी ओतप्रोत रहे हैं। गांधीजीके बिना दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके जीवनका वर्णन करना आत्मारहित जड़ शरीरका वर्णन करने जैसा होगा। अिसलिअे यह प्रकरण मुझे लिखना पड़ता है। कोअी २ वर्ष पहले पांच-सात हजार मील दूरके देशमें क्या क्या हुआ अिसकी जानकारी हममें से बहुतोंको नहीं है। अुन्हें अिस प्रकरणसे बहुत मदद मिलेगी।

गांधीजीका दक्षिण अफ्रीकामें प्रवेश करते ही जैसे अनुभव हुअे जिनसे अुनका जीवन बदल गया — अुनके जीवनका निर्माण हुआ। अिन सारे अनुभवोंका अुन्होंने अपनी आत्मकथा में वर्णन किया है। हिन्दुस्तानी दक्षिण अफ्रीकामें रुपया कमाने गये थे। जो वहां गये थे अुनमें से अधिकतरको शायद अपनी मातृभाषाका भी ककहरा नहीं आता होगा। किसी भी तरहसे कमाअी प्राप्त करनेकी अुनकी तीव्र अिच्छा थी और अिस अिच्छासे प्रेरित होकर किये गये श्रमसे अुन्होंने धन प्राप्ति भी की परन्तु जाति-अभिमान तथा स्वाभिमान तथा मान-अपमान का और स्वाधिकार का विचार अुन्हें छू भी गया नहीं था। अैसे लोगोंके समूहमें गांधीजी पहुंच गये। अिस प्रकरणमें भिन्न-भिन्न

पोरबन्दरके निवासी और डरबनकी प्रतिष्ठित पेढ़ीके मालिक अब्दुल्ला सेठके बुलाने पर गांधीजी अेक बरसके लिअे दक्षिण अफ्रीका गये थे अुसका निपटारा अुन्होंने अदालतमें लड़कर नहीं परन्तु समाधानकी वृत्तिसे दोनों पक्षोंके हृदयोंमें अेक-दूसरेके लिअे प्रेम पैदा करके कराया। शान्ति और प्रेमके द्वारा दक्षिण अफ्रीकामें हुआ यह पहला कार्य बहुत अप्रसिद्ध और सामान्य होने पर भी दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके जीवनरूपी महलकी पहली अींट जैसा था। यह अींट रखनेके बाद वे फौरन स्वदेश लौट जानेको तैयार हो गये। पहले ही अुपलब्ध जहाजके लिअे वे तैयारी करने लगे। अितनेमें अुन्होंने अखबारोंमें पढ़ा कि नेटालके हिन्दुस्तानियोंका मताधिकार वापस ले लेनेका प्रयत्न नेटाल सरकार कर रही है। यह बात अुन्हें पसन्द नहीं आयी। मताधिकार जैसा कीमती अधिकार कैसे छोड़ा जाय? परन्तु वहांके हिन्दुस्तानी सेठ तो जानते ही नहीं थे कि मताधिकार क्या चीज है। अुनका कोअी गोरा वकील या अन्य परिचित गोरा अेक दिन कृपावश करके अुन्हें दफ्तरमें ले जाता है और अुनके मतके लिअे हस्ताक्षर करा लेता है अितना ही ये सेठ लोग जानते थे। गांधीजीने सब व्यापारियोंको और अुनके बाबुओंको अिकट्ठा किया और अुन्हें मताधिकारका अर्थ और महत्त्व समझाया। परन्तु जाता हुआ मताधिकार वापस कैसे लौटाया जाय? यह तो सामना ही। फिर भी हिन्दुस्तानियोंके प्रथम प्रयत्नके रूपमें अुस समय गांधीजीने हिन्दुस्तानियोंका मताधिकार रद करनेवाले कानूनका विरोध करके ही संतोष माना और अेक अर्जी तैयार करके सैकड़ों हिन्दुस्तानियोंके हस्ताक्षर अुस पर लिअे और अर्जी सरकारके पास भिजवा दी। गांधीजीके अिस प्रथम कार्यसे डरबनके और आम तौर पर नेटालके हिन्दुस्तानियोंका ध्यान अुनकी ओर गया। यह अर्जी भेजनेके लिअे अुन्होंने हिन्दुस्तान लौटनेकी तैयारी बन्द कर दी। अुनके अिस सरल स्वभाव और सेवाभावसे प्रत्येक हिन्दुस्तानीका ध्यान अुनकी ओर खिंचा। जो अुनसे मिला जो अुनके पास आया जिसने अुनसे बातें कीं जो अुन्हें अपने दुःख सुनाने आया वही अुनका बन गया। सब गांधीके पीछे पागल हो गये। अिसीलिअे तो अुन्हें आमजन अुन्हें गांधी साहब या बैरिस्टर साहबके नामसे नहीं बल्कि प्यारे 'गांधी भाअी'के नामसे पहचानते और पुकारते। आजकलके अनेक विशेषणोंसे अलंकृत महात्माजीके सम्बन्धमें जो मीठी मोहिनी होगी अुससे भी शायद अधिक विशाल अुस समय 'गांधी भाअी'के सम्बन्धमें होगी।

१०

नेटाल अिंडियन कांग्रेस

दक्षिण अफ्रीकामें रहनेके बाद गांधीजीने वकालत शुरू की। वकील लोग पेटके लिये वकालत करते हैं। गांधीजीने पेटके लिये वकालत नहीं की। अुन्होंने जनताकी वकालत करना शुरू किया। अदालतमें वकीलकी हैसियतसे तो वे कभी-कभी ही खड़े होते थे। अुन्होंने अदालतोंमें वकालत करके जितने मामले निपटाये अुनसे कभी गुने ज्यादा मामले घर बैठे बैठे निपटाये हैं। वकीलके रूपमें अपना कर्तव्य अुन्होंने संसारमें शान्ति फैलाना माना। वकीलोंने झगड़े और झगड़े बढ़ाना ही अपना धन्धा माना है। और वे यही करते हैं। फिर भी ढोंग असा करते हैं मानो शान्तिके दूत हों! गांधीजीको प्रचलित वकालतके धन्धेके प्रति बड़ी अरुचि थी और असी वकालत अुन्होंने किसी दिन नहीं की। सत्यकी खोज अुनका जीवन-सूत्र ही था। अिस सूत्रको वे वकालत पर भी लागू करते थे। अपने मुवक्किलका मामला सच्चा होता तो ही अदालतमें जाकर वे अुसकी वकालत करते थे। परन्तु असे मामलोंमें भी अदालतमें जानेसे पहले वे घर बैठे या पंचके जरिये दोनों पक्षोंमें समझौता करानेकी खूब कोशिश करते। असा न होता तभी अदालतमें मामला लेकर जाते और अुसमें अुनके मुवक्किलके लाभमें ही परिणाम आता। अिससे आम तौर पर अनके बारेमें यह माना जाता था कि जो मामला गांधीजी हाथमें लेते हैं वह सच्चा ही होता है। कुछ अुदाहरण असे भी हो गये कि मामलेके अधबीचमें या आखिरमें गांधीजीको विश्वास हो गया कि अनके मुवक्किलने अुन्हें झूठी बातें कहकर धोखा दिया है और अुसका पक्ष गलत है। अिसलिअे अुन्होंने बीचमें ही असे मामलोंको छोड़ दिया।

परन्तु असी शुद्ध और प्रामाणिक वकालत करनेके समय अुन्हें मन्दिर मिल जिसने पहले ही हिन्दुस्तानियोंकी सेवाका क्षेत्र अुनको नजर आ गया। और वह दिन दिन विशाल होता गया। अिसलिअे अब कामका करनेके लिअे अेक जिम्मेदार संस्था खड़ी करनेकी जरूरत अुन्हें जान पड़ी। सन् १८९४ के मअी महीनेकी २२ तारीखको अुन्होंने नटाल अिंडियन कांग्रेसकी स्थापना

थी। डरबनमें नेटालके मुख्य माने जानेवाले व्यापारियों और दूसरे लोगोंको अुन्होंने बुलाया और बाकायदा नियम आदि बनाकर अिस संस्थाकी स्थापना की। डरबनके सेठ दाअूद मोहम्मदको अुसका अध्यक्ष बनाया गया और गांधीजी अुसके मंत्री बने। हर साल तीन पाअुंडकी फीस रखी गयी। अिस संस्थाने पहला ही काम जो हाथमें लिया वह था स्वतंत्र हिन्दुस्तानी मजदूरों पर लगनेवाले तीन पाअुंडके नये करका विरोध करके अुसे रद करवानेकी अर्जी देना। यह काम नेटाल कांग्रेसने बहुत ही सफल ढंगसे पूरा किया। जिससे कांग्रेस अब लोकप्रिय हो गयी। अुसने हिन्दुस्तानी जनताकी सेवा भी बहुत की। परन्तु अुसे चलानेमें आर्थिक कठिनाअियां आने लगीं। जो मामला कौम सम्बन्धी होता यानी सरकारके विरुद्ध किसी हिन्दुस्तानीका मामला होता और जिसके फैसलेसे सारे हिन्दुस्तानियोंके हित पर भला या बुरा असर पड़नेकी संभावना होती, वैसे हर मामलेकी फीस गांधीजी कम से कम लेते और वह सीधी कांग्रेसके कोषमें जाती। बहुतसे मुवक्किलोंकी फीस सिर्फ कांग्रेसके सदस्य बनने लायक ही होती थी। अिस तरह कांग्रेसकी आर्थिक स्थितिको गांधीजी संभालते थे। अुसके वार्षिक सदस्य बनानेके लिअे तो अुन्हें लगभग सारे नेटालमें सफर करना पड़ा। अिस प्रकार नेटाल अिंडियन कांग्रेसके मुख्य संचालक गांधीजी ही थे।

सार्वजनिक संस्था चलानेमें अुसकी आर्थिक व्यवस्थाकी गांधीजी बहुत ही चिन्ता रखते थे। मुझे याद है कि साबरमती आश्रममें अपनी अनेक प्रवृत्तियों और समस्त देशके असहयोग आन्दोलनके सतत चलनेवाले काममें भी आश्रमके बही-खाते अुन्होंने खास ही ध्यानपूर्वक देखे हैं और बही-खातेमें जमा-खर्च करनेके तरीकेमें भूल हो तो अुसे भी सुधरवाया है। आश्रममें जो कुछ भेंट आती है अुसका अपने मनचाहे अुपयोग करनेका अधिकार है। मगर नेटाल अिंडियन कांग्रेसके बारेमें यह नहीं कहा जा सकता। अेक बार अैसा हुआ कि अुनके जान-पहचानके अेक भाअी आर्थिक संकटमें फंस गये। अुन्होंने चारों तरफ नजर दौड़ायी। गांधीजीके सिवा कोअी अैसा आदमी अुन्हें दिखायी न दिया जो तुरन्त अुनकी मदद कर सके। गांधीजीके पास निजी रकम नहीं थी। अब भाअीको अिनकार करें तो अुसे निराशा होगी और अुसके मनमें गांधीजीके बारेमें दूसरा कुछ खयाल हो सकता था। परन्तु क्या हो सकता था? आखिर गांधीजीको सूझा कि कांग्रेसका रुपया बैंकमें अुनके नामसे जमा

है। दो-चार दिनमें वापस दे जानेकी शर्त पर कांग्रेसके रुपयेमें से कोअी तीन सौ पौंडका चैक गांधीजीने अुस भाअीको लिख दिया। यह चैक अुन्होंने लिख तो जरूर दिया परन्तु अुन्हें तुरन्त खयाल आया कि अुस आदमी पर अुपकार करनेके खातिर कांग्रेसका रुपया देनेका मुझे क्या अधिकार है? अगर बाद ही कांग्रेसको पैसेकी जरूरत पड़ी तो क्या होगा? अुन्हें लगा कि अुन्होंने कांग्रेसके रुपयेका दुरुपयोग करके महापाप किया है। तीन सौ पौंडकी रकम कोअी छोटी नहीं थी। अिसी विचारमें शाम हो गअी। खाना भी नहीं भाया। सोते वक्त नींद नहीं आअी। "मैंने अैसा पाप क्यों किया? अपने प्रेमके खातिर अुस भाअीको कांग्रेसका रुपया देनेका मुझे क्या अधिकार था? वह रुपया तुरन्त न मिला और मिलनेसे पहले अैसी कंगाल हालतमें मेरी अचानक मृत्यु हो गअी तो कांग्रेसका कर्ज मैं किस तरह चुका सकता?" अिस तरहके विचार जैसे जैसे अुन्हें आते गये वैसे वैसे अुनके हृदयमें असह्य वेदना होती गअी। वे अीश्वरसे प्रार्थना करने लगे और हृदयमें अुन्होंने दृढ़ संकल्प किया कि भविष्यमें सार्वजनिक संस्थाकी रकमका अुपयोग मैं किसी कारणसे कभी नहीं करूंगा। अिस प्रतिज्ञासे हृदयकी वेदना तो कम हो गअी परन्तु वह रकम किसी भी तरह जल्दी मिलनी चाहिये यही विचार अुनके मनमें घुमड़ता रहा। दूसरे दिन सवेरे भी अिसीका ध्यान बना रहा। नहा-धोकर वे नौ बजे दफ्तर गये। वहां जाते ही मुंशीने अुसी समय आया हुआ तार अुनके हाथमें दिया। नेटाल और ट्रान्सवालके बीचकी सरहद पर स्मिथ अेक गांवकी अदालतमें गैरकानूनी ढंगसे सीमाके भीतर घुसनेके मामलेमें ९ हिन्दुस्तानियों पर वारंट निकाला गया था और सबको अदालतमें लाया गया था। वहां गांधीजी अुस पहली गाड़ीसे जा पहुंचे। ९ भारतीयोंके सम्बन्धमें सारी हकीकतें पूछ कर वे अच्छी तरह परिचित हो गये। बादमें अुन्होंने कहा कि मैं मामला तो हाथमें लेता हूं परन्तु तुममें हरअेकको अपनी फीसके तीन पौंड दे देने चाहिये जिसके सिवा हरअेकको नेटाल कांग्रेसका सदस्य बन जाना चाहिये। सबने तुरन्त अुनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। फीका रुपया ले लिया गया और सदस्यताकी रसीद दे दी गअी। सारा रुपया कांग्रेसके नामसे अपनी डायरीमें जमा कर लिया और बादमें अलग मामला हाथमें लिये। अदालतमें मामले चले। सभी आदमी वास्तवमें सरहदके वाशिन्दे थे। परन्तु अपढ़ लोगोंसे अपनी बात समझाना नहीं आता था, अपनी बातको ठीक ढंगसे अदालतमें पेश करना वे जानते नहीं थे और कानूनका भी अुन्हें ज्ञान नहीं था। अिसलिअे सत्ताधारियोंको

यह गंभीर अपराध जैसा मालूम हुआ। परन्तु गांधीजीने वहां जानेके बाद थोड़े ही घंटोंमें अदालतको अुनके निर्दोष होनेका विश्वास करा दिया और सबको छुड़वा दिया।

नेटाल अिंडियन कांग्रेसने नेटालके हिन्दुस्तानियोंके सम्बन्धमें बहुत काम किया और वह नेटालके हिन्दुस्तानियोंकी अधिकारपूर्ण संस्था बन गयी। परन्तु बादमें सत्याग्रहकी लड़ाओीमें गांधीजीको ट्रान्सवालमें ही रहना पड़ा। अिसलिअे अपनी अनुपस्थितिके कारण कांग्रेसका मंत्रिपद अुन्हें छोड़ना पड़ा। अुनकी जगह पर अेक भाओी आये और अुन भाओीकी लापरवाहीसे संस्थामें अव्यवस्था अुत्पन्न हो गयी।

अन्तमें जब नेटालमें सत्याग्रह शुरू हुआ तब अुस मृतप्राय कांग्रेस संस्थाके जरिये काम नहीं हो सकता था। क्योंकि अुस समय जनताका अुस संस्थामें विश्वास नहीं रह गया था। अिसलिअे गांधीजीने नेटाल अिंडियन अेसोसिअेशन नामकी दूसरी संस्था स्थापित की और आखिरी लड़ाओीका सारा काम अुसके जरिये किया।

११

सत्याग्रहका आरम्भ

सन् १८९४ से १९०६ तक दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके जीवनमें कोओी खास अुथल-पुथल नहीं हुआी। अुनके सामान्य दु:खोंकी कहानी तो रोजकी हो गयी थी। सामाजिक जीवनमें हिन्दुस्तानियोंको होनेवाले कष्टोंकी कथा बड़ा दहलाने गुलामी जैसी थी और गांधीजी जहरके ये घूंट धीरजसे पिया करते थे। मौका पड़ने पर जनताकी सेवा करनेको तैयार रहते थे। जोहानिसबर्गमें प्लेगकी अुत्पत्ति हिन्दुस्तानी लोकेशनमें हुआी यह बड़ी चौंकानेवाली बात थी। गोरी जाति और गोरी सरकार अिस छूतके रोगसे बहुत ही डरती थी। परन्तु गांधीजीने समझ-बूझकर काम लेकर दो-चार चुने हुअे आदमियोंको अेकत्र किया और प्राणोंको खतरेमें डालकर तुरन्त अुपाय किये। जिससे प्लेग रुक गया और भविष्यके भारी खतरेसे हिन्दुस्तानी जनता और दूसरे लोग भी बच गये। फिर बोअर-युद्ध आरम्भ हो गया। जिस सरकारकी रक्षामें हम रहते हैं और जिसके राज्य और सत्ताका लाभ अुठाते हैं या

अधिकारमें अुठानेकी अिच्छा रखते हैं अुस सत्ताके संकटके समय यथाशक्ति अुसकी मदद करना हमारा फर्ज है — अिस न्यायसे बोअर-युद्धके मौके पर गांधीजीने घायल सिपाहियोंकी सेवा करनेवाली अेक टोली बनाअी। वह युद्धके क्षेत्रमें खूब घूमी और बंदूकोंकी गोलियों और तोपोंके गोलोंके नीचे रहकर अुसने अनेक घायल सिपाहियोंको अुठा-अुठा कर अुनकी सेवा-शुश्रूषा की। अिसके सिवा नेटालमें जूलू-विद्रोहके अवसर पर भी यही सेवाका काम करके अुन्होंने सैकड़ों घायल जूलुओंकी शुश्रूषा की। अिस समय गांधीजीने अपने जीवनके प्रयोग भी बहुत किये। धंधेमें या युद्धके क्षेत्रमें जहां जाते वहां चाहे जैसी विकट परिस्थितिमें भी अुन्होंने आत्म-निरीक्षणका कार्य सदा जारी रखा और अुसके परिणाम स्वरूप अनेक प्रयोग किये। नेटालमें फिनिक्स आश्रम स्थापित किया। वहां अिन्टरनेशनल प्रिंटिंग प्रेस नामका छापाखाना खोलकर अिण्डियन ओपीनियन पत्र प्रकाशित करने लगे। वहां रहनेवाले भाअी जीवनमें अमुक सिद्धान्तोंका पालन करें और शरीर-श्रम करके सादा और सूंधा जीवन बितायें अिस हेतुसे कायम हुअी अिस संस्थाका दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके राजनीतिक जीवनमें और गांधीजीके जीवनको बनानेमें बड़ा हाथ रहा है। अुनके बारेमें फुटकल बातोंका हम आगे चलकर विचार करेंगे अिसलिअे अभी तो अितना ही देखेंगे कि सत्याग्रहकी लड़ाअीका श्रीगणेश किस तरह हुआ।

लॉर्ड मिलनरके दिये हुअे आश्वासनको खतम करके सन् १८८५ का डच राज्यके समयका पुराना कानून ताजा करके ट्रान्सवालकी धारासभाने १२ सितम्बर, १९ ६ को अेशियाटिक अमेंडमेंट अेक्ट पास किया। अुसे हिन्दुस्तानियोंने खूनी कानूनका नाम दिया। अिस खूनी कानूनके पास होनेसे हिन्दुस्तानियोंके दिल अुबल पड़े। अुनकी कलमोंका सार नीचे लिखे अनुसार है

(१) ट्रान्सवालमें रहनेका अधिकार रखनेवाले सारे हिन्दुस्तानी पुरुष स्त्रियां और आठ बरससे अूपरके लड़के और लड़कियां अेशियाअी दफ्तरमें अपना नाम लिखाकर परवाने लें।

(२) ये परवाने लेते समय पुराना परवाना अधिकारीको सौंप दें।

(३) नाम लिखानेकी दरख्वास्तमें नाम पता जाति अुम्र वगैरा दिये जायें।

(४) नाम लिखनेवाला अधिकारी प्रार्थीके शरीर परकी मुख्य मुख्य निशानियां लिख ले।

(५) प्रार्थीकी सब अंगुलियों और अंगूठेकी निशानी ली जाय।

(६) निश्चित अवधिके भीतर जो हिन्दुस्तानी स्त्री या पुरुष अिस तरहकी अर्जी न दे अुसका ट्रान्सवालमें रहनेका अधिकार रद माना जायगा।

(७) अर्जी न देना बाकायदा जुर्म माना जायगा। अुसके लिये जेल हो सकती है, जुर्माना हो सकता है और अदालतके विवेकके अनुसार देशनिकाला भी दिया जा सकता है।

(८) बच्चोंकी अर्जी मां-बापको देनी चाहिये और अंगुलियोंकी निशानियां लेनेके लिये बच्चोंको अफसरोंके सामने पेश करनेकी जिम्मेदारी भी मां-बापकी मानी जायगी। सोलह सालकी अुम्र होनेके बाद बच्चे अपने परवाने पक्के करा लें।

(९) जो परवाने प्रार्थियोंको दिये जायें वे किसी भी पुलिस अफसरके सामने जब और जहां मांगे जायें तब और वहां जरूर पेश किये जायें। यह परवाना पेश न करना जुर्म माना जायगा। अुसके लिये अदालत कैद या जुर्मानेकी सजा दे सकती है।

(१०) अिस परवानेकी मांग रास्ते चलते मुसाफिरसे भी की जा सकती है।

(११) परवानेकी जांचके लिये अधिकारी घरमें भी प्रवेश कर सकता है।

(१२) ट्रान्सवालके बाहरसे आनेवाले हिन्दुस्तानी स्त्री-पुरुषोंको जांच करनेवाले अधिकारीके सामने अपने परवाने पेश करने ही चाहियें।

(१३) कोअी हिन्दुस्तानी अदालतमें किसी कामसे जाय या महसूलके दफ्तरमें व्यापार या साअिकल रखनेकी परवानगी लेने जाय तो वहां भी अधिकारी परवाना मांग सकता है। यानी किसी भी सरकारी दफ्तरमें अुस दफ्तरसे सम्बन्ध रखनेवाले किसी कामसे जाय तो अधिकारी हिन्दुस्तानीकी बात सुननेसे पहले अुससे परवाना मांग सकता है।

(१४) यह परवाना पेश न करना या अुस बारेमें जो भी हकीकत अधिकारी मांगे अुसे बतानेसे अिनकार करना भी गुनाह है और अदालत अुसके लिये कैदकी या जुर्मानेकी सजा दे सकती है।

यह कानून पास होनेके पहले ही हिन्दुस्तानियोंमें बड़ी खलबली मच गयी। हिन्दुस्तानियोंकी तरफसे सरकार और अधिकारियोंसे अलग मुलाकातें की

तब कहीं स्त्रियों और बच्चोंको अिस कानूनके अनुसार नाम लिखवानेसे मुक्त किया गया। अिस कानूनके पास होनेकी बात जानकर हिन्दुस्तानियोंकी भावनामें अुत्तेजित हो गयी। अिस खूनी कानूनके कारण अत्याचारपूर्ण राजनीति ग्रहण की जा सकती थी। लॉर्ड मिलनरके दिये हुअे वचन बिलकुल खतम हो जाते थे। हिन्दुस्तानियोंको धीरे-धीरे ट्रान्सवालसे खदेड़ देना ही अिस कानूनकी मंशा थी।

जिस दिन यह कानून पास हुआ अुसी दिन जोहानिसबर्गमें अेक विराट सभा हुअी। आठ हजार हिन्दुस्तानियोंमें से तीन हजार अुसमें अिकट्ठे हुअे। गांधीजीने ब्रिटिश अिंडियन अेसोसियेशन द्वारा लोगोंको यह जानकारी करा दी थी कि अिस कानूनका परिणाम हिन्दुस्तानियों पर क्या होगा। कानून पास हो जाय तो क्या किया जाय? अिसका अुपाय गांधीजीने अैसा ढूंढ़ निकाला था जो ट्रान्सवाल सरकारके खयालमें नहीं आ सकता था। सरकारने तो यह मान लिया था कि सब लोग चिल्लाते रहेंगे विरोध किया करेंगे और थोड़े दिन बाद खामोश हो जायंगे। हिन्दुस्तानी सशस्त्र विद्रोह तो कर ही नहीं सकते थे। अुनमें अितनी ताकत ही कहां थी? वैसे सरकार तो यही चाहती होगी कि ये लोग हिंसात्मक विद्रोह करें। अैसा होने पर अुसे हिन्दुस्तानियोंको फौजी बलसे ट्रान्सवालसे बाहर निकाल देनेका कारण मिल जाता। परन्तु सरकारके मुख्य अधिकारियोंको अिस बातका जरा भी खयाल नहीं हो सकता था कि गांधीजी हिन्दुस्तानियोंको हिंसात्मक विद्रोहके बजाय अहिंसात्मक सत्याग्रहका हथियार काममें लेना सिखा देंगे। अुस दिनकी सभामें लोगोंमें बड़ा अुत्साह फैला। अिन तीन हजार हिन्दुस्तानी मर्दोंने बड़ा निश्चय किया अुनमें से अेक भी नामर्द नहीं निकला। खूनी कानूनका अमल होना न होना हमारे हाथमें है। जब तक यह कानून रद्द न हो तब तक अुसे न मानकर हम जेल जानेको तैयार रहें — अैसा प्रस्ताव जब पेश हुआ और सभामें सबसे पूछा गया तो अेकमतसे गगनभेदी आवाज आयी 'हमें यह प्रस्ताव मंजूर है।' गांधीजीका हृदय खुशीसे अुछलने लगा परन्तु साथ ही अभी जिम्मेदारीके भानसे गंभीर भी बन गया।

अिस खयालसे कि अब भी लोगोंको लड़ना न पड़े हिन्दुस्तानियोंका अेक शिष्ट-मंडल विलायत गया। अुसे अैसा प्रयत्न करना था जिससे खूनी कानूनको सम्राट्की स्वीकृति न मिले। गांधीजी अुसके अगुआ थे। वहां जाकर जो प्रयत्न किया गया अुसका परिणाम यह निकला कि कानून पर सम्राट्के हस्ताक्षर न

हुअे और शिष्ट-मंडलकी मुराद पूरी हुअी। शिष्ट-मंडलने अेक और भी महत्त्वका कार्य किया। दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानियोंकी मदद करनेवाली अेक कमेटी स्थापित की। अुसमें मद्रासके भूतपूर्व गवर्नर लॉर्ड अेम्पथील अध्यक्ष और सर मंचरजी भावनगरी कार्यसमितिके अध्यक्ष मुकर्रर हुअे। अिस कमेटीने ठेठ तक दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी सुन्दर सेवा की। शिष्ट-मंडल वापस आ गया और थोड़े समयके लिअे अैसा लगा कि अब शान्ति हो गअी। परन्तु यह शान्ति थोड़े ही समयकी थी। सम्राट्ने ट्रान्सवालके अिस कानूनको मंजूरी नहीं दी जिसे वहाँकी सरकार द्वारा स्वराज्य-भोगी अुपनिवेशके भीतरी प्रबन्धमें हस्तक्षेप करनेके बराबर माना गया। अिससे ट्रान्सवालके गोरे लोगोंका रोष और भी तीव्र और दृढ़ ही गया। दूसरे ही वर्ष जब कौंसिलका नया विधान बना और पहली कौंसिल बैठी तब वही खूनी कानून अुसने दुबारा २२ मार्च १९ ७ को अेकमतसे पास कर दिया। हिन्दुस्तानियोंकी राय और भावनाका अुसने जरा भी खयाल नहीं किया। जिसकी अुसे जरूरत भी नहीं मालूम हुअी। मअी महीनेकी २ तारीखको सम्राट्को यह खूनी कानून मंजूर करना पड़ा।

ट्रान्सवालकी सरकारके अिस कदमके कारण अब लड़ाअी करनेके सिवा हिन्दुस्तानियोंके लिअे दूसरा कोअी चारा न रह गया। फिर भी गांधीजीने सोचा कि झगड़ा न हो तो अच्छा। वे फिरसे सुलहके प्रयत्न करने लगे। अुन्होंने यह अिच्छा ही प्रगट नहीं की कि कानून रद हो जायगा तो सरकारी कार्रवाअीकी सुगमताके लिअे हिन्दुस्तानी स्वेच्छासे नाम लिखा देंगे बल्कि यह भी बताया कि जब तक यह काम पूरा न हो जायगा तब तक सरकारको जबरी मदद भी देंगे। परन्तु सत्ताके नशेमें चूर और रंगद्वेषसे अंधी बनी हुअी सरकारको यह बात पसन्द नहीं आयी। अुसे तो ट्रान्सवालसे हिन्दुस्तानियोंकी हस्ती ही मिटा देनी थी। अैसा कभी न होने देनेका हिन्दुस्तानियोंका अटल निश्चय था। अिसलिअे अन्तमें अुन्हें सत्याग्रहकी लड़ाअी शुरू करनी पड़ी।

सन् १९ ७के जुलाअी मासमें अुस कानूनके अनुसार हिन्दुस्तानी लोगोंको बाकायदा सूचना दी गअी कि प्रत्येक हिन्दुस्तानीको अपना नाम लिखवा देना चाहिये। अिस कामके लिअे सरकारी अधिकारी ट्रान्सवाल प्रान्तमें दौरा करने लगे परन्तु अनकी कुछ चली नहीं। अिसलिअे कानूनके अमलकी जो मियाद मुकर्रर की गअी थी वह बढ़ाअी गअी और सरकारने बड़े रोबसे जाहिर किया कि कानूनको माननेका जो विरोध अब तक हिन्दुस्तानियोंकी दिया

जाता है अुसके अनुसार दी गअी मियादमें जो कानूनके अधीन नहीं होंगे तो अुन्हें बरबाद होना पड़ेगा। अिस प्रकार सरकारने हाथ-पैर तो बहुत पटके परन्तु प्रतिज्ञा लेनेवाले हिन्दुस्तानियोंमें से ९५ फीसदी अुस पर अटल रहे और ८ हजार हिन्दुस्तानियोंमें से सिर्फ ४ सौने नाम लिखवाये। सरकारी हुक्मकी तामील न हो अिसे सत्ता कैसे सहन कर सकती थी? अुसने अपना हथियार अुठाया। कुछ हिन्दुस्तानी नेताओंको देश छोड़कर चले जानेको कहा गया और अैसा न करने पर कैद करनेकी भी धमकी दी गअी। परन्तु नेता कोअी अिस तरह चले जानेवाले नहीं थे। अंतमें सरकारने अुन्हें पकड़ा। थोड़े ही दिनमें धर-पकड़ बढ़ने लगी। गांधीजी तो पहले ही पकड़ लिये गये थे और १ जनवरी १९ ८ को अुन्हें दो महीनेकी सजा दे दी गअी थी। अिस प्रकार सैकड़ों आदमियोंको जेलमें बन्द कर दिया गया। सरकारको आश्चर्य हुआ। अुसने जेलमें लोगोंका भरा तो था कानूनका पालन करवानेके खातिर, परन्तु कानूनका पालन बिलकुल नहीं हुआ। वह सरकारकी कानूनी पुस्तकोंमें ही रह गया। धीमेधीमे सरकार पीछे हटी। अिस समय सरकारकी बागडोर जनरल स्मट्सके हाथमें थी। अुन्होंने सुलहकी कोशिश की। मिस्टर कार्टराअिट नामक अेक मशहूर पत्रकारके जरिये यह समझौता हुआ। ये महाशय जनमें गांधीजीसे मिले। अंतमें अैसा समझौता हुआ कि हिन्दुस्तानी लोग स्वेच्छासे नाम लिखवायें तीन महीनेके भीतर हर हिन्दुस्तानी नाम लिखवा दे तो बादमें खूनी कानून रद कर दिया जायगा। अिस समझौते पर दोनों पक्षोंके हस्ताक्षर हुये और जेलके दरवाजे बीचमें ही खुल गये। २ दिन भी पूरे नहीं हुये थे कि ३ जनवरीको तमाम सत्याग्रही छोड़ दिये गये और कानून रद करनेका वचन दिया गया। दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंको सत्याग्रहके चमत्कारका यह पहला दर्शन हुआ।

गांधीजी बोल अुठे — क्या विचार कर रहे हो? ये भगवानके प्रति श्रद्धा होनेके लक्षण नहीं हैं? मेरी रक्षाकी चिन्ता तुम न करो। जिसकी चिन्ता करनेवाला तो सर्वशक्तिमान प्रभु बैठा है। यह रिवाल्वर रखकर मेरी रक्षा करनेका विचार छोड़ दो।

श्री कैलनबैकने नम्र भावसे कहा — मेरी भूल हुअी। मैं अब आपकी रक्षाकी चिन्ता नहीं करूंगा। यह कहकर अुन्होंने रिवाल्वर जेबसे निकाल कर दूर रख दिया।

श्री कैलनबैकको अीश्वर-श्रद्धाकी कीमती शिक्षा मिली। अुसके बाद अुन्होंने कभी अैसी चिन्ता नहीं की। सन् १९१४ के आखिरी समझौतेके बाद भी अैसा प्रसंग आ गया था और अैसी अफवाह सुनाअी दी थी कि गांधीजी पर हमला हो सकता है। अुस समय जब अिस बारेमें अुचित सावधानी रखनेके लिअे अेक मित्र श्री कैलनबैकसे मिला तब श्री कैलनबैकने अुत्तर दिया था कि

भाअी अपनी रक्षा करनेमें समर्थ हैं। अुनकी चिन्ता करनेकी मुझे

लगाओं। अुनमें से कुछ औसप मियाने और थंबी नायडूने झेलीं। अिसलिये औसप मियांको भी थोड़ी चोट आयी और थंबी नायडूको भी आयी। अितनेमें शोर गुल मच गया। आते जाते गोरे अिकट्ठे हो गये। मीर आलम और अुसके साथी भागे। परन्तु गोरोंने अुन्हें पकड़ लिया। अिस बीच पुलिस भी आ पहुंची। अुन्हें पुलिसके हवाले किया गया। पास ही अेक गोरेका आफिस था। अुसमें मुझे अुठा कर ले गये। थोड़ी देरमें मुझे होश आया तो मैंने अपने मुंह पर झुके हुअे पादरी डोकको देखा। अुन्होंने मुझसे पूछा — आपकी तबीयत कैसी है? मैंने हंस कर जवाब दिया — तबीयत तो ठीक है परन्तु मेरे दांत और पसलियां दुखती हैं। मैंने पूछा — मीर आलम कहां है? अुन्होंने कहा — वह तो पकड़ा गया है और अुसके साथ दूसरे लोग भी। मैंने कहा — वे छूटने चाहियें। डोकने अुत्तर दिया — यह सब तो होता रहेगा। यहां आप अेक पराये आफिसमें पड़े हैं। आपका होठ फट गया है। पुलिस आपको अस्पतालमें ले जानेको तैयार है परन्तु आप मेरे यहां चलें तो श्रीमती डोक और मैं आपकी भरसक सेवा करेंगे। मैंने कहा — मुझे अपने यहां ले चलिये। पुलिसके प्रस्तावके लिये अुनको धन्यवाद दीजिये परन्तु अुन लोगोंसे कहिये कि आपके यहां चलना मुझे पसन्द है। अितनेमें अेशियाअी अधिकारी भी आ पहुंचे। अेक गाड़ीमें मुझे अिस भले पादरीके यहां ले जाया गया। डॉक्टरको बुलवाया गया। अिस बीच मैंने अेशियाअी अधिकारी मि॰ चिमनीसे कहा — मुझे अुम्मीद तो यह थी कि आपके दफ्तरमें आकर दस अंगुलियां देकर मैं पहला परवाना लूंगा। पर यह अीश्वरको मंजूर नहीं हुआ। अब मेरी विनती यह है कि आप अिसी समय कागजात ले आअिये और मेरा नाम लिख लीजिये। मुझे आशा है कि मुझसे पहले आप और किसीका नाम न लिखेंगे। अुन्होंने कहा — अितनी क्या जल्दी है? अभी डॉक्टर आयेगा। आप आराम कीजिये। फिर सब कुछ हो जायगा। औरोंको परवाने दूंगा तो भी पहला नाम आपका ही रखूंगा। मैंने कहा — अैसा नहीं। मेरी यह प्रतिज्ञा है कि मैं जीता रहा और अीश्वरको मंजूर हुआ तो सबसे पहले मैं खुद ही परवाना निकलवाअूंगा। अिसलिये मेरा आग्रह है कि आप कागजात ले आअिये। अिस पर वे गये। मेरा दूसरा काम यह था कि अेटर्नी-जनरल यानी सरकारी वकीलको तार दूं कि मीर आलम और अुनके साथियोंने मुझ पर जो हमला किया है अुसके लिये मैं अुन्हें दोषी नहीं मानता। कुछ भी हो पर मैं नहीं चाहता कि अुन पर फौजदारी मामला चले। मुझे आशा है कि मेरे खातिर

आप अुन्हें छोड़ देंगे। अिस ठहरावके मुताबिक मीर आलम और अुनके साथियोंको छोड़ दिया गया।

मगर जोहानिसबर्गके गोरोंने अेटर्नी-जनरलको अिस प्रकारका कड़ा पत्र लिखा : अपराधियोंको सजा देनेके बारेमें गांधीजीके विचार कुछ भी हों लेकिन वे अिस देशमें नहीं चल सकते। अुन पर जो मार पड़ी है अुसके बारेमें वे चाहे कुछ न करें, परन्तु अपराधियोंने यह मार घरके कोनेमें नहीं मारी। अपराध आम रास्ते पर हुआ है। यह सार्वजनिक अपराध है। कुछ अंग्रेज भी अपराधका प्रमाण दे सकते हैं। अपराधियोंको पकड़ना ही चाहिये। अिस हलचलके कारण सरकारी वकीलने मीर आलम और अुसके साथियोंको फिर पकड़ लिया और अुन्हें छह छह महीनेकी सजा मिली। सिर्फ मुझे गवाहके रूपमें नहीं बुलाया गया।

हम बीमारके कमरेकी तरफ फिर नजर डालें। मिस्टर चिमनी नामधाम लेने गये कि डॉक्टर आ पहुंचे। अुन्होंने मेरी जांच की। मेरा अूपरका होंठ फट गया था अुसमें टांके लगाये। पसलियों वगैराकी जांच करके अुन पर लगानेकी दवा दी। जब तक टांके न टूटें तब तक मुझे बोलनेकी मनाही कर दी। डॉक्टरने निदान किया कि मुझे किसी जगह बहुत सख्त चोट नहीं आयी है। अेक हफ्तेके भीतर मैं बिस्तर छोड़ सकूंगा और मामूली काम काजमें लग सकूंगा। सिर्फ दो-अेक महीने शरीरसे बहुत परिश्रम न करनेकी सावधानी रखनी होगी। यह कहकर वे बिदा हो गये। अिस तरह मेरा बोलना बन्द हुआ परन्तु मेरे हाथ चल सकते थे। कौमके लिअे अध्यक्षके मारफत अेक गुजराती पत्र लिखकर मैंने प्रकाशित करनेके लिअे भेजा। वह पत्र नीचे देता हूं :

मेरी तबीयत अच्छी है। श्री डोक और श्रीमती डोक मेरे लिअे सब कुछ कर रहे हैं और मैं थोड़े ही दिनोंमें फिर काम करने लगूंगा। जिन्होंने मुझे मारा है अुन पर मुझे जरा भी क्रोध नहीं है। अुन्होंने नासमझीमें यह काम किया है। अुन पर कोअी मुकदमा चलानेकी जरूरत नहीं है। अगर अन्य लोग शान्त रहेंगे तो अिस किस्सेसे भी हमें लाभ ही होगा। हिन्दुओंको मनमें जरा भी रोष न रखना चाहिये। मैं चाहता हूं कि अिससे हिन्दू-मुसलमानोंके बीच दुश्मनी पैदा होनेके बजाय मिठास पैदा हो। और खुदासे — अीश्वरसे — मैं यही मांगता हूं।

मुझ पर जितनी मार पड़ी अुससे ज्यादा पड़े तो भी मैं अेक ही सलाह दूंगा। वह यह कि सभीको दस अंगुलियां देनी चाहिये। अिसीमें कौमका और गरीबोंका हित और रक्षण है।

अगर हम सच्चे सत्याग्रही होंगे तो मारसे या भविष्यमें होनेवाले घावोंके डरसे जरा भी भयभीत न होंगे।

जो दस अंगुलियोंके बारेमें समझ रहे हैं अुन्हें मैं अज्ञानी समझता हूं।

मैं खुदासे दुआ मांगता हूं कि वह कौमका भला करे, अुसे सच्चे रास्ते लगाये और हिन्दू-मुसलमानोंको मेरे खूनकी धारसे जोड़े।

अिस पत्रका आश्चर्यजनक असर हुआ। लोगोंमें शान्ति कायम हुअी। आपसका सन्देह दूर हुआ। और गांधीजीने हमला करनेवाले पठानों पर नालिश न की और खुद अुन्हें छुड़वा दिया, जिससे अुनके हृदय पर भी चमत्कारिक प्रभाव हुआ। ये पठान बादमें गांधीजीके सहायक बन गये। सन् १९१४में अेक बार ट्रान्सवालकी अेक सभामें गांधीजीको निमंत्रण दिया गया था। वहां कुछ मुसलमानोंने फसाद किया और गांधीजी पर घातक हमला करनेकी तैयारियां कीं। अितनेमें अुन पठानोंमें से मीर आलम पठान हाथमें बड़ा छुरा लेकर सामने आ गया और बोला — "यकीन रखना, गांधी भाअीको जरा भी चोट पहुंचानेवालेको मैं यहीं ढेर कर दूंगा।" अिस विकराल पठानसे दंगाअी दब गये और भाग गये। अिस तरह गांधीजीके जीवनसे हिन्दुस्तानियोंका वातावरण भी शुद्ध होने लगा। अच्छे हो जानेके बाद वे नेटाल गये। डरबनमें रातको अेक सभा हुअी। अुसमें भी फसादियोंने अेक षड्यंत्र रच रखा था। कुछ मित्रोंने सभामें होनेवाली जोखिमके बारेमें गांधीजीको सावधान कर दिया था और वहां न जानेका आग्रह किया था। परन्तु गांधीजीने कह दिया कि कौम मेरी मालिक है और मैं अुसका सेवक हूं। कौमके भाअी मुझे हुक्म दें और मैं न जाअूं तो मेरे लिअे शोभाकी बात नहीं होगी। अिस तरह चेतावनी मिलने पर भी गांधीजी निडर होकर सभामें गये। सभामें शोरगुल मचा। रातका समय था। हमला होनेकी तैयारी थी। सभास्थानकी बिजलीकी बत्तियां अेकाअेक बन्द हो गयीं। परन्तु गांधीजीको मालूम न हो अिस तरह सामान्य वेशमें युवकोंकी अेक टोली मिस्टर बैक-मुडने नामक अेक प्रसिद्ध बॉक्सरकी सरदारीमें अुस सभामें बैठी हुअी थी। अुसने ठीक समय पर गांधीजीकी रक्षा की।

अिस तरह समझौतेके सिलसिलेमें बहुत गलतफहमी पैदा होनेके कारण जो अवांछनीय घटनाअें हुअीं अुनके कारण भविष्यमें अुनके प्रेरकोंको पछतानेका समय आ गया। परन्तु गांधीजीकी आत्मिक साधनामें अिन प्रसंगोंने अद्भुत सामर्थ्यका सिंचन किया।

१३
फिर लड़ाअी शुरू हुअी

पत्र समझी जैसा लगा जिसका भी कारण था। पत्रकी दो बातें अच्छे बहुत बुरी लगी (१) कानून रद नहीं करोगे तो हिन्दुस्तानी स्वेच्छासे जिस हुबे रजिस्टर बना देंगे — यह तो मानो निश्चय हुआ। और (२) मांगी हुआ वस्तु न मिली तो हम भी अमुक कदम मुठायेंगे" — यह समानताका हक बताना हुआ। जिन दो बातोंमें दक्षिण अफ्रीकाकी गोरी सरकारको हिन्दुस्तानियोंकी मुद्धतता मालूम हुआ। परन्तु हिन्दुस्तानियोंने जिससे भी आगे अेक कदम मुठाया। अुन्होंने सरकारके मुत्तरकी राह देखे बिना दिन निश्चित करके अपनी प्रतिज्ञाको अधिक निश्चयात्मक बना दिया। जिस मियादको सरकारने अल्टी मेटम माना। अैसा अल्टीमेटम देनेका जो प्रसंग गांधीजीके भारतमें अनेक बार अपस्थित हुआ था वह जिस परिस्थितिसे मिलता-जुलता है और गिरमिटकी अनिष्ट पद्धतिको बन्द करनेसे सम्बन्ध रखता है। अतः यहां अुसका अुल्लेख करना अप्रस्तुत नहीं होगा। वह जिस प्रकार है

गांधीजी हिन्दुस्तान आये अुसके बाद सन् १९१७ में भारतकी कलंकस्वरूप गिरमिटकी प्रथाको बन्द करनेका आन्दोलन अुन्होंने आरम्भ किया। जिस आन्दोलनमें हिन्दुस्तानके सभी राजनीतिक दल शामिल हुअे। बम्बजीके टाअुनहॉलमें बम्बजीके सभी नेता अेक ही मंच पर जिकट्ठे हुअे। जिनरल या मॉडरेट नेशनलिस्ट या विजिल्टोमेट सहकारी या समाज-सुधारक वगैरा सभी दलोंके नेता पहले-पहल अेक ही कामके लिये अेक मंच पर अुपस्थित हुअे। सभाके सभापति थे सर जमशेदजी जीजीभाजी गिरमिट प्रथाको रद करनेका प्रस्ताव रखनेवाले थे गांधीजी और अुसका अनुमोदन करनेवाले थे तिलक महाराज। प्रस्तावके सम्बन्धमें प्रारंभिक बातचीत करते समय बहुतोंका यह आग्रह था कि प्रस्तावमें यह मांग की जाय कि देशकी प्रतिष्ठाके खातिर भी भारत-सरकार गिरमिट पद्धतिको तुरन्त बन्द कर दे। गांधीजीने देखा कि हम अपनी ताकतसे गिरमिट प्रथा तुरन्त बन्द करनेकी मांग करते हों तो अैसा प्रस्ताव सचमुच सरकारको कठिनाजीमें डालने जैसा है। और बिना ताकतके सिर्फ घटाटोपके खातिर तुरन्त शब्दका अुपयोग करना हो तो अपनेसेकी दृष्टिमें जिस शब्दका कोजी अर्थ नहीं। जिसलिये गांधीजीने यह अनुमान लगा लिया कि सब नेताओंमें जिस प्रश्नके बारेमें कितनी तीव्रता है और अुस प्रस्तावमें परिवर्तन कर दिया। जो प्रस्ताव अमर्यादित था अुसमें ३१ मजीसे पहले शब्द रखकर अुस मर्यादित कर दिया। सारे देशके मुख्य मुख्य शहरोंमें यह मांग करनेवाले सैकड़ों तार

वाअिसरॉयके पास गये कि "३१ मअीसे पहले गिरमिटकी गुलामीकी प्रथा बन्द होनी चाहिये।" गांधीजीने अिस सम्बन्धमें वाअिसरॉय लॉर्ड चेम्सफोर्डसे मुलाकात की तब अुन्होंने ३१ मअीकी दी हुअी मियादके बारेमें आपत्ति अुठाअी। कारण अधीन प्रजा अिस तरह मियादी मांग करे, तो अुसका यही अर्थ होगा कि प्रजा सत्ताधारियोंसे जो मांग करती है अुसके पीछे अुस पर अमल करानेके लिअे अुसके पास काफी ताकत मौजूद है। वाअिसरॉय लॉर्ड चेम्सफोर्डको हिन्दुस्तानियोंकी यह मांग अप्रिय लगी। अधीन प्रजाका अैसी अुद्धत मांग करना अुन्हें पसन्द नहीं आया। परन्तु गिरमिटके सवालके पीछे भारतीय जनताके निश्चय-बलका विश्वास हो जानेके कारण अुन्होंने तुरन्त अिस प्रथाको भारत-रक्षा-कानूनके आधार पर स्थगित करनेका हुक्म दिया और भारत-मंत्रीके द्वारा सदाके लिअे रद करवा दिया। गांधीजीने अिस कार्य-पद्धतिका पहला प्रयोग दक्षिण अफ्रीकामें हमारे कानूनको रद करवानेका निश्चयपत्र ट्रान्सवालकी सरकारको भेजकर किया था। सरकारको अुसका खटकना स्वाभाविक ही था। परन्तु अुसकी चर्चा गोरोंमें अैसी हुअी जिससे हिन्दुस्तानी लोगोंका वातावरण शुभ हो गया और वे लड़ाअीके लिअे तैयार हो गये। जनरल स्मट्सने भरी धारासभामें यह चेतावनी दी कि "हिन्दुस्तानी लोग गैरजिम्मेदार आन्दोलनकारियोंके प्रभावमें आवेंगे तो कुचल दिये जायंगे।" दूसरी तरफ हिन्दुस्तानियोंने भी लड़ाअीके लिअे कमर कस ली।

अिस तरह हिन्दुस्तानियोंका वायुमंडल गरम होने लगा। अुसमें अेक और नअी शक्ति प्रकट हुअी। अिस बारकी लड़ाअीमें नेटालके हिन्दुस्तानी भी शरीक हो सकते थे। अिमिग्रेशन-कानूनके कारण बाहरका कोअी हिन्दुस्तानी कितना ही पढ़ा-लिखा क्यों न हो तो भी वह ट्रान्सवालमें प्रवेश नहीं कर सकता था। यह कानून भी मुख्यतः हिन्दुस्तानियोंके विरुद्ध होनेके कारण रंगभेदसे भरा और अपमानजनक था। और हिन्दुस्तानके श्री गोखले या श्री फीरोजशाह मेहता जैसे अधिकसे अधिक शिक्षित और अग्रगण्य नेता भी ट्रान्सवालमें प्रवेश नहीं कर सकते थे। परन्तु गोरी चमड़ीका कोअी भी कंगाल और निरक्षर गुण्डा वहां प्रवेश कर सकता था। अिसमें हिन्दुस्तानका और न्यायभावनाका दोनोंका अपमान था। अिस कानूनका विरोध करना आवश्यक था। अिसलिअे लड़ाअीका क्षेत्र बढ़ा। नेटाल प्रान्तको जो सत्याग्रहकी लड़ाअीसे अलग था अिसमें शामिल होनेका निमंत्रण

मिला। अिस लड़ाअीसे पहले भी गांधीजीने समझौतेके प्रयत्न किये थे। सरकारने कहा — अमुक हिन्दुस्तानियोंके प्रवेशको निषिद्ध माना जाय और अिमिग्रेशन-कानूनमें रंगभेद रखने दिया जाय तो यह कानून रद्द किया जायगा। गांधीजी जैसी बातको मंजूर कैसे करते? अुन्होंने साफ अिनकार कर दिया। और दूसरी लड़ाअी आरम्भ हुअी।

यह आरम्भ करनेके पारसी युवक श्री सोराबजी शापुरजी अडाजणियाने किया। सोराबजी पारसी जातिके भूषण थे। (भगवानकी अिच्छासे वे कुछ वर्ष पहले गुजर गये।) अुस समय अुन्होंने साहस करके यह लड़ाअी आरम्भ की थी। सरकारको चेतावनी देकर वे २४ जून १९ ८ को ट्रान्सवालमें दाखिल हुअे। सरकारने अुन्हें पकड़ा। और २ जुलाअीको फोक्सरस्टके मजिस्ट्रेटने अुन्हें अेक मासकी सजा दी। अिस अरसेमें लोगोंका जोश बढ़ा। १२ जूनके दिन सरकारके वचन-भंगके विरुद्ध अपना पुण्यप्रकोप प्रगट करनेके लिअे हिन्दुस्तानियोंकी अेक जबरदस्त सभा हुअी और अुसमें दो हजार ऐच्छिक रजिस्टर जला दिये गये। अितना ही नहीं जिन्होंने स्वेच्छासे लिये हुअे रजिस्टर जला डाले अुन्होंने सरकारको खुली चुनौती देकर अपने नाम भी जाहिर किये। अिस प्रकार जलाये हुअे रजिस्टरोंकी सूची ट्रान्सवाल अिंडियन असोसिअेशनके दफ्तरमें रखी गअी थी और अिस सूचीको बादमें समझौतेके समय सरकारने मंजूर किया था। अब सरकारके अिस कानूनकी क्या कीमत रही? कानूनके खिलाफ लड़नेका यह ढंग सरकारको बुरा लगा। वह चौंक गअी। अुसने फिर नेताओंको बुलवाया। प्रिटोरियामें दोनों तरफके नेताओंकी अेक परिषद हुअी। मध्यस्थके रूपमें मि॰ आल्बर्ट कार्टराअिट नियुक्त किये गये। समझौतेकी बातचीत हुअी। परन्तु अुससे कुछ काम नहीं बना। सरकार अिमिग्रेशन-कानूनमें और रजिस्ट्रेशनके कानूनमें कुछ सुधार करनेको राजी हुअी परन्तु कानून रद्द करनेसे अुसने अिनकार कर दिया। अिसलिअे परिषदसे कुछ काम नहीं हुआ। फिर भी सरकारने अेक नया कानून बनाकर यह मानकर अूपरी सुधार किये कि सत्याग्रही अिन सुधारोंसे सन्तुष्ट हो जायंगे। परन्तु सत्याग्रहियोंने ये परिवर्तन स्वीकार नहीं किये और लड़ाअी जमी।

श्री सोराबजीके आरम्भके बाद नेटालके नेताओंका आना हुआ। वहांके श्री दाअूद सेठ और पारसी रुस्तमजी वगैरा कुछ मुख्य व्यापारी नेटालकी हद लांघकर ट्रान्सवालमें घुसे। सरकारने अुन्हें भी योग्यतानुसार सजायें दीं। अिस

प्रकार अेक ओर लड़ाओी आरम्भ हुओी और दूसरी ओर रोडेशिया प्रान्तने भी हिन्दुस्तानियोंको न आने देनेके लिअे अिमिग्रेशन-कानून बनाया, परन्तु बड़ी सरकारने असे मंजूरी नहीं दी। आरम्भ हुअे सत्याग्रहका यह तात्कालिक परिणाम माना जा सकता है। नेटालकी मददसे ट्रान्सवालके हिन्दुस्तानियोंका अुत्साह बढ़ा। अुन्होंने भी व्यापारके या अन्य जो कानून थे अुन्हें तोड़-तोड़कर सरकारको खुले तौर पर चुनौती देना शुरू किया। यह दूसरी लड़ाओी तो पहलीसे भी कओी गुनी अुत्साहवाली निकली। ट्रान्सवालकी जेलें और हवालातें ठसाठस भर गओीं। कुछ हफ्तोंमें तो ट्रान्सवाल जैसे छोटेसे प्रान्तमें सजाओंका औसत हररोज चालीस-पैंतालीस रहने लगा। बिना परवानेके हिन्दुस्तानी फेरियां लगाते, बिना परवानेके व्यापार करने बैठ जाते, बिना अिजाजतके ट्रान्सवालके हिन्दुस्तानी नेटालमें जाकर वापस ट्रान्सवालमें घुस जाते और पकड़े जाते। अिस प्रकार बहुत बड़ी संख्यामें लोग पकड़े गये।

सरकारने भी हिन्दुस्तानियोंके अिस जोशको कुचल डालनेके लिअे कमर कस ली। अुसने देखा कि हिन्दुस्तानियोंके दिलोंसे जेलकी सजाका डर भाग गया है, अिसलिअे अुसने ट्रान्सवालकी जेलोंमें कैद हिन्दुस्तानी सत्याग्रहियों पर जुल्म करना शुरू किया। अुनसे पत्थर तुड़वाने लगी और पाखाना-सफाओीका काम भी कराने लगी। परन्तु अिससे सत्याग्रही डरे नहीं, अिसलिअे सरकारने दूसरा रास्ता ढूंढ निकाला। सैकड़ों मनुष्योंको पुर्तगाली अुपनिवेश डेलागोआ-बे नामक बन्दरसे जहाजमें हिन्दुस्तानकी तरफ रवाना करके मद्रासमें अुतार दिया। अैसी दो टोलियां सन् १ ९ में मद्रासमें अुतारी गओीं। जिन्हें हिन्दुस्तान भेजा गया था वे ज्यादातर मद्रासकी तरफके रहनेवाले थे। अुनमें अुत्तर हिन्दुस्तान और बम्बअीकी तरफके रहनेवाले भी थे। अिन सब लोगोंको कोओी सूचना या तैयार होनेका समय दिये बिना ही जहाज पर चढ़ा दिया गया था। अुनके लिअे हिन्दुस्तानकी भूमि बिलकुल अनजान थी। वे सब ट्रान्सवालमें ही पैदा हुअे थे। हिन्दुस्तानमें अुनका कोओी सगा-सम्बन्धी नहीं था, रहनेको भी जगह नहीं थी। अैसी निराधार अवस्थामें अनजान आदमियोंको खाने-पीने या ओढ़नेके किसी साधनके बिना अनजान देशमें फेंक देना कोओी कम जुल्म था? परन्तु अिससे अेक फायदा हुआ। अिन लोगोंके निर्वासनसे हिन्दुस्तानकी सारी जनता अधिक जाग्रत हो गओी। दक्षिण अफ्रीकाके प्रवासी भारतीयोंकी मुसीबत-भरी हालतकी तरफ अुसकी आज तक जो लापरवाही थी वह दूर हुओी। चारों तरफसे अिसका

विरोध हुआ। अुसके प्रति प्रकोप प्रगट हुआ। मद्रासमें श्री मनेसा नटेसनने सभी निर्वासित भाअियोंकी हर तरहसे सेवा की। और अपने 'अिंडियन रिव्यू' मासिक द्वारा तथा दूसरे अखबारोंके जरिये दक्षिण अफ्रीकी सरकारके अिस कदमकी आलोचना की। परिणामस्वरूप मद्रास कलकत्ता बम्बअी दिल्ली अिलाहाबाद वगैरा बड़े-बड़े शहरोंमें नेताओंने सभायें करके दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानियों पर गुजरनेवाले जुल्मोंके खिलाफ विरोध प्रगट करके अुन्हें अुचित सहायता देनेकी अपनी तैयारी बताओ और अुसकी तरफ भारत-सरकारका ध्यान खींचा।

अिंग्लैंडमें गांधीजीके प्रयत्नसे लॉर्ड अेम्पथीलकी अध्यक्षतामें स्थापित कमेटीने भी बहुत मदद की। अिसके अलावा अुसने सरकारके साथ और अखबारोंमें दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी सत्याग्रहकी लड़ाओके सम्बन्धमें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण चर्चा करके अिंग्लैंडकी जनताका और सरकारका ध्यान खींचा।

ट्रान्सवालके कुछ न्यायप्रिय गोरोंने भी अिसमें मदद की। मि. विलियम हॉस्केनकी अध्यक्षतामें हिन्दुस्तानियोंको सहायता देनेके लिअे गोरोंकी अेक कमेटी स्थापित हुओ। अुस कमेटीने 'लंडन टाअिम्स' को अपना वक्तव्य भेजा। और अिसी अर्सेमें नेटाल और रोडेशियामें हिन्दुस्तानियोंके विरुद्ध जो कानून बने अुनका भी अिस कमेटीने बहुत विरोध किया। अिस प्रयत्नके परिणाम-स्वरूप सरकारको वे कानून रद करने पड़े।

अिस तरह चारों ओरसे नैतिक सहानुभूति मिलने लगी फिर भी असली जोर तो हिन्दुस्तानियोंको ही लगाना था। श्री जोसेफ रॉयपन बैरिस्टर, श्री थंबी नायडू, श्री पी. के. नायडू, श्री क्रिस्टोफर वगैरा अनेक शिक्षित और दक्षिण अफ्रीकामें जन्मे हुओ हिन्दुस्तानियोंने अिस सत्याग्रहकी लड़ाओमें अच्छा भाग लिया। सब दो-दो चार-चार बार जेलयात्रा कर आये। श्री सोराबजी तो सात बार जेलकी यात्रा कर आये। श्री प्रागजी देसाओ भी पाँच-छह बार हो आये। अिन सभी भाअियोंका अुत्साह अनोखा था। जेलोंमें अनेक दुःख अुठाने पड़े अुपवास करके अुनका विरोध करना पड़ा फिर भी अुनके अुत्साहमें कमी नहीं आयी। ट्रान्सवालकी आठ हजारकी आबादीमें से अिस तरहकी लगभग दो हजार सजायें हुओ थीं। गांधीजीको अिस दूसरी लड़ाओमें दो बार जेलकी सजा हुओ थी। ७ सितम्बर १९०८को वोक्सरस्टमें गांधीजीको पकड़ा गया और अेक सप्ताह बाद अुन पर मुकदमा चलाकर वहाँके मजिस्ट्रेटने दो महीनेकी सजा

दी थी। फिर १५ जनवरी १९०९को अुन्हें दुबारा वॉक्सरस्टमें पकड़ा गया और २४ तारीखको मुकदमा चलाकर तीन महीनेकी सजा दी गअी थी। अिस प्रकार हिन्दुस्तानियोंने कअी बार जेलमें जाकर अनेक कष्ट अुठाये। अिन कष्टोंसे श्री नागापन् जैसे अुत्साही नौजवानकी जेलसे निकलनेके बाद तुरन्त ही मृत्यु हो गअी। अुनके शरीर जर्जर हो गये थे। और कुछ बरबाद हो गये। अिनमें श्री काछलिया सेठका त्याग अनुपम था। वे ट्रान्सवाल अिंडियन असोसियेशनके अध्यक्ष थे। अिसलिअे अुनके प्रति तो सरकार और गोरे लोगोंका ध्यान आकर्षित होता ही। गोरे व्यापारियोंने श्री काछलिया सेठ पर दबाव डाला कि वे अिस आन्दोलनसे अलग रहें। गोरे व्यापारी काछलिया सेठके साहूकार ठहरे। दक्षिण अफ्रीकाके व्यापारमें व्यापारीकी सारी पूंजी लगी रहती थी और अुसके पास दुकानमें अपनी पूंजीसे कअी गुनी कीमतका माल होता था। दुकानकी प्रतिष्ठा पर गोरे व्यापारी हिन्दुस्तानी व्यापारियोंको अमुक मियादके भीतर पैसे चुकानेकी शर्त पर माल देते थे। सत्याग्रहकी लड़ाअीमें क्या हुआ तन और मन व्यापारको किस तरह संभाल सकता था? अिस पर भी मांगनेवालोंका जान-बूझकर तकाजा होता था। परन्तु श्री काछलिया सेठ अपनी बात पर अडिग रहे। साहूकारोंकी सभा हुअी। अुसमें श्री काछलिया सेठको बुलाया गया और खूब धमकियां दी गअीं तुम्हारी अिज्जत चली जायगी तुम्हारा व्यापार नष्ट हो जायगा तुम्हारा माल मिट्टीके भाव नीलाम होगा और हम अपना लेना पाअी-पाअी वसूल करनेमें जरा भी दर नहीं करेंगे। अिसलिअे तुम अपना भला चाहते हो तो अिस आन्दोलनसे अलग रहो। अिन धमकियोंका जवाब श्री काछलिया सेठने दृढ़तासे दिया "आपके द्वेष भावसे मेरा व्यापार नष्ट होता हो तो भले ही हो जाय परन्तु स्वीकार की हुअी देशसेवा करनेमें मैं पीछे कदम तो हरगिज नहीं हटा सकता। श्री काछलिया सेठ पहाड़की तरह अटल रहे। द्वेषी गोरे व्यापारियोंने अुन पर दावे किये। श्री काछलिया सेठने पूरी औमानदारीसे अपनी दुकानका सारा व्यापार अदालतको सौंप दिया और वर्षोंका जमा हुआ अपना व्यापार नष्ट हो जाने दिया। यह सब सहन करके कठिनाअियोंकी भट्ठीमें से श्री काछलिया सेठ शुद्ध कंचन बनकर बाहर निकले। अंतमें गोरे व्यापारियोंने और हिन्दुस्तानियोंने अुनकी मर्दानगीकी कदर तो की ही। लड़ाअी खतम होनेके बाद व्यापारीके रूपमें भी श्री काछलिया सेठकी प्रतिष्ठा अच्छी मानी गअी और वे फिर संपन्न हो गये।

अुसका वर्णन अुनके साथी श्री हाजी हबीबने अेक सभामें मार्मिक शब्दोंमें किया था। शिष्ट-मंडलके ट्रान्सवाल वापस आनेके बाद जोहानिसबर्गमें मुसलमान भाअियोंने श्री हाजी हबीबको मानपत्र देनेके लिअे अेक सभा की। अुसमें गांधीजीको भी आमंत्रण दिया गया। श्री हाजी हबीबकी सभाकी कदर बहुतसे भाअियोंने अुनकी बड़ाअी करके की। अुन्होंने शिष्ट-मंडलके सदस्यकी हैसियतसे अिंग्लैण्डमें अुनके द्वारा की गअी सेवाका वर्णन भी किया। गांधीजीने भी श्री हाजी हबीबकी सेवावृत्ति अुनके सरल स्वभाव और देशके प्रति अुनके भक्तिभाव आदिका वर्णन किया। अिन सबके अुत्तरमें श्री हाजी हबीबने सभामें बताया कि "मेरे मुसलमान भाअी मुझे जो अिज्जत दे रहे हैं अुसका कारण मैं अच्छी तरह समझता हूं। अिंग्लैण्डके शिष्ट-मंडलमें अुन्होंने मुझे गांधी भाअीके साथ भेजा और वहां मैंने जो छोटा काम किया अुसकी कद्र करके वे मेरा आदर करें अिसमें कोअी बुराअी नहीं है और सचमुच मैंने बहुत काम किया है। अपने कामकी और अुसके असरसे होनेवाली थकानकी मैं क्या बात कहूं? हमारे गांधी भाअी रातको जो पत्र लिखते अुनके लिफाफों पर हाथके टिकिट चाटकर अेक बजे तक चिपका कर मैं थककर चूर हो जाता था। अैसे मेरे कठोर परिश्रमके लिअे आप सब भाअी मेरा आदर करते हों तो जरूर मैं अुसके योग्य हूं।" श्री हाजी हबीबने गांधीजीके परिश्रमका वर्णन अिन मनोरंजक शब्दोंमें किया था। परन्तु अिस शिष्ट-मंडलके कामके सिवा गांधीजीने जो काम किया अुसके प्रभावसे अुनके अपने और भारत-भूमिके भावी जीवनकी रूपरेखा निर्धारित हो गअी। अुस समय देशभक्त विनायक सावरकर, श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा और श्री हरदयाल वगैराकी क्रांतिकारी मंडली अिंग्लैण्डमें थी। अुनके साथ हिन्दुस्तानके भविष्यके बारेमें गांधीजीकी जी खोलकर चर्चा हुअी। हिंसा अहिंसा सत्याग्रह विप्लव और अिस स्वराज्यके लिअे अिन सब साधनोंका विचार होता था वह स्वराज्य कैसा होना चाहिये आदि अनेक विषयों पर चर्चायें हुअी। गांधीजीकी चर्चा सिर्फ चर्चाके लिअे नहीं होती; बल्कि अुसके अनुसार आचरण करनेके लिअे होती है। अिन सारी चर्चाओंमें गांधीजीने जो कुछ पाया अुसके परिणामस्वरूप अुन्होंने किल्डोनन कैसल नामक जहाजमें ही 'हिन्द स्वराज्य' नामकी पुस्तक लिखी। यह जहाज १३ नवम्बरको अिंग्लैण्डसे रवाना हुआ था। अिस पुस्तकके विषयका या अुसके गुण-दोषोंका वर्णन करना मेरी शक्तिसे बाहरका काम है। मेरी यह नम्र मान्यता है कि जिन्हें अिस

पुस्तकको नहीं पढा हो वह गांधीजीकी प्रवृत्ति और सत्याग्रहकी खूबीको नहीं समझ सकता। यह पुस्तक हिन्दुस्तानके स्वराज्य और अुसे प्राप्त करनेके आवश्यक साधन सत्याग्रह आदिकी सभी विचारसरणीका निचोड़ है। यह पुस्तक अुन्होंने सन् १९ ९ में लिखी थी। आज ३४ वर्ष बीत जाने पर भी गांधीजीकी हरअेक प्रवृत्ति अुस पुस्तकमें बताये हुअे सूत्रके मूर्तरूपमें विकसित हुअी है। ३४ वर्ष पहले गांधीजीने चरखा देखा तक न होगा। सन् १९१६-१७ में अुन्होंने पहले-पहल पुराने ढंगका चरखा किसी घरकी छतके कूड़े-करकटमें से अुसी समय अुतारा हुआ देखा था। तब अुसके दर्शन करके अुन्हें अैसा आनन्द हुआ मानो अुन्होंने हिन्दुस्तानके तारनहारके दर्शन किये हों। अैसे चरखेको अुन्होंने चौतीस वर्ष पहले देखे बिना भी भारतका तारनहार मान लिया था। यह पुस्तक सारे जगतके कल्याणके लिअे लिखी गयी गांधीजीकी पहली पुस्तक है। अिसे हम भारतकी स्वराज्य-गीता कह सकते हैं।

गांधीजीका हिन्द स्वराज्य प्रकाशित हुआ तब अुसके विषयमें विलायतमें और दक्षिण अफ्रीकामें बड़ी चर्चा हुअी। अुसमें बताये गये विचार अुस युगके लिअे नये थे। जो प्रथा जो व्यवहार, जो पद्धति देशके लिअे और मानव-जातिके लिअे लाभदायक मानी जाती रही अुसका गांधीजीने खंडन किया। जो धंधे और अुन्हें करनेवाले लोग प्रतिष्ठित और परोपकारी माने जाते थे गांधीजीने अुनकी निंदा की और अुन्हें अनर्थकारी बताया। जो बड़ा निकृष्ट और तुच्छ समझा जाता था अुसे अूंचा समझा। अैसे विचारोंसे बहुतसे लोग विचारमें पड़ गये बहुतसे घबरा गये और बहुतोंको क्रोध आया। अैसे मित्रों और अपरिचित सज्जनोंने गांधीजीसे सवाल-जवाब किये। अिस स्थान पर मैं अैसे अेक-दो पत्र दे रहा हूं, तो हिन्द स्वराज्य में प्रकट किये गये विचारोंके बारेमें स्पष्टता हो जायगी।

फागुन बदी ७ सं १९६६

चि मगनलाल

तुम्हारा पत्र मिला। तुम मेरे जवाबको समझ सको अिसलिअे तुम्हारा पत्र वापस भेज रहा हूं।

तुमने जो शंकाअें अुठाअी हैं अुनका स्पष्टीकरण करनेकी मैं कोशिश करूंगा। परन्तु शायद अिससे तुम मेरे विचारोंको पूरी तरह समझ नहीं सकोगे। अगर हिन्द स्वराज्य अेक-दो बार फिर पढ़ लोगे तो जो स्पष्टीकरण तुमने चाहा है वह अुसीमें से संभवतः तुम्हें मिल जायगा।

अिस हद तक हमने नअी सभ्यताको ग्रहण किया है अिसमें शक नहीं कि अुसी हद तक हमें पीछे हटना पड़ेगा। यह काम सबसे कठिन है परन्तु अिसे करना ही पड़ेगा। हम गलत रास्ते लग जायें तो वापिस लौटे बिना काम नहीं चल सकता। आज जो भोग हम भोग रहे हैं अुनके बारेमें हमें वीतराग होना ही पड़ेगा। वैसा होनेसे पहले अुनके प्रति मनमें तिरस्कार पैदा होना चाहिये। जो साधन कामचलाअू दिखाअी देंगे वे तो छोड़े नहीं जायेंगे। जिसे अनुभवके द्वारा यह समझमें आ जायगा कि अमुक वस्तुसे दीखनेवाले लाभकी अपेक्षा हानि अधिक है वही अुस वस्तुको छोड़ेगा। मुझे तो लगता है कि पत्र जल्दी भेजे जा सकनेसे हमें कोअी फायदा नहीं हुआ। जब हम रेल वगैरा साधनोंको छोड़ देंगे तब पत्रोंकी झंझटमें नहीं पड़ेंगे। जिसमें वस्तुतः दोष न हो अुस वस्तुका हम अेक हद तक अुपयोग कर सकते हैं। हम जो सभ्यताके घेरेमें घिरे हुअे हैं वे अुतने समय तक डाक वगैराका अुपयोग कर सकते हैं। हम ज्ञानपूर्वक अिनका अुपयोग करेंगे लेकिन अिनके पीछे पागल नहीं बनेंगे। और व्यवसायोंको बढ़ानेके बजाय हम दिनोंदिन अुन्हें घटायेंगे। जो अिस तरह समझेंगे वे जिन गांवोंमें डाक या रेल नहीं है वहां अुसे ले जानेके मोहमें नहीं पड़ेंगे। जहाज वगैरा साधन अेकाअेक नहीं मिटेंगे और सब लोग अुनका त्याग नहीं करेंगे अैसे डरसे तुम्हें और मुझे बैठे रहकर अुनका अुपयोग बढ़ानेकी जरूरत नहीं। अेक आदमी भी यदि अुनका अुपयोग कम करेगा या बन्द करेगा तो दूसरे लोग भी वैसा करना सीखेंगे। दूसरे करें या न करें परन्तु वैसा करना अच्छा है यह माननेवाले तो वैसा करते ही रहेंगे। सत्यके प्रचारकी यही पद्धति है। दुनियामें और कोअी पद्धति मैंने देखी नहीं है।

पार्लियामेण्टका मोह छूटना कठिन काम है। चमड़ी अुधेड़ना जलाना और नाक-कान काटना जंगलीपन था। परन्तु चंगेजखां तैमूरलंग वगैराके जुल्मसे पार्लियामेण्टका जुल्म कहीं ज्यादा है। अिसलिअे हम अुसके भ्रममें पड़े हैं। आजकलका जुल्म तो मोहजाल है अिसलिअे यह ज्यादा नुकसान करता है। अेक आदमीके स्वतंत्र अत्याचारसे तो निपटा जा सकता है। परन्तु लोगोंके नामसे लोगों पर जुल्म हो तो अुससे निपटना बहुत मुश्किल है।

राजा अेडवर्ड अकेले राज्य करते हों तो ठीक परन्तु तुम्हारा और मेरा तो हर अंग्रेज राजा है। अिस वाक्यका अर्थ तुम सोच लेना। अिसमें दुनियाके मौहरी बात नहीं है। हिन्दुस्तानकी साधारण बुद्धि तो यही मानती है कि

पाकिस्तानमें अेक पाखंड है। सम्पत्तिके प्रवाहमें बहनेवाली असाधारण बुद्धि भी पाकिस्तानष्टके मोहमें पड़ जाती है।

डाकूके सामने दया काम नहीं देती अैसा कहकर तुम आत्माके अस्तित्वसे ही अिनकार करते हो या अुसके गलतसे अिनकार करते हो। पतंजलि भगवानने दया आदिका महत्त्व अैसा बताया है कि अुसका विचार करनेमें भी आनन्द होता है। असल बात यह है कि डरने हमारे भीतर घर कर लिया है। जिससे सत्य और दया आदि गुणोंका विकास नहीं हो सकता। अुसके बाद हम यह मानते हैं कि दया क्रूर मनुष्यों पर काम नहीं देती। जो दया करे अुस पर हम यदि दया करें तो यह दया नहीं परन्तु दयाका बदला है।

हमारी रक्षा कोअी मुफ्तमें करे तो भी हम कमजोर माने जायेंगे और किसीको पैसे देकर हम अपनी रक्षा करायें तो भी कमजोर ही माने जायेंगे। डाकूको शरीरबल द्वारा हराने हमें मदद होनेके लिअे तीसरे आदमीकी मदद लेनी पड़े तो हम स्वराज्यके योग्य नहीं हैं। अगर अुन्हें शरीर-बलसे मात करना होगा तो यह शरीर-बल हमें सब अपने भीतर पैदा करना पड़ेगा। फिर डर देनेकी जरूरत नहीं मालूम होगी। स्त्री अधिकारसे पतिका संरक्षण चाहती है परन्तु वह अबला ही मानी जाती है।

स्वराज्य अुसके लिअे है जो समझता है। तुम और मैं तो आज भी स्वराज्य भोग सकते हैं। किसी तरह सबको सिखलाना होगा। किसीका दिलाया हुआ स्वराज्य तो परराज्य ही है। फिर भले ही दिलानेवाले हिन्दुस्तानी हों या अंग्रेज।

गोरक्षा प्रचारिणी सभाका नाम गोवध-प्रचारिणी सभा कहा यह सच बात है। अनका हेतु गायको कसाअीसे छुड़ाना या मुसलमानों पर दबाव डालकर [illegible] रक्षा करना है।

[illegible] गायको छुड़ानेसे अुसकी रक्षा नहीं है यह कसाअीको धोखा सिखानेका रास्ता है। मुसलमान पर दबाव डालनेसे वे गायका ज्यादा वध करेंगे [illegible] या अनके विरुद्ध [illegible] करें तो वे गायकी रक्षा करेंगे। [illegible] हिन्दुस्तान [illegible] होनी चाहिये।

[illegible] काम [illegible] और [illegible] समझा है। [illegible] कभी [illegible] पैदा हो सकती है। [illegible] मनुष्यके शरीरका [illegible] होना

थकने पर भी विषयोंमें कौन रहता है। अिसके पीछे हेतु यह है कि बादमें वह अैश-आराममें समय बिताना चाहता है। अिसमें कुछ अतिशयोक्ति है अिसका मुझे भान है। परन्तु अधिकांशमें अूपरका विचार ठीक है।

"डॉक्टरोंकी टोली क्या देशसेवा करेगी? पांच-सात वर्ष तक मुर्दे चीर कर, हिंसा करके अर्थके सूत्र रट कर वे क्या बड़ा पराक्रम करेंगे? शारीरिक रोग मिटानेकी शक्तिसे देशका क्या लाभ होगा? अुससे पूरा पूरा शरीरका मोह बढ़ता है। बीमारियां कैसे न हों अिस तरहकी योजना बनाना तो हम वैद्यक शास्त्रका ज्ञान न होने पर भी जान सकते हैं। अिसका यह अर्थ नहीं कि डॉक्टर रहें ही नहीं। वे तो हमारे पीछे रहेंगे ही। कहनेका हेतु यह है कि अिस धंधेको बड़ा रूप देकर अुसमें [illegible] युवक जो सैकड़ों रुपये और कितने ही वर्ष खोते हैं, वह न खोना चाहिये। यह जान लेनेकी जरूरत है कि विलायती डॉक्टरोंसे हमें रत्ती भर भी लाभ न तो हुआ और न होनेवाला है।

तुम्हारी शंकाओंके अुत्तर तो पूरे हो चुके। हिन्दुस्तानके सुधारका भार व्यर्थ अपने सिर पर न लो। तुम अपना ही सुधार करो। यह भार ही बहुत है। सब कुछ तुम अपने पर ही लागू करो। तुम्हीं हिन्दुस्तान हो यह जाननेमें ही आत्माकी श्रेष्ठता है। तुम्हारे सुधारमें ही हिन्दुस्तानका सुधार है। और सब तो मिथ्या है। तुम्हें यह अच्छा लगे तो अिसमें लगे रहो। औरोंकी फिक्र तुम्हें या मुझे करनेकी जरूरत नहीं रहती। औरोंकी फिक्र करनेमें हम अपनी बातें भूल जायेंगे तो सब कुछ खो बैठेंगे। अिस पर परमार्थकी दृष्टिसे सोचना स्वार्थकी दृष्टिसे नहीं। और कुछ पूछना हो तो पूछना।

मोहनदासके आशीर्वाद"

१५
कामचलाऊ समझौता

हमारा शिष्ट-मंडल हिन्दुस्तान आया। अुनमें अकेले श्री पोलाक ही थे। अुन्होंने हिन्दुस्तानमें आकर भी बहुमूल्य मदद की। सर्वेन्ट्स ऑफ अिंडिया सोसाअिटीने हिन्दुस्तान भरके बड़े बड़े शहरोंमें सभायें करनेका प्रबन्ध किया। श्री पोलाकने अपनी गहरी नम्रता, हिन्दुस्तानियोंके प्रश्नके सम्बन्धमें अपनी पूरी जानकारी और हिन्दुस्तानियोंके प्रति अपनी सहानुभूति आदिके कारण हिन्दुस्तानमें दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके दुःखोंके बारेमें भारी जागृति

पैदा की। जेलमें मृत्यु पाये हुये हिन्दुस्तानी सबकोंके बारेमें और निर्वासित किये गये हिन्दुस्तानियोंमें से भाभी नारायण स्वामीके डेलागोआ-बेमें हुअे करुण अवसानके विषयमें सच्चे हाल जानकर हिन्दुस्तानकी जनताकी भावना अुत्तेजित हुअी। चारों कोनोंसे ट्रान्सवाल सरकारकी हिन्दुस्तानियोंको निर्वासित करनेकी नीतिका घोर विरोध हुआ। अिस समय श्री रतन टाटाने गांधीजीको २५ हजारकी सहायता भेजकर आर्थिक सहायता भी आरम्भ की और हिन्दुस्तानके राजा-महाराजाओंने भी अुसमें भाग लिया। अुस वक्त लगभग १ हजार पौंडकी मदद हिन्दुस्तानसे भेजी गयी थी। अिस प्रकार लगभग अेक वर्षके सतत आन्दोलनसे बड़ी सरकारका ध्यान भी ट्रान्सवालके हिन्दुस्तानियोंकी तकलीफोंकी ओर आकर्षित हुआ। अुसने किसी भी तरह हिन्दुस्तानियोंको ट्रान्सवालसे निर्वासित करना बन्द करवाया और जिन्हें निर्वासित किया गया था अुन्हें वापस आनेकी आज्ञा दिलवायी। जब श्री पोलाक हिन्दुस्तानसे दक्षिण अफ्रीका लौटे तब सारे निर्वासित सत्याग्रहियोंको साथ लेकर वे २८ सितम्बरको डरबनके बन्दरगाह पर अुतरे। लॉर्ड अेम्पथीलने भी लॉर्डसभामें ट्रान्सवाल सरकारकी अिस अत्या-चारी नीतिके विरुद्ध बड़ा आन्दोलन मचाया। अिन सब परिस्थितियोंके कारण जनरल स्मट्स और अुनके साथी कुछ पीछे हटे। परन्तु अुनके दिल नहीं बदले। दिलमें तो अुनके यही था कि ट्रान्सवालमें अेक भी हिन्दुस्तानीको न रहने दिया जाय। परन्तु वे क्या करते? हिन्दुस्तानी लोग भी अपना बचाव करनेकी काफ़ी शक्ति रखते थे। अिसी अर्सेमें दक्षिण अफ्रीकाका यूनियन स्थापित हुआ। १ जून १९१० को दक्षिण अफ्रीकाका यूनियन घोषित हुआ और चारों प्रान्त अेक सत्ताके अधीन हो गये। अिस अवसरका लाभ अुठानेका बड़ी सरकारने प्रयत्न किया और यूनियनमें बसनेवाले हिन्दुस्तानियोंकी अिच्छाओं अुचित होनेके कारण यूनियनके मंत्रियों पर यह दबाव डाला कि वे अुसका निपटारा कर दें। जिसमें अुसने नीचे लिखे मुद्दे पेश किये

(१) सन् १९०७ का हत्यारा कानून रद्द कर दिया जाय।

(२) कानूनसे जातिभेदको निकाल दिया जाय।

(३) हिन्दुस्तानी कौमकी जरूरतोंके अनुसार हर साल शिक्षित हिन्दु-स्तानियोंको प्रवेश करने दिया जाय।

(४) यूनियनके दूसरे प्रान्तोंमें भी भविष्यमें हिन्दुस्तानियोंके अधि-कारोंकी रक्षा की जाय।

यूनियनके मंत्रियोंको मजबूर होकर भिन प्रस्तावोंके साथ सहमत होना पड़ा। आखिर सन १९११ में ञिमिग्रेशन-बिल यूनियन गजटमें प्रकाशित हुआ। फिर भी अुससे कुछ काम नहीं हुआ। जिसकी नीयत अच्छी न हुजी हो अुसके सामने अनेक सिफारिशें करनेसे भी कोओ बड़ा काम नहीं होता। वह ओमानदारीसे कोओ काम नहीं करेगा। यूनियन सरकारने भी अैसा ही किया। ञिमिग्रेशन-बिलसे कोओ काम नहीं बना। अुससे हिन्दुस्तानियोंके मनको सन्तोष नहीं हुआ। नये बिलमें ट्रान्सवालके सिवा और प्रान्तोंके हिन्दुस्तानियोंके अधिकारोंकी रक्षा करा भी नहीं होती थी। हत्यारा कानून रद कर दिया गया परन्तु रंगभेद नहीं मिटाया गया। बिलना ही नहीं यूनियन स्थापित होनेके बाद रंगभेद बढ़ गया। सभी प्रान्तोंके गोरे लोगोंमें जो रंगद्वेष बंटा हुआ था वह यूनियनमें बिकट्ठा हो गया और तीव्ररूपमें प्रकट हुआ। यह प्रकाशित बिल पार्लियामेन्टमें पेश हुआ अुससे पहले हिन्दुस्तानी नेताओंने अुसका सख्त विरोध किया। सरकारके साथ बिस सम्बन्धमें अुन्होंने पत्र-व्यवहार किया।

बड़ी सरकारके प्रस्तावोंको बिस नये बिलमें जरा भी स्वीकार नहीं किया गया। नेताओंने मांग की कि नये बिलमें सिर्फ ट्रान्सवालके हिन्दुस्तानियोंको राहत देनेका कानून बनाया जाय और दूसरे प्रान्तोंको वैसा ही रहने दिया जाय। परन्तु सरकारने बिसे मंजूर नहीं किया। बिसलिये सभी प्रान्तोंके हिन्दुस्तानियोंकी ओरसे घोर मचा। बिसके परिणामस्वरूप वह बिल यूनियन पार्लियामेन्टमें पास नहीं हुआ। परन्तु सरकारने कामचलाबू समझौतेका बिन्तजाम किया। समझौता यह था कि सन् १९१२ की पार्लियामेन्टकी बैठकमें नया बिल पास न हो जाय तब तक सरकार किसी भी आपत्तिजनक कानूनका अमल बन्द रखे और हिन्दुस्तानी जनता सत्याग्रहकी लड़ाओ बन्द रखे। सन् १९१२ की पार्लियामेन्टमें बिल पेश किया गया परन्तु अुसकी दशा पहले वर्ष जैसी ही हुओ। बिसलिये वह बिल अेक वर्षके लिये फिर स्थगित कर दिया गया और कामचलाबू समझौतेकी अवधि भी बढ़ा दी गयी।

गांधीजीकी साधना

दूसरा भाग

१

दक्षिण अफ्रीकामें देशभक्त गोखलेजी

गांधीजी देशभक्त गोपाल कृष्ण गोखलेजीसे दक्षिण अफ्रीकामें आकर वहां अपने देशभाअियोंकी अच्छी-बुरी हालत देख जानेकी विनती बहुत समयसे बार-बार किया करते थे। अितनेमें कामचलाअू सुलहके कारण दक्षिण अफ्रीकामें कुछ शान्ति हुअी। हिन्दुस्तानमें भी दिल्ली दरबारके कारण सद्‌भावनाका वातावरण पैदा हो गया था। अैसे मौके पर श्री गोखलेके दक्षिण अफ्रीका जानेसे सद्भावना कुछ बढ़ सकती थी और हिन्दुस्तानियोंके प्रश्नका निपटारा अच्छी तरह हो सकता था। हिन्दुस्तानके कौमी नेता आज तक अुपनिवेशोंमें नहीं गये थे। बम्बअीके बेताजके बादशाह सर फीरोजशाह बड़ी धारासभाको हिला रहे थे। श्री गोखले हिन्दुस्तान और बड़ी सरकारके बीच मीठी जंजीर बनकर अैसी कोशिश करते थे कि सब जगह शान्ति रहे। अुपनिवेशोंके गोरोंको हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तानके लोगोंकी कल्पना नहीं थी। यदि थी तो अितनी ही कि हिन्दुस्तानकी जनता बिलकुल अपढ़ है, अनेक कुरीतियोंमें दूषित हो गअी है, निकम्मी और संस्कारहीन है। अैसे लोगोंका स्थान अुपनिवेशोंमें हो तो गोरे लोगोंके नौकर-चाकरके रूपमें ही हो सकता है, लकड़ी और पानी ढोनेवाले मजदूरोंके रूपमें ही हो सकता है। अुपनिवेशोंमें स्वतंत्र रहकर स्वतंत्र व्यापार करके या स्वतंत्र गृहस्थके रूपमें जीवन-निर्वाह करनेवाले और गोरे समाजके साथ समानताका दावा करनेवाले प्रतिस्पर्धियोंके रूपमें तो अुन्हें स्थान हरगिज नहीं मिल सकता। अुपनिवेशवासी गोरोंका हिन्दुस्तानियोंके बारेमें अैसा खयाल था। अिस खयालकी जड़ तो हिन्दुस्तानियोंकी गुलामी ही थी। पराधीन जातिके बारेमें राज्य करनेवाली जाति और सोच ही क्या सकती है? और अुन्हींकी नकल दूसरे देशोंके लोग भी करते थे। अन्य किसी अुपनिवेशकी अपेक्षा ब्रिटिश अुपनिवेशोंमें हिन्दुस्तानियोंके बारेमें अैसा हलका खयाल अधिक मात्रामें था। और दक्षिण अफ्रीकामें तो गोरे लोगोंको हिन्दुस्तानियोंका पहला परिचय गिरमिटिया मजदूरोंके रूपमें ही हुआ था। अिसलिअे "प्रथमग्रासे मक्षिकापात" वाली बात हुअी। मानो समूचा हिन्दुस्तान गिरमिटिया मजदूरों जैसे अपढ़ और संस्कारविहीन लोगोंसे ही भरा हुआ हो। वे हिन्दुस्तानी व्यापारीको कुली व्यापारी, हिन्दुस्तानी बैरिस्टरको कुली बैरिस्टर और

हिन्दुस्तानी डॉक्टरको कुली डॉक्टर कहकर तिरस्कारकी दृष्टिसे देखते थे। गांधी जैसा अेक व्यक्ति अुनकी दृष्टिमें आया। परन्तु अुसकी श्रेष्ठता तो बहुत गहरी दृष्टिसे देखता अुसीको मालूम हो सकती थी। और अुसकी सज्जनता और जीवनकी सादगीसे तो गोरे लोग प्रभावित होनेवाले थे ही नहीं। जब श्री गोखले वहां गये तब अुनका गौरव, गंभीरता, संस्कारिता, राजनीतिमें विलक्षण निपुणता और साम्राज्यमें अुनकी अूंची प्रतिष्ठा देखकर वहांके गोरोंकी आंखें खुलीं। क्या हिन्दुस्तानी भी अैसे राजनीतिज्ञ और व्यवहारकुशल हो सकते हैं? अैसे प्रश्नोंने अुनके दिलोंको बेचैन कर दिया। अिसके सिवा गोखलेजी दक्षिण अफ्रीकामें गये तब वहांके हिन्दुस्तानी लोगोंने अुनका सत्कार भी अैसे बादशाही और शानदार ढंगसे किया कि गोरे चकित रह गये। किसीने गांधीजीसे पूछा कि "गोखलेजी बिलकुल सादे हैं, आपको भी सादगी पसन्द है, तो फिर गोखलेजीके स्वागतमें हजारों रुपये किसलिये फूंक दिये?" अुत्तरमें गांधीजीने बताया, "गोखलेजीका हमें बादशाही सम्मान करना ही चाहिये। वे यहां सैर-सपाटे या गोखलेजीके रूपमें नहीं आये हैं, बल्कि ३१ करोड़ जनताके प्रतिनिधिकी हैसियतसे आये हैं। हम अपने नेताओंका अुचित आदर न करें, तो जो हमारा अपमान करते हैं वे अुनकी ओर सम्मानकी दृष्टिसे कैसे देखेंगे? अैसे मौके पर खर्चकी तरफ देखना सादगी नहीं, बल्कि अविवेक और अपने हृदयकी दरिद्रताका प्रदर्शन करना है। अिसलिये जो सम्मान दक्षिण अफ्रीकामें बादशाहको भी नहीं मिल सकता, वह भव्य स्वागत श्री गोखलेका करना हिन्दुस्तानियोंका परम कर्तव्य है।" और हुआ भी अैसा ही। श्री गोखले दक्षिण अफ्रीकामें जहां जहां गये, वहां वहां लोगोंके अुत्साहका पार न रहा। अज्ञानी गोरे हिन्दुस्तानियोंके नेताको देखकर पीछे हट जाते पर किन्तोंको अुनका नम्रता और विद्वत्ता देखकर आश्चर्य होता। अुच्च कोटिके गोरोंने अुनकी कार्यकुशलता, गहरी राजनीतिज्ञता और आचार-विचारकी श्रेष्ठताको देखकर अनके सामने सिर झुकाया। गिरमिटिया हिन्दुस्तानियोंने माना कि हमारा कोअी राजा आया है और दूसरे हिन्दुस्तानियोंने माना कि हिन्दुस्तानकी लाज रखनेवाला कोअी भव्य दवदूत आया है। और काम भी वैसा ही हुआ।

सन् [illegible] में श्री गोखले स्वदेशमें मौजूद दक्षिण अफ्रीका गये। दक्षिण अफ्रीकाका वातावरण रंगद्वेषसे कितना भरा होगा, अिसका अनुभव अुन्हें स्वदेशमें

ही मिल गया था। वे जिस जहाजमें रवाना होनेवाले थे, अुसके अेजेंटको अुन्होंने पहले दर्जेकी जगह सुरक्षित रखनेकी सूचना भेजी। अिस सूचनाके मिलते ही अेजेंट विचारमें पड़ गया। पहले दर्जेके विभागमें तो सब गोरे ही होते थे। अेक केबिनकी दो जगहोंमें से अेक गोरेको और दूसरी हिन्दुस्तानीको कैसे दी जा सकती है? दूसरे जहाजमें कुछ भी हो परन्तु यह तो विलायतसे दक्षिण अफ्रीका जानेवाला जहाज था। अिसलिअे अेजेंटने खबर भेजी कि जगह नहीं है। तलाश करने पर मालूम हुआ कि जगह तो है। श्री गोखलेने जान लिया कि अेजेंटके अिनकार करनेका क्या कारण है। अितनेमें यह बात अुस समयके भारत-मंत्री लॉर्ड क्रूको मालूम हुअी। अुन्होंने तुरन्त कोशिश करके श्री गोखलेके लिअे पहले दर्जेकी जगह प्राप्त की। दक्षिण अफ्रीकाके सफरमें रेलमें या दूसरी जगह अैसा कटु अनुभव श्री गोखलेको न हो अिसके लिअे यूनियन सरकारने काफी सावधानी रखी। अुनकी यात्राके लिअे रेलके खास सैलूनकी व्यवस्था की और यह अिन्तजाम किया कि अुनके साथ यूनियन सरकारका अेक बड़ा अफसर रहे ताकि दक्षिण अफ्रीकाके प्रवासमें गोखलेजीके साथ रंगद्वेषका आदी बना हुआ कोअी अफसर या नागरिक भूलसे भी अवांछनीय व्यवहार न कर बैठे।

श्री गोखले केपकालोनीके केपटाअुन बन्दरगाह पर अुतरे। वहां गांधीजी और दूसरे सैकड़ों हिन्दुस्तानियोंने अुनका स्वागत किया। श्री गोखले और गांधीजीने परस्पर आलिंगन किया। अेक हिन्दुस्तानका योद्धा दूसरा दक्षिण अफ्रीकाका योद्धा — मानो दोनों सहोदर हों — छोटे और बड़े भाअी हों और अेक-दूसरेके हृदयमें जरा भी भिन्नता न हो। अेक-दूसरेके दासानुदास हों। श्री गोखलेने गांधीजीसे कहा: देखो गांधी तुम बहुत दिनसे आनेको कहते थे। अिसलिअे तुम्हारे बुलानेसे मैं आ गया हूं। अब मैं यहांसे विदा होअूं तब तक मेरा जो अुपयोग करना हो तुम कर लो। मैं कुछ जानता नहीं। मैं अपने आपको और अपनी प्रवृत्तिको तुम्हारे सुपुर्द करता हूं। तुम जानो और तुम्हारा काम जाने। बादमें मुझे दोष न देना कि गोखलेने दक्षिण अफ्रीकामें आकर कुछ नहीं किया।

यह कहकर गोखलेजीने शुरूसे ही गांधीजी पर प्रेमका जादू डाल दिया। गांधीजी भी अुनके वशमें हो गये। अुस समयसे गांधीजीने अपनेको भी गोखलेकी तन्दुरुस्ती और प्रवृत्तिके लिअे जिम्मेदार मान लिया और खुद ही अुनके

रहनेका वचन अुनसे ले गये। दूसरे दिन गांधीजीको खबर लगी कि जोहानिस-बर्गके हिन्दू गोखलेजीको अलग मानपत्र दे रहे हैं। अैसी बात सुनकर गांधीजी तो चौंक गये। व्यवस्था यह थी कि भी गोखलेको दिये जानेवाले सभी मानपत्र अेक मुख्य समारोहमें दिये जायं। अैसा होने में ही मुख्य समारोहकी शोभा रहती और खींचतान न होती। परन्तु हिन्दुओंके समारोहमें दस मिनट हो आनेके आश्वासनका अर्थ अुस संन्यासीने यह लगाया कि गोखलेजीने हिन्दुओंका अलग मानपत्र लेना स्वीकार कर लिया है। अैसा होनेसे सारी बाजी बिगड़ जाती। भी गोखलेका सम्मान करनेमें कौमें अेक-दूसरेसे अलग हो जातीं। यह बात मालूम होते ही गांधीजीने गोखलेजीसे पूछा आपने स्वामीजीको क्या अैसा आश्वासन दिया है कि आप हिन्दुओंकी तरफसे अलग मानपत्र लेंगे?

गोखलेजीने जवाब दिया नहीं नहीं मुझसे अुन्होंने बहुत आग्रह किया अिसलिअे मैंने हिन्दुओंकी सभामें दस मिनिटके लिअे हो आनेको कहा है।

यह सुनकर गांधीजीने अुन्हें सारी हकीकत समझायी। जो स्वामीजी गोखलेजीसे आश्वासन ले गये थे अुनका असली परिचय दिया। स्वामीजीका पूरा परिचय पानेके बाद गोखलेजी बोल अुठे भाअी तुमने मुझे पहले ही अिस आदमीके बारेमें सावधान क्यों न किया?"

परन्तु आपने ही अपनी शर्तसे अुल्टा बरताव किया तब क्या हो? अनजान आदमीको अिस तरहका आश्वासन देनेसे पहले आपको मुझसे पूछना तो चाहिये था? गांधीजीने हंसकर अुत्तर दिया।

"और मेरे मंत्रीकी हैसियतसे तुम्हारा यह फर्ज नहीं था कि अमुक आदमीके साथ कोअी भी परिचय करनेसे पहले मुझे चेता देते? गोखलेजीने भौंहें चढ़ाकर पूछा।

दूसरे आदमीकी अिस तरह बिना कारण निन्दा करनेका काम मनुष्यके नाते मेरा नहीं है।"

"बहुत अच्छा। मैं जानता हूं तुम बड़े होशियार हो। अब तुम्हें लगता हो कि मेरी भूल हुअी है तो तुम मुझे सुधार लो।

और सचमुच अिस जरासी बातका बतंगड़ बन गया। परन्तु गांधीजीने तुरन्त ही सारी बाजी सुधार ली। हिन्दुओंका सन्तोष हुआ और सारी हिन्दुस्तानी कौमका समारोह भी बढ़िया रहा।

अिस तरह दोनोंमें रोज विनोद-वार्ता होती रहती थी।

२

दासानुदास गोखलेजी

ओहानिसबर्गमें गोखलेजी पन्द्रह दिन रहे। ... अुन्होंने अधिक आनन्द अुठाया या गांधीजीने, जिसका निर्णय करना मेरे लिये कठिन है। यह तो दोनोंके हृदय ही जानें। और दोनोंके हृदय तो अपने-अपने आनन्दको दूसरेसे अधिक आह्लादजनक मानते। गोखलेजी कुछ पढ़ते-पढ़ते पुकारते — "अरे, यह मेरा धोबी कहां गया?"

गांधीजी पासके कमरेमेंसे जल्दी जल्दी आकर पूछते — "क्यों, क्या बात है साहब?"

"क्या क्या है? तुम्हें भान नहीं रहता। देखो मेरा कमीज फिसल गया हो गया है?"

"जी अभी धो लाता हूं।" यह कहकर गांधीजी खुशी-खुशी अुस कमीजको ले जाते और खूब धोकर ले आते।

थोड़ी देर होती कि गोखलेजी अपने बिस्तरकी चादर बिखेर देते और चिल्लाते — "अरे मेरा बिस्तर बिछानेवाला कहां गया? चादर अच्छी तरह क्यों नहीं बिछाओ?"

गांधीजी आते और "जी साहब" कहकर चादर अच्छी तरह बिछा जाते।

जिस तरह गोखलेजी दिनमें कितनी ही बार गांधीजीको "मेरा नौकर", "मेरा धोबी", "मेरा नाओी", "मेरा पाखाना साफ करनेवाला" वगैरा संबोधनोंसे बुलाते और गांधीजी प्रसन्न मनसे आकर हाजिर हो जाते। गोखलेजीका सभी निजी काम दूसरा कोओी न करे, वे स्वयं करें, औसी गांधीजीकी तीव्र अिच्छा और आग्रह रहता था। गोखलेजी यह जानते थे, जिसलिये कुछ मजाक और कुछ आनन्द और गहरे स्नेहभावसे गद्गद होकर जिस तरह कहा करते थे।

यहां अेकाध स्नेह-स्मरणका मैं वर्णन कर दूं तो अच्छा होगा। अेक दिन फिनिक्स आश्रममें रातके समय हम बातोंमें लगे हुओ थे। श्री जोसफ डोक जोहानिसबर्गमें थे तब मैं केनलफर्ममें था, जिसलिये गोखलेजी और गांधीजीके स्नेह-सम्बन्धकी कुछ बात मैंने गांधीजीसे ही पूछी। जवाबमें गांधीजीने अुनके हृदयके तारको हिला देनेवाला और स्नेहभीना प्रसंग कह सुनाया। अुसे मैं

अुन्हींके शब्दोंमें अुद्धृत करता हूं। अिस प्रसंगके विषयकी तो रक्षा हुआी है परन्तु वर्णनमें कुछ फर्क हो गया हो तो मैं क्षमा मांगता हूं।

गांधीजी कहने लगे

गोखलेजीने दक्षिण अफ्रीकामें पैर रखा तभीसे अुन्होंने अपने-आपको मेरे हवाले कर दिया था। जैसे छोटा बच्चा अपनी सारी चिन्ता अपनी माको सौंप देता है वैसे ही वे अपनी कोअी चिन्ता नहीं रखते थे। अुनकी देखरेख मैं करता, अुनका कार्यक्रम मैं तैयार करता और किस मौके पर क्या बोलना यह भी कभी-कभी मैं ही बताता। अिसलिअे वे अक्सर प्रेमसे मेरा धोबी, मेरा नाअी, मेरा सेवक, मेरा रसोअिया, मेरा रक्षक और मेरा भंगी वगैरा अुपनामोंसे मुझे पुकारते। जरा-जरासी बातमें भी मेरी मंजूरी लेते। मैं खूब काममें होता तो भी मुझे बुलाकर पूछते, मुझे मंद मारमी लगती है ला मू क्या? मैं कहता, अिसमें मुझसे क्या पूछते हैं? अिच्छा हो तो ला दीजिये। तब गंभीर भावसे जवाब देते, अरे, मैं तो अपनेको तुम्हारे हवाले कर चुका हूं।

अेक दिन प्रिटोरियामें अुनकी तबीयत अच्छी न होनेके कारण फलाहारके सिवा और कुछ खानेकी मैंने अुन्हें मनाही कर दी। फलाहारमें भी गिनतीके फल देता। अुन्हें भूख लगती तो वे मुझे बुलाते। गुस्सेका दिखावा करके मुझे धमकाते, मुझे पता नहीं था कि तुम अितने हृदयशून्य होगे। याद है कलकत्ता-कांग्रेसके वक्त मैंने तुम्हारी कितनी चिन्ता रखी थी। अेक महीने तक तुम्हें मिष्टान्न ही खिलाये थे। अुसके बदलेमें तुम यहां मुझे अेक-दो केले भी अिसरार करनेके बावजूद ज्यादा नहीं देते और मुझे भूखों मारते हो! अितने पर भी तुम सेवावृत्तिका और साधुताका ढोंग करते हो।

मैं कहता, मैं कब अिनकार करता हूं? जितने चाहें अुतने खाअिये।

तब वे कहते, नहीं, तुम्हें देना हो तो दो, मुझे लेनेकी कोअी परवाह नहीं।

अन्तमें हार कर मैं दे देता।

अुन दिनों जोहानिसबर्गमें भोजनका अेक समारोह था। अुसमें बहुतसे प्रसिद्ध पुरुष आनेवाले थे। अुस भोजमें गोखलेजीका अैतिहासिक भाषण होने वाला था। खानेमें बड़ी तरहकी मीठी वानगियां तैयार की गयी थीं। सब चीजें निरामिष थीं। अिसलिअे भोजके दिन सबेरे गोखलेजीने मुझसे पूछा: क्यों गांधी, आज मुझे सब कुछ खानेकी छूट है न?

किसलिये?

आज तो भोज है न?

तो क्या हुआ?

अरे क्या बात करते हो? मेरे सम्मानमें भोज हो, भोजमें तरह-तरहकी स्वादिष्ठ खानगियां हों, अच्छी मिठाअियां हों और मैं न खाअूं? आज तो तुम्हें मंजूरी देनी ही पड़ेगी।

मैं तो अिजाजत नहीं दूंगा। आपको खाना हो तो खाअिये।

बहुत अच्छा, जाओ। मैं देखता हूं कि तुम कैसे अिजाजत नहीं देते।

शामके पांच बजे। मोटर आकर खड़ी हुअी। मैं अुनके पास गया। वे शान्तिसे पढ़ते रहे। मैंने कहा, मोटर आ गअी है, आप तैयार होअिये।

कहां जाना है?

भोजका समय हो गया?

मुझे कहीं नहीं जाना। तुम सब जाओ।

मैं समझ गया, फिर भी बोला, आपके बिना हम लोग जाकर क्या करेंगे?

बहुतसी बारातें वरराजाके बिना जाती होंगी, वैसे ही तुम भी चले जाओ।

मैं चुप रहा। फिर बोला, देर हो जायगी।

भले ही देर हो जाय। मेरा तो निश्चय है कि वहां जाकर सब कुछ खानेकी अिजाजत जब तक तुम मुझे नहीं दोगे, तब तक मैं यहांसे अुठनेवाला नहीं हूं।

पांच तो यहीं बज गये। परन्तु अुनके कान पर तो जूं तक न रेंगी। अन्तमें हारकर मैंने कहा, अब अुठिये, कपड़े पहनिये। आपकी मर्जीमें आये सो खाअिये।

तुम्हारी मंजूरी है? खुश होकर अुन्होंने मुझसे पूछा।

हां हां, मेरी मंजूरी है, अुठिये।

मेरी मजबूरीकी बात सुनकर मुस्करा-मुस्करा बोले, बस, अब मैं अुठूंगा। तुम सत्याग्रही ठहरे। अिसलिये सामनेवालेके सत्याग्रहसे ही तुम हारते हो। देखा मेरा सत्याग्रह? कबूल करो कि तुम हार गये।

हां हां, मैं हारा। आजसे तो मैं सदा ही हारा हुआ हूं।

अितना कहकर गांधीजी शान्त हो गये। गहरे विचारमें डूब गये और किसी न किसी स्नेह-स्मरणको याद करके बोल अुठे — वे तो दासानुदास हैं।

अिस तरह यह निर्णय करना कठिन है कि गोखलेजीको गांधीजीके पीछे पागल माना जाय या गांधीजीको गोखलेजीके पीछे पागल माना जाय। यह कहना अधिक सत्य है कि गोखलेजी गांधीजीके पीछे और गांधीजी गोखलेजीके पीछे पागल थे। गोखलेजी गांधीजीके स्नेहकी तीव्रताको अनुभव करते थे अिसलिअे अुन्होंने दक्षिण अफ्रीकाके अपने निवासके दिनोंमें अनेक बार गांधीजीसे कहा था "तुम बड़े जालिम हो। दूसरेके हृदय पर प्रेमका अैसा जादू डालते हो कि वह बेचारा तुम्हारी अिच्छानुसार करने और तुम्हें खुश रखनेको मजबूर हो जाता है। मेरा शरीर कितना ही अस्वस्थ हो मैं कितने ही जरूरी काममें व्यस्त होअूं फिर भी तुम्हारा नाम आते ही अुसे करनेके लिअे मैं पागल हो जाता हूं और तुम्हारे ही काममें डूबा रहता हूं।"

अिस प्रकार दोनों महापुरुषोंकी विनोद-वार्तासे दोनोंके हृदयकी अपूर्व सुन्दरताके दर्शन होते थे।

वहांके लोगोंके समय दिया हुआ गोखलेजीका भाषण अेक प्रवीण राजनीतिज्ञको शोभा देनेवाला था। अुनके भाषणकी छटा, अंग्रेजी भाषा पर अुनका अधिकार, श्रोताओंके दिल पर गहरा असर करनेवाली अुनकी बहस करनेकी सरल शैली, हृदयका सन्तुलन और दोनों पक्षोंको देखकर अपना निर्णय करनेका विवेक — अिन सबका संगम देखकर गोरोंको आश्चर्य हुआ। दक्षिण अफ्रीकाके अनेक गोरे नेता अुनसे मिले। अखबारोंके प्रतिनिधि भी अुनसे मिले। अुन्होंने सबके सामने अपनी न्याययुक्त मांग रखकर सबको जीत लिया। गोखलेजीने अपनी राय अुन्हें साफ तौर पर बता दी थी — अपने देशमें आप कैसे आदमियोंको प्रवेश करने दें यह आपकी मर्जीकी बात है। अिसके लिअे आप किसी भी देशके लिअे या किसी भी कौमके लिअे अपमानजनक न हो अैसे किसी भी कानूनके जरिये अपने देशमें अवांछनीय मनुष्योंके प्रवेश करने पर पाबन्दी लगायें तो वह अुचित ही है। मैं भी अपने देशमें अैसा ही करना चाहूंगा। परन्तु जो लोग यहां आ गये हैं जिन्होंने अपना वतन ही अिस देशको बना लिया है या लम्बे अरसे तक रहकर जिन्होंने यहां अपनी जायदादें बना ली हैं और जो शरीर-श्रम करके अपना गुजारा करते हैं अुनके प्रति अच्छा व्यवहार आप गोरोंको शोभा दे अैसा रखिये। अुनमें आप भेदभाव न कीजिये। रंग-द्वेषका प्रतिबन्ध लगाकर आप

किसीको भी यहां आनेसे रोकिये, परन्तु रंगभेदका प्रतिबन्ध लगाकर आप किसीको आनेसे न रोकिये। जैसे लोगोंको आप अपने देशके नागरिक मानिये, अुन्हें अपने साथ रखकर अुनसे प्रेमभरा बरताव कीजिये। आप जितना करें, ना मुझे और कुछ नहीं चाहिये।

ऐसी वास्तविक और नैतिक दलीलोंसे कैसा भी विरोधी अुनकी बात मान लेता था। प्रिटोरियामें यूनियन सरकारके मंत्रियोंसे भी गोखलेजी मिले और सभी प्रान्तोंके बारेमें अुनसे खूब चर्चा की। नेटालके स्वतंत्र हिन्दुस्तानी मजदूरों पर जो तीन पौंडका कर लगा हुआ था, अुसे रद्द करनेके लिये भी बहुत कहा। मंत्रियोंने अुन्हें विश्वास दिलाया कि अगली पार्लियामेंटमें वह कर रद्द कर दिया जायगा। ट्रान्सवालमें कोअी तीन सप्ताह रहकर वे नेटाल गये।

नेटालमें भी ऐसी ही धूमधाम रही। स्वागतके जुलूस, मानपत्रों, समारोह और सभाओं वगैराके कार्यक्रमसे सारे दक्षिण अफ्रीकाका वातावरण मस्त हो गया। नेटालमें तो सारे जमींदारोंके मंडलने भी गोखलेजीको निमंत्रण दिया। कुछ जमींदारोंने आमंत्रण भेजकर अपने स्थान पर अुनका स्वागत किया। हिन्दुस्तानी गिरमिटिया मजदूरोंके झुंडके झुंड अुनके दर्शन करने आये। गिरमिटिया मजदूरोंकी हर जगह यही भावना मालूम होती थी कि देवता उतर आये हैं। गोखलेजी नेटालमें थे अुसी बीच फिनिक्स भी हो आये। जिस प्रकार दक्षिण अफ्रीकाकी यात्रा पूरी करके वे डरबनके बन्दरगाहसे विदा हुअे। गांधीजी अुनके साथ गये और जंजीबार तक अुन्हें छोड़ने आये। जिस [illegible] आगमन दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके जीवनमें [illegible] माना जायगा। [illegible] आज भी ताजे बने हुअे हैं।

लिखनेमें मेरा अेक हेतु गांधीजीके जीवनके कुछ सुन्दर प्रसंगोंका वर्णन करना भी है और अुसी हेतुसे यह प्रकरण मैं लिखना चाहता हूं। गांधीजीके सार्वजनिक जीवनकी या अुनके साथके निजी परिचयकी कथा लिखनेका काम तो अुत्तम रूपमें वे स्वयं ही कर सकते हैं और कुछ हद तक अुन्होंने आत्मकथा में और दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास में अैसा किया भी है। परन्तु मैं देखता हूं कि अुसमें अुन्होंने कअी मर्यादायें रखी हैं। बहुतसी बातें अुन्होंने जान-बूझकर नहीं दी हैं। वे बातें जितनी भी मुझे मालूम हैं अुन्हें अपनी दरिद्र भाषामें भी वर्णन कर देना मुझे अुचित मालूम होता है। और अैतिहासिक दृष्टिसे तो नहीं परन्तु गांधीजीके जीवनके और अुनके आदर्शोंके अुपासकोंकी दृष्टिसे भी अैसे वर्णन आवश्यक हैं। जिन प्रकरणोंमें जिस तरहके बहुतसे वर्णन किसी दृष्टिसे दिये गये हैं। मैं मानता हूं कि पाठक-मित्रोंको वे जरूर पसंद आयेंगे।

श्री हरमन कैलनबैक अेक जर्मन सज्जन थे। अुन्होंने भरी-जवानीमें जर्मन सेनामें सिपाहीका काम किया था। और जीवनका अेक भाग व्यतीत करनेके लिये वे दक्षिण अफ्रीका गये थे। स्थपति (शिल्पकार)के नाते वे बड़े कुशल थे। आमदनी बहुत अच्छी थी। अकेले राम थे। न अूधोका लेना न माधोका देना। जिसलिये अैश-आराम और ठाटबाटकी तो बात ही क्या कहना? शादी नहीं की थी जिसलिये जिन्दगी भी गैर-जिम्मेदार थी। जीवनकी सभी नयी लहरोंके अनुभवके जिज्ञासु ठहरे। जिसलिये अनेक पाश्चात्य व्यक्तियोंकी तरह वे भी जिस विषयकी ओर ध्यान देते अुसीमें डूब जाते थे। श्री कैलनबैक अपने धंधेके साथ साथ जीवनके दूसरे पहलुओंकी ओर भी ध्यान देते थे। अन्तरात्माको कुछ संतोष मिले अैसी चीजोंकी भी खोज करते थे। अुनके साथ अन्याय न करता होअूं तो शायद यह भी हो सकता है कि केवल जीवनमें विविधता लानेके स्थूल हेतुसे ही वे जिस तरहके काम करते हों। कुछ भी हो किन्तु अपने कामधंधे और वैभवसे अुन्हें जो आनन्द मिलता था अुससे अुन्हें संतोष नहीं था। यह सन्तोष वे ढूंढ़ा करते थे। जोहानिसबर्गमें थियासॉफिकल सोसा-अिटीकी शाखा थी। वहां वे अपनी धार्मिक वृत्तिको पोषण देने आया करते थे और वहांकी धार्मिक किन्तु निरामिष भोजनगृहमें जाते थे। जिन दो संस्थाओंमें गांधीजीसे अुनकी भेंट हुअी।

श्री कैलनबैक स्वभावसे नम्र और बड़े भोले थे। साथ ही जिज्ञासु वृत्तिके थे। ट्रान्सवालमें प्रचलित रंगभेदकी वृत्ति भी अुनमें काफी मात्रामें

हर महीने लगभग १२ रुपये खर्च कर डालते थे। साधारणतः सौ सवा सौ रुपये काफी थे। अितनी ज्यादा फिजूलखर्ची गांधीजीको खटकी।

गांधीजी वहां रहने गये अुसके दूसरे ही दिन शामको कैलनबैकने कहा सैरका समय हो गया। चलो घूमने चलें।

जोहानिसबर्गमें रहनेवाले लोग तो यहां घूमने आते हैं तब हम क्या वापस जोहानिसबर्गकी तरफ जायें? हवा तो यहाकी अच्छी है। और घूमना मनके लिये ही हो तो चलो खुरपी पकड़ो। बगीचेमें ही काम करेंगे तो शारीरिक श्रम भी हो जायगा साथ ही बगीचेका काम भी हो जायगा। यह कहकर गांधीजीने कैलनबैकको बगीचेके काममें लगाया खुद भी काममें लगे और दोनों काम करते करते अनेक विषयों पर बातें करने लगे। अिस प्रकार सवेरे और शाम दोनों आदमी बगीचेमें नियमित रूपसे काममें लग जाते। थोड़े दिनमें श्री कैलनबैकको मालूम हो गया कि बगीचेके लिये जो दो माली रखे गये हैं अुन पर खर्च करना अब फिजूल है। अिसलिये अुन्हें अलग कर दिया।

अेक दिन गांधीजी स्नान करनेसे पहले अपना कमीज धो रहे थे। कैलन-बैकको यह मालूम हुआ तो व बोल अुठे अरे गांधी आप क्यों धो रहे हैं? यह धोबी है न? गांधीजीने जवाब दिया कलसे मैंने अपने कपड़े आप ही धोना शुरू कर दिया है। मुझे अितनी फ़ुरसत मिलती है और मुझमें अितनी ताकत भी है। अिसलिये अपने कपड़े तो मैं खुद ही धोअूंगा।

अब श्री कैलनबैक क्या करते? गांधीजी अपने कपड़े खुद धोयें और कैलनबैक धोबीसे धुलवायें यह कैसे हो सकता था? अुसी समयसे अुन्होंने भी अपने कपड़े खुद धोना शुरू कर दिया। नतीजा यह हुआ कि धोबी भाअी भी निठल्ले हो गये। और अुन्हें भी बिदा मिल गयी।

यहां अेक प्रसंग लिखने लायक है। गांधीजी दक्षिण अफ्रीकामें सत्याग्रहकी लड़ाअीमें दूसरी बार जिस दिन जेलसे छूटनेवाले थे अुस दिन श्री कैलन-बैक अेक नयी मोटर खरीद कर गांधीजीको जेलके दरवाजे पर लेने गये। गांधीजी जेलसे बाहर आये। सबसे मिले। श्री कैलनबैकने मोटरमें बैठनेकी प्रार्थना की। गांधीजीने पूछा किसकी मोटर है? श्री कैलनबैकने बताया मेरी है। अभी खरीदकर लाया हूं।"

"किसलिये खरीद लाये?" गांधीजीने पूछा।

"आपको ले जानेके लिये। मेरे जीमें आया कि आपको नयी मोटरमें ले जाअूं। श्री कैलनबैकने संकोचसे जवाब दिया। अच्छा तो कैलनबैक यह

फूलके वृक्षोंकी काट-छांट करते वक्त रखनी चाहिये। यह प्रूनिंग —काट-छांट अिन पेड़ोंके वास्तविक विकासके लिये ही की जाती है। हमारी तरह वनस्पतिमें भी जीव होता है। अुसे लापरवाहीसे काट डालें और कटे हुअे स्थान पर डामरी लेप वगैरा न लगायें तो अुस पेड़को दुःख हो और अुसका दुःख बढ़ जाय। मैं तो अिस वनस्पतिमें यह सुख-दुःखकी भावना देखता हूं। मैं अिस दयामय हृदयको समझता और मन ही मन अुसे प्रणाम करता था। काम करते हुअे कअी बार जब कोअी अुनसे टकरा जाता और पश्चिमी पद्धतिके अनुसार जरा विवेकपूर्वक बोल अुठता Very Sorry — बड़ा अफसोस है तो कैलनबैक तुरन्त बोल अुठते Please don't speak a lie you do not seem to be sorry — मेहरबानी करके झूठ न बोलिये आपको अफसोस हो रहा है अैसा दीखता नहीं है। अिस प्रकार अुन्हें बाहरी-अूपरी शिष्टाचार पसंद नहीं था।

फिनिक्स आश्रमकी सोलह जनोंकी मंडलीकी व्यवस्था करनेके लिये अुन्होंने वोल्क्सरस्टमें दो-तीन दिन पहले ही डेरा डाला था। अुन्होंने किसी गोरे सज्जनके मकानका अेक कमरा थोड़े दिनके लिये किराये पर ले लिया था। बादमें जब गोरे लोगोंको मालूम हुआ कि श्री कैलनबैक हिन्दुस्तानी सत्याग्रहियोंकी मदद करनेवाले हैं और अिसीलिये यहां आये हैं, तो अुन्होंने कमरा खाली करनेको कहा। श्री कैलनबैक खुशीसे अपना बिस्तर लेकर वहां चले आये जहां हिन्दुस्तानी मोहल्लेमें हमने अपना पड़ाव डाला था। मैंने अुनसे पूछा मिस्टर कैलनबैक आपको यहां रहना अखरता तो नहीं लगेगा? अुन्होंने हंसते-हंसते जवाब दिया "मेरे जीवनमें अेक समय अैसा था जब मैं रंगकी घृणासे भरा हुआ था। लेकिन आज तो कोअी गन्दा हिन्दुस्तानी बच्चा रोता हो तो अुसे प्रेमसे अुठाकर अुसके नाकका रींट साफ करके अुसे सेवाके-बजाय छातीसे लगा लेनेका मन हो जाता है। अैसे सरल-हृदय श्री कैलनबैकके जीवनका लाभ हम भारतमें न अुठा सके। अुनके हृदयमें अुमंग तो बहुत थी कि आगे गांधीजीके साथ हिन्दुस्तान जाअूंगा और अुस प्राचीन पुण्यभूमिमें रहकर नअी नअी साधनायें करूंगा। परन्तु भगवानकी अैसी अिच्छा नहीं थी। वे गांधीजीके साथ हिन्दुस्तान आनेके लिये रवाना हुअे थे दोनों अिंग्लैण्ड होकर यहां आनेवाले थे। परन्तु अुनके अिंग्लैण्ड पहुंचते ही ब्रिटेन यूरोपकी लड़ाअीमें कूद पड़ा। श्री कैलनबैकको जर्मन होनेके कारण अब निश्चित समयके लिये वहीं रहना पड़ा। सरकारने अुन्हें गांधीजीके

साथ हिन्दुस्तान आनेकी अिजाजत नहीं दी। लड़ाओ खतम होनेके बाद वे सीधे जोहानिसबर्ग चले गये और अपना शिल्पकारका धंधा करने लगे। आज भी श्री केलनबेक जोहानिसबर्गमें रहते हैं और हमारी स्वतंत्रताकी लड़ाओमें बड़ी दिलचस्पी लेते हैं।

४

'फिनिक्स आश्रम'

अिन प्रकरणोंमें मैंने टॉल्स्टॉय फार्मके बारेमें कुछ नहीं लिखा। गांधीजीने दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास में टॉल्स्टॉय फार्मके विषयमें काफी लिखा है। और अुसके सम्बन्धमें मेरी अपनी जानकारी नहींके बराबर है। अिसलिओ गांधीजीने अपनी सुन्दर भाषामें अुस अितिहासमें टॉल्स्टॉय फार्मका जो वर्णन किया है अुसका पिष्टपेषण करना व्यर्थ है। फिनिक्समें तो मैं रहा और अपने जीवनके दो धन्य वर्ष वहां बिता चुका हूं। अुस समयके गांधीजीके सहवाससे मेरे जीवन पर जो असर हुआ मैं मानता हूं कि अुसीकी बुनियाद पर अब भी मैं थोड़ा-बहुत काम चला रहा हूं। अिसलिओ अिन प्रकरणोंमें फिनिक्सको भूल जाअूं तो मैं कृतघ्न माना जाअूंगा। तो जो कुछ मुझे याद है अुसे अपनी शक्तिके अनुसार पाठकोंके सामने रख देनेकी मैं कोशिश करूंगा।

डरबनसे अुत्तर दिशामें समुद्रके किनारे-किनारे जानेवाली रेलवे लाअिन पर चौदह मील दूर फिनिक्स नामका स्टेशन है। वहां आबादी तो बहुत नहीं है। परन्तु आसपास गन्ने और वॉटल नामक (बबूलकी अेक जातिके) पेड़ोंकी खेती होनेके कारण अुसके मालिकोंके बंगले और मजदूरोंके घर यहां-वहां बने हैं। अिस फिनिक्स स्टेशनसे पूर्वकी तरफ आधी मील दूर गांधीजीने जमीनके दो टुकड़े खरीद रखे थे। अेक बीस अेकड़का और दूसरा अस्सी अेकड़का। यह जमीन अुन्होंने सन् १९ ४ में खरीदी थी। जोहानिसबर्गमें वकालत करते करते अुन्होंने जीवनके अनेक प्रयोग आरम्भ किये थे। अुनके प्रत्येक प्रयोगका केन्द्र बिन्दु आत्मशुद्धि था। आत्मशुद्धिके प्रयत्नमें से जो कुछ अच्छा लगता अुसे वे जिज्ञासुकी वृत्तिसे पकड़ लेते और अमलमें लाते थे। दक्षिण अफ्रीकामें पहले तो वे रुपया कमाने और बैरिस्टरके नाते गांधीकी व्यावहारिक प्रतिष्ठाको कायम रखने

और हो सके तो अुसे धनाजी करनेके लिये। परन्तु वहां जानेके बाद अेक ही वर्षमें अुनका यह निश्चय हो गया कि रुपया पैदा करनेके बजाय देशसेवा हो सके तो अुसके लिये वहां ज्यादा रहा जाय। अिसी वृत्तिसे वे १८९४ से १९ ४ तक वकालत और देशसेवा दोनों साथ-साथ करते रहे। अिस अरसेमें भी धन-प्राप्तिकी वृत्तिसे सेवाधर्मकी वृत्तिका पलड़ा ही भारी था। अिस अरसेमें भी जो कुछ धनप्राप्ति हो जाती वह सेवाके लिये ही खर्च होती थी। अिस तरह दस साल बीत गये। फिर भी जीवनका आदर्श स्थिर नहीं हुआ। जीवन-नौकाको किस दिशामें ले जाया जाय और कहां अुसका लंगर डाला जाय अिसका कुछ निश्चय नहीं हुआ।

परन्तु जो जिसे ढूंढता है वह अुसे मिल जाता है। गीताजीमें भगवानका अुपदेश है कि जिस रूपमें तू मुझे भजेगा अुसी रूपमें मैं तुझे मिल जाअूंगा। भगवान अीसा मसीह कहते हैं तू दरवाजा खटखटा और वह खुल जायगा। सच्चे हृदयकी प्रार्थना किस भक्तकी भगवानने नहीं सुनी? अेक दिन गांधीजी १९ ४ में जोहानिसबर्गसे डरबन जा रहे थे। स्टेशन पर श्री पोलाकने अुनके हाथमें अेक पुस्तक रखी। अिस पुस्तकका नाम था अन्टु दिस लास्ट। गाड़ीमें जैसे-जैसे अुस पुस्तकको गांधीजी पढ़ते गये वैसे-वैसे अुन्हें अनोखा आनन्द आता गया। अुन्हें अैसा लगा कि मैं जो चीज चाहता था वह मुझे मिल गयी। अुन्होंने माना कि यह छोटीसी पुस्तक अीश्वरने ही भेजी है। डरबन पहुंचते-पहुंचते अुन्होंने वह पुस्तक पूरी पढ़ डाली और साथ ही साथ हृदयमें निश्चय भी कर लिया। कैसा निश्चय?— वकालतका धंधा बन्द किया जाय। शरीर-श्रम करके श्रमजीवी बनना धार्मिक और नैतिक जीवनका मुख्य साधन है। वकालत या डॉक्टरी पर जीनेका किसीको अधिकार नहीं है। तब किसी भी धंधेसे धनका परिग्रह करनेका अधिकार तो हो ही कैसे सकता है? अपने पसीनेकी रोटी पर ही हमारा अधिकार है। वही रोटी नीतिसे पैदा की हुआी मानी जा सकती है। अैसा श्रमजीवी जीवन ही जीने योग्य है। वही भविष्यमें शान्ति देता है।

अिस पुस्तकके विचार अुनके दिमागमें छाये थे। अितनेमें श्री मदनजीतने जो दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी भलाअीके लिये अिंडियन ओपीनियन नामक साप्ताहिक अखबार निकाल रहे थे और जिनके अखबारमें गांधीजीके लेखों और आर्थिक सहायताका बड़ा भाग रहता था देख जानेका

विचार किया। दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके प्रश्नके लिअे अेक अखबारकी जरूरत तो थी ही। अिसलिअे गांधीजीने अुस अखबारको अपने हाथमें लेनेका विचार किया। जोहानिसबर्ग जैसी दूर जगहमें रहकर डरबनमें प्रकाशित होनेवाले अखबारको चलाना अुन्हें कठिन मालूम हुआ। सारी परिस्थितिका विचार करके गांधीजीने रस्किनकी पुस्तकमें पढ़े हुअे विचारोंको अमलमें लानेका निश्चय किया। अुनके भतीजे श्री छगनलाल गांधी अिंडियन ओपीनियन पत्रमें श्री मदनजीतके साथ काम करते थे। अुन्हें गांधीजीने अपना निश्चय बताया। श्री छगनलालने अुनकी योजनामें शामिल होनेकी अिच्छा प्रकट की। श्री आल्बर्ट वेस्टने भी गांधीजीकी अिच्छाका स्वागत किया। शहरसे दूर स्टेशनके नजदीक कोअी जमीन खरीद कर वहां अिंडियन ओपीनियन का प्रेस ले जाया जाय वैसे कार्यकर्ता जुटाये जाय जो अुपरोक्त विचारधाराके अनुसार जीवन बिताना पसंद करते हों हिन्दुस्तानी कौमकी सेवाके लिअे अखबार चलाया जाय अुसमें काम करनेवाले दिनके अमुक समय तक अपने मकानके आसपासकी जमीनमें खुद मेहनत करके खेतीबाड़ी करें और अुससे अपनी और अपने कुटुम्बकी जरूरतें पूरी करनेका प्रयत्न करें अनिवार्य हो तो अेक निश्चित रकम प्रेससे ले कर जीवनमें परिग्रह करनेका विचार न करें सरल जीवन और शुद्ध विचार रखनेका प्रयत्न करें और कौमकी सेवा करें — ये विचार श्री वेस्टको पसन्द आये और वे गांधीजीके निश्चयमें शरीक होनेको तैयार हो गये।

भाअी मगनलाल गांधी अुस समय धन्धेके लिअे स्टेंगरमें रहते थे। अुन्हें बुलाकर गांधीजीने अपना निश्चय बताया और अुसमें शामिल होनेको कहा। अुन्होंने भी हां कह दिया। अिस तरह काम करनेवालोंका समूह बनाकर नजीकी कोअी जमीनमें अुनके लिअे मकान तैयार किये गये। अेक कुटुम्बके रहने लायक मकान और अुसीके साथ तीन अेकड़ जमीन — अिस प्रकार हर परिवारके लिअे दस मकान बनवाये गये। अिस जमीनमें पानीका अेक छोटासा झरना था। अुस झरनेके पास ही प्रेसके लिअे ७५ × ५० फुट लम्बा चौड़ा कामचलाअू मकान बनाया गया। डरबनसे प्रेस और अखबारका दफ्तर यहां लाया गया। प्रेसका पुराना नाम अिंटरनेशनल प्रिंटिंग प्रेस था। अब वैसा ही रहने दिया। श्री मगनलाल और श्री वेस्ट अिसके मुख्य व्यवस्थापक थे। अनुभवी और शक्तिशाली तथा जीवनके मुख्य हेतुसे प्रेरित होकर हिन्दुस्तानी जातिकी सेवाके काममें अपना जीवन अर्पण करनेवाले

गोरे मित्र श्री आल्बर्ट वेस्टके बारेमें गांधीजीने अपने हाथसे जो लिखा है अुससे ज्यादा मैं क्या लिख सकता हूं? प्रामाणिकता, अुद्योगशीलता और सेवाभाव — ये गुण मैंने अुनमें विशेष तौर पर देखे। वे वर्षों तक वहां रहे परन्तु हिन्दुस्तानी काम करनेवालोंके साथ अुन्होंने कभी भेदभाव नहीं किया। मैं जब वहां था तब वे कुटुम्बवाले थे। परन्तु जब अखबारका काम संभाल लेनेको गांधीजीने अुन्हें जोहानिसबर्गसे डरबन भेजा तब वे अकेले थे। अुनकी शादी नहीं हुअी थी। वे जोहानिसबर्गमें छापाखानेका धंधा करते थे। गांधीजीके काममें मदद देनेके शुद्ध हेतुसे कुछ ही घंटोंके भीतर अपने सारे धंधेकी व्यवस्था हिस्सेदारको सौंपकर वे डरबन चले गये और वहां अुन्होंने 'अिंडियन ओपीनियन' का काम संभाल लिया। अुसके बाद लगभग बारह बरस तक वे प्रेस और अखबारके व्यवस्थापकके रूपमें रहे। अुस समय हर कार्यकर्ताके खर्चकी रकम तीन पौंड निश्चित की गयी थी। वही अुन्होंने भी स्वीकार की। दक्षिण अफ्रीकामें अुनके जैसे होशियार आदमीके लिअे यह वेतन बहुत ही कम था। परन्तु वे वेतनके लिअे तो रहे नहीं थे। फिनिक्सके आदर्शमें शरीक हुअे तब अुन्हें वेतनके रूपमें हर महीने तीन पौंड मिलते थे और शरीर-श्रम करके जमीनसे जितना पैदा हो सकता हो अुतना कर लेनेका हक था। जब श्री वेस्टने विवाह किया और अपनी पत्नी, बहन और बूढ़ी सासको वे गांधीजीकी सलाहसे फिनिक्समें लाये तब अपनी कमसे कम जरूरतोंके अनुसार वे आठ पौंड लेने लगे। अेक मामूली हिन्दुस्तानी मजदूरका पांच पौंड मासिक खर्च आता था। अैसे खर्चीले प्रदेशमें चार मनुष्योंके गुजरके लिअे आठ पौंड बहुत ही कम थे। परन्तु श्री वेस्टको यह त्याग और सादगी पसन्द थी। गांधीजीके जीवनके आदर्शोंमें वे रम गये थे। और जब तक अुनके अिन आदर्शोंकी रक्षा हुअी तब तक वे वहां बने रहे।

श्री मगनलाल गांधीके नामसे तो गुजरात परिचित ही है। वे और अुनके बड़े भाअी श्री छगनलाल गांधी भी वहां स्थायी हो गये। भाअी गोविन्दस्वामी नामके अेक मद्रासी सज्जन भी पहलेसे ही अिस काममें शरीक थे। वे भी आश्रमके सदस्य बन गये। और दूसरे दो परिवार वेतनिकके रूपमें रहते थे। फिनिक्समें काम करनेवालोंकी व्यवस्था अिस प्रकारकी थी।

सन् १९१२ में साधुचरित देशभक्त गोखलेजीके दक्षिण अफ्रीका जानेके बाद और सरकारके साथ हुअे कामचलाअू समझौतेके बाद गांधीजीने टॉल्स्टॉय

छापेकी सारी व्यवस्था समेट ली और पाठशालाके विद्यार्थियोंके साथ फिनिक्स चले गये। तबसे फिनिक्समें आश्रम जीवन आरम्भ हुआ।

प्रथम गांधीजीने स्वामी रूपमें वहाँ रहना तय किया, तबसे फिनिक्सके आदर्शोंके अनुसार जीवनचर्या कड़ाअीसे पालन होने लगा। वहाँके निवासकालके कुछ प्रसंगोंका वर्णन आगे आयेगा। परन्तु गांधीजीने खुद अिस संस्थाके बारेमें क्या आशा रखी थी, अुसकी स्थापनाके पीछे अुनका क्या हेतु था और व्यक्ति और समाज दोनोंके जीवनमें अुसका क्या स्थान होना चाहिये, अिसकी कुछ कल्पना नीचेकी हकीकतसे हो सकेगी।

फिनिक्समें रहनेवालोंको कुछ शर्तोंका पालन करना पड़ता था:

(१) ब्रह्मचर्यका पालन करना। (२) सूक्ष्म सत्यव्रतका पालन करना। (३) काम मुख्यतया शरीर-श्रमका यानी खेतीका करना। (४) अखबार-काम चलानेका हेतु हो तो अुसे मूल मानना सहज ही और जरूरत पड़ने पर वह काम तो भले ही करे। ( ) मनमें यह निश्चय करना कि अखबार-कामके बजाय चरित्रको दृढ़ बनाना हमारा कर्तव्य है। (६) जाति या कुटुम्बके बन्धनसे निडर होकर विरोध करनेकी तैयारी रखना। और (७) शुद्ध दरिद्रता धारण करना।

अूपरके नियम व्यक्तियोंके लिये थे। अुनके अलावा समाजके लिये अुनका आदर्श अिस प्रकारका था:

(१) सत्य परम साध्य वस्तु है। वह परमात्मा — अीश्वर है।

(२) अहिंसा अिस साध्यको प्राप्त करनेका साधन है।

(३) सत्य और अहिंसाके आधार पर जिस समाजकी रचना हो, तो ही अुसमें स्थिरता, दृढ़ता और स्वतंत्रता आ सकती है।

मैंने विचार प्रकट करनेवाले गांधीजीके कुछ पत्र, जिनमें फिनिक्स संस्थाके बारेमें अुन्होंने निर्देश किया है, मैं नीचे दूँ तो मुझे लगता है कि यह समझा जा सकेगा कि गांधीजीने फिनिक्सके बारेमें क्या क्या आशायें रखी थीं।

विपत्तिके लिये धैर्यके सिवा और कोअी अिलाज नहीं है। साधन तो जो ट्रान्सवालमें हैं, वही देशमें होने चाहियें, अिस बारेमें मेरे मनमें कोअी शंका नहीं। परन्तु   का पत्र बता रहा है कि हम तैयार तो फिनिक्स जैसे स्थानमें ही हो सकेंगे। श्मशानमें सोते हुअे भी निडर रहना मनुष्यका कर्तव्य है। परन्तु

संभव है कि स्मशानमें सोना शुरू करनेवाला आदमी सोते ही डरके मारे मर जाय। अुसी तरह तुम्हारा और मेरा हिन्दुस्तान अभी तो स्मशानरूप है। अुसमें बिस्तर बिछा कर मीराबाअीका प्रभुभक्तिका भजन 'जोग ना जोग ना' गा सकें अिसकी तैयारी यहां करनी चाहिये — करनी पड़ेगी। किसी भी प्रकारसे और किसी भी समय आनेवाली मौतका स्वागत करने योग्य बल मुझमें आयेगा अैसा आभास हुआ करता है। मैं चाहता हूं कि सभीमें अैसा बल आये।

* * *

"तुम जरा विचार करोगे तो देख सकोगे कि यह सवाल पैदा ही नहीं होता कि कौन किसे निकाले। जब फिनिक्सकी हालत पूरी तरह कमजोर हो जायेगी तब निकालने और रखनेकी जरूरत ही नहीं रहेगी। परन्तु जिस पर सच्चा रंग चढ़ा होगा वही यहां रहेगा। कुछ समय तो यह सवाल अुठेगा कि कौन यहां रहेगा। आज हम वेतन नहीं देते परन्तु भोजन दिया जाता है। सवाल यही है कि अुसमें भी कमी करके कष्ट अुठाकर और सूखी रोटी खाकर कौन रहेगा? फिनिक्स आश्रम भी फिनिक्समें ही रहेगा सो बात कहां है? जहां फिनिक्सका अुद्देश्य है वहीं फिनिक्स है। हम सारी तैयारी हिन्दुस्तानके लिये करते हैं। तुम मेरी आत्माको जितनी समर्थ मानते हो अुतनी ही समर्थ तुम्हारी आत्मा भी है। हमारी आत्माओंमें कोअी भेद नहीं है। परन्तु तुममें जितनी असारमता दीर्घकालीन भीरुता संशय अनिश्चय आदि हों अुन्हें निकाल डालो तो हम दोनों अेकसे ही हैं। फर्क अितना ही रह जाता है कि महाप्रयाससे मैंने जितने आश्रम खोले हैं अुतने और अुनसे अधिक तुम भी खोल सकोगे यदि तुम दृढ़तासे साहस करो।"

* * *

मैं बहुत चाहता हूं कि मुझे सत्याग्रह फिरसे न करना पड़े। यही मेरी बड़ी अिच्छा है। मैं भी चाहता हूं कि मेरे जीते-जी फिनिक्समें हम पूरी मस्तीसे रहने लगें। वह दिन दिखानेकी मैं अीश्वरसे प्रार्थना करता हूं। परन्तु लक्षण तो सब अुल्टे ही देखता हूं। कलके लिये अेक पाअी भी नहीं है कैसे काम चलेगा? — अैसे अवसरका अलभ्य लाभ हमें नहीं मिलेगा अैसा लगता है। अिस लाभको मैं अलभ्य मानता हूं क्योंकि दुनियाके मुख्य भागोंकी यही स्थिति है युग आदिकी यही स्थिति थी और भविष्यमें भी रहेगी। अैसा निश्चित रूपमें लगता है कि जिसके बिना आत्मारामको पहचाना नहीं जा सकता। ये हमें

ज्ञान सिखाया है परन्तु वह पुस्तक-ज्ञान मालूम होता है। सच्चा ज्ञान नरसिंह मेहता और तुलसीदासजीने सिखाया है औसा निश्चित लगता है। अिन्द्रियोंका भोग भोग कर कहना कि मैं कुछ नहीं करता, अिन्द्रियां अपना काम करती हैं, मैं तो [illegible] हूं—आदि वाक्य बिलकुल मिथ्याचारियोंके-से हैं। जिसने पूर्ण अिन्द्रिय-दमन किया है और जिसकी अिन्द्रियां शरीर-यात्राके लिअे ही सारे व्यापार करती हैं वही यह वाक्य कह सकता है। अिस दृष्टिसे हममें से अेक भी आदमी यह वाक्य बोलनेका अधिकारी नहीं है। और जब तक सच्ची पवित्रता नहीं आ जाती तब तक यह चीज हमें मिलेगी नहीं। यह माननेके लिअे कोअी कारण नहीं कि राजा आदि पुण्यके प्रतापसे राजा बनते हैं। अितना ही कहा जा सकता है कि वे कर्मके प्रतापसे बनते हैं। परन्तु यह कहना कि वह पुण्य-कर्म ही है आत्माके गुणोंकी परीक्षा करने पर बिलकुल गलत मालूम होता है। ये विचार तुम सबको सही लगें और यदि तुम यह चाहते हो कि जिस प्रेम-पदार्थका मैं चित्र खींच रहा हूं अुसे तुम सब भोगो तो संभव है औसा समय ओश्वर कभी दिखा भी दे।

* * *

अभी रातके साढ़े नौ बजे हैं। [illegible] अभी पांच दिनकी मंजिल बाकी है। मैं दाहिने हाथसे लिखते लिखते थक गया हूं अिसलिअे तुम्हें बायें हाथसे लिख रहा हूं। शायद मैं सीधा जेल भेज दिया जाअूं। अिसलिअे यह पत्र लिख रहा हूं।

मैं [illegible] जानता हूं कि [illegible] जेल जानेसे तुम तो खुश ही होगे क्योंकि [illegible] सत्याग्रहका रहस्य यह है कि हम जेलमें जाकर खुश हों [illegible]

[illegible] अच्छा किया। पहले यह विचार [illegible] है और रखनेका कैसे कर [illegible] है। [illegible] चीज [illegible] रखना चाहिये। [illegible] रखनेका [illegible] विचार [illegible]

फिक्शनका अर्थ है कल्पित कहानी। रामायण और महाभारतमें अितिहास थोड़ा और कल्पना अधिक है यह निःसन्देह बात है। ये दोनों धर्मग्रंथ हैं। करोड़ों लोग तो अन्हें अितिहाससे भी अधिक मानते हैं और यह अुचित है। भरतके जैसे ही रामके भाअी भरत न हुअे हों परन्तु वैसे पात्र हिन्दुस्तानमें तो हुअे हैं। तभी तो तुलसीदासजी अुनकी कल्पना कर सके। जिनके गुण रामायणमें चित्रित हैं अुनकी अुपासना सारा भारतवर्ष करता है।

सत्याग्रह करनेके कारण की हुअी सारी मेहनत अगर व्यर्थ जाय और अुससे फिनिक्स अुजड़ जाय तो हम कुछ भी चिन्ता न करें। शान्त स्थितिमें हम खेती करें। अशान्तिमें भीख मांगें मजदूरी करें या भूखों मरें। अिस निरपवाद कानूनमें हमारा दृढ़ विश्वास होना चाहिये कि किया हुआ कर्म व्यर्थ नहीं जाता। फिरसे खेती करनेका मौका आये तो खेती करें, न आये तो निश्चिन्त रहें। खेती साध्य नहीं परन्तु साधन है। स्थूल रूपमें लोकसेवा हमारा साध्य है सूक्ष्म रूपमें मोक्ष हमारा साध्य है। दोनोंको साधनेका अेक साधन खेती है। साध्यकी प्राप्तिमें यह बाधक बन जाय तब हम अुसे छोड़ दें।

क   जो कर ले रहे हैं यह अनिष्ट है। फिर भी अैसे लोगोंके लिअे हमें तितिक्षा रखना चाहिये — अैसा मानकर कि किसी समय तो भी वे स्वादका त्याग कर देंगे। हमारा मन अुनके लिअे तो स्वच्छ ही है। अुनके लिअे हम जितनी आसानी पैदा कर सकें अुतनी कर दें। क   को लागू होनेवाला नियम हम सब पर लागू न करें। अिसलिअे अैसे मामलोंमें अेक ही नियम न रखें। क   भी सीमा छोड़ दें तो हमारे कामके नहीं रह जायेंगे।

फिनिक्स संस्था रखनेका कारण पूज्य ही बतलाते हैं। अन्य लोग और वे स्वयं पूरा समझ सकें अिसलिअे अुन्होंने हमारी संस्थाका फिनिक्स नाम रखा। फिनिक्सके सच्चे अुद्देश्य तो यहींकी संस्थाके हैं और वे फिनिक्सके अुद्देश्योंको समझते थे अिसलिअे अुन्होंने अुसका फिनिक्स नाम रखा। हमें हमेशा तो यह नाम रखना नहीं है। कहीं न कहीं स्थायी बन जायेंगे तब दूसरा नाम ढूंढ़ लेंगे।   रगूनमें काफी अनुभव हुअे हैं।

बापूके आशीर्वाद

गांधीजी अंतिम अप्रैलमें लन्दन गये और फिनिक्सकी माया तथा मैं मगनलाल गांधी वगैरा लोग वहाँसे आ गये। वे सब गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टागोरके शान्तिनिकेतनमें रहे थे। श्री मगनलालको शान्तिनिकेतनका भी

मैं अिस नतीजे पर तो पहुंचा ही हूं कि दुनियामें आज अैसी कोअी संस्था नहीं है जो फिनिक्सके आदर्शों या पहल-कदमसे अूंची पहुंचती हो। हो तो मुझे अन्य वर्ग नहीं जानता। यह अच्छा है कि तुम सब पर वहां भार पड़ा है। मेरी तन्दुरुस्ती ठिकाने नहीं आअी थी कि अितनेमें कब्जसे बालो जोरका रक्तस्राव शुरू हो गया। पता नहीं अीश्वरकी क्या अिच्छा है। फिर भी तुम सब निश्चिन्त रहना।

मेरी खुराकमें वनस्पतिके क्षार काफी नहीं हैं, अिसलिअे डॉक्टर अैमिन्यानने कन्दमूल और भाजी खानेकी सिफारिश की है। अिसलिअे अिस भयंकर स्थितिमें भी मैं प्रयोग कर रहा हूं। मेरा भोजन अिस प्रकार है : सुबह पहले छिले हुअे भुने केले और फलोंके दो-तीन चम्मच मिलाकर सूपका काढ़ा। अुसमें टमाटर भी डालता हूं और अेक चम्मच तेल। दोपहरको अेक छोटी गाजर और आधा छोटा सलजम कच्चा और गेहूं तथा केलेके आटेसे बने आठ बिस्किट चबाचबाकर खाता हूं। कभी कभी गाजर और सलजमके बजाय कच्ची पत्ता गोभीके दो पत्ते पीस कर लेता हूं। शामको दो चम्मच चावल अुबालकर अुसके साथ अूपर बताये अनुसार कच्चा साग और भिगोये हुअे अंजीर तथा केले और गेहूंके आटेकी रोटीका छोटासा टुकड़ा। अभी तो अिस प्रकार चल रहा है। अुद्देश्य यह है कि पका हुआ भोजन छोड़कर कच्चे पर रहूं और गेहूं छोड़कर अुसके बजाय नट पर कायम आ जाअूं। सुबह दो सेब लेता हूं। कच्चा साग खाते हुअे अब लगभग अेक मास हो गया। अिससे कोअी नुकसान होता नहीं दीखता। तुम कहते थे कि कच्चा साग खाया जा सकता है परन्तु यह बात मेरे गले नहीं अुतरती थी। यहां बहुत लोग कच्चा साग खाते दीखते हैं। अिसमें बहुतसे विचारोंका समावेश होता है परन्तु अभी नहीं लिख सकता। फिर लिखूंगा। दूधभी भी मैंने यहां अन्तिम बार लिया है। डॉक्टरोंके बहुत पीछे पड़ने पर भी नहीं छुआ तो तबीयत बिगड़ जायगी अैसा महसूस होनेके कारण लिया है। अब मैं तो अिस जन्ममें ये वस्तुअें कभी नहीं खाअूंगा। अन्य सब यहां लगा। अिस बीच सम्भवतः यहां कोअी वन भी लिया जाय तो कह नहीं सकता।

५

पुत्रवत्सल गांधीजी

गांधीजीने अपना जीवनपथ निश्चित करना आरम्भ कर दिया था। जिस समाजमें हम जिन विचारों और व्यवहारको प्रगतिशील मानते हैं वे गांधीजीको प्रगति-विरोधी मालूम हुअे। और दिनोंदिन अुनकी यह मान्यता मजबूत होती गयी। अुन्हें अैसा जान पड़ा कि यह संसार जिस दिशामें आगे बढ़ रहा है, अुस दिशामें वह अधोगतिके गहरे गर्तमें गिरनेके लिअे ही दौड़ रहा है। पाश्चात्य संस्कृति आत्मा-विहीन और अधार्मिक होनेके कारण वह अुन्हें संसारके विनाशकी जड़ प्रतीत हुअी। आजकलकी शिक्षा मानवताको भी वंचित कर देनेवाले विश्वविद्यालयोंके दांभिक प्रदर्शन बौद्धिक शिक्षणकी कार्य-पद्धति और बुद्धिभ्रम तथा शिक्षाके नाम पर होनेवाला राष्ट्रीयताका और मानवीय भावनाओंका ह्रास देखकर अुस शिक्षा और अुसकी सभ्य दिक्षाकी देनेवाली संस्थाओंके प्रति अुनका मोह नष्ट हो गया। सच्ची शिक्षा कैसी होनी चाहिये जिसकी योजना वे अपने हृदयमें बनाने लगे। और अपने पुत्रोंको वैसी ही शिक्षा देनेका अुन्होंने निर्णय किया। हिन्द स्वराज्य या आत्म-स्वराज्य — मोक्ष प्राप्त करनेके लिअे क्या क्या करना चाहिये कैसी रहन-सहन होनी चाहिये कैसा अध्ययन होना चाहिये कैसी शिक्षा होनी चाहिये कैसा व्यवहार होना चाहिये अुसके योग्य जीवन बनानेके लिअे क्या किया जाना चाहिये — अैसे विचारोंके मंथन द्वारा गांधीजीने अपना जीवन-परिवर्तन किस ढंगसे किया यह अुन्होंने अपनी आत्मकथा में विस्तारसे वर्णन किया है। जिसी अुद्देश्यसे अुन्होंने फिनिक्स संस्थाकी स्थापना की और सारे कुटुम्बको अपने विचारोंमें रंगना शुरू किया। जिस बातसे सबसे बड़े पुत्र हरिलाल गांधीको असंतोष हुआ। अुन्हें अैसा लगा कि गांधीजी भावुकताकी ओर प्रयाण कर रहे हैं। परिवारकी स्थिति संतोषजनक नहीं है मुझे और दूसरे छोटे भाअियोंको शिक्षा देनेके लिअे गांधीजीने अभी तक कोअी साधन अिकट्ठे नहीं किये हैं। जिस पर ये नये विचार और अुन पर अमल करनेके लिअे कठोर आचरण! यह सब किसलिअे? शान शौकत वैभव मान प्रतिष्ठा और धनप्राप्तिके बजाय केवल देशसेवा और साधुताके मार्ग पर विचरनेवाले गांधीजीके प्रति भी हरिलालके हृदयमें

असंतोषकी आग भभकने लगी। शरीर-श्रम करना, धंधा करना, अुद्योग करना, बीमारोंकी देखभाल करना, संयम और यम-नियमका पालन करके व्रत लेकर समाजकी सेवाके लिअे तैयार होना और मोक्षके लिअे पाथेय बांधना ये बातें भी हरिलालको पसन्द नहीं आती। आधुनिक शिक्षाकी संस्थाओंमें पारंगत होकर परीक्षायें पास करके और अुपाधियां लेकर जीवनको आगे बढ़ानेकी जो महत्त्वाकांक्षा अुनके हृदयमें जाग अुठी थी वह किसी तरह शान्त नहीं होती थी। बा के मनमें भी अैसे ही विचार आया करते थे। अिन्होंने क्या सोचा है? क्या लड़कोंको अपढ़ रखना है? सबको लंगोटी पहनानी है? गरीब और भिखारी रखना है? ये अुद्गार बा बार-बार प्रगट किया करती थीं। मौका आने पर गांधीजी अुन्हें समझाते थे, परन्तु अुनका हृदय किसी तरह मानता नहीं था। हरिलाल तो अक्सर साफ कह देते थे, "आपने जैसे बैरिस्टर बनकर [illegible] शक्ति प्राप्त की वैसे हम भी शक्ति प्राप्त कर लें और धन कमा लें, अुसके बाद साधनाका और देशसेवाका विचार करेंगे।" अिस विचारको हरिलालने [illegible] कर लिया। अुन्हें अैसा लगा कि जब तक मैं बापूजीके साथ रहूंगा तब तक अुनके पंजेसे छूट नहीं सकूंगा। अिसलिअे अुन्होंने आश्रम छोड़कर भागनेका विचार किया।

अेक दिन [illegible] गांधीजीको मालूम हुआ कि हरिलाल जोहानिसबर्ग [illegible] गये हैं और वहांसे ही जहाजसे देशके लिअे रवाना होनेवाले हैं। [illegible] लिखा था। गांधीजीके लिअे यह समाचार असह्य था। [illegible] कि हरिलाल हमसे छिपकर चले जायें। पुत्रवत्सल [illegible] हरिलालके अिस बरतावसे बड़ी चोट लगी। वे परेशान और विह्वल [illegible] हरिलाल चला गया [illegible] मुझसे असन्तुष्ट होकर चला गया? [illegible] क्या किया? मुझसे मिला तक [illegible] हरिलाल तू कैसे चला [illegible] बहुत बेचैन थे [illegible] रवाना होनेसे पहले [illegible] हरिलाल [illegible]

मुझे भी अैसा लगता था कि अिन लड़कोंको किसी अुत्तम विद्यालयमें या महाविद्यालयमें पढ़ानेके बजाय गांधीजीने यहां क्यों पढ़ानेको रखा है? गांधी मणिलालके हाथमें पुस्तक तो पाठशालाका जो दो-तीन घंटेका समय रहता अुसी वक्त दिखाओी देती थी। वैसे सारे दिन तो वे और और धंधोंमें ही लगे रहते थे। सवेरे फावड़ा-कुदाली लेकर बगीचेमें काम करते, साग-भाजीके नये बीज डालते, बीजोंके लिओ नयी क्यारियां बनाते या फलके पेड़ोंकी नयी कलम करते। दो घंटेके अिस कामके बाद पाखानोंकी बाल्टियां साफ करते, पाखानेको व्यवस्थित ढंगसे क्यारीमें मिला देते। और दोपहरका समय बढ़ओीके काममें बिताते। अलमारी बनाते और मेज बनाते। फिर दोपहर बाद प्रेसमें कम्पोज करने जाते और प्रूफ सुधारते। अिस तरह सारे दिन अुन्हें कभी बातों पर ध्यान देना पड़ता। अिसके सिवा कोओी बीमार होता तो अुसकी देखभालका भी कुछ न कुछ काम अुनके सुपुर्द होता। यह सब मैं देखता तो मेरे मनमें प्रश्न अुठता कि ये लड़के आगे कैसे बढ़ेंगे?

परन्तु गांधीजीने तो शिक्षाकी अेक नयी ही पद्धति खड़ी कर ली थी। अुन्होंने अेक छोटीसी पाठशाला बना ली थी। अुसमें सत्याग्रही कार्यकर्ताओंके बच्चे प्रेसके कार्यकर्ताओंके बच्चे और अुनके अपने तथा अुन पर श्रद्धा रखने वाले कुछ स्नेहियोंके बच्चे पढ़ते थे। अिस प्रकार पच्चीस-तीस बच्चे गांधीजीकी संरक्षकतामें कुटुम्बीजनोंके रूपमें वहां रहते और गांधीजीकी पद्धतिसे पढ़ाओी करते थे। यह पद्धति कैसी थी? अुसकी कुछ कल्पना अुन्होंने 'हिन्द स्वराज्य' में दी है। यदि मनुष्यके शरीरको अिस तरहकी तालीम मिली हो कि वह अुसके काबूमें रह सके सौंपा हुआ काम प्रसन्नता और आसानीसे करे, यदि अुसकी बुद्धि शुद्ध हो शान्त हो और न्यायदर्शी हो अुसका मन कुदरतके कानूनोंसे भरा हो और अिन्द्रियां वशमें हों अुसकी अन्तर्वृत्ति विशुद्ध हो वह नीच कामोंको तिरस्कारता हो और दूसरोंके लिओ आत्मौपम्य भाव रखता हो प्रकृतिके नियमोंके अनुसार चलता हो और प्रकृति अुसका जिसकिसी अच्छा अुपयोग करती हो कि वह स्वयं प्रकृतिका अच्छा अुपयोग करता है तो अैसा मनुष्य शिक्षित — सच्ची तालीम पाया हुआ माना जायगा। हम जिसे शिक्षा कहते हैं जिसके लिओ हम बड़ी बड़ी शालाओं और विश्वविद्यालय स्थापित करते हैं अुनमें जो विषय पढ़ाये जाते हैं अुनसे मनुष्यको अूपर बताओी हुओी शिक्षा नहीं मिलती। केवल भूगोल-विद्या खगोल-विद्या भूस्तर-विद्या या बीज-गणित पढ़ानेसे मन संयमी प्रामाणिक

न्यायप्रिय और सत्यनिष्ठ नहीं बनता। शरीरको भी अुससे अैसी तालीम नहीं मिलती कि वह अुसके वशमें रह सके। वह अपना काम यदि प्रसन्नचित्त और सरलतासे नहीं कर सकता तो फिर अिन विद्यार्थियोंके जीवनका क्या काम? अिसलिअे केवल अिन सबकी पढ़ाअीको गांधीजी पूरी और सच्ची शिक्षा नहीं मानते। शिक्षित व्यक्तिके बारेमें अुनका ख्याल अैसा है: अेक किसान अीमानदारीसे खेती करके रोटी पैदा करता है और अपना तथा अपने परिवारके लोगोंका निर्वाह करता है; अुसे आम तौर पर संसारकी नीति-रीतिका ज्ञान है; वह पुत्रके रूपमें अपना कर्तव्य समझता है और अुसीके अनुसार अपने माता पिताके साथ व्यवहार करता है, पिताकी हैसियतसे भी वह अपने कर्तव्यका अच्छी तरह पालन करता है और अपनी पत्नीके प्रति भी वफादार स्नेहीको शोभा देनेवाला पवित्र व्यवहार करता है, अुसे अिस बातका भी काफी ज्ञान है कि अपने सगे-सम्बन्धियोंके साथ या जिस समाजमें वह रहता है अुस समाजके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये; वह नीति-नियमोंको समझता है और अुन्हें पालता है; वह अपने पैदा करनेवाले प्रभुके प्रति पूज्यभावसे श्रद्धा रखकर तथा अुसके बन्दोंको अपने जैसा मानकर सबके साथ नम्रभावसे व्यवहार करता है; यह सब होते हुअे भी यदि अुसे अक्षर-ज्ञान न हो और वह अपने दस्तखत भी न कर सकता हो तो अितने परसे ही अुसे अशिक्षित मानना अुचित नहीं है।

गांधीजी अैसा मानते हैं कि आजकल प्राथमिक शालाओंमें जो शिक्षा दी जाती है वह तो निरा अक्षर ज्ञान है। वह अेक साधन मानी जा सकती है साध्य नहीं। मनुष्य अपनी वृत्तिके अनुसार अुसका अुपयोग करते हैं। और अिस संसारमें सदुपयोगकी अपेक्षा अुसका दुरुपयोग ही अधिक हुआ है। अिसके सिवा शालाओंमें जो विषय पढ़ाये जाते हैं, वे तो विश्वविद्यालयोंके प्रमाणपत्र लेनेके लिअे हैं। अुनका अुपयोग अुनके जरिये पेट भरनेके लिअे ही होता है। यह शिक्षा जीवन-निर्वाहका अेक साधन बन गयी है और अुसका अुपयोग भी परहितकी अपेक्षा दूसरेके हितको हानि पहुंचाकर अपना स्वार्थ साधनेमें ही अधिक होता है यह हम देख रहे हैं। शिक्षाके बारेमें अपनी अिन विचारसरणीके कारण गांधीजीने अपनी गृहशालामें अुसीके अनुसार कार्यक्रम रखा था।

परन्तु भाअी हरिलालकी तरह ही भाअी मणिलाल और रामदासको भी अिस शिक्षासे संतोष नहीं था। अिसलिअे गांधीजी प्रसंग आने पर अुन्हें

सच्ची शिक्षाके बारेमें समझाया करते थे। दूर होते तब पत्र द्वारा सच्ची शिक्षाके पाठ अुन्हें समझाते थे। अैसे कुछ पत्र अुन्होंने भाअी मणिलाल और रामदासको लिखे हैं। अुन्हें पढ़कर गांधीजीका यह प्रयत्न समझमें आ जायगा।

"चि॰ मणिलाल

"तुम्हें क्या करना है अिस सवालसे तुम घबरा गये। तुम्हारी तरफसे मैं जवाब दूं तो यह कहूंगा कि तुम्हें अपना फर्ज अदा करना है। अिस समय तुम्हारा काम माता-पिताकी सेवा करना जितनी शिक्षा मिले अुतनी शिक्षा लेना और खेती करना है। आगेकी चिन्ता तुम न करो। यह चिन्ता तुम्हारे माता पिताको है। जब मैं मर जाअूंगा तब यह चिन्ता तुम करना। अितना निश्चय होना चाहिये कि तुम्हें बैरिस्टरी या डॉक्टरीका पेशा नहीं करना है। हम गरीब हैं और गरीब ही रहना चाहते हैं। पैसेकी जरूरत केवल भरण-पोषणके लिये रहती है। जिन्दगीको अूंचा अुठाना हमारा काम है, क्योंकि अुसके जरिये हम अपनी आत्माकी खोज कर सकते हैं और देशसेवा कर सकते हैं। अितना विश्वासके साथ मान लेना कि तुम्हारी चिन्ता मैं हमेशा करता हूं। मनुष्यका सच्चा काम यही है कि वह अपना चरित्र निर्माण करे। कमाअीके लिये खास तौर पर कुछ सीखना नहीं पड़ता। जो आदमी मनुष्य-जातिका रास्ता कभी नहीं छोड़ता वह कभी भूखों नहीं मरता और भूखों मरनेका समय आ जाय तो डरना नहीं चाहिये। तुम निश्चिन्त रह कर जो पढ़ाअी वहां हो सकती हो करते रहो। यह लिखते हुअे तुमसे मिलने और तुम्हें छातीसे लगानेका मन हो रहा है। परन्तु अैसा नहीं कर सकता अिसलिये आंखें भर आती हैं। तुम निश्चय समझो कि बापू तुम्हारे साथ निर्दयता नहीं करेंगे। मैं जो कुछ कर रहा हूं तुम्हारे भलेके लिये ही कर रहा हूं। यह विश्वास रखना कि तुम औरोंकी जो सेवा करते हो वह कभी व्यर्थ नहीं जायगी।

बापूके आशीर्वाद

अिसी तरह शिक्षा या अभ्यासके बारेमें भाअी रामदासको भी गांधीजीने नीचेका पत्र लिखा था

"चि॰ रामदास

परोपकार करना दूसरोंकी सेवा करना और अैसा करते हुअे जरा भी अहसान न मानना यही सच्ची शिक्षा है। जैसे जैसे तुम अुमरमें बड़े होगे

जैसे जैसे यह बात अधिक अनुभव करोगे। बीमारोंकी सेवा करने जैसा अुत्तम मार्ग और क्या हो सकता है। अुसमें धर्मका बहुत बड़ी हद तक समावेश हो जाता है।

"जब तक तुम शुद्ध नीतिकी रक्षा करोगे और अपना फर्ज पूरा करते रहोगे तब तक मैं तुम्हारे अक्षर ज्ञानके बारेमें निश्चिन्त हूं। यदि मेरा कार्य जिसे शास्त्रोंमें यम-नियम कहा गया है टिका रहे तो काफी है। तुम शौकके खातिर या अधिक योग्य बननेके लिअे अक्षर ज्ञान बढ़ाओ तो अुसमें मैं तुम्हारा सहायक होअूंगा। और तुम अैसा न करो तो मैं तुम्हें अुलाहना नहीं दूंगा। फिर भी मनमें जो निश्चय कर लो अुस पर डटे रहनेकी कोशिश करना। तुम प्रेसमें क्या क्या करते हो अुसका हाल लिखना। यह भी लिखना कि तुम कब अुठते हो और खेतमें क्या काम करते हो।

बापूके आशीर्वाद"

श्री मणिलालभाअीको लिखे दो-अेक पत्र और देखिये

"चि० मणिलाल

तुम मि० वेस्टकी आखिरी सेवा कर रहे हो यह तुम्हारा सबसे अच्छा अभ्यास है। जो मनुष्य अपना कर्तव्य पूरा करता है वह सदा ही अभ्यास करता है। तुम लिखते हो कि अभ्यास छोड़ देना पड़ा है। पर अैसी बात नहीं है। तुम सेवा करते हुअे अभ्यास ही कर रहे हो। हां अक्षर-ज्ञानको छोड़ देना पड़ा यह कहना ठीक है। सेवाके लिअे अक्षर-ज्ञानको छोड़ देनेमें कोअी बुराअी नहीं है। अक्षर-ज्ञान तो बादमें भी प्राप्त किया जा सकता है। परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि सेवा करनेका अवसर बादमें आवेगा। यह भी दिलमें लिख रखना कि तुम्हारा मन साफ है जिसलिअे सेवा करते हुअे तुम बीमार नहीं पड़ोगे और जितने पर भी बीमार पड़े तो मैं निश्चिन्त रहूंगा। जिस तरह [illegible] हो तुम और मैं सब सम्पूर्ण बनेंगे। अच्छा जीवन व्यतीत करना सीखना सच्चा अभ्यास है। अन्य सब मिथ्याभ्यास है।

बापूके आशीर्वाद"

चि० मणिलाल

"तुमसे कोअी पूछे कि तुम कौनसे वर्णमें हो, तो क्या तुम अपना जवाब नहीं दे सकोगे? तब यह जवाब देना कि मैं बापूके वर्णमें हूं। तुम्हें पालेका

विचार क्यों आया करता है? कमानेके लिये आता हो तब तो यह ठीक नहीं है, क्योंकि भोजन तो अीश्वर सबको देता है। तुम मजदूरी करके भी पेट भर सकते हो। और हमें तो फिनिक्समें या ऐसे ही दूसरे काममें मरना है। तब कमानेकी बात ही कहां अुठती है? तुम्हें देशके खातिर पढ़ना हो तो वैसा तुम आज भी कर रहे हो। यदि आत्माको पहचाननेके लिये पढ़ना हो तो अच्छा बनना सीखना चाहिये। तुम अच्छे हो वैसा सभी कहते हैं। अब बाकी रही ज्यादा काम करनेके लिये तुम्हारे पढ़नेकी बात सो अुसके लिये विलायतकी जरूरत नहीं। जितनी पढ़ाई फिनिक्समें हो सकती हो अुतनी करो। बादमें देखा जायगा। अगर तुम्हें भरोसा हो कि मैं तुम्हारी चिन्ता रखता हूं तो तुम अपनी चिंता छोड़ दो।"

* * *

समझौता होनेकी आशा अब थोड़ी ही है। अिसलिये यह पत्र मंगलवारको लिख डालता हूं क्योंकि अब तक जितना काम रहा अुससे आगे ज्यादा काम रहनेकी संभावना है। यहां ज्यों ज्यों मैं देखता हूं त्यों त्यों मुझे लगता है कि यह माननेके लिये कोअी कारण नहीं कि यहां शिक्षा ज्यादा अच्छे ढंगसे प्राप्त की जा सकती है। मैं यह भी देखता हूं कि कुछ शिक्षा यहां दोष युक्त है। फिर भी मनमें यह अिच्छा बनी रहती है कि तुम सब थोड़े समय यहां रह जाओ। हम अपना कर्तव्य ठीक ढंगसे करते रहेंगे तो अुसीसे जो होना होगा वह हो जायगा। तुम वहां अेकाग्रतापूर्वक पढ़ो तो वह यहां आनेकी तैयारी जैसा ही है।

* * *

सन् १९०८ में जब गांधीजी ट्रान्सवालकी जेलमें थे तब पढ़ाअीकी चिन्ता करनेवाले भाअी मणिलालको अुन्होंने नीचेका पत्र लिखा था

चि॰ मणिलाल

अब जेलमें मैंने काफी पढ़ लिया है। मैं अिमरसन, रस्किन और मेजिनीकी रचनायें पढ़ रहा हूं। अुपनिषद् भी पढ़ता रहा हूं। शिक्षाका अर्थ अक्षर ज्ञान नहीं परन्तु चरित्रका विकास — धर्मभावनाका ज्ञान — है। मेरी यह राय सब तरहके पठनसे मजबूत बन रही है। अपनी भाषामें हम अुसे शिक्षा शब्दसे पहचानते हैं। यदि शिक्षाका अुद्देश्य ऐसा ही हो — और मेरी धारणाके

अनुसार केवल यही सच्चा अुद्देश्य है — तो मैं कहूंगा कि तुम अुत्तम प्रकारकी शिक्षा पा चुके हो।

मां की सेवा करके अुसके अुग्र स्वभावको सहन करो। मि॰ हरिलालकी अनुपस्थितिमें मि॰ गांधीको बुरा न मालूम हो अिस प्रकार अटकलसे अुसकी जरूरतें जान कर अुसकी चिंता रखना और रामदास तथा देवदासकी संभाल रखना। अिससे अधिक अच्छी शिक्षा और क्या हो सकती है? यह काम तुम पूरा कर सकोगे तो तुमको आधीसे ज्यादा शिक्षा मिल चुकी यह मान लेनेमें मुझे क्या बाधा हो सकती है?

अुपनिषदों पर नथुरामजीकी प्रस्तावनाके अेक वाक्यका मेरे मन पर बड़ा गहरा असर पड़ा है। वे कहते हैं कि पहली ब्रह्मचर्य-अवस्था अंतिम सन्यस्त-अवस्था जैसी ही है। यह बिलकुल सच है। निर्दोष अवस्था वाली सिर्फ बारह वर्षकी अुम्र तक ही आनन्द भोगा जा सकता है। बच्चा बड़ी अुम्रका हुआ कि अुसे तुरन्त जिम्मेदारी समझना सीख लेना चाहिये। अिस अुम्रके बाद प्रत्येक मनुष्यको आचार-विचारमें सत्य और अहिंसा-सम्बन्धी संयमका पालन करना चाहिये। यह काम जैसी पढ़ाओीकी पद्धतिसे नहीं होना चाहिये कि जिससे हम अुकता जायं परन्तु स्वाभाविक आनंदके रूपमें होना चाहिये।

राजकोटके बहुतसे प्रसंग मुझे याद आते हैं। तुम्हारी आजकी अुम्रमें मैं होगा था तब मुझे पिताजीकी सेवा-शुश्रूषामें सच्चा आनन्द आता था। बारहवें सालके बादसे मैंने जरा भी आनन्द नहीं देखा। यदि तुम सच्चे सद्गुणोंका अनुकरण करो और तुम्हारा जीवन सद्गुणमय बन जाय तो कहूंगा कि तुमने शिक्षाका मेरा आदर्श पूरा कर दिया। अिन सद्गुणोंसे सुसज्जित होकर तुम दुनियाके किसी भी कोनेमें अपना निर्वाह कर सकोगे और आत्मज्ञान — अीश्वर-ज्ञान प्राप्त करनेके मार्ग पर लग जाओगे।

अिसका यह अर्थ नहीं कि तुम्हें अक्षर ज्ञान प्राप्त नहीं करना चाहिये। परन्तु यह चीज अैसी है कि अुसे प्राप्त करनेके लिअे तुम्हें व्याकुल न होना चाहिये। अिसके लिअे तुम्हारे पास काफी अवकाश है और दूसरोंकी सेवामें अुपयोगी साबित हो अिसी हेतुसे तुम्हें शिक्षा ग्रहण करनी है।

यह न भूलना कि भविष्यमें हमारे नसीबमें गरीबी है। जैसे जैसे मैं अिसके बारेमें अधिक विचार करता हूं वैसे वैसे यह ज्यादा समझमें आता है कि

७

प्रथम दर्शन

मैं सन् १९०९ से — अपनी विद्यार्थी अवस्थासे ही — 'अिंडियन ओपीनियन' पढ़ता था। अुस सालके अन्तमें अुस पत्रके अंकोंमें 'हिन्द स्वराज्य' पहले-पहल छपा था। अुसे पढ़कर मुझे अत्यन्त आनन्द हुआ। सन् १९११ में नेटाल जानेके बाद गांधीजीके दर्शन करनेकी मनमें तीव्र लालसा पैदा हुई। गोखलेजी नेटाल पधारे तब सभाओं और समारोहोंमें मैंने गांधीजीको दूरसे देखा था। अिससे प्रत्यक्ष दर्शनका संतोष तो हो ही नहीं सकता था। श्री गोखलेको हिन्दुस्तानकी ओर बिदा करनेके बाद गांधीजी ट्रान्सवाल होकर नेटाल आये। पता चलते ही मैं डरबन गया। श्री रुस्तमजी सेठके यहां मुझे अुनके दर्शन हुअे। मैंने अुनके चरणोंमें प्रणाम किया। मुझे अैसा लगा जैसे मेरी अुनसे पुरानी जान-पहचान हो। अिस मधुर मिलनसे हृदयको बड़ी तृप्ति हुई। शामको अुन्होंने मुझसे पूछा, "क्यों फिनिक्स चलना है न?" मैंने हां कहा। शामको हम डरबनसे फिनिक्स गये। वहां मैं पहले अपने अेक स्नेहीसे मिलने गया था परन्तु अुस समय गांधीजी वहां पहले नहीं गये थे। रातको स्नान करके मैं प्रार्थनामें शामिल हुआ। काफी आनन्द आया। वहांके लोगोंसे अपरिचित होनेके कारण रातको किसीसे कोई बात न कर सका। अिसलिअे मैं सो गया। दूसरे दिन सवेरे सब अुठे। शालाके विद्यार्थी और विद्यार्थिनियां शिक्षक और शिक्षिकाअें गांधीजी और बा वगैरा अुठकर दातुन-पानीसे निपटनेके बाद नाश्ता करने बैठे। बापूजीकी पद्धतिसे बनाई हुई डबल रोटी, नारंगीकी छालका मुरब्बा और भुने हुअे गेहूंकी बनाई कॉफीका नाश्ता किया। नाश्तेके बाद सात बजे सब अपने काममें लगे। गांधीजीने दो फावड़े तैयार किये। अेक अुन्होंने लिया और दूसरा मुझे दिया। हमने जमीनमें केलेके पेड़ोंकी क्यारियां खोदनेका काम शुरू किया। जहां तक मुझे याद है कोअी खास काम करनेकी गरजसे मैंने जीवनमें पहले-पहल ही फावड़ा पकड़ा था। फिर भी आजकल [illegible] 'किसान' कहलानेमें गौरव माना जाता है, अिसलिअे अगर मुझसे पूछा जाय तो मैं भी यही कहूंगा कि मैं किसान हूं। शामको लौटते वक्त हम दोनों

बातोंमें लग गये। सेवाभाव देशसेवामें कुछ भावनाकी जरूरत देशसेवामें ब्रह्मचर्यका स्थान ब्रह्मचर्यका पालन करनेकी जिच्छावालेके मार्गमें या ब्रह्मचारीको होनेवाली कठिनाजी वगैराके बारेमें हमने बातें कीं। ब्रह्मचर्य पालनका प्रयत्न करनेवाले कुछ व्यक्तियोंकी बातें अुन्होंने मुझे सुनाजीं। ब्रह्मचर्य-पालनमें पुरुषको अुसकी पत्नीकी ओरसे और पत्नीको अुसके पतिकी ओरसे आपत्ति हो तो क्या किया जाय कैसा बरताव रखें जिसकी भी चर्चा हुजी। दुराचारीकी पत्नी अपने पतिके साथ कैसा व्यवहार करे और दुराचारिणीका पति अपनी पत्नीके प्रति कैसा व्यवहार रखे जिसकी भी चर्चा हुजी। जिस तरह बातोंमें कितना काम हो गया यह मालूम ही न हुआ और यह भी पता नहीं चला कि कितना समय निकल गया। ठीक ढाजी घंटे पूरे होनेके बाद हमने काम छोड़ा। बातोंमें अनेक प्रश्नोंका हल मिल जानेसे मुझे अपार आनन्द हुआ। यह आनन्द तो हृदयको हुआ परन्तु शरीर ढाजी घंटेकी सख्त मेहनतसे थक गया था। नहा-धोकर मैंने खाना खाया और भाजी श्री मगनलाल गांधीके यहां जाकर बैठा। थका-मांदा था। बातों बातोंमें वहीं सो गया। सारा शरीर दुखने लगा। चलनेमें भी शरीर और पैर दुखते थे। दो दिनके आरामके बाद स्टेशन तक चलने लायक स्वस्थ हुआ। वहांसे स्टेशन जानेकी जिजाजत बापूजीसे मांगी और अुन्हें प्रणाम किया। अुन्होंने आशीर्वाद दिया और हुक्म दिया शान्तिसे व्यापार करना परन्तु व्यापारमें औमानदारी रखना। प्रामाणिक व्यापार करनेमें तुम्हें श्रीकृष्णकी सेवाका ही आनन्द मिलेगा। प्रह्लाद राक्षसोंमें रहकर भी निर्दोष रहे और रामको न भूले। वैसे ही तुम व्यापारमें रह कर भी सत्यको न भूलना। जितना करने पर भी वहां रहना असह्य हो जाय तो खुशीसे यहां आ जाना।

अुत्साहमें भरा हुआ मैं स्टेनगार गया। बापूजीकी आज्ञाको केन्द्रबिन्दु समझकर चलने लगा। कितने ही महीने बीत गये। अब अधिक व्यापार करना अच्छा नहीं लगा। दिलका दर्द असह्य हो अुठा। थोड़े महीने बाद स्टेनगारको छोड़ और हिस्सेदारको सारी जिम्मेदारी सौंपकर मैं चल पड़ा और फिनिक्समें जाकर मैंने गांधीजीका आसरा लिया।

अमीर होनेसे गरीब रहनेमें ज्यादा आश्वासन है। बलवान बननेकी अपेक्षा गरीब रहनेमें गरीबीके फल ज्यादा सुन्दर और ज्यादा मीठे होते हैं।

बापूके आशीर्वाद"

गांधीजीने 'हिन्द स्वराज्य' नामक अपनी पुस्तकमें चारित्र्यको दृढ़ करना, सदाचारी बनना, मन और विन्द्रियोंको संयममें रखना सीखना, अपना व्यवहार अैसा निःस्वार्थ रखना कि अुससे दूसरेका अहित न हो, बल्कि अुसका परिणाम दूसरेका कल्याण ही हो — अैसा चरित्रशील बननेमें ही शिक्षाकी सार्थकता बताअी है। अैसी शिक्षा किस तरह दी जाय, किस विचार पर वे अपनी साधनामें ही अमल करने लगे। और अपने लड़कोंको वे किसी रास्ते पर ले गये, यह हमने अूपरके पत्र व्यवहारसे देख लिया है। जिन विचारों पर अपने जीवनमें अमल करते हुअे अुन्हें कठिनाअियां भी आअीं, परन्तु वे अपने अमलमें दृढ़ रहे यही अुनकी जीवन-साधनाकी महत्ता है।

अेक पत्रमें अुन्होंने लिखा था :

"ब्राह्मणोंका आदर करनेमें हमें अपनी अन्तर्दशा पवित्र रखनी चाहिये। अुनके प्रति कटाक्ष नहीं करना चाहिये। जैसे लालवाली आदमीको देखकर हमें दया आती है और अुसके प्रति आदर भी पैदा होता है, वैसे वेश्याके लड़केके लिअे स्वाभाविक तौर पर हमारे दिलमें आदर नहीं होता। परन्तु मेरे कहनेका तात्पर्य यह नहीं है कि ब्राह्मणोंके दुराचारका समर्थन किया जाय। कोअी ब्राह्मण व्यर्थकी भीख मांगने निकले और तुम अभ्यास छोड़कर अुसे अेक मुट्ठी आटा दो तो तुम अपने अभ्यासको नुकसान पहुंचाओगे। जिसमें मैं यह नहीं मानूंगा कि तुमने ब्राह्मणका आदर किया है, यह तो तुम्हारी मौग्ध्य और अविचार होगा।

मैं शालाकी शिक्षाके विरुद्ध नहीं हूं परन्तु अुसके विरुद्ध हूं। आजकलकी शालाओंमें अेक दोष तो यह है कि शिक्षक नीतिवान नहीं होते और दूसरा दोष यह है कि बच्चे अुनसे अलग रहते हैं। तीसरा दोष यह है कि जिनमें ही विषयोंमें समय बेकार चला जाता है और चौथा दोष यह है कि शालामें अक्सर हमारी बेड़ियोंकी निशानी होती है।

"तुम दूध-दही न छोड़ो तो अच्छा है। परन्तु अुन्हें प्रधानता न दो।

"मैं अच्छी शालाके विरुद्ध नहीं हूं। परन्तु यह मानता हूं कि ज्यादा लड़कोंवाली शाला अच्छी नहीं हो सकती। और शाला वही है जहां विद्यार्थी चौबीस घंटे रहते हैं। वहां दो प्रकारकी शिक्षा मिलती है।

यह मान लेनेका कोअी कारण नहीं कि हमारे शास्त्र सब विचारपूर्वक और ज्ञानपूर्वक ही लिखे गये हैं। यह भी अेक शास्त्र है। यदि यह अर्थ करें कि जिसमें शुद्ध ज्ञान है वही शास्त्र है तो अैसा कहा जा सकता है कि सब शास्त्र ज्ञानपूर्वक लिखे गये हैं। अिस विचारके अनुसार जिसमें गरमैल आदिकी बातें आती हैं अुसे अज्ञान मानना चाहिये। संभव है यह बात शुद्ध शास्त्रोंमें बादमें दाखिल हो गयी हो। आत्मार्थीको यह खोज करनेकी जरूरत नहीं। यह अितिहास जाननेवालोंके कामकी चीज है। हमें तो प्रत्येक चीज या वचनसे तत्त्व ग्रहण करना है। सब शास्त्रोंको शास्त्र मान कर अुसके अनर्थको अर्थ कहकर अुसे सही सिद्ध करनेकी झंझटमें हम क्यों पड़ें? हिन्दुस्तानमें और दूसरे देशोंमें भी ज्ञान और अज्ञानकी जोड़ी सदा साथ साथ रहती है। अिसलिये काली माताके भोग वगैराका जो अन्याय हमारे धर्मके नाम पर होता हम देखते हैं, अुसे मिटानेके प्रयत्नमें हम नहीं पड़ सकते। हमारा पहला सूत्र यह है कि हम आत्माको पहचानें। यह पाठ पढ़ और ज्ञान लेनेके बाद सब कुछ अपने-आप हल हो जायगा और समझमें आ जायगा।

अिसमें कोअी शंका नहीं कि विभीषण निःस्वार्थ बुद्धिसे प्रभु रामचन्द्रजीसे मिले होंगे। सगे भाअीका भी दोष प्रभुसे कौन छिपाय! और भाअीकी बुराअी दूर करनेके लिअे भगवानसे सहायता भी मांगी जा सकती है।

तुमने भागवतका श्लोक अुद्धृत किया है। अुसके भावार्थका पालन नहीं हो सकता। कृष्णकी लीला कृष्ण ही जानते हैं। वे कामभावासे बच कर काम करें, तो भी हम स्थूल प्राणी वैसा नहीं कर सकते। अुनकी प्रभुता अुन्हें जो छूट देती है वह छूट हम नहीं ले सकते। वैसे कृष्णके बारेमें भागवतके लेखकने अपने ज्ञानकी मर्यादाके अनुसार लिखा है। वास्तविक कृष्णको कोअी नहीं जानता।

७

प्रथम दर्शन

मैं सन् १९०९ से — अपनी विद्यार्थी अवस्थासे ही — अिण्डियन ओपीनियन पढ़ता था। अुस सालके अन्तमें अुस पत्रके अंकोंमें हिन्द स्वराज्य पहले-पहल छपा था। अुसे पढ़कर मुझे अत्यन्त आनन्द हुआ। सन् १९११ में नेटाल आनेके बाद गांधीजीके दर्शन करनेकी मनमें तीव्र लालसा पैदा हुआी। गोखलेजी नेटाल पधारे तब सभाओं और समारोहोंमें मैंने गांधीजीको दूरसे देखा था। अिससे प्रत्यक्ष दर्शनका संतोष तो हो ही नहीं सकता था। श्री गोखलेको हिन्दुस्तानकी ओर विदा करनेके बाद गांधीजी ट्रान्सवाल होकर नेटाल लौटे। पता चलते ही मैं डरबन गया। श्री रुस्तमजी सेठके यहां मुझे अुनके दर्शन हुअे। मैंने अुनके चरणोंमें प्रणाम किया। मुझे अैसा लगा जैसे मेरी अुनसे पुरानी जान-पहचान हो। अिस मधुर मिलनमें हृदयको बड़ी तृप्ति हुआी। शामको अुन्होंने मुझसे पूछा "क्यों फिनिक्स चलना है न?" मैंने हां कहा। शामको हम डरबनसे फिनिक्स गये। वहां मैं पहले अपने अेक स्नेहीसे मिलने गया था परन्तु अुस समय गांधीजी वहां रहने नहीं गये थे। रातको भोजन करके मैं प्रार्थनामें शामिल हुआ। काफी आनन्द आया। वहांके लोगोंसे अपरिचित होनेके कारण रातको किसीसे कोआी बात न कर सका। अिसलिअे मैं सो गया। दूसरे दिन सवेरे जल्द अुठे। शालाके विद्यार्थी और विद्यार्थिनियां शिक्षक और शिक्षिकामें गांधीजी और बा वगैरा अुठकर दातुन-पानीसे निपटनेके बाद नाश्ता करने बैठे। अपुनैकी पद्धतिसे बनाआी हुआी डबल रोटी, नारंगीकी छालका मुरब्बा और भुने हुअे गेहूंकी बनाआी कॉफीका नाश्ता किया। नाश्तेके बाद सात बजे सब खेतीके काममें लगे। गांधीजीने दो फावड़े तैयार किये। अेक अुन्होंने लिया और दूसरा मुझे दिया। हमने बगीचेमें फलोंके पेड़ोंकी क्यारियां खोदनेका काम शुरू किया। जहां तक मुझे याद है कोआी खास काम करनेकी गरजसे मैंने जीवनमें पहले-पहल ही फावड़ा पकड़ा था। फिर भी आजकल गांधीयुगमें किसान कहलानेमें गौरव माना जाता है, अिसलिअे मुझसे पूछा जाय तो मैं भी यही कहूंगा कि मैं किसान हूं। शामको गौअें मोड़ने हम दोनों

बातोंमें लग गये। सेवाभाव, देशसेवामें शुद्ध साधनाकी जरूरत, देशसेवामें ब्रह्मचर्यका स्थान, ब्रह्मचर्यका पालन करनेकी जिच्छावाले भाजी या बहनको होनेवाली कठिनाजी वगैराके बारेमें हमने बातें कीं। ब्रह्मचर्य पालनका प्रयत्न करनेवाले कुछ व्यक्तियोंकी बातें अुन्होंने मुझे सुनाजीं। ब्रह्मचर्य-पालनमें पुरुषको अुसकी पत्नीकी ओरसे और पत्नीको अुसके पतिकी ओरसे आपत्ति हो तो क्या किया जाय, कैसा बरताव रखें, जिसकी भी चर्चा हुजी। दुराचारीकी पत्नी अपने पतिके साथ कैसा व्यवहार करे और दुराचारिणीका पति अपनी पत्नीके प्रति कैसा व्यवहार रखे, जिसकी भी चर्चा हुजी। जिस तरह बातोंमें कितना काम हो गया यह मालूम ही न हुआ और यह भी पता नहीं चला कि कितना समय निकल गया। ठीक ढाजी घंटे पूरे होनेके बाद हमने काम छोड़ा। बातोंमें कजी प्रश्नोंका हल मिल जानेसे मुझे अपार आनन्द हुआ। यह आनन्द तो हृदयको हुआ, परन्तु शरीर ढाजी घंटेकी सख्त मेहनतसे थक गया था। नहा-धोकर मैंने खाना खाया और भाजी श्री मगनलाल गांधीके यहां जाकर बैठा। थका-मांदा था। बातों बातोंमें वहीं सो गया। सारा शरीर दुखने लगा। कमरमें भी दर्द और पैर दुखते थे। दो दिनके आरामके बाद स्टेशन तक चलने लायक स्वस्थ हुआ। वहांसे स्टेशन जानेकी जिजाजत बापूजीसे मांगी और अुन्हें प्रणाम किया। अुन्होंने आशीर्वाद दिया और हुक्म दिया: 'शान्तिसे व्यापार करना, परन्तु व्यापारमें औमानदारी रखना। प्रामाणिक व्यापार करनेमें तुम्हें औश्वरकी सेवाका ही आनन्द मिलेगा। प्रह्लाद दानवोंमें रहकर भी निर्लेप रहे और रामको न भूले। वैसे ही तुम व्यापारमें रह कर भी सत्यको न भूलना। जितना करने पर भी वहां रहना असह्य हो जाय तो तुरन्त यहां आ जाना।

अुत्साहमें मग्न हुआ मैं स्टेशनपर गया। बापूजीकी आज्ञाको वेदवाक्य समझकर चलने लगा। कितने ही महीने बीत गये। अब अधिक व्यापार करना अच्छा नहीं लगा। दिलका दर्द असह्य हो अुठा। थोड़े महीने बाद स्टेशनरीको छोड़ और हिस्सेदारको सारी जिम्मेदारी सौंपकर मैं चल पड़ा और फिनिक्समें जाकर मैंने गांधीजीका आसरा लिया।

८

गांधीजीका मार्गदर्शन

गांधीजीके दर्शन तो हुअे परन्तु अुससे मनको संतोष न हुआ। दो दिन फिनिक्समें रहनेसे मेरी प्यास न बुझी। फिनिक्समें जाकर रहनेकी आतुरता बढ़ी। परन्तु किया क्या जाय? अनेक झंझटें थीं। सारी बाहरी झंझटोंसे अंदरकी झंझट ज्यादा बड़ी थी। हृदयकी निर्बलताके कारण प्रलोभन पीछा न छोड़ते थे। यह अच्छा या वह अच्छा अिसका निर्णय नहीं हो पाता था। और निर्णय न हो तब तक गांधीजीसे कहा भी कैसे जाय? मैं जिस व्यापारमें लगा हुआ था अुसकी जिम्मेदारी मेरी थी। अुसमें मेरा हिस्सा था। मेरे चाचाजी सारा व्यापार मुझे सौंपकर भारत गये थे। अैसी हालतमें मैं व्यापार भी नहीं छोड़ सकता था। और व्यापारसे मुक्त होकर अिस तरह सार्वजनिक संस्थामें शामिल होने और धन कमानेका अुज्ज्वल भविष्य नष्ट करनेका मेरे माता पिता और पत्नी विरोध करते थे। वे सब यहां भारतमें बैठे बैठे अपना विरोध प्रगट किया करते थे। मैंने शुरूसे ही अपना विचार अुन्हें बता दिया था कि मेरी वृत्तिके अनुसार व्यापार करनेसे कुछ मिलाकर लाभ होगा अैसी मेरी श्रद्धा है। परन्तु वह श्रद्धा अुनमें नहीं थी। अुन्हें अैसा लगा कि काम-धंधा छोड़कर मैं त्यागी बन जाअूंगा। व्यापार करना हो तो यह दलील नहीं की जा सकती कि मानो स्वच्छ व्यापार ही करना है, गंदा व्यापार नहीं करना है। ग्राहकको धोखा न दिया जाय परन्तु अुसे खुश करके अुसे दिखाकर, हमें जो माल अुसे देना हो अुसके देनेमें पाप कहां है?—अैसी अुनकी दलील थी। अिस बारेमें मतभेद बढ़ता गया। मेरे मनकी तीव्रता बढ़ती गयी। अिस बारेमें जैसे मैंने अुनके साथ पत्र-व्यवहार किया वैसे ही गांधीजीके साथ भी किया। अिस प्रकरणमें फिनिक्स सस्ता सुन्दर और प्रामाणिक जीवन तथा देशसेवाके बारेमें पूज्य गांधीजीकी क्या विचारधारा थी और मेरे हृदयके मंथन-कालमें अुन्होंने मुझे किस तरह रास्ता बताया यही मैं बताना चाहता हूं। अिसी बहाने मैं अनेक विषयों पर अुनके विचार पेश कर सकूंगा।

मैं नेटाल प्रान्तके स्टेन्गर गांवमें रहता था और वहीं मेरा व्यापार चलता था। अुसे छोड़ कर फिनिक्समें रहने और अुनके विचारोंके अनुसार

जीवन-परिवर्तन करके देशसेवाकी तालीम पानेका अपना विचार मैंने अुन्हें बताया। अुसके जवाबमें अुन्होंने मुझे सन् १९११ में नीचेका पत्र लिखा

"भाअीश्री रावजीभाअी

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे पत्र परसे मैं समझता हूं कि तुम्हारी अिच्छा फिनिक्समें काम करनेकी है। यह विचार बहुत अच्छा है। मैं तुम्हें प्रोत्साहन दूंगा। परन्तु यहाका जीवन तुमसे हजम हो सकेगा अिस बारेमें मुझे शंका है। यहां रहकर (१) ब्रह्मचर्य पालना होगा। (२) सूक्ष्म सत्यव्रत पालना होगा। (३) काम मुख्यतया शरीरका यानी कुदाली-फावड़ेका करना होगा। (४) अक्षर ज्ञान बढ़ानेका अुद्देश्य हो तो अुसे भूल जाना होगा। सहजमें और फुरसत पड़ने पर यह बढ़ जाय तो हर्ज नहीं। (५) दिलमें निश्चय करना होगा कि अक्षर-ज्ञानके बजाय चारित्र्यको दृढ़ करना हमारा कर्तव्य है। (६) जाति या कुटुम्बका निर्भय होकर विरोध करनेकी तैयारी रखनी होगी। और (७) शुद्ध गरीबीका जीवन अपनाना होगा।

यह सब तुमसे हो सके या करनेकी तुम्हारी अिच्छा हो तो ही फिनिक्स आनेका विचार करना। यह समझ लेना कि यहांकी जिन्दगी दिनोंदिन ज्यादा कठिन होगी और अुसका कठिन होना शुभकी बात है।

"यदि तुम्हारा विचार मार्च महीनेमें आनेका हो जाय तो अूपरके विचारोंका विकास करना। पत्र लिखते रहना।

मोहनदासके यथायोग्य"

मेरे पिताजीका गांधीजीके साथ परिचय था। अुन्होंने जब पत्र द्वारा मेरे विचार जाने तो गांधीजीको अिस सम्बन्धमें पत्र लिखा। मुझे ऐसा लगा कि यह पत्र पानेके बाद गांधीजीने मेरे सम्बन्धमें अपने विचार बदल लिये हैं। अपनी यह राय जब मैंने अेक पत्रमें बताअी तो गांधीजीने मुझे नीचे लिखा पत्र भेजा

भाअीश्री रावजीभाअी

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने अपने विचार बदले नहीं हैं लेकिन तुम्हारे पिताजी तुम्हें फिनिक्स आनेको मना करें, तो मेरा धर्म है कि मैं तुम्हें अिनकार कर दूं। और तुम्हारा भी यही धर्म है (परन्तु तुम्हारे पिताजी तुमसे स्पष्ट

अधर्म करायें तो अुससे मुक्त होनेके लिये मैं तुम्हें फिनिक्समें ले सकता हूँ।)
मुझे लगता है कि जब हम नीति-सम्बन्धी कठिनाअीमें पड़ जायें अुस समय कोअी खास कदम अुठानेसे माता-पिता मना करें, तो हम चुप हो जानेके लिये बंधे हुये हैं। परन्तु वे कोअी पाप करवाना चाहें तो हम न करें। अिसमें प्रह्लादजीके अुदाहरणके सिवा दूसरा कोअी अुदाहरण नहीं बताया जा सकता। और पिताके हुक्मसे हम हर तरहका शारीरिक दुःख अुठा सकते हैं परन्तु आत्माका दुःख नहीं अुठा सकते।

तुम व्यापारमें रह सकते हो और नीतिकी रक्षा भी कर सकते हो। अुसीमें तुम्हारा विकास है। तुम जिस तरहकी जिन्दगी बितानेकी अिच्छा रखते हो अुसकी यह तैयारी होगी। और तुम अपने व्यापारमें अटल प्रामाणिकता रख सकोगे तो अपने व्यापारमें अुपकार भी कर सकोगे। जो भी ग्राहक आये अुससे ओक ही और वह भी अमुक लभ्य (साधारण) लेनेवाले दाम ही लिये जायें। जो चीज हमारे लिये त्याज्य है अुसे न बेचा जाय। ग्राहकोंके साथ नम्रतासे बात की जाय। माल बेचनेके लिये अुनकी खुशामद न की जाय। नौकर हों तो अुन्हें भाअी समझकर अुनके साथ बरताव किया जाय। ये सब बातें आसानीसे की जा सकती हैं। तुम्हें ऐसा नहीं लगना चाहिये कि व्यापार करना लाचारीमें पड़ना है क्योंकि तुम्हें व्यापार केवल अनीतिके लिये ही पसन्द नहीं है। तुम तो सिर्फ पिताजीकी आज्ञाके अधीन होनेके कारण ही व्यापार करोगे। अिसलिये अुसमें प्रामाणिकता रखना आसान मालूम होना चाहिये। तुम कहते हो कि रुपयेका तुम्हें लोभ नहीं है। जिस स्थितिके प्रति हम वीतराग हों अुस स्थितिमें रहनेसे हम दुःख पाते हैं, परन्तु भ्रष्ट तो हरगिज नहीं होते। प्रह्लादजी राक्षसोंके बीचमें विष्णुके भक्त रहे। मुझे ऐसा नहीं लगता कि यह अुनके लिये कोअी मुश्किल बात थी। क्योंकि वे राजसी प्रवृत्तिके बारेमें पूरी तरह वीतराग थे।

मनुष्य सूली पर बैठा होने पर भी अपने व्रतकी रक्षा कर सकता है। अुस समय भी जिस व्रतकी रक्षा हो सके वही सच्चा व्रत है। यदि नीति हमारे लिये स्वाभाविक बन जाय हमारी हड्डियोंमें पैठ जाय तो अुसकी रक्षा जरूर होती है और अुस हर तरह अुसका विकास करना हम सबका कर्तव्य है। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी शुभ अिच्छायें सफल हों।

मोहनदासके यथायोग्य"

की क्या व्याप्ति है? फिनिक्सके रहन-सहनमें और दूसरे रहन-सहनमें यह फर्क है कि हम जिस वस्तुके बारेमें पढ़ते हैं उसे आचरण द्वारा अपनेमें दृढ़ करनेकी कोशिश करते हैं। तुम्हारे हिन्दुस्तान जानेका असर क्षणिक होगा। पन्द्रह या बीस दिनके बाद तो रोना ही है। उसके बाद तो वियोग ही है।

इसके सिवा हम ऐसी जिन्दगी बिताना चाहते हैं कि हमारे पास एक पाई भी न रहे। विचार करो कि ऐसा गरीब आदमी कैसे खरच जमा करेगा।

अपने माता-पिताके दर्शन करनेकी भावना तुममें सदा ही रहना उत्तम है। अभी इस भावनाको दबाकर अपना जीवन विशेष वीतरागी बनाना तुम्हारा कर्तव्य है। तुम अपना चरित्र बनानेके लिये ही देशनिकाला भुगत रहे हो। तुम्हारी यह स्थिति वनवासकी स्थिति है। इसीमें तुम अपने माता-पिताकी शोभा बढ़ाओगे। तुम स्वच्छन्द आचरण नहीं कर सकते। परन्तु दिनोंदिन आत्मोन्नति करो दिनोंदिन संयमी बनो इसलिये अभी तुम देश जानेके फर्जसे मुक्त हो।

ये विचार करनेमें मैंने प्रेमकी स्थितिका जरा भी खयाल नहीं किया है। तुम्हारी आत्मोन्नति किसमें है यही सोचकर मैंने सलाह दी है।

फिर भी अगर लौकिक मातृभक्ति तुम्हें देशकी ओर ही खींचती हो और तुम यहां शान्तचित्त होकर न रह सको तो तुम खुशीसे जा सकते हो। मेरा लिखना सलाहके रूपमें है ऐसा समझ कर तुम स्वतंत्र निर्णय करना और खुशीके अनुसार चलना।

मोहनदासके यथायोग्य"

९

गांधीजीकी वात्सल्यपूर्ण शुश्रूषा

हिन्दुस्तानके हालके मुक्तिके रण-संग्राममें सत्याग्रह आश्रमने जो काम किया है वही काम दक्षिण अफ्रीकाकी लड़ाईमें फिनिक्स आश्रमने किया था। वहांका जीवन भविष्यकी लड़ाईके योग्य बननेकी तैयारीके रूपमें मालूम होता था। सच पूछा जाय तो फिनिक्समें ऐसी ही तालीम मिलती थी जिससे हम समस्त जीवनके लिये योग्य बन जायं। इसलिये वहांके रहन-सहनके बारेमें

थोड़ासा लिखना अुपयोगी होगा। सतत साधनाके प्रतापसे गांधीजी आजके गांधीजी बने हैं। अुन्होंने अपने पहले जीवन प्रयोग फिनिक्स आश्रममें किये थे। अपने भोजन-सम्बन्धी विचार, दवा-दारू सम्बन्धी विचार, बीमारोंकी सेवा शुश्रूषाकी पद्धति आदिके प्रयोग अुन्होंने ज्यादातर फिनिक्समें किये थे। वे प्रयोग मैंने देखे हैं तथा कुछ हद तक मैं अुनमें गांधीजीका साथी बना हूं। अब यहां अुनका और फिनिक्सके जीवनका थोड़ा-बहुत वर्णन कर दूं तो मैं अपनी मर्यादासे बाहर गया नहीं माना जाअूंगा।

मेरे फिनिक्समें भरती होते ही मुझे कितनी ही बातोंका अनुभव होने लगा। मुझे छुटपनसे ही गठियाका रोग था। देशमें और नेटाल जानेके बाद वहां मैंने बहुतेरी दवायें की थीं। वैद्य और डॉक्टर अिलाज कर करके थक गये थे। परन्तु गठिया कम नहीं होता था और समय समय पर दर्शन देता ही रहता था। सन् १९१२ के आखिरी मासमें मैं फिनिक्समें रहने गया। अुस समय गांधीजी वहां स्थायी तौर पर रहते थे। वहां जानेके बाद मैं भी वहांके वातावरणमें मिल गया। मैंने खुराकमें परिवर्तन किये। पहले तो जो भी खानेकी लालसा होती अुसे पूरा करनेके लिये मन तैयार रहता था। स्वादेन्द्रियकी सभी चाह मैं पूरी करता था। मिर्च-मसाले और मिठाअियोंमें कोअी कसर नहीं रहती थी। तब संयमकी तो बात ही कहांसे होती? अिसलिये अूपरी दवाओंके जोरसे मेरा दर्द भी अूपरसे तो मिट जाता था परन्तु शरीरमें वह घर करके बैठ गया था। फिनिक्समें जानेके बाद मेरा मनचाहा भोजन बन्द हो गया। शरीर और अुसमें रहनेवाली आत्माकी पुष्टिके लिये क्या चाहिये अिसीका विचार करना पड़ता था। मिर्च मसाले शक्कर, गुड़ दूध दही वगैरा खाना मैंने बन्द किया और संयमकी दृष्टिसे खाना शुरू कर दिया। धीरे धीरे मैंने अन्नाहार भी बन्द कर दिया और सिर्फ फलाहार करने लगा। नतीजा यह हुआ कि तरह तरहके स्वादिष्ट आहार और दवाओंके बोझके नीचे जो बीमारी दबी हुअी थी अुसे स्वाभाविक मार्ग मिल गया। फलाहार शुरू किये अेक महीना भी पूरा नहीं हुआ होगा कि शरीरके सारे जोड़ोंमें गठिया नजर आया। सारे जोड़ जकड़ गये। अुठने बैठने या चलने-फिरनेमें बहुत पीड़ा होने लगी। शौच जाना भी मुश्किल हो गया। चार दिनमें मैं तंग आ गया। गांधीजी तो यह सब जानते ही थे। लगभग सारे दिन हम साथ ही रहते थे। किसे क्या खानेको दिया जाय और किस बीमारको क्या सेवा दी जाय

यह सब अुन्हींके सिर पर था। आत्माके वैद्यकी तरह शरीरके वैद्य भी वे ही बन गये थे। मेरी बीमारीको देखकर गांधीजीने मुझे अपने हाथमें ले लिया। मेरा भोजन तो फलोंका ही जारी रखा। सिर्फ नींबू, खट्टी नारंगी जैसे थोड़ी सी खटाईवाले फल बन्द करा दिये। कच्चे या पके टमाटर जहां तक हो अधिक देना शुरू किया। शरीरके लिये कुछ न कुछ चिकनी चीज तो होनी ही चाहिये। जैसे शरीरमें चर्बी बढ़ सकती थी वैसे मेवेकी कुछ गरमीके कारण कब्जकी संभावना रहती थी। अिसलिये ऑलिवके फलका तेल (जिसे हम जैतूनका तेल कहते हैं) शुरू किया। फिनिक्समें यही तेल काममें लिया जाता था। ऑलिव ऑयिल रेचक होने पर भी पौष्टिक होता है। किसी चीजमें मात्रासे अधिक लेने पर कुछ अरण्डीके तेलकी जैसी गंध आती है परन्तु ठीक मात्रामें लिया जाय तो बहुत स्वादिष्ट लगता है। अिस प्रकार खुराकमें थोड़े परिवर्तन किये। खुराकके परिवर्तनके साथ अन्य अुपचार भी शुरू किये।

सुबह बिस्तरमें रहता तब मुझे यह शंका होती कि आज तो मुझसे बिलकुल नहीं अुठा जायगा। अितनेमें गांधीजी आते। अुनके आनेका जरासा अिशारा पाते ही मैं तुरन्त किसी तरह अुठ बैठता और खड़ा होनेकी कोशिश करता। अुनके पैरों पड़ता। वे मेरे सिर पर हाथ रखते। अुस हाथमें कितना वात्सल्य होता था! कितना माधुर्य रहता था! अुजाला हो जाता तो वे मेरी जीभ देखते और मुझे व दूसरोंको दातुन देकर चले जाते। दातुन-कुल्लेसे निपट कर मैं बैठक अथवा कमरेमें जाता। नियमित समय पर गांधीजी वहां आते। लगभग दो-तीन सेर साबुनका पानी बनाते जितना साबुन मिलाते कि पानी सफेद हो जाय। अुसमें करीब दो रुपये भर साफ अरण्डीका तेल डालते और पिचकारी द्वारा गुदाकी तरफसे मेरे पेटमें यह पानी पहुंचाते। जब पेटमें सहन होने जितना पानी पहुंच जाता तो हाथोंमें थोड़ा अरण्डीका तेल लगाकर गांधीजी मेरा पेट अिस ढंगसे मलते कि पेटके भीतरका पानी अन्दरके भागमें फैल जाय और आंतड़ियोंसे चिपटा हुआ मल छूट जाय। पेटमें गया हुआ पानी अिस प्रकार दो-तीन मिनट तक और सहन हो सके तो ज्यादा देर तक पेटमें घूमता हुआ रखनेके बाद शौच जाना होता था। पानीके साथ पेटका मल निकल जानेके बाद पानीसे भरे टबमें छाती और पांवोंके बीचका भाग पानीमें रखकर मैं बैठ जाता और पेटको हाथसे मला करता। लगभग आध घण्टे अिस तरह

बिस्तर पर पड़ा रहा। बिस्तर पर पड़ा न रहना और भरसक श्रम करते रहना भी गठियाका अेक आवश्यक अुपचार था। मेरी दिनचर्या अिस प्रकार थी।

फिनिक्समें सुबहकी प्रार्थनाका नियम नहीं था अिसलिअे बीमारीके दिनोंमें मैं सात बजे ही अुठता था।

६–० से ७–० दातुन कुल्ला और शौचादि क्रिया।

७–० से ८–० शालामें विद्यार्थियोंके साथ।

८– से –० बीमारीका अिलाज करना। हर तीसरे दिन पिचकारी या स्टीमबाथ लेना।

९– से १ – रसोअीमें। बड़ा गांधीजीके साथ काम करना। खड़े खड़े मूसे बेड–रोटीका आटा गूंधकर रोटी तैयार करना।

१ –० से १२– भोजन और आराम।

१२– से २–० प्रेसमें कम्पोजीटरका काम करना।

२–० से ४– बगीचेमें शरीरसे ही बने अुतना खोदने और फल बीननेका काम करना।

४–० से ५–० भोजनालयमें फुटकर काम।

५–० से ६–० भोजन करना।

६–० से ७– आराम और घूमना-फिरना।

७– से ७–३ प्रार्थना।

७–३ से ८–३ गांधीजीके साथ शामको बातचीत और अनेक विषयों पर चर्चा। आम तौर पर दिनभर जो कुछ नअी घटनाअें होतीं अुन पर चर्चा। कभी कभी प्रार्थनाके बाद भी तुलसीकृत रामायण और गीताका पाठ।

९–० से ६–० नींद।

फिनिक्स आश्रमका यह साधारण कार्यक्रम था। शालाके विद्यार्थियोंको दिनभरमें तीन घंटे शालामें दो घंटे खेतीमें और दो घंटे प्रेसमें व्यावहारिक शिक्षा दूसरा फुटकर काम होता था। अिसके सिवा वे रातको भी कम-ज्यादा पढ़ते थे। अिस प्रकार लगभग सारे दिन वातावरण पढ़ाअी और मेहनतके कारण शुद्ध विचारों और मनसे अुत्पन्न होनेवाले शुद्ध आचरणसे पूर्ण रहता था। अिसलिअे पढ़ाअीकी कमी मालूम नहीं होती थी। और बगीचेमें गांधीजीके साथ काम करते हुअे भी अलग अलग विषयों पर चर्चा तो होती ही थी। भोजनालयमें

काम करते समय भी महत्त्वपूर्ण घटनाओंकी किसी महापुरुषकी या किसी अुत्तम ग्रंथकी चर्चा हुआ करती थी।

अिस तरह श्रमके साथ ज्ञान भी मिलता रहता था। मेरी तन्दुरुस्ती जब काफ़ी अच्छी हो गयी तब तो मैं सवेरे तीन या चार बजे ही अुठ जाता था। छह बजेके बाद ज्यादा सोना अपराध माना जाता था।

अिस प्रकार लगातार तीन महीने तक मेरा अिलाज चला। गांधीजीका मुश्किलसे ही किसी दिन बाहर जाना होता था। मुझे खानेकी कोअी चीज देते तो दूसरे दिन देखते कि शरीर पर अुसका क्या असर होता है। अुसीके अनुसार दूसरे दिन खानेमें फेर-बदल करते थे। सात्त्विक भोजन और पिचकारीके अिलाजसे मेरा पेट अितना साफ रहता कि विजातीय पदार्थके अन्दर जाते ही अुसका असर मालूम होता था। अिस तरह अत्यंत वात्सल्य स्नेह और लगनसे लगातार तीन महीने तक मेरा अिलाज हुआ। अिन सब बातोंकी याद आने पर मैं गर्वित हो जाता हूं। शुरूमें जब मैं जल्दी ही अुठने-बैठनेमें समर्थ नहीं था तब पिचकारी लगानेके बाद गांधीजी मेरा पाखाना देखते, यह जानते कि खाना हजम हुआ है या नहीं और साथ ही मुझे अुसके बारेमें सूचनायें देकर परिचित करते। फिर पाखानेका बरतन वे खुद साफ कर डालते। अिस प्रकार जिस मातृभावसे मेरे बचपनमें मेरी स्नेहशील माताने बिना किसी घिनके मेरी देखभाल की अुसी मातृभावका — वात्सल्यका — लाभ मुझे अिन तीन महीनोंमें गांधीजीकी ओरसे मिला। बीस बीस सालका अर्सा गुजर जाने पर भी अभी तक वह मीठा दृश्य मेरे हृदयमें ताजा ही है। मेरे शरीरमें घर करके बैठा हुआ गठिया तो भाग ही गया और अुसके बाद आज तक किसी दिन भी मेरे शरीरमें वह मालूम नहीं हुआ। परन्तु सौभाग्यसे अुस गठियाकी जगह अेक दूसरी चीजने ले ली। मुझे बीमारोंकी सेवा-शुश्रूषा करना अच्छा आ गया। मेरे दिलमें रोगीकी सेवा करनेका प्रेम पैदा हो गया। मेरी बीमारी मिटनेके बाद गांधीजीको किसी दिन बाहर जाना पड़ता तो विद्यार्थियों या दूसरे बीमारोंकी सेवा करनेका काम मेरा हो जाता। वे मुझे ही यह काम सौंपते थे। गांधीजीकी बीमारीके मौके पर या अुपवासके अवसर पर अुनकी सेवाका काम मुझे मिलता था। मुझे मालूम हुआ है कि यहां देशमें आनेके बाद गांधीजीकी या और किसीकी बीमारीमें मेरी सेवासे सबको संतोष हुआ है।

मोतीझिरे जैसे भयंकर ज्वरके कितने ही रोगियोंको भी गांधीजीने अूपर लिखे सादे अुपचारोंसे बचाया है और अेक भी मामलेमें अुन्हें असफलता नहीं मिली। मिस्टर बेंजियल आर्मिटेज नामके अेक अंग्रेज सज्जन सत्याग्रहकी लड़ाअीमें हिन्दुस्तानियोंके सहायक थे। लड़ाअीके बाद वे भाअी मोतीझिरेमें फंस गये। अुस समय वे फिनिक्समें ही रहते थे। गांधीजीने अुनकी सेवा-शुश्रूषा की। चौदह दिन तक सिर्फ खट्टे नींबूका रस अुबले हुअे पानीमें मिलाकर देते रहे। और कुछ नहीं। बीमारी भयंकर साबित न हुअी। ज्वर अुतरनेमें देर लगी। वे खतरेसे निकल गये और धीरे धीरे भयमुक्त हो गये। अितनेमें गांधीजीको समझौतेके लिअे केपटाअुन जाना पड़ा। मिस्टर आर्मिटेजको वे मेरे हवाले कर गये। अुन भाअीको अैसा भोजन देना था जिससे कब्ज न हो और पाचन होता रहे। नियमित रूपसे वे धीन बार्य अिसका ध्यान रखना और कब्ज मालूम हो तो मिट्टीकी पट्टी या पिचकारीका अुपचार करना — वगैरा देख भाल मुझे करनी थी। वे भाअी अेक दिन डरबन गये। जानेसे पहले मैंने अुन्हें चेतावनी दी कि कहीं किसी होटलमें न खाने जाना। अुन्होंने मेरी सूचना पर अमल नहीं किया अितना ही नहीं बल्कि वहांसे मेरी बिस्किट का अेक डिब्बा भी वे लेते आये। अुसे छिपा कर अुन्होंने अपने पास रख लिया और जब जीमें आया तभी खाने लगे। मुझे तो अिसका पता ही नहीं था।

अेक दिन अुन्हें कब्ज मालूम हुआ। थोड़ासा बुखार भी आया। मैंने फौरन पिचकारी वगैराका अिलाज किया। पिचकारी लगानेके बाद अुनका पाखाना देखने पर अुसमें मीठे नींबूके रेशे और गेहूंके आटेका बिना पचा हुआ भाग मालूम हुआ। मुझे शंका हुअी। अुनसे पूछा परन्तु अुन्होंने कोअी बात बताअी नहीं। अन्हें नियमित रूपसे जो खुराक दी जाती अुसके सिवा बगीचेमें से नारंगी और मोटे मीठे नींबू अच्छे और बड़े देखकर वे तोड़ लाते और अुनके साथ बिस्किट भी खाया करते। मैं अचानक अुनके कमरेमें चला गया और सभ्यताके साथ कहा "मुझे शक है कि आप कुछ कमजूर चीजें खाते हैं। अिसलिअे मैं आपकी तलाशी लेने आया हूं। गांधीजीने आपकी जिम्मेदारी मुझे सौंपी है। अिसलिअे आपको बुरा लगे तो भी और जरा असभ्य बन कर भी मुझे अपना फर्ज अदा करना पड़ेगा। मेरी असभ्यताके लिअे मुझे क्षमा करें।"

यह कहकर मैंने अुनके बिस्तर और सामानकी तलाशी लेना शुरू किया। अुसमें से बिस्किटका डिब्बा और चार नारंगियां निकलीं। डिब्बा आधा खाली

हो गया था। मेरे अुसूलके बराबर मिस्टर आल्ब्रेक गम्भीर हो गये। मैंने कहा — भोजनके मामलेमें यहां कठोर अपरिग्रह रखा जाता है। किसीके पास अिस तरह खुराक जमा नहीं रह सकती। अुस पर आप तो बीमार हैं।"

अुन्होंने बहुत ही नम्रताके साथ कहा "मुझे बड़ा अफसोस है। मैं संयम न रख सका। अिसलिअे मैं चुपके चुपके खाने लगा। परन्तु आप अिस बारेमें गांधीजीको न लिखिये। अुन्हें बुरा लगेगा। अितना वचन मैं आपसे मांगता हूं।

मैंने कहा — हर रोज बापूजी पत्रमें आपकी तन्दुरुस्तीके बारेमें पूछते हैं। अुसके जवाबमें यदि अिस बारेमें न लिखूं तो मैं बेवफा कहलाअूं। आपने जो यह आश्वासन दिया है कि अपनी भूख आप सुधार लेंगे अुसके बारेमें भी मैं अुन्हें लिख दूंगा। मोतीझिरेसे अुठकर निकलनेवाले बीमारको लंबे अर्से तक संभालकर रखना चाहिये।

मिस्टर आल्ब्रेक खुद फिनिक्सके संयममें न रह सके। अस्वस्थ करके वे जोहानिसबर्ग चले गये। वहां जानेके बाद स्वादेन्द्रियको तृप्त करनेकी प्रवृत्तिमें फंस गये। रोगने पलटा खाया। फिनिक्ससे गये अुन्हें मुश्किलसे अेक महीना हुआ होगा कि यह बुरा समाचार मिला मिस्टर मेडियल आल्बिरेक मर गये।

गांधीजीको दवाकी अपेक्षा शुश्रूषा पर अधिक श्रद्धा है। अिसलिअे अपने पास रहनेवालोंकी बीमारीके मौके पर वे स्वयं ही अुनकी सेवामें लग जाते और जोखिम अुठा कर भारी जैसे भयंकर रोगमें भी कुदरती अिलाज और भोजनके परिवर्तनसे बीमारकी सेवा-शुश्रूषा करते। अिसमें अभी तक अुन्हें सफलता मिली है। अैसे सेवा-शुश्रूषाके अवसर पर अुन्होंने सन् १९१४ के सितम्बर महीनेमें जो पत्र लिखा था अुससे हम अिस विषयमें जान सकेंगे

चि मगनलाल

तुम्हें मैं अिन दिनोंमें पत्र नहीं लिख सका।

आज तबीयत अच्छी है अिसलिअे लिखने बैठा हूं। अभी बिस्तरमें ही हूं और अैसा मालूम पड़ता है कि दस दिन तो और बिस्तरमें रहना ही पड़ेगा। अिस बार बेहयाअी हद हो गयी। मेरी रायमें मैंने डॉक्टर मित्रोंकी सलाह मानी अिसीलिअे अैसा हुआ। तबका आग्रह था अिसलिअे अिन वस्तुओंके बारेमें मुझे अंतिम आसक्ति नहीं थी अुन्हें अैसा मैंने मंजूर किया। दाल भात साग चार

दिन खाये। चौथे दिन वेदना बढ़ी और जिस बातके लिये खानेको कहा गया था वह भी नहीं मिटी। पांचवें दिन नमक खाया। अुस दिन तो वेदना असह्य हो गयी। छठे दिन मैंने डॉक्टरोंको छोड़ा और अपने ही सिद्धान्तों पर आ गया। जिससे वेदना बिलकुल शान्त हो गयी और बवासीर भी जाती रही। परन्तु बीचमें मेरी ही मूर्खताके कारण फिर दर्द अुठा। नमक खानेके दिन जीवनमें पहली बार बलगममें खून आया। वह अब भी आ रहा है। जिसलिये मेरी पहचानके अेक शाकाहारी गोरे डॉक्टरको मि० कैलनबैक ले आये। अुन्होंने कहा नमक खानेकी जरूरत नहीं है। परन्तु कन्दमूलकी जरूरत अुन्होंने बताअी और यह बताया कि अुपवाससे शरीर बिलकुल कमजोर हो गया है, जिसलिये अभी जल्दी ही तेल मट वगैरा न लिये जायं। जिसलिये अभी मैं बार्लीका पानी आठ औंस हरा मेवा और आठ औंस शलजम गाजर, आलू और गोभी वगैरा मिलाकर अुसके अुबले हुअे रस पर रहता हूं। शरीर क्षीण हो गया है। मुझे जिसमें भी पूरा विश्वास नहीं है। परन्तु अपनी पूंजी पूरी तरह मेरे हाथ नहीं लगी है। जिसलिये यह प्रयोग आजमा रहा हूं। दर्द बन्द है। बलगममें खून जारी है। खानेमें अभी तो स्वाद बिलकुल नहीं रहा। जिसलिये स्वादेन्द्रियको वशमें रखनेका यह बड़ा अच्छा मौका मिला है। डॉक्टरने नींबू भी बन्द कर दिये हैं। जिसलिये तेलके बिना शलजम गाजर और गोभीका अुबला हुआ पानी पीनेमें स्वाद जरा भी नहीं रह जाता। फिर भी मैं आनन्द पूर्वक पी जाता हूं। पहले तो बार्लीका पानी खराब लगा। लेकिन अब वह भी सहन करने जैसा मालूम होता है। तुम्हें तफसीलमें लिख रहा हूं। परन्तु घबरानेका कोअी कारण नहीं। अैसी आशा है कि मेरी तबीयत ठीक हो जायगी। और अभी तक दिल यही कहता रहता है कि फलाहारसे ही वह ठीक होगी। देखना है कि अनुभवसे क्या होता है। मित्र दूध लेनेका आग्रह करते रहते हैं। जिनके लिअे मैंने साफ जिनकार कर दिया है। मैंने कह दिया है कि दूध न लेनेकी मेरी प्रतिज्ञा है, जिसलिये दूध तो मौत आती हो तो भी मैं हरगिज न लूंगा।

बाकी अीश्वर मददगार है। अुसका मेरे अुपचारों पर विश्वास जमता जा रहा है।

यहां मुझे अिन्डियन ओपिनियन विरुद्ध सम्पादन करना पड़ा है। जिसकी विगत दूसरे पत्रमें लिखूंगा।

"फिनिक्सके अुद्देश्योंका पालन सारे असह्य संकट सहकर भी करना । अबकी तबीयत कैसी रहती है, यहां आनेके बाद वातावरणका असर बच्चोंकी आत्मा पर कैसा हुआ है, आदि समाचार विस्तारपूर्वक लिखना ।

बापूके आशीर्वाद"

१०

गांधीजीके भोजनके प्रयोग

फिनिक्समें भोजनके प्रयोग बहुत हुअे थे । ये प्रयोग गांधीजीने खास तौर पर संयम और ब्रह्मचर्यके ख्यालसे आरम्भ किये थे। ब्रह्मचर्यका कुछ आधार भोजन पर है । ब्रह्मचर्यका व्रत पालनेवालोंको स्वादेन्द्रियका संयम पालना ही चाहिये । जिसने जिन्द्रिया जीत ली अुसने सब जीत लिया यह बिलकुल सत्य है । और अुतना ही सत्य यह है कि जिसने जीभको जीत लिया अुसने जिन्द्रियोंको जीत लिया । बहुतसे होशियार डॉक्टरोंने और भोजनमें सुधार करनेवाले विचारकोंने भी शारीरिक स्वास्थ्यकी दृष्टिसे और आर्थिक दृष्टिसे भोजनके प्रयोगोंका विचार किया है । परन्तु गांधीजीने धार्मिक दृष्टिसे संयमकी दृष्टिसे भोजन पर विचार किया । गांधीजीने डॉक्टर मूर और डॉक्टर जुस्टकी पुस्तकोंसे भोजनके गुण-दोष अुपरकी स्थूल दृष्टिसे जाने। बादमें गांधीजी अिसमें आगे बढ़े और अुन्होंने खोज निकाला कि शारीरिक और आर्थिक दृष्टिसे भोजनके गुण-दोष देखना और जानना स्थूल दृष्टि है । संयम और ब्रह्मचर्यकी दृष्टिसे भोजनके गुण-दोष देखना ही सच्ची दृष्टि है । कुछ पाश्चात्य डॉक्टरोंने खोज की है कि प्रत्येक कन्द या फलमें कुदरती नमक जरूर होता है । अनमें यदि तुलनामें कम होगा तो पत्ताभाजीमें ज्यादा होगा। जिसलिअे दोनों चीजें अपनी अपनी मात्रामें नमकके बिना भी खायें तो भी तन्दुरुस्तीके लिअे काफी है । अुसमें ज्यादा नमकीनापन लानेके लिअे बनावटी नमक डालना तन्दुरुस्तीके लिअे जरूरी नहीं है बल्कि कुछ हानिकारक ही है । गांधीजीने अिस दृष्टिका विकास किया और सोचा कि नमकीनपनमें स्वादेन्द्रिय पुष्ट होकर आत्माका संयमरूपी किनारा

टूट जाता है और अुससे ब्रह्मचर्य-पालन कठिन हो जाता है। क्योंकि जैसा आहार वैसी डकार। अिन्द्रियोंकी वृत्तियों पर भी सात्त्विक या तामसी भोजनका अच्छा-बुरा असर होता ही है। यह विचारश्रेणी गांधीजीने हमारे सामने रखी है। अुसी पर अुन्होंने भोजनके सारे प्रयोग किये। यहां तक कि कुछ प्रयोग तो अुनके लिये धर्म-संकल्प ही बन गये। अिन प्रयोगोंमें सामान्य प्रयोग अलोने भोजनका था। यह प्रयोग अुन्होंने कस्तूरबाकी बीमारीके समय शुरू किया था। सन् १९ ८ में कस्तूरबा बीमार पड़ीं। डॉक्टरने यह सलाह दी कि कस्तूरबा नमक और दाल छोड़ दें तो अुनकी तन्दुरुस्ती सुधर जाय। गांधीजीने डॉक्टरकी सूचना कस्तूरबाको बतायी। नमक और दालके बिना कैसे काम चले? फिर भी दाल तो छोड़ी जा सकती है परन्तु नमक हरगिज नहीं छोड़ा जा सकता। दलीलोंमें कस्तूरबाके मुंहसे निकल गया "दाल और नमक छोड़नेको तो तुमसे कोअी कहे तो तुम्हीं न छोड़ो।" गांधीजीके लिये यह वाक्य काफी था। अुन्होंने तुरंत यह बात पकड़ ली और बोले "तुम छोड़ो या न छोड़ो परन्तु मैं तो आजसे अेक बरसके लिये नमक और दाल छोड़ता हूं।"

गांधीजीके भोजनके प्रयोगोंका शुभारंभ यहींसे हुआ। जोहानिसबर्गमें रहकर अिन प्रयोगोंको अमलमें लानेका अुन्होंने प्रयत्न किया। फिनिक्समें ये प्रयोग स्थायी हो गये। ये अुनके जीवनका अेक अंग बन गये। फिनिक्समें भोजन बिलकुल सादा हो गया। भोजनालय तो अेक ही था। सबके लिये नहीं परन्तु विद्यार्थियों और शिक्षकोंके लिये। जो पहलेसे रहनेवाले थे वे अपने-अपने कुटुम्बके साथ अलग अलग भोजनालयोंमें खाते-पीते थे। अिस भोजनालयमें सवेरे गेहूंकी कॉफी दी जाती थी। पूरे गेहूंको खूब भूनकर पीस लिया जाता और फिर अुसे कॉफीके रूपमें काममें लिया जाता। अिस कॉफीको अुबले हुओ पानीमें पकाकर और दूध डालकर पीनेसे लगभग कॉफी जैसा ही स्वाद आता है।

सामान्य कॉफीका नशा अिसमें जरा भी नहीं होता। अिस कॉफीके साथ अपनी रोटी, गुड़ या मुरब्बा या कोअी फल होता तो वह दिया जाता था। दोपहरको रोटी, भाजी, चावल, दाल और साग दिया जाता था। दाल-सागमें गरम मसालेका अुपयोग नहीं होता था। मिर्च भी नहीं होती थी। सिर्फ नमक डाला जाता था। घीके बजाय मूंगफलीका तेल काममें लिया जाता था। फिर कुछ लोग ब्रह्मचारी हों, अलोना सागके व्रतवाले

होते। चखकर न खानेवाले होते। अिन सबके लिअे भी अुचित व्यवस्था थी। जेलकी तरह अेक ही बड़े कटोरेमें सब कुछ खाना होता था। लकड़ीके चम्मचका अुपयोग भी होता था।

अिस भोजनमें भी कभी कभी परिवर्तन होता था। गांधीजीको दूधका अुपयोग करना पसन्द नहीं था। और अुसमें भी ढिब्बेके जमाये हुअे दूधसे अुन्हें विशेष अरुचि थी। फिर भी जितना चाहिये अुतना दूध न मिलनेके कारण डिब्बेका दूध अिस्तेमाल करना पड़ता था। अेक दिन अुन्होंने मुझसे कहा — हमें दूध बन्द करना है। मुझे दूधका अुपयोग खटकता है। मुझे लगता है कि बादामके मगजका दूध निकालकर अुसका अुपयोग हो सकता है। मैंने कहा — मैं अैसा करके जरूर देखूंगा। मैंने बादामका मगज खरलमें पानीके साथ घोटकर अुसका दूध निकाला। अुस दूधका अिस्तेमाल किया। परन्तु पीनेवालोंको जरा भी फर्क न लगा। गांधीजी खुश हुअे। परन्तु अुन्हें अेक विचार सूझा और वे बोले — रावजीभाअी अिस तरह बादामके मगजका दूध बनाकर कॉफीमें डालना हमें पुसायेगा नहीं। बहुत ही खर्चीला हो जायगा। मूंगफलीके दानोंके दूधका प्रयोग करके देखो। दूसरे ही दिन पावभर मूंगफलीके दाने पीसकर और खरलमें पानीके साथ घोटकर अुनका दूध निकाला। वह दूध कॉफीमें अिस्तेमाल किया। किसीको भी पता न चला। कॉफी पीनेवालोंको खास कोअी फर्क मालूम नहीं हुआ। तबसे फिनिक्स आश्रमसे दूधको छुट्टी मिल गअी।

गांधीजी यह जानते थे कि स्वाद किसी चीजमें नहीं हमारी वृत्तिमें है। अतः अिस बारेमें वे काफी सावधान थे। सारे अन्न और मिष्टान्नका पूरा रसास्वाद फलाहारमें है। स्वादेन्द्रियके पोषके फलाहारमें भी किये जा सकते हैं। अिसलिअे गांधीजीने फलाहार पर भी अंकुश लगाना शुरू कर दिया। अिस प्रकार भोजनके प्रयोग करनेसे अुन्हें और अुनके साथ रहनेवालोंको संयम और तन्दुरुस्ती दोनोंका लाभ हुआ है अिसमें जरा भी शक नहीं। हम बाहरी कठिनाअियोंसे जूझना सीखते हैं, परन्तु अिससे भी ज्यादा जबरदस्त अपने मनसे जूझनेकी है। भोजनके प्रयोगोंमें और खास तौर पर यदि वे संयमके हेतुसे किये गये हों तो हमें अपने ही मनसे लड़नेके बहुत मौके मिलते हैं। अुनमें हम सावधान हों तो अिन मयकोंसे हमारा मनोबल बढ़ता है, हम प्रतिज्ञा और व्रतका माहात्म्य समझने लगते हैं और अुनसे लाभ अुठा सकते हैं।

स्वास्थ्य मनके विकारों और स्वादेन्द्रियके संयम-मर्यादाका खुराकके साथ क्या सम्बन्ध है यह गांधीजीके नीचेके पत्रसे समझमें आ जायगा

“चि मगनलाल

हमारे बैलों पर अनुचित भोजनका असर तुरंत हो जाता है, जिसका कारण तुमने अच्छी तरह बताया है। बुद्धदेवने भिक्षामें मिला हुआ मांस खाया कि तुरन्त अनुका देह गिरा।

दूधके बारेमें यह मान लेनेका कोओी कारण नहीं कि किसीने विचार ही नहीं किया होगा। मैं मानता हूं कि दूधके बिना काम चला लेनेवाले बहुत लोग दुनियामें होंगे। परन्तु मैं कह चुका हूं कि किसी महापुरुषने हिन्दुस्तानमें जो मांस छुड़वाया वह जितना बड़ा महत्त्वका परिवर्तन था कि दूधके बारेमें विचार करने या लिखनेवाला कोओी देखनेमें नहीं आया। परन्तु यह हमारे अज्ञानके कारण है। हमने सब कुछ पढ़ा नहीं है। सबको देखा नहीं है। अेक ही मार्ग्ग अुत्तम है। भूतकालमें दूध छोड़नेका विचार हुआ हो या न हुआ हो परन्तु यह बुद्धिको ठीक लगता है या नहीं? और दूधके छोड़नेमें किसीने पाप बताया या माना नहीं है।

पश्चिम मार्गी जानेवाले तीर्थोमें तेलको त्याज्य समझकर घीको पवित्र मानते हैं। जिसका कारण मैंने जो अनुमान लगाया है वही मालूम होता है। हिन्दुस्तान जब मांसाहारी था और किसीने बहुतोंसे निरामिषाहारी बना दिया तब घीको अति पवित्र बना दिया गया। जिसलिओे हम अपने भोजनमें बेहद घी जिस्तेमाल करते हैं। जितना अधिक घी अुतना ही भोजन स्वादिष्ट माना जाता है। जिससे ज्यादा अंधेर और क्या होगा? फिर भी यही माना जाता है। अैसा होनेसे पवित्र स्थानोंमें भी घीको अूंचा दर्जा दे दिया गया। परिवर्तन करनेवालोंने सोच लिया कि लोग घी खूब खायेंगे तो अुन्हें मांसकी बहुत जरूरत नहीं रहेगी। अिसी तरहके हेतुसे लंदनमें वेजिटेरियन भी अंडेका जिस्तेमाल करते हैं। मैं जो पकवान बनाते हैं अुनमें से बहुतमें ही अंडा नहीं डाला होता। अंडेको अन्होंने मवाला पवित्र स्थान दे दिया है।

स्वादकी जीतनेके बारेमें तुमने जो श्लोक लिखा था वह तो मैंने देखा था। फिर भी मेरी आलोचना लागू होती है। अेक श्लोकसे कोओी अमर नहीं होता। जिस विषय पर अुन्होंने जोर नहीं दिया। दिया ही

होता तो हथेलीमें हुए बहानेसे मिष्टान्न न बनता। शाकाहार-भोजन भी न होता। और आजकल ऋषि तथा साधु भी स्वादेन्द्रियको नहीं जीतते बल्कि असके अधीन हुअे पाये जाते हैं। यह बात बहुत लम्बी-चौड़ी है। दोष निकालनेके लिअे यह सब कहें तो हम पापी बनते हैं। परन्तु यहां अपना और परायेका अुपकार ही मुख्य बात है वहां कैसे भी बड़े मान्य पुरुष क्यों न हों अनमें हम जो अपूर्णता देखें अुस पर विचार करना हमारा फर्ज है।

यह तो मुझे मालूम नहीं कि रामनौमीका व्रत क्यों नहीं रखा जाता और अेकादशीका क्यों रखा जाता है। परन्तु पखवाड़ेमें कमसे कम अेक दिन साधारण भोजन छोड़नेसे शरीर और मन शुद्ध होते हैं।

बापूके आशीर्वाद"

सत्याग्रहकी आखिरी लड़ाई समाप्त होनेके बाद समझौतेके कामसे गांधीजी केपटाअुन गये थे। वहांसे सन् १ १४ के अप्रैल मासमें अुन्होंने मुझे अेक पत्र लिखा था। अुसे पढ़नेसे यह मालूम हो जायगा कि गांधीजी स्वादे न्द्रियके संयमके बारेमें कितना आग्रह रखते हैं

भाओश्री रावजीभाओ

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे अुपवासके बारेमें मैंने सुना था। अुप वास तुमने सकारण किया हो तब तो मुझे कुछ नहीं कहना है। तुम्हें वहां अेकान्त तो मिल ही नहीं सकता। मैं बाकी प्रवृत्ति विवेक रहनी चाहिये। जिसीमें शान्ति है। वहां सेवाधर्म ही प्रधान है।

जै की तन्दुरुस्ती गिर जानेसे मैं घबरा गया हूं। तुरंत सुधर जाय तो अच्छा।

म के लिअे जी व्याकुल होता है। पता नहीं चलता स्थिति क्यों नहीं सुधरती। मैं तो यही ठीक समझता हूं कि वह मेरे पास आ जाय। तुम अैसा अिन्तजाम करते रहना। देशमें मैं देख लूंगा। अैसा लगा करता है कि मानसिक रोगके कारण यह होता है। जेलमें तबीयत ठीक रहती थी जिसका कारण दूसरा रहता है। परन्तु दूसरी बात ही सूझती है। वहां मन जबरदस्ती अेक स्थितिमें रहता था। अुसका असर शरीर पर भी हुआ। वहां सादी कैसा भी भोजन करने पर भी जेलमें तन्दुरुस्ती ठीक रही। अब जेलके बाहर क्या अैसा मनोराज्य नहीं प्राप्त किया जा सकता? कुछ भी

हो हिन्दुस्तान आना ही म   के लिये ठीक मालूम होता है। परन्तु यह भी अिस बारेमें सोचे।

अेक अुदाहरण मैं अपना दे देता हूं। बाने अदरककी अिच्छा की। अदरक न खानेका मेरा व्रत नहीं था अिसलिये मैंने बाके साथ ही अुसका अुप भोगनेके लिये खाना शुरू कर दिया। बाकी जीभ स्वादप्रिय है। बाने अदरककी जड़ें ढूंढ ली। मुझे तो अुस पर राग अुत्पन्न हो गया। यह यहां तक कि चार-पांच आनीके बराबर कोमल गांठें मैं भी खा जाता। अेक दिन बाने कीमती गुलकी टोकरीमें से बहुतसी जड़ें ढूंढकर कमरेमें रख दीं। मैं देखकर घबरा गया। रात बीती। सवेरे अुठते ही भड़क अुठा 'मैं अदरक कैसे खा सकता हूं? अिसकी अेक गांठसे अनेक जड़ें पैदा होती हैं। अुसमें तो अनेक जीव होने चाहिये। और कोमल जड़ें खाना तो कोमल बच्चेको मार डालनेके बराबर हुआ।' मुझे अपने पर बड़ा तिरस्कार पैदा हुआ। मैंने निश्चय किया कि अिस शरीरमें तो अदरक नहीं खाअूंगा। मजेकी बात अब आती है। बाने देखा कि मैं अदरक नहीं खाता। अुसने कारण पूछा। मैंने समझाया। वह भी समझ गयी। सारी कोमल जड़ें ले गयी। बाकीमें से खानेका मुझसे आग्रह किया। मैंने अिनकार किया। व्रत तो जारी ही है। परन्तु जीभ और आंख कुत्ते जैसी हैं। आंख देखती है तो अदरक खानेकी अिच्छा होती है। जीभ तड़पती रहती है। परन्तु जूठनके लिये तड़पता हुआ कुत्ता जैसे मालिकको देखकर जूठन खानेकी हिम्मत नहीं कर सकता वैसे ही आत्मारामजी देखते हैं अिसलिये जीभ अुस अदरकको छू नहीं सकती। अदरक तो सारे दिन मेरी नजरके सामने ही रहता है क्योंकि जहां मेरे कामकाज पड़े हैं वहीं वह पड़ा रहता है। आजकल मेरी यह हालत है कि शक्कर और नमक छोड़ना जितना मुश्किल नहीं हुआ अुतना अदरक परसे वृत्तिको हटाना मुश्किल हो रहा है। अब तुम अपनेको क्या दोष दोगी? मनको जो शराब पिये हुअे बन्दरकी अुपमा दी गयी है सो गलत नहीं है। मुझसे ज्ञान सीखनेकी बड़ी आशायें रखो तो भी क्या? हम सब अेक ही टूटी हुअी नावमें बैठे हैं। अुसमें अनुभवरूपी ज्ञान मुझे ज्यादा होनेके कारण मैं बताअूं वहां तुम पैर रखो तो भले ही रखो। हम सब अंधेरेमें हैं और अेक ही वस्तुकी खोज कर रहे हैं। मेरे पैर शायद जरा ज्यादा जोर और विश्वासके साथ पड़ते होंगे। अिसलिये मेरे प्रति विशेष आदर-वृत्ति रखना भी तुम्हारी अुन्नतिको रोकने जैसा है। अब मैं सब कामनाओंको

जीत सूझा तब तुम्हें या औरोंको निःसंकोच भावसे ज्ञान दूँगा। अभी तो हम सब अेक साथ जोर लगाकर मोक्ष देनेवाले नारायणको ढूँढें और अुस खोजमें भूल करते हुअे लड़खड़ाते हुअे और मार खाते हुअे भी हिम्मत और धीरजके साथ आगे बढ़ें।

मोहनदासके यथायोग्य"

* * *

मेरे साथ तुम सब दौड़ो यह वांछनीय है। परन्तु मैं अैसी आशा नहीं रखता। यह मांग मैंने कभी नहीं की कि मैं जो कुछ करता हूँ वह सब तुम भी करो। परन्तु जिसे करनेका भार अुठा लो अुसे तो पूरा करना ही चाहिये। बलात्कारकी तो बात ही नहीं है। परन्तु तुम अपने आप समझ-बूझकर का व्यसन छोड़ कर मुझे धोखा दो तो अिसमें दोष तुम्हारा ही होगा।

अिसी तरह हमें मान लेना चाहिये कि बच्चे अेक खास हद तक पहुँच गये हैं। वे फिनिक्समें कुछ चीजोंका त्याग करते हैं तो वहां अुन चीजोंको त्याज्य समझते हैं। फिनिक्ससे बाहर जाकर वही चीज कैसे खा सकती है? अलोना खाना किसीके लिये फर्ज नहीं है। तेज मसाले व्यसन मिष्टान्न बहुत स्वादिष्ट भोजन या कॉफी वगैरा वस्तुअें सबके लिये त्याज्य हैं। विषय-भोग चोरी असत्य और देरसे अुठना सबके लिये त्याज्य हैं। ये नियम जिनको कड़े लगें वे यहां कैसे रह सकते हैं? हरअेक संस्थाके कुछ खास नियम होते हैं। अुन नियमोंको बाहर और भीतर सब जगह पालना ही चाहिये। जो न पाले अुसका संस्थामें रहना बेकार है।

तुम जो कहना चाहते हो वह तो यह है। मेरी शर्मके मारे बच्चे और दूसरे लोग कभी कामें करते हैं स्वतंत्र रूपमें नहीं करते और अिसलिये वे मुझे धोखा देते हैं। यह मेरा दोष हो सकता है परन्तु अिससे मैं अेक ही तरहसे मुक्त हो सकता हूँ। अर्थात् मुझे किसीके साथ न रहना चाहिये। अभी तो मुझे यह रास्ता पसंद नहीं लगता। या धर्मके कारण नहीं मानने बिना अलोना खानेका ढोंग करके मुझे धोखा दे, तो अिसमें मैं दोषी कैसे बन जाता हूँ? तुम अलोना नहीं खाते हो अिससे मैं तुम्हें कम चाहता हूँ और जो बिलकुल अलोनाहारी है अिसलिये अुसे ज्यादा चाहता हूँ अैसी कोई बात नहीं है। अलोने-सलोनेमें कोई पाप-पुण्य नहीं है। अुसके पीछे जो रहस्य है अुसमें पाप-पुण्य है। अिसलिये कभी अलोना

नहीं खाते लेकिन अिसलिअे वे मुझे अप्रिय नहीं हैं। मिस श्लेशिन सब बातोंमें मुझसे अुलटा व्यवहार करती है फिर भी अुसके चरित्रको कुछ हद तक तुम सबसे मैं अधिक अूंचा मानता हूं। सब परिवर्तनोंमें यथाशक्ति संयम रखना और अुसमें वृद्धि करना हमारा अुद्देश्य है। अुस रात मैंने यह कहा था कि जिसे यह बात स्वीकार न हो वह मुझे छोड़ दे। और यह यथार्थ ही मालूम होता है। नॉर्टनके काम पर मैं मोहित नहीं हुआ और बंगाली वकीलोंका मैं तिरस्कार नहीं करता। सत्याग्रही अुन दोनोंके प्रसंगसे बाहर है और अुसका कर्तव्य दूसरा ही है। तुम्हारे सवालोंमें यह सवाल भी है कि सत्याग्रही ठीक राह पर है या नहीं। यह तुम अभी तक न समझे हो तो मैं यही कहूंगा कि यह वस्तु अनुभवगम्य है। दूसरा अिसे नहीं समझा सकता। अिसे समझनेके लिअे हम स्वादनिग्रह वगैराको जीतनेकी कोशिश करते हैं। संयमका अर्थ अलोना खाना न समझो। तुम दो दिनकी सूखी रोटी और नमककी अेक डली खाकर जीवन बिताओ तो वह मेरे कच्ची तरहके मेवोंके स्वाद लेनेसे बहुत अूंचा हो सकता है। कार्यकी शुद्धताका निर्णय अिस बातसे होगा कि तुम किस अुद्देश्यसे सूखी रोटी खाते हो और मैं किस अुद्देश्यसे मेवे वगैरा खाता हूं।

पवित्रता दूसरोंके आक्षेपोंसे लज्जित नहीं होती परन्तु विशेष बल प्राप्त करती है।

तुमसे कोअी भी अनुचित बात हुअी हो तो मेरे सामने सब कबूल कर लेना। अैसा किये बिना तुम्हारे अुपवास या सैकड़ों प्रायश्चित्त भी सफल नहीं होंगे। मैं वहां आनेके लिअे तड़प रहा हूं परन्तु मेरा कर्तव्य छोड़ा नहीं जा सकता।

सूर्य पश्चिममें अुगे तो भी यह नहीं हो सकता कि मैं अपनी की हुअी प्रतिज्ञा वापस ले लूं।

जिन्हें मैंने अत्यंत निष्पाप माना है वे जैसे पापी हों तो अिन दागियोंको पोषण देकर अेक क्षणके लिअे भी मैं रखना नहीं चाहता।

मनुष्य अपने प्रणकी रक्षा आसानीसे नहीं कर सकता।

तुम दोनोंको अिस पत्रसे चोट आयेगी। परन्तु जो बात मेरे मनमें है वह न लिखूं तो मुझमें जो कुछ सत्य है अुसे कलंक लगेगा और मैं तुम्हारा बुरा करनेवाला बनूंगा। तुम्हें दुःख पहुंचाना अिस समय मेरा धर्म हो गया है।

११

प्रसिद्धाकी महिमा

फिनिक्स आश्रममें अैसी तालीम दी जाती थी जिससे जीवनके सभी अंगोंका विकास हो। विद्यार्थियोंकी शिक्षाके बारेमें तो गांधीजीने दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास में जो कुछ लिखा है वह शिक्षाके जिज्ञासु अुसमें पढ़ लें। मैं यहां कुछ और ही बात बताना चाहता हूं। आश्रममें संयम नीति और सदाचारका अैसा शुद्ध वातावरण था कि साधारण वायुमंडलमें निर्दोष समझी जानेवाली हमारी आदतें वहां सदोष समझी जातीं। वहांका जीवन अितना अूंचे दर्जेका था कि सामान्य व्यवहार भी दोषपात्र माना जाता। अुदाहरणके लिअ विद्यार्थी था और कोअी नियमित रूपमें दो-तीन बार खाना खाये और फिर भी बगीचेमें काम करते हुअ काफी अच्छा फल दिखाअी देने पर अुसे तोड़कर खानेकी अिच्छा करे, तो अिसे आम तौर पर हम अपराध नहीं मानते। फिनिक्सके अुच्च कोटिके वातावरणकी दृष्टिसे अुसे अपराध माना जाता था। भले ही अुसको सजा नहीं दी जाती थी परन्तु वहांकी नैतिक दृष्टिसे अैसा अपराध करनेवालेको खुद ही संकोच होता था और वह निश्चय करता था कि मैं फिर कभी अैसा नहीं करूंगा। अिसके अलावा अेक महीने अलोना खानेका जिसने निश्चय कर लेनेके बाद किसी असाधारण प्रसंग पर भी सलोना भोजन करना हृदयकी दुर्बलता और गंभीर अपराध माना जाता था। विद्यार्थियोंने मानलो निश्चय किया हो कि कल रविवार है अिसलिअे समन्दर या किनारेके जल-प्रपातके रमणीय स्थान पर सैर करेंगे तो बादमें भले ही भारी वर्षा हुअी हो और जिसमें भी चाहे पूरे आसार नजर आते हों या अन्य कोअी कठिनाअी पैदा हो गअी हो फिर भी अिन प्रकारकी कठिनाअियोंके कारण किये हुअे निश्चयको अमलमें न लाना सबके लिअे कमजोरी माना जाता था। आश्रममें झाड़ू लगानेवाला नौकर या पैसेकी खातिर काम करनेवाला भंगी नहीं रखा जाता था। खेती करनेवाला या पढ़ानेवाला शिक्षक कम्पोजीटर या प्रबन्धक संपादक या रसोईमें खाना बनानेवाला अेक ही आदमी होता था। सब

अपने लिये निश्चित किया हुआ काम करते थे। अुसमें भी पाखाना साफ करनेका काम दूसरे सब कामोंसे अूंचा माना जाता था। स्टेशन आश्रमसे ढाअी मील दूर था। खाने-पीनेका सामान और प्रेस-संबंधी सामान स्टेशन पर आता तब अुसे आश्रममें लाना पड़ता था परन्तु अुसे लानेके लिये कोअी जानवरकी सवारी नहीं रखी गअी थी। अेक छोटीसी गाड़ीमें रखकर विद्यार्थी और शिक्षक ही अुसे खींच लाते थे। अेक बार अेक विद्यार्थीके पिताजी बीमार हुअे। अुनके शिक्षक अुन्हें देखने डरबन गये। अुन बुजुर्गकी रहनेकी जगह गंदी थी हवा और रोशनीवाली भी नहीं थी वातावरण हानिकारक था। बीमारीमें भी आदतके अनुसार अवांछनीय खान-पान आदि व्यवहार होता था। यह सब देख कर अुन शिक्षकको लगा कि अैसी हालतमें बीमारी जरूर बढ़ जायगी और बादमें काबूमें नहीं रह सकेगी। अुन्होंने अुन बुजुर्गको फिनिक्समें आकर रहनेकी सूचना दी। अुन्होंने मंजूर कर लिया। यह तय करके कि अमुक दिन अमुक गाड़ीसे फिनिक्स स्टेशन पर अुतरना वे शिक्षक फिनिक्स चले गये। वे बुजुर्ग बीमारीकी हालतमें ढाअी मील पैदल तो चल ही नहीं सकते थे आश्रममें बैलगाड़ी या और कोअी साधन भी नहीं था। स्टेशन पर भी अैसा कोअी साधन किरायेसे नहीं मिल सकता था। शिक्षकने भार अुठानेकी छोटी गाड़ी तैयार की। विद्यार्थी अपने अेक साथीके पिताजीको अुस गाड़ीमें खींचकर लानेको तैयार हो गये। वे शिक्षक विद्यार्थियोंको लेकर स्टेशन गये और बीमार बुजुर्गको गाड़ीमें बिठाकर आश्रम तक खींच लाये। अिस सेवाभावको अपने साथीके प्रति अैसी ममताको आज हमारी शालाओंमें देखनेके लिये हम बहुत अुत्सुक हैं। ये बुजुर्ग वहांके नियमित और अल्प आहार तथा पिचकारी और मिट्टीकी पट्टीके अुपचारकी वजहसे डेढ़ महीनेसे शरीरमें घुसे हुअे क्षय जैसे भयंकर शत्रुसे बच गये। अुन्हें पूरी तरह आराम हो गया। वे शारीरिक श्रम करने लगे और डेढ़ महीनेकी सेवा-शुश्रूषाके बाद दो-चार मील चलनेके लिये समर्थ हो गये। अैसी कितनी ही सेवा करने और देखनेका विद्यार्थियोंको मौका मिलता था। यह कोअी मामूली तालीम नहीं कही जा सकती। अैसे सेवाभावी और शुद्ध वाता-वरणमें जैसे अुजले कपड़े पर स्याहीका दाग बहुत जल्दी दिखाअी देता है वैसे ही मामूली दोष भी गंभीर माना जाता था।

अेक दिन अेक विद्यार्थी जोहानिसबर्गसे आये हुअे अपने बुजुर्गसे मिलने डरबन गया था। बुजुर्गको बच्चेके प्रति ममता होनेके कारण अैसा लगा कि

रोने लगी। हिचकियां भरने लगी। गांधीजीने कहा — देखो, तू जितना ज्यादा रो क्यों रही है? जो सच हो सो कह दे। देवदासने हिचकियां भरते भरते कहा — मैं आपसे सच बात कह दूंगा। परन्तु आप मुझे झूठा मानेंगे। अिसलिये मुझे रोना आता है। गांधीजी बोल अुठे — अब तो मुझे विश्वास है कि तू सच ही कहेगा। जो सच हो वही कह दे। देवदासने दृढ़ताके साथ बताया — बहनको चिट्ठियां पाते मैंने देखा है।

बस अब क्या हो सकता था? गांधीजी तो क्षणभरके लिये विचार सागरमें डूब गये। अिस हद तक विद्यार्थी झूठ बोलते हों तो यह भयंकर बात है। और यदि यह बहन झूठ बोलती हो तब तो अिससे भी बड़ी भयंकर बात है। सारे खंडमें खामोशी छा गयी और अुदासी फैल गयी। सब अिस विचारमें पड़ गये कि घड़ीभर बाद क्या होगा। अितनेमें गांधीजीने निश्चयात्मक शब्दोंमें कहा — मेरे सामने सच बात तो आनी ही चाहिये। अिसलिये जब तक दोनों पक्षोंकी तरफसे यह निर्णय नहीं कर दिया जाय कि विद्यार्थी सच्चे हैं या बहन सच्ची है तब तक मैं अनशन-व्रत लूंगा। यह फैसला सुनकर हम सब अवाक् हो गये मानो हम पर बिजली गिर पड़ी हो। अिसका क्या परिणाम होगा अिस पर भले-बुरे तर्क-वितर्क होने लगे। मी कैलनबैक तो भारी चिन्तामें पड़ गये। रातके साढ़े नौ बज गये। गांधीजीने मुझसे पूछा — तुम्हारा क्या खयाल है? मैंने कहा — यह बहन अैसा नहीं कर सकती और यदि अुससे अपराध हो गया हो तो अिस हद तक नहीं जा सकती। मेरा यह अनुभव है कि देवदास कभी बार झूठ बोला है। लेकिन आज अुसके कहनेका मुझ पर दूसरा असर हुआ और मैं भी अब शंकाशील बन गया हूं। फिर भी मैं पक्की बात करूंगा। फिर सब सो गये। मैंने और मगनलाल गांधीने रातके बारह बजे निर्दोष विद्यार्थियोंको अेक अेक करके गहरी नींदसे जगा कर पूछना शुरू किया। अुन सबकी तरफसे अेक ही तरहकी जानकारी मिली। और हमें भी विश्वास हो गया कि विद्यार्थियोंका कहना सच है।

परन्तु जब तक वह बहन खुद गांधीजीके सामने स्वीकार न करे, तब तक क्या हो सकता था? अन्तमें मगनलालने अुस बहनको सच बात कहनेकी हिम्मत दी। दूसरे दिन दस बजे अुस बहनने गांधीजीके पास जाकर और अुन्हें प्रणाम करके अपना दोष स्वीकार कर लिया।

यह प्रसंग पढ़कर बहुतोंको आश्चर्य होगा। वे सोचेंगे कि असे छोटे छोटे मामलोंमें गांधीजीका अुपवास करना अजीब बात है। परन्तु यह छोटासा दिखाओ देनेवाला प्रसंग कितना गंभीर था यह तो फिनिक्सके वातावरणमें रहनेवाला ही समझ सकता है।

जिस प्रसंगके बाद दूसरे दिन गांधीजी जोहानिसबर्ग चले गये थे। वहांसे जिस सम्बन्धमें अुन्होंने मुझे यह पत्र लिखा था

भाओश्री रावजीभाओ

"तुम पर किसी पूर्वजन्मका ऋणानुबन्ध होगा। तुमसे जितना प्रेम पानेका मुझे क्या अधिकार हो सकता है? फिर भी कल जब मैं भारी संकटमें पड़ गया तब तुमने जो प्रीति दिखाओ अुसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। जिसलिअे मैं चाहता हूं कि तुम दोनोंकी आत्मा अधिक तेजस्वी बने और तुम अैसी कामना करना कि अुस प्रीतिको अनुभव करनेसे अपनी आत्माकी शक्तिके बारेमें मेरा विश्वास अधिक दृढ़ हो। सीधे गैराशिकके अनुसार यह जवाब मिलता है कि अेक छोटीसी प्रतिज्ञा यानी तपश्चर्याके आचरणसे जब जितना ही सकता है तो फिर बड़ी तपश्चर्या कितना कर सकती है जिसका कोओ हिसाब ही नहीं हो सकता। और बात भी अैसी ही है। मैंने प्रतिज्ञा न की होती तो शुद्ध प्रेमका अनुभव न होता और जिस धीमतासे सत्य प्रकट हो गया और छोटे बच्चे निर्दोष साबित हुअे अैसा भी न हो पाता।

कि   को मैंने जिस अूंचे वर्गकी समझा था वहांसे अुसे अुतरना पड़ा है। फिर भी मैं यह कहकर मानता हूं कि वह पुण्यात्मा है और अुसमें सद्गुण भी बहुत हैं। अुनका विकास करना हमारा फर्ज है। अुसका पाप और काम तो बहुत भारी था। अुसकी अुसे याद न आये अैसा व्यवहार हमें अुसके साथ करना है। अुसे घरके कामकाजमें प्रवीण होनेका प्रोत्साहन देना। यह देखते रहना कि कोओ बच्चे अुसका अपमान न करें।   रातकी कथा जारी रखना। बच्चोंको पांच बजे अुठानेका भार रा   पर समझना।

म   की तबीयतके समाचार नियमित रूपसे मिलने चाहिये।

मोहनदासके यथायोग्य"

१२

गांधीजीके अुपवास

गांधीजीने दक्षिण अफ्रीकामें सत्याग्रहकी जो लड़ाओ आरम्भ की थी अुसमें अुनकी दृष्टि राजनीतिककी अपेक्षा धार्मिक अधिक थी। सम्पूर्ण सत्याग्रह सम्पूर्ण आत्मशुद्धिके बिना नहीं हो सकता। और संपूर्ण सत्याग्रहके साथ ही अुसकी सम्पूर्ण विजयकी कल्पना जुड़ी हुओ है। अिस प्रकार कोओ भी लड़ाओ सत्याग्रहके जरिये लड़नेमें आत्मशुद्धिकी जरूरत पड़ती है। अतः सत्याग्रह मूल रूपमें ही धर्मवृत्ति है। अुपवास और प्रार्थना आत्मशुद्धिके मुख्य साधन हैं। अैसे अुपवास दो कारणोंसे हो सकते हैं: संयमके कारण और प्रायश्चित्तके कारण। दैनिक जीवनमें हम अधिकसे अधिक शुद्ध किस तरह हों अिसके अुपायके रूपमें मन और हृदयके निरंकुश जोशको दबानेके लिये जो अुपवास होते हैं वे संयमके हेतुसे किये गये अुपवास कहलाते हैं। और मन तथा हृदयके आत्महितसे विरुद्ध जानेवाले कार्योंमें या प्रलोभनोंमें पड़नेके कारण जो दोष हो जाते हैं अुनके प्रायश्चित्तके खातिर होनेवाले अुपवास प्रायश्चित्तके हेतुसे किये गये अुपवास कहलाते हैं। हम देख चुके हैं कि गांधीजीने भोजनके सारे प्रयोग संयमके हेतुसे शुरू किये थे। बादमें वे अुससे आगे बढ़े। अुन्होंने अेकाशन और निराहार अुपवास भी शुरू किये। अिस तरहके निराहार अुपवास अुन्होंने संयमकी दृष्टिसे अेक साथ नहीं किये। अैसे अेक साथ किये जानेवाले अुपवास संयमकी दृष्टिसे अुचित हैं या नहीं अिसका विचार अुन्होंने तो किया ही होगा। परन्तु अिस बारेमें मेरा खयाल यह है कि जीवन सतत दूसरोंकी सेवामें ही लगा रहता हो तो सेवाका काम ही संयम है। संयमके खातिर अुपवास करके सेवामें लगे हुओ जीवनमें जरा भी विशेष वास्ता अुन्हें अुचित नहीं लगा होगा। अिस लिये अमुक समयके लिये नियमित अेकाशन और अेकादशीके अुनके अुपवास संयमकी दृष्टिसे किये गये माने जायंगे। अैसे अुपवास गांधीजीने अेक साथ किये हों यह मेरी जानकारीमें नहीं है।

प्रायश्चित्तके खातिर अेक और अेक साथ अनेक अुपवास गांधीजीने कअी बार किये हैं। अैसे प्रायश्चित्तके रूपमें अुन्होंने आज तक जितने अुपवास किये हैं अुनके चार हिस्से किये जा सकते हैं:

(१) अपने आत्म-स्खलनके कारण प्रायश्चित्तके रूपमें।

(२) अपने जीवनके असरमें रहनेवाले आप्तजनोंका आत्म-स्खलन असह्य हो अुठने पर।

(३) जिस समाजको अपना कार्यक्षेत्र बनाया है और जो समाज अपने जीवनके असरमें माना जाता है अुस समाजके गंभीर आत्म-स्खलनके कारण।

(४) जिस समाजको अपना कार्यक्षेत्र बनाया है और जो समाज अपने जीवनके असरमें माना जाता है अुस समाजके प्रति किसी व्यक्ति या किसी समाजकी तरफसे होनेवाले असह्य अन्याय और अत्याचारके कारण।

अुपरके चार मार्गोमें से पहले दो भागके अुपवास गांधीजीने दक्षिण अफ्रीकामें किये थे। प्रथम अवसर सात दिनके अुपवासका था। दूसरा अवसर चौदह दिनके अुपवासका था। आश्रममें रहनेवाले अेक भाओ और अेक बहनके गंभीर पतनसे गांधीजीको भारी दुःख हुआ था। जिस कारणसे दोषी आप्तजनोंके लिअे अुनका हृदय व्याकुल पड़ा। परन्तु गांधीजीने जिस अुबालको दबा दिया। अपने पास रहनेवाले आप्तजनोंके हृदयकी मलिनताके लिअे मैं ही जिम्मेदार हूं जिसमें कहीं न कहीं गहराअीमें मेरी आत्माकी अपूर्णता ही होनी चाहिये नहीं तो शुद्ध स्फटिक मणिमें मैल कभी छुपा नहीं रह सकता। अगर मैल छिपा रहा तो स्फटिक मणिके स्वयं शुद्ध न होनेके कारण ही छिपा रहा। जिस दृष्टिसे सात दिनके अुपवासका निश्चय करके गांधीजीने दोषी भाओ-बहनोंके प्रति अपना रोष शान्त किया और अुन पर दया बरसाओ। जिस सात दिनके अुपवासमें श्री कैलनबैक भी शामिल थे। ये गांधीजीके जीवनके अेक महत्त्वपूर्ण अंग बन गये थे। जिसलिअे अुनके अतिशय आग्रहके कारण गांधीजीने अुन्हें अुपवासमें शामिल होनेकी अनुमति दी। ये सात दिनके अुपवास रोजके कार्यक्रममें जरा भी बाधा पड़े बिना पूरे हो गये।

ये सात दिनके अुपवास होनेके लगभग छह महीने बाद दूसरे चौदह अुपवास करनेका अवसर अुपस्थित हुआ। यह प्रसंग मेरी दृष्टिसे तो बहुत ही छोटे कारणसे अुपस्थित हुआ जान पड़ा। अेक व्यक्तिके जिसके लिअे गांधीजीने बड़ी जोखिम अुठाओ थी चरित्रके बारेमें गांधीजीको बड़ा विश्वास था। परन्तु अुस व्यक्तिका भीतरी जीवन बहुत ही मलिन मालूम हुआ। अतः गांधीजीने अुसके लिअे प्रायश्चित्त किया और यह आशा रखी कि कमजोरीके कारण अुसमें जो मलिनता आ गयी होगी वह जिससे नष्ट हो

जाओगी। परन्तु अन्तमें गांधीजीको विश्वास हो गया कि अुस व्यक्तिकी मलिनता नष्ट नहीं हुआी है वह अुन्हें चालाकीसे धोखा देता है। अिसलिये गांधीजीको निराशा हुआी। अिसके बारेमें अुन्होंने बहुत बड़ी आशा रखी थी अुसकी अैसी अधोगतिका कारण अुन्होंने अपनेको माना। अुन्होंने फिनिक्समें चौदह अुपवास करनेका निश्चय किया अुससे पहले कितने ही समयसे अुनके दिल पर बड़े आघात लगते रहे थे। हमारी नजरमें बहुत लोग अपराध अुनके लिये बड़े दुःखका कारण बन जाता था और हृदयकी शुचि या हृदयकी मलिनताको वे जरा भी बरदाश्त नहीं कर सकते थे। वे दिन ही अैसे थे। परन्तु वे दिन जितने दुःखद थे अुतने ही स्वानुभवके आत्म-निरीक्षणके और आत्मशुद्धिके भी थे। संवत् १९७ के चैत्र बदी ११के रोज अुन्होंने अपने हृदयकी पीड़ा जिस प्रकार व्यक्त की थी

आज तक मेरा कोअी भी दिन अिस तरहकी मानसिक वेदनामें नहीं गुजरा होगा। मेरा बोलना मेरा हँसना मेरा चलना मेरा खाना और मेरा काम करना सब आजकल यंत्रकी तरह ही होता है। मैं कुछ भी लिख नहीं सकता। अैसा मालूम होता है जैसे मेरा हृदय सूख गया हो। आजकलकी मेरी पीड़ाका कोअी पार नहीं है। कभी बार तो जेबसे छुरी निकालकर अपने पेटमें भोंक देनेका मेरा विचार हुआ। कभी मैंने सामनेकी दीवारसे सिर फोड़ लेनेका विचार किया और कभी कभी अिस संसारसे भाग जानेका विचार किया। परन्तु बादमें विचार हुआ अरे मूर्ख मानस! मूर्ख जीव! अिस तरह तू क्यों पागल हो रहा है? अैसी मानसिक वेदनाके समय भी तूने संतुलन कायम नहीं रखा तो तुझे थोड़ा भी जो ज्ञान मिला है वह किस कामका? अिस तरहके विचारोंमें आजकल मैं अपने दिन बिता रहा हूँ। मेरे जो हितैषी हैं अुन्हें यह हकीकत मुझे अब कह देनी है।   देखो साथी मैं   ने घोर पाप किये हैं।

यह सब जाना तब मुझे विचार आया कि अपात्र पर विश्वास रखकर मैंने जो पाप किया अुसका प्रायश्चित्त मुझे करना ही चाहिये। १५ दिनके अुपवास करनेकी प्रतिज्ञा लेते हुअे मैं हिचकिचाया। बाका खयाल आया। मैं १५ दिन न खाअूँगा तो बा जरूर मर जायगी। अिस डरसे ही फिलहाल मैंने यह विचार छोड़ दिया। परन्तु बादमें निश्चय किया कि मैं
को भी   जाना ही चाहिये। वहाँ जाकर रहना ही अुसका मुख्य

धर्म है। यहां रहनेमें अुसका कल्याण नहीं है। पता नहीं मुझमें क्या बात है। मुझमें अैसी निर्दयता है — दूसरोंके कहे अनुसार — कि दूसरा आदमी मेरा मन रखनेके लिअे मजबूर होकर काम करता है और जो काम नहीं हो सकता अुसे भी करनेकी कोशिश करता है। और जब अैसा करनेकी अुसकी शक्ति नहीं होती तो अन्तमें कृत्रिमता धारण करके मुझे धोखा देता है। गोखलेजीने भी मुझे बहुत बार कहा था तुममें अितनी कठोरता है कि दूसरे आदमीको तुम कंपा देते हो और वह आदमी डरके मारे या तुम्हारी अिच्छा पूरी करनेकी कोशिशमें मजबूरीसे काम करता रहता है और अन्तमें अशक्त मनुष्य कृत्रिमता धारण कर लेता है। तुम मनुष्यों पर असह्य भार डाल देते हो। मैं खुद भी तुम्हारा काम शक्ति न होने पर भी जबरन् करता हूं।

अेक दिन सुबहके साढ़े दस बजे सब खाना खाने बैठे। मैं और गांधीजी सबको परोस रहे थे। परोस कर मैं भोजनालयमें गया। पीछे पीछे गांधीजी आये और बोले अुसने आज भयंकर झूठ बोला और मुझे अुससे कहना पड़ा कि अब दुबारा अिस तरह जान-बूझ कर झूठ बोलोगे तो मैं चौदह दिनका अुपवास करूंगा। अिस बातको चौबीस घंटे होने आये। फिर खाने और परोसनेका अवसर आया और गांधीजी बोले झूठे ने गजब किया। आज भी अुसने जान-बूझकर झूठका प्रयोग किया। अब मुझे चौदह दिनका अुपवास करना ही पड़ेगा।

मुझ पर तो जैसे वज्र गिर गया। मैं स्तब्ध हो गया। गांधीजीने तुरन्त मुझे सचेत कर दिया। हमारे दोके सिवा रसोअीघरमें और कोअी नहीं था। बा तो बीमार थीं अिसलिअे बिस्तर पर थीं। गांधीजीने मुझसे कहा तुम खा लो। फिर जमनालाल और कल्याणदासको बुलाओ। मैंने कहा "अभी ही बुला लाता हूं। मुझे खाना नहीं है। गांधीजीने मुझे तुरन्त वापस बुला लिया और बोले मेरी आज्ञा है तुम खा लो। तुममें से किसीको अिस बारेमें विचार नहीं करना चाहिये। किसीको मेरे साथ अुपवास करके अपना नित्यकार्य बिगाड़ना या अुसमें त्रुटि नहीं करनी चाहिये। सबको यह सावधानी रखनी है कि हमारे कार्यक्रममें जरा भी खलल न पड़े। अिसलिअे तुम खाने बैठो। गांधीजीने मुझे जबरन् खाने बैठा दिया यों कहिये कि मुझ पर जुल्म किया। मैंने तर्क किया परन्तु आप अिस

तरह हर किसी बात पर अुपवास करें, अिसका क्या अर्थ है? चौदह दिनके अुपवास किसलिये? हमारे पापोंके लिये आप क्यों अुपवास करें? आपके हृदयकी काया अितनी ठंडी है कि अुसकी शीतलतामें भयंकर जहरीला नाग भी पल सकता है। अुसके पापके कारण आप भूखों मरें यह कहांका न्याय है? गांधीजी मेरे हृदयकी पीड़ाको समझ कर हंसे और गंभीर भावसे बोले

हर कोअी झूठ बोले या मुझे धोखा दे तो मुझे चोट नहीं लगती है। अुसके लिये मैं अपनेको दोषी नहीं मानता। चौदह दिनका अुपवास करनेका मैंने जो निश्चय किया है वह किसीके पापका प्रायश्चित्त करनेके खातिर नहीं किया है बल्कि कल मैंने जो यह प्रतिज्ञा की थी कि अब दुबारा अिस तरह तुम जान-बूझकर झूठ बोलोगे तो मैं चौदह दिनका अुपवास करूंगा अुस प्रतिज्ञाके पालनके खातिर मुझे अुपवास करना पड़ा। परन्तु जिन्हें मैं अपना मानता हूं जिनसे मैंने बड़ी आशायें रखी हों जिन पर मुझे बड़ा विश्वास हो और जिनके लिये मैंने कभी तरहके खतरे मुठ्ठ कर अपनी आत्माको अुंडेला हो वही व्यक्ति असत्य काममें लेकर मुझे हमेशा धोखा देते रहें तो अिसमें मेरा ही पाप है यह मझे दीपककी तरह स्पष्ट मालूम होता है। मुझमें पाप न हो तो वैसे पापीका पाप मैं क्यों न देख सका? पत्थर और हीरेका फर्क जौहरीको करते आना ही चाहिये। अपने जिन आदमियोंको मैं अपना मानता हूं अपनी हृदयका प्रतिबिम्ब समझता हूं अुनमें यदि असत्य हो तो मुझमें असत्य होना ही चाहिये। यह मेरा जीवन है। अिसके खातिर मैं जीता हूं। तुम्हें तो मुझे हिम्मत बंधानी है। तुम्हें होशियार रहकर मैं अशक्त हो जाअूं तब मेरी सेवा करना और अिस तरहसे काम करते रहना है कि हमारे नित्यकार्यमें कोअी कमी न आवे। मेरे पीछे अुपवास करके मेरी मशिकलें बढ़ाकर, मेरे अुपवासमें मुझे चिन्तातुर बनाना तुम्हारा कर्तव्य नहीं है।

मैं चुप रहा। जैसे तैसे कुछ खाया और बादमें मगनलाल छगनलाल और मिस्टर वेस्ट वगैराको बुला लाया। गांधीजीने अपना अपना निश्चय बताया। अुनके कैसी चर्चा भी अुनके साथ हुअी। परन्तु सब जानते थे कि गांधीजीके निश्चयका अर्थ होता है भीष्म-प्रतिज्ञा।

अुन्होंने चौदह दिनके अुपवास शुरू किये। नीमके पत्तों या रसकी खटीलो गरमी प्राप्त हो कर मनुष्यकी धनिया बनती है अैसे किसी उपायसे

गांधीजीने अुपवास करनेसे पहले यह संकल्प किया कि मौसमी मोसम्बी परिमित मात्रामें दिनमें दो बार खाअूंगा। अिस प्रकार चार दिन हुओ कि अुनके पेटमें दर्द अुठा और असह्य वेदना होने लगी। परिमित खाना तो अुन्होंने बन्द कर दिया परन्तु दर्द नहीं मिटा। साथ ही दिनमें गांधीजी चौदह दिनके अुपवासके अन्तमें जितने अशक्त दीखने चाहिये अुतने अशक्त हो गये। अिन चौदह दिनोंमें मैं हमेशा अुनके पास ही रहा और मुझे अुनकी सेवा करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ।

परन्तु हम सबको यह सूचना कर दी गयी थी कि अिस अुपवासके बारेमें हम किसीसे बात न करें और यह बात फिनिक्ससे बाहर न जाय। और यह भी समझा दिया गया था कि फिनिक्समें कोओी मिलने आये तो हम अुससे भी खुद होकर यह बात न कहें। अुपवासकी बात बाहर चली जाय तो दक्षिण अफ्रीका फिनिक्समें ही अुमड़ आये और हाहाकार मच जाय। दक्षिण अफ्रीकामें जहां खूब चाम्पी कर मौज करनेका आदर्श रखनेवाले लोग रहते हों, चौदह दिनके अुपवासकी बात सुनकर स्नेहियोंका फिनिक्सकी तरफ खूब झुक हो जाना स्वाभाविक था। अिस प्रकारकी चुप्पीके कारण शान्तिसे गांधीजीके अपवास पूरे हुओ। अंतिम अुपवासके दिन तो अुनसे बिस्तरसे अुठा भी नहीं जाता था जितनी कमजोरी आ गयी थी। अिस मौके पर मि कैलनबैक जोहानिसबर्गमें थे। अुन्हें चार दिन बाद खबर मिली। वे तो अिस चौदह दिनके अुपवासकी बात जानकर व्याकुल हो अुठे। तुरन्त अुन्होंने गांधीजीको तार दिया और वहांसे फिनिक्स आनेको निकल पड़े। तारके दूसरे दिन भी कैलनबैक शामकी गाड़ीसे कोओी चार बजे अुतरनेवाले थे। दो बजी बजे गांधीजी बिस्तरमें पड़े पड़े बोले जिसे मेरे साथ स्टेशन चलना हो वह तैयार हो जाय। प्रेस या खेतीके कामवाला कोओी न आये। यह कहकर वे बिस्तरसे अुठे। हाथमें लाठी ली चप्पल पहनी और चलने लगे। मैं भी साथ साथ गया। स्टेशन पहुंचे और गाड़ी आ गयी। श्री कैलनबैक गाड़ीसे अुतरे। गांधीजीको स्टेशन पर देखकर वे तो चकित हो गये। वे गांधीजीसे मिले और बोले मैंने माना था कि आप अभी बिछौने पर ही पड़े होंगे। गांधीजी हंसते हंसते बोले "हां था तो बिस्तर पर ही। परन्तु यह मुझसे सहन नहीं हुआ कि तुम मुझे बिस्तर पर पड़ा समझकर यहांसे यहां भागे आ गये। मेरे लिओ अितनी अधिक चिंता क्यों? अितना ज्यादा मोह

कैसा? मैं तीन मील चलकर तुम्हारे सामने आया हूं सो यह बतानेको कि मैं बिछौनेमें पड़ा नहीं रहा।

श्री कैलनबैक बहुत खुश हुअे और सब लोग बातें करते करते आश्रमकी तरफ चलने लगे।

परन्तु जो सदा ही आत्म-निरीक्षण करते हों और जिनके हृदयमें सतत मंथन चलता रहता हो अुनका प्रत्येक क्षण अमूल्य होता है। अिस प्रकार गांधीजीके लिअे कौनसा प्रसंग शान्तिकारक सिद्ध होगा यह नहीं कहा जा सकता था। कोअी भी छिछली प्रवृत्ति या बाहरी धोंस देखकर अुन्हें बेहद दुःख होता था। अूपरके प्रसंगके बाद जैसा कुछ देख-जानकर धामकी प्रार्थनाके बाद सबको संबोधित करके अुन्होंने नीचे लिखे अुद्गार प्रकट किये

तुम गीताजीके श्लोक कंठस्थ कर लोगे तो अिससे मैं प्रसन्न नहीं होअूंगा। तुम अितिहास पढ़ो या न पढ़ो गणित करो या न करो संस्कृत पढ़ो या न पढ़ो अिसकी मुझे कोअी चिन्ता नहीं। परन्तु यह जरूरी है कि तुम संयम-वृत्ति धारण करो। यही मुझे चाहिये। मैं मनुष्यका गुलाम बनना चाहूंगा परन्तु अपने मनका गुलाम नहीं बनना चाहता। मनका गुलाम बनने जैसा कोअी अधम पाप नहीं है। अिसलिअे तुम समझकर मनको नियममें रखना सीखो। अैसी स्थितिमें ही तुम मेरे पास रह सकोगे नहीं तो मुझे किसीकी जरूरत नहीं। मैं तुममें से किसीको भी सिखानेका अभिमान नहीं रखता। मेरे पास अेक शिष्य है जिसे सिखाना बड़ेसे बड़ा काम है। अुसे शिक्षा देकर ही मैं तुम्हारा हिन्दुस्तानका या मानव-जातिका भला कर सकूंगा। और यह मैं खुद ही हूं जिसे मैं अपना मन कहता हूं। अिस प्रकार जो अपनेको अपना शिष्य बनायेंगे वे ही यहां रहनेके लायक हैं। जो यहांके जीवनको पचा न सकें अुनका यहां न रहना ही बेहतर है। वे यहांसे अलग हो जायें तो ठीक ही रहेगा। लेकिन मनसे बिना (हृदयपूर्वक न करके यंत्रकी तरह) काम करना पाप है। मैं अैसा नहीं चाहता।"

१३

स्नेही, त्यागी या ज्ञानी ?

सब कोअी यह कहते हैं कि गांधीजीमें कुछ विशेषता है। जो अुनके दर्शन करने जाता है अुस पर वे जादू डाल देते हैं। जो अुनके साथ झगड़ा करने जाता है अुसे वे जीत लेते हैं। जो अुनके प्रति स्नेह रखते हैं अुनके स्नेहमें वे ओतप्रोत हो जाते हैं। अुनमें स्नेहकी जितनी जबरदस्त शुद्धता और तीव्रता है कि अुनके संपर्कमें आनेवाला अपने-आपको अुनमें समा देना चाहता है। सिर्फ अुन लोगोंके हृदयकी कमजोरी ही अिसमें बाधक होती है। गांधीजीके स्नेहमें मोह नहीं होता। आम तौर पर हम मोहको स्नेह और प्रेमके नामसे पुकारते हैं। हमारे स्नेहमें देहके प्रति आकर्षण होता है। यम नियम और संयमसे आत्म-निरीक्षण करके जिसने आत्म-साधना की हो वह मोह यानी देहके आकर्षणवाले स्नेह और शुद्ध स्नेहका भेद जान सकता है और अुसे परख सकता है। स्नेह तो हमेशा शुद्ध ही होता है। परन्तु हमारे स्नेहका स्तर जितना मलिन हो गया है कि हम स्नेह और शुद्ध स्नेह जैसे भेद करते हैं। स्नेह हमेशा श्रेय होता है प्रेय नहीं होता। अुसमें आत्माका चिरस्थायी श्रेय होता है। अुसमें क्षणिक शारीरिक लालसा और मनकी अुत्तेजित भावनाओंके लिअे कोअी स्थान नहीं होता। गांधीजीका स्नेह आत्माका श्रेय करनेवाला है। अनेक भक्तोंने अीश्वरसे अैसा शुद्ध स्नेह मांगा है अिस संसार या त्रिलोककी धन-संपत्तिका या अधिकारका अनादर करके प्रभुके प्रति या आप्तजनोंके प्रति शुद्ध स्नेह चाहा है। गांधीजीके नीचे दिये गये पत्र हमें अैसे ही शुद्ध, पवित्र स्नेहकी झांकी कराते हैं। सच्चा स्नेही सच्चा त्यागी है, सच्चा ज्ञानी है।

सन् १९ ८ में सत्याग्रहकी लड़ाअीमें गांधीजीको दूसरी बार जेलकी सजा हुअी। अुस समय पूज्य कस्तूरबा फिनिक्समें खूब बीमार थीं। मिस्टर वेस्टने कस्तूरबाकी भयंकर बीमारीके बारेमें गांधीजीको तार दिया। अिस पर गांधीजीने पूज्य कस्तूरबाको नीचे लिखा पत्र भेजा। गांधीजीकी अुम्र अुस समय चालीस बरसकी रही होगी।

"तुम्हारी तबीयतका तार मि० वेस्टने आज भेजा है। मेरा हृदय विदीर्ण हो रहा है, मैं रो रहा हूं। परन्तु अैसी स्थिति नहीं है कि तुम्हारी सेवा करने आ सकूं। सत्याग्रहकी लड़ाओमें मैंने सब कुछ अर्पण कर दिया है। मैं वहां आ ही नहीं सकता। जुर्माना देकर ही आ सकता हूं। और जुर्माना तो दिया ही नहीं जा सकता। तुम जरा हिम्मत रखो और ठीक ढंगसे खाओ-पियो तो ठीक हो जाओगी। फिर भी यदि मेरे भाग्यमें यही लिखा होगा कि तुम चली जाओ तो मैं जितना ही लिखता हूं कि तुम वियोगमें भी मेरे जीते-जी ही चली जाओ तो बुरा नहीं होगा। तुम पर मेरा प्रेम जितना अधिक है कि तुम मरने पर भी मेरे दिलमें जिन्दी ही रहोगी। तुम्हारी आत्मा तो अमर है। मैं तुम्हें विश्वासके साथ कहता हूं कि यदि तुम्हें जाना ही पड़ा तो तुम्हारे बाद मैं दूसरी स्त्री नहीं करूंगा। मैंने तुम्हें कभी यह कहा भी है। तुम अीश्वर पर आस्था रखकर प्राण छोड़ना। तुम मरोगी तो वह भी सत्याग्रहको शोभा देनेवाला ही होगा। मेरी लड़ाओ सिर्फ राज नैतिक नहीं है। यह लड़ाओ धार्मिक है। जिसलिओ अत्यन्त शुद्ध है। जिसमें मरे तो क्या और जिये तो क्या? आशा है तुम भी यही समझकर जरा भी दुखी न होगी। अैसा वचन मैं तुमसे चाहता हूं।"

अूपरका पत्र लिखनेके लगभग पांच सालके लम्बे अर्सेके बाद गांधीजी अेक दिन सुबह फिनिक्समें खेतीका काम कर रहे थे। अुस समय डाक आओ। डाकमें अेक तार था। वह तार अुन्होंने डाक पढ़ते समय पढ़ा और अपने पास जिस तरह रख दिया जैसे थोड़ा भी महत्त्वका समाचार न हो। आश्रमका सारे दिनका कार्यक्रम पूरा हो गया। अुनके साथ काम करनेवालोंको पता भी नहीं चला कि आज अुनके दिलमें गंभीर अुथल-पुथल मची हुआी है। रातकी प्रार्थनाके बाद सारे दिनकी महत्त्वपूर्ण घटनाओंके बारेमें या महत्त्वके समाचारोंके विषयमें बातें हो रही थीं। अुस समय गांधीजी बहुत ही गंभीर हो गये और अत्यन्त दुःखपूर्वक अुन्होंने हमारे सामने नीचेके अुद्गार प्रगट किये

"मुझ पर बड़ीसे बड़ी विपत्ति आ पड़ी है। मैं समझता हूं कि अब समय तक मेरा विचार करते हुअे मेरे भाओी चल बसे हैं। मुझसे मिलनेकी अुनकी जिच्छा जितनी अुत्कट थी! मैं भी जिसीलिओ अपना काम जल्दी खतम कर रहा था कि जैसे तैसे जल्दी हिन्दुस्तान चला जाअूं, अुनके चरणोंमें

अिसी समय मुझ पर मानसिक आपत्ति आ पड़ी। मैं अपने माता
पिताके वात्सल्यपूर्ण पत्रोंसे दीन हो गया। मैंने अपनी दशाका वर्णन करनेवाला
अेक पत्र गांधीजीको [illegible] लिखा। अुसके जवाबमें अुन्होंने जो पत्र मु
लिखा अुस परसे गांधीजीकी यह विचारधारा हमें मालूम हो सकेगी कि
त्यागी ही सच्चा स्नेही है और सच्चा स्नेह हमें स्वार्पणके मार्ग पर ले जात
है। वह पत्र यहां देता हूं

रामचंद्रजी वनवास जाने लगे तब दशरथ राजाने अुनसे कहा कि
कैकेयीको दिये हुअे वचनकी कोअी परवाह नहीं वचन-भंग होने पर भी तु
वनमें न जाओ। लौकिक और स्थूल पुत्रप्रेमसे पैदा होनेवाली अिस विनती
अनादर करके रामचंद्रजी वनमें गये और सच्ची पितृभक्ति करके अुन्हों
राजा दशरथका और अपना भी नाम अमर कर दिया। हरिश्चन्द्रने अप
स्त्रीको बेचकर और रोहितके गले पर तलवार रखने तकको तैयार हो
स्त्रीभक्ति और पुत्रप्रेम प्रकट किया। प्रह्लादने पिताकी आज्ञाका अुल्लंघ
करके पितृभक्ति की और अुनका अुद्धार किया। मीराबाअीने राणा कुंभा
छोड़कर राजा कृष्णको ही अपना [illegible] बना लिया। दयानंदने अपने मात
पिताके पाससे भागकर, की हुअी सगाअीको छोड़कर, अपने पीछे पड़े ह
आदमियोंके हाथसे भी छूटकर मातृभक्ति और पितृभक्ति की। बुद्धदेव अप
जवान स्त्रीको सोती हुअी छोड़कर चल दिये।

अैसे बहुतसे अुदाहरण हमें मिलते हैं। अुनका चिन्तन करके तुम प
जो संकट आ पड़ा है अुसमें अन्तर्विचार करके सच्ची नीतिके अनुसार
अुचित मालूम हो वही करना। भजनके लिअे सूक्ष्म और स्थूल भक्ति
अेक ही प्रवाहकी थी। अिसलिअे हम अुसका अुदाहरण लेकर प्राय: यह न
देख पाते कि सही वस्तु क्या है। सत्य मार्ग पर चलनेवालेको संकटके सम
हमेशा सत्यमार्ग सूझ जाता है। वैराग्यके पद वगैरा हम भी पढ़ते हैं वे अग
धर्म-संकटके समय अुपयोगी सिद्ध न हों तो यही माना जायगा कि हमने अु
सिर्फ तोतेकी तरह रट लिया है। अुन पर विचार हमने बिलकुल नहीं किया
गीताजी पढ़कर भी यदि वह संकटसमय हमारी मदद न करे, तो गीताजीक
पढ़ना न पढ़ना बराबर है। अिसीलिअे मैं हमेशा कहता रहा हूं थोड़ा पढ़ो
परन्तु जो पढ़ो अुस पर विचार करो और अुसका रहस्य समझकर अुस
अनुसार आचरण करनेको तैयार रहो।

"स्नेहियोंके प्रति वीतराग स्थिति अुत्पन्न हो जाय तभी हृदय सचमुच दयावान बनता है और स्नेहियोंकी सेवा करता है। बाके प्रति मैं जिस हद तक वीतराग बना हूं अुसी हद तक अुसकी सेवा अधिक कर सकता हूं। बुद्धने अपने माता-पिताको छोड़कर अुनका भी अुद्धार कर दिया। गोपीचन्दने वैराग्य लेकर अपनी माता पर अत्यन्त शुद्ध प्रेम बताया। अिसी तरह तुम भी अपने चरित्रका निर्माण करके अत्यंत निर्मल नीतिको दृढ़ बनाकर अपने माता-पिताकी सेवा करोगे। जब तुम्हारी आत्मा विशुद्ध होगी तब अुसकी परछाओं तुम्हारे सब स्नेहियों पर पड़े बिना रह ही नहीं सकती।

अूपरके प्रसंगोंके अनुसार बापूजीने जो पत्र लिखे अुनके अलावा अुनके बहुतसे पत्रोंमें ज्ञान और वैराग्यकी तरफ अुनका झुकाव दिखाअी देता है। नीचेके पत्र अुत्तम कोटिके हैं।

आत्माके सिवा सब कुछ क्षणभंगुर है। यह विचार ही हर घड़ी करना काफी नहीं है बल्कि अुससे संबंध रखनेवाले कार्यमें सदा लगे रहना चाहिये। ज्यों ज्यों मैं विचार करता हूं त्यों त्यों सत्य और ब्रह्मचर्यकी महिमाका विचार मनमें रमता जाता है। ब्रह्मचर्यका और अन्य सारी नीतिका समावेश सत्यमें हो जाता है। फिर भी मुझे यह लगा ही करता है कि ब्रह्मचर्यका अितना महत्त्व है कि वह सत्यके साथ बैठ सकता है। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि अिन दोनोंके द्वारा कोअी भी कठिनाअी दूर हो सकती है। सच्ची कठिनाअियां मनोविकारोंकी ही होती हैं। बाहरी सम्बन्धों पर अुसका जरा भी आधार न रखें तो यह विचार करनेके बजाय कि लोग क्या कहते हैं हम यही विचार करेंगे कि हमें क्या करना चाहिये।

* * *

"अीश्वर परमात्मा है। आत्मा अुसका अंश है। अिस जन्ममें भी मोक्ष हो सकता है। अिसकी बात पक्की हो जानेके बाद हमें अिस विषयमें संशोधन करते ही रहना होगा। जो होता है वह होता है अिसीलिअे ठीक है या हमारे बड़ोंने किया अिसीलिअे अमुक काम ठीक है अैसा मान लेनेके लिअे रत्तीभर भी कारण नहीं है। यह आत्माके विरुद्ध बात है। बहुतसी प्राचीन बातें अच्छी हैं। परन्तु जैसे आगके साथ धुआं रहता है वैसे ही पुरानी अच्छाअीके साथ कुछ कनिष्ठता भी लगी रहती है। अुसे अलग करके सार निकाल लेनेमें ही हमारा काम है।"

* * *

"चि० मणिलाल

अपनी स्त्रीके साथके विषम मौकेमें संयम रखना महाकठिन काम है। अुससे अधिक कठिन काम थोड़े ही होंगे। तुम्हारा झुकाव अुस तरफ है अिसलिअे तुम जरूर सफलता प्राप्त करोगे। कोशिश तो करते ही रहना और अैसी परिस्थितियां पैदा करना कि अुसमें सफलता मिले। अिस तरह सहज ही पार लग जाओगे। मेरे विचार अिस तरहके बननेके बाद प्रयत्न करते रहने पर भी रा   और दे   प्राप्त हुअे हैं। मेरी प्रारम्भिक असफलता परसे तुम्हें अपने भीतर साहस पैदा करना चाहिये। पुरुषको कवियोंने सिंहकी अुपमा दी है। संयम करनेसे हम सबको अिन्द्रिय-वनके राजा बननेका सामर्थ्य प्राप्त होगा।

बापूके आशीर्वाद

गांधीजी सन् १९१४के अप्रैलमें जब कैपटाअुन गये थे तब पूज्य कस्तूरबा भी अुनके साथ थीं। वहां वे बीमार पड़ गयीं। बाकी बीमारीके समय गांधीजी अुनके पास हों तो वे ही अुनकी सुश्रूषा करते थे। अुस मौके पर गांधीजीने अपने पुत्र मणिलालको नीचेका पत्र लिखा था :

"तुम अपने अक्षर सुधारना। बाकी तबीयत अिस समय तो बहुत बिगड़ गयी है। वह और मैं दोनों यही मानते हैं कि डॉक्टरी दवाका असर अुन पर बहुत बुरा हुआ है। अुसीने यह अिच्छा बतायी थी कि डॉक्टरी अिलाज किया जाय। दो या तीन खुराक दवा लेनेके बाद बीमारीने अुग्र रूप ले लिया। अब बा कुछ खा नहीं सकती। कल थोड़े अंगूर लिये थे लेकिन वे भी अनुकूल आते जान नहीं पड़ते। अन्तमें मृत्यु भी आ जाय तो भी हमने तो मृत्युसे न डरनेका निश्चय कर लिया है। अिसलिअे चिन्ताकी कोअी बात नहीं है। शरीर किसी दिन तो गिरने ही वाला है। वह गिरनेका जो दिन तय हो चुका है अुसी दिन गिरता है। अुसीके अनुसार हमें अिलाज सूझते हैं। अिसके सिवा आत्मा तो अमर है। यद्यपि सम्बन्ध हम शरीरका ही रखते मालूम होते हैं फिर भी सच्चा सम्बन्ध तो आत्माका ही होना चाहिये। यह निश्चित है कि शरीरमें से जीवके निकल जानेके बाद हम पलभर भी अुसकी संभाल नहीं करते। अैसा समझकर बाके शरीरके बारेमें अुचित अुपाय करनेके बाद मैं तो निश्चिन्त रहता हूं और चाहता हूं कि तुम सब भी निश्चिन्त रहो। अब शरीरकी अैसी स्थितिमें

समझ लेनेके बाद हमें साधुता और अुदासीनता अपनानी चाहिये। साधुताका अर्थ केवल वैराग्य या जंगलमें भटकना नहीं है। यहां अुसका अर्थ शुद्ध चरित्रसे सम्बन्ध रखता है। अुदासीनताका अर्थ अप्रसन्नता नहीं परन्तु विषयोंसे अरुचि और संसारके विषयमें अमोह है। बाकी बीमारीमें तुम सब यह बात सीखो तो वह बाके प्रति तुम्हारा सच्चा भक्तिभाव माना जायगा।

बापूके आशीर्वाद

फिनिक्समें हमसे थोड़ी दूर नेपाल नामका अेक किसान रहता था। वह शुरूमें गिरमिटमें आया था। अुसकी पत्नी भी गिरमिटमें आयी थी। दोनोंकी मुलाकात तो डरबनके बन्दरगाह पर अुतरनेके बाद ही हुअी थी। अिमिग्रेशन-अफसरने अुन दोनोंका विवाह कराया था। वह स्त्री अपने पतिके साथ रहती तो जरूर थी परन्तु नेपाल अुससे नीची जातिका था। अिस लिये वह अुसके प्रति बार-बार तिरस्कार दिखाती और कठोरताका बरताव करती थी। अेक दिन शामको अुसकी झोंपड़ीमें अेकाअेक आग लग गयी। नेपाल अितना बीमार था कि अुठ भी नहीं सकता था। हम आगकी लपटें देखकर वहां दौड़ गये। परन्तु वहां पहुंचनेसे पहले झोंपड़ी जलकर खाक हो गयी थी। बेचारा नेपाल अपनी खाटमें पड़ा पड़ा ही जल मरा। अुसकी पत्नी दूर बैठी रोती रही। गांधीजी अुस समय केपटाअुनमें थे। अिस घटनाका करुण वर्णन मैंने गांधीजीको अेक पत्रमें लिखा था। अुसके जवाबमें अुन्होंने नीचे लिखा पत्र भेजा था

भाअीश्री रावजीभाअी

तुम्हारा पत्र मिला। नेपाल तो छूट ही गया। अुसकी पत्नी अनुभवसे कठोर हृदयकी मालूम हुअी है। मौतसे हमें अपना कर्तव्य सोचना है और शरीरके विषयमें सम्यक् तिरस्कार पैदा करना है। परन्तु मृत्युसे डरनेकी जरूरत नहीं। मालूम होता है मनुष्य जलकर मरता है तब भी बहुत दुःख नहीं अुठाता। ज्यादा दुःख होने पर मूर्छित हो जाता है। शरीरसे अधिक चिपटने वाला अधिक दुःख पाता है। आत्मतत्त्वको जाननेवाला मनुष्य मृत्युसे नहीं घबराता। नेपालकी तरह हजारों मनुष्य हजारों जीव आजकल हर रोज जल मरते हैं। ब्रह्माण्डमें नेपाल चींटीसे भी सूक्ष्म जन्तु है। हम स्वयं जाने अनजाने आग सुलगानेमें रातको लालटेनका अुपयोग करनेमें नेपालसे ज्यादामें

बड़े कितने ही जीवोंको खा जाते होंगे। ब्रह्माके समान किसी महाजीवकी कल्पना करो! अुसके मुकाबलेमें तो हम चींटीसे भी छोटे होंगे। अुसकी बाहकी परिधि ही कितनी बड़ी होगी कि हम अुसे पिस्सूके बराबर मालूम होंगे। अुसने नेपालको पैदा किया हो तो क्या पता? और अुसने यह भी माना होगा कि अुसके महाजीवके सुखके खातिर नेपाल जैसे जन्तुओंको पीस-पीस कर खा जाना चाहिये। हमारे मुकाबलेमें तो नेपाल हमारे जैसा ही जन्तु है, जिसलिये हमारा भी यही हाल होगा जिस डरसे हमें अुस पर दया आती है। परन्तु जो दलील हम चींटी खटमल पिस्सू और दूसरे असंख्य जन्तुओंके बारेमें जिन्हें हम अपनी चमड़ेकी आंखोंसे नहीं देख सकते बुद्धिमत्तापूर्वक देते हैं वही दलील अधिक बुद्धिमान प्राणी हमारे लिये काममें लेता होगा। यह बात यदि समझमें आ जाय तो नेपाल आदिके किस्सोंसे हम कितनी बातें सीख सकते हैं

१ स्वयं अपने अूपर दया करके हम सब जीवोंको समान मानें अुन पर दया करें तथा अपने किसी भी सुखके लिये जीवहानि करते डरें चौंकें।

२ देहके बारेमें मोह न रख कर मृत्युसे जरा भी न डरें।

३ यह समझकर कि शरीर बड़ा धोखेबाज है, जिसी क्षण मौतकी सामग्री तैयार करें।

ये तीनों सूत्र कह देना आसान है परन्तु अुन पर विचार करना कठिन है और विचार करनेके बाद अुसके अनुसार आचरण करना तो तलवारकी धार पर चलनेके समान है।

"जिस समय प्रातःकाल है। विचारका प्रवाह किसी दिशामें बह रहा है। क्योंकि बा फिर पीड़ा भोग रही है और अुसे मृत्युके डरसे मुक्त करनेका मैं प्रयत्न कर रहा हूं।

मोहनदासके यथायोग्य

१४

अिच्छाबलका प्रभाव

जिस तरह गांधीजीने अपनी आत्मशुद्धि करनेकी कोशिश की। वैसे वैसे वे शुद्ध होते गये वैसे वैसे अधिकाधिक प्रकृतिमय बनते गये। कुदरत भगवानकी संपूर्ण कृति है। अुसकी शरणमें जानेवाला मनुष्य अुसे अपनी माता मानता है। वह कुदरतके किसी भी रूपको देख कर आनन्दित होता है। वज्र-प्रहार करनेके लिअे अुमड़नेवाले बादलों अुनकी भयंकर गड़गड़ाहट और बिजलीकी हृदय-विदारक कड़कड़ाहटमें अुसे डरकी कोअी बात नहीं लगती। अुसे वह रमणीय लगती है। पृथ्वीको बहाकर दूर फेंक देनेवाली महासागरकी प्रचंड लहरों पर प्रभुको छोटेसे बालकके रूपमें नृत्य करते देखकर योगी पुरुष अुनके दर्शनसे अत्यन्त आनन्दित होता है। भयानक जहरीला सांप या विकराल वनराज अुसके सामने आकर खड़ा हो जाय तो अुसे भी वह अपने जैसा कुदरतका बालक समझकर अुससे भयभीत नहीं होता परन्तु अुसे आप्तजन मानकर स्नेहसे अुसका स्वागत करता है। हम जैसे व्यवहारको चमत्कार कहते हैं। सच पूछा जाय तो संसारमें चमत्कार जैसी कोअी चीज ही नहीं है। कोअी मनुष्य यह कहे कि मैं चमत्कार दिखा सकता हूं तो यही मानना चाहिये कि वह कोअी ढोंगी या धूर्त है। जो कुदरतके स्वरूपमें मिलकर अेक नहीं हो सकते जो कुदरतका साक्षात्कार नहीं कर सकते अुन्हें अपनी शक्तिसे अधिक जो विशेषता मालूम होती है अुसे वे चमत्कार कहते हैं। सोलहवीं-सत्रहवीं सदीमें देखनेवालेको बिजली या हवाअी जहाज चमत्कार लगा होता। अब हम जानते हैं कि वह चमत्कार नहीं है, परन्तु प्रकृतिका व्यावहारिक अुपयोग है। जब मानव अपनी स्वकताका आत्यन्तिक सूक्ष्मतामें लोप कर डालता है, तब वह भयंकर या रमणीय दिखाअी देनेवाले कुदरतके किसी अवयवका रूप ले लेता है। अुसकी दृष्टिमें काल या अकाल जीवन या मृत्यु, भयंकरता या रमणीयता सब अपनी संतानके समान प्रिय है। प्रकृतिमय बन जानेवाले संत पुरुषके लिअे प्रकृतिका द्रोह करनेकी बात नहीं रहती और प्रकृतिको अुसका द्रोह करनेकी बात नहीं रहती। फिर तो अुसके व्यवहारकी जिम्मेदारी कुदरत पर होती है और अुसके वचन और आचरणको सिद्ध करनेका कर्तव्य कुदरतके सिर पर होता है।

गांधीजी ज्यों ज्यों आत्मशुद्धिमें आगे बढ़ते गये त्यों त्यों अुनके हृदयकी निर्मलता और विशालता बढ़ती गयी। अिसे कुछ लोग चमत्कार भी कहेंगे। जो भी कहना हो कहें। अैसी अेकाध घटना यहां बताकर अुस समयके गांधीजीके जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाले अिस प्रकरणको मैं पूरा करूंगा।

अिस शान्तिके समयमें यानी सन् १९१२–१३ में रंगूनसे भाअी कोतवाल वहां आये। अुनका पूरा नाम पुरुषोत्तम केशव कोतवाल था। गांधीजीके मित्र डॉक्टर प्राणजीवनदास मेहताने अुन्हें दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका सच्चा हाल जानने और गांधीजीके जीवनके बारेमें थोड़ा निजी अनुभव प्राप्त करनेकी गरजसे भेजा था। भाअी कोतवाल फिनिक्स आश्रममें दाखिल हुअे तभीसे अुनकी दृढ़ता और निडरताकी छाप सब पर और गांधीजी पर भी अच्छी पड़ी। भाअी कोतवाल वहां दो तीन महीने रहे परन्तु अुन्होंने अपनी हिन्दुस्तानी पोशाक नहीं छोड़ी। वे विद्याके अुपासक और युनिवर्सिटीके ग्रेज्युअेट होकर भी खूब सादे सरल और मिलनसार थे। फिनिक्सके निवास-कालमें अुन्होंने गांधीजीको भी अपनी ओर आकर्षित किया था।

दो तीन मास रहनेके बाद वे हिन्दुस्तान लौटनेकी तैयारी करने लगे। जिस दिन डरबनसे जहाजमें बैठना था अुससे दो रोज पहले वे फिनिक्ससे चले गये। जाते जाते अुन्होंने गांधीजीसे कहा कि सोमवारको जहाज रवाना होगा अिसलिअे रविवारको दोपहरके चार बजेकी गाड़ीसे वापस आअूंगा और सोमवारको सुबहकी गाड़ीसे डरबन जाकर जहाज पकड़ लूंगा। रविवारके दिन सुबह डरबनके हिन्दू-मंडलने भाअी कोतवालके सम्मानमें समारोह किया और मंडलकी तरफसे अेक सोनेकी घड़ी अुनको भेंट की। समारोह पूरा होने पर वे भोजन करके स्टेशनके लिअे रवाना हुअे। अुस समय बरसात शुरू हो गयी। मूसलधार पानी बरसने लगा। गाड़ी फिनिक्स स्टेशन पर आयी। भाअी कोतवाल गाड़ीसे अुतरे। तीन घंटे तक खूब पानी गिरा। और वहांकी पहाड़ी जमीनमें पड़ा हुआ पानी जोरसे बहने लगा। फिनिक्स स्टेशन पर अुतरकर आश्रमकी तरफ अुन्होंने नजर डाली तो पानी ही पानी दिखाअी दिया। स्टेशन-मास्टरने कहा कि बरसात हलकी पड़ जाय और पानी बह जाय तब तक रुक जाअिये। अुन्होंने यह भी कहा कि बरसात न रुकी तो मैं यहां ठहरनेका आपका अिन्तजाम कर दूंगा। भाअी कोतवालने स्टेशन-मास्टरका आभार माना और सोचा कि अिस तरह कैसे रुक सकता हूं? लगभग तीन बज गये। बरसात बन्द न हो और अिस तरह शाम हो जाय तो

काम कर रहे थे। पांच बजेका अन्दाज होगा। बरसातके बावजूद अधिकसे अधिक चार बजे तक भाओ कोतवालको आ जाना चाहिये था। अिसलिओ अुनकी बाट देख रहे थे। मैंने बापूजीसे पूछा : "बापूजी भाओ कोतवाल अभी तक नहीं आये। क्या कारण होगा? अधिकसे अधिक चार बजे तक तो अुन्हें आ ही जाना चाहिये था। अिसके बजाय पांच बज गये। क्या बरसातके कारण अुन्होंने आनेका विचार छोड़ दिया होगा?" गांधीजी यह सुनकर हमारे पास आये। "कितनी ही वर्षा हो भाओ कोतवाल आये बिना नहीं रह सकते। मरनेका खतरा अुठाकर भी वे आयेंगे।" गांधीजी यह वाक्य कहकर वहीं खड़े रहे। अेक-दो मिनट ही हुअे होंगे कि भाओ कोतवाल दरवाजेमें घुसे। शरीर पर हाथभरकी लंगोट सारे बदन पर कांटोंके घावोंके दोनों पांवों पर जमा हुआ खून और ठंडसे कांपते शरीरसे पास आकर भाओ कोतवालने गांधीजीके चरणोंमें प्रणाम किया। गांधीजी अुन्हें अैसे वेशमें देखकर खिलखिला पड़े। भाओ कोतवालकी पीठ पर अेक धप जमाकर अुन्होंने पूछा : "ये क्या हाल हैं तुम्हारे?"

भाओ कोतवाल बोले : "मैं तो मरता मरता आया हूं। मेरी तीव्र *अिच्छा थी कि कोओी भी खतरा अुठाकर आज आपके दर्शन करने ही* चाहियें। और मरते मरते भी प्रभुने मेरी यह अिच्छा पूरी कर दी!"

१५

गांधीजीके सहोदर अिमामसाहब

दक्षिण अफ्रीकाकी भारतीय प्रजाके अितिहासमें स्वर्गीय अिमामसाहब अब्दुल कादर बावाजीर अेक विरले ही व्यक्ति थे। अिमामसाहब शुद्ध अरब वंशकी संतान थे। अुनके वंशके मूल पुरुष पैगम्बर साहबके साथ रहनेवाले अुनके प्रियसे प्रिय शिष्योंमें से अेक थे। पैगम्बर साहबने जब अजान देनेकी नयी पद्धति अख्तियार की तब अुन्होंने यह काम अिन मूल पुरुषको सौंपा। अिन पुरुषको पैगम्बर साहबने अैसे पवित्र कार्यका आरम्भ करनेकी जिम्मेदारी सौंपी वह पुरुष कितना धार्मिक और पैगम्बर साहबका कितना विश्वासपात्र होगा यह समझा जा सकता है। मदीनेकी जुम्मा मसजिद पर चढ़कर अजान देनेवालेकी आवाज भी कितनी बुलन्द होनी चाहिये? और पवित्र अजान

देनेमें अकेली बुलन्द आवाजसे ही काम नहीं चल सकता था। अुसमें अजानके प्रत्येक शब्दके अुच्चारणकी शुद्धता, भक्तिभाव और हृदयकी गहराअीसे निकलनेवाला भाव होना चाहिये। खुदाके प्रति तीव्र अनुराग और अिस संसारके प्रति तीव्र विराग अुस भावमें प्रकट होना चाहिये। यह आसानीसे समझमें आ सकता है कि अैसे विरले पुरुषको ही पैगम्बर साहब अितना पवित्र और जरूरी काम सौंप सकते थे। स्वर्गीय अिमामसाहब अैसे विरल पुरुषके वंशज थे। अुन मूल पुरुषका अुत्तराधिकार अुनके पुत्रोंको मिला। स्व॰ अिमामसाहबके पिताको भी बम्बईकी जुम्मा मसजिदके अिमामका प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त था। हमारे अिमामसाहब कुछ मित्रोंके साथ दक्षिण अफ्रीका आ पहुंचे। वे बड़े धर्मवृत्तिवाले और अुदार थे। जोहानिसबर्गमें रहे तो वहां भी मसजिदमें नमाजके समय अिमामका काम वे ही करते थे। परन्तु मसजिदके अिमामके कामके बदलेमें वे कुछ लेते न थे। अपना निर्वाह वे किरायेकी घोड़ागाड़ियां रखकर करते थे। अिस धन्धेसे अुन्हें हर महीने तीस पौंडकी आमदनी होती थी। अुन्होंने अेक मलायी स्त्रीसे शादी की थी। अुन्हें यूरोपियन ढंगसे रहनेकी आदत थी और स्वभावके वे अुदार थे अिस-लिअे अुनका खर्च भी बहुत ज्यादा था।

अुनके जोहानिसबर्गके निवास-कालमें गांधीजीसे अुनका परिचय हुआ। कभी कभी कुछ मुवक्किलोंके साथ भी वे गांधीजीके पास आते थे। अुनकी बुद्धि बहुत तीव्र थी। अिसलिअे दूसरेकी बात वे तुरंत समझ जाते थे। साथ ही अपनी बात भी दूसरेको अच्छी तरहसे समझा सकते थे। अिसलिअे कुछ मुवक्किल वकीलोंके सामने अपनी बात प्रभावशाली ढंगसे रखनेके लिअे अुन्हें अपने साथ ले जाया करते थे। अिन प्रसंगोंसे गांधीजीके साथ अुनका परिचय बढ़ा। गांधीजीके गाढ़ परिचयमें आनेसे वे भी दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी राजनीतिक प्रवृत्तिमें दिलचस्पी लेने लगे। जब हिन्दुस्तानियोंने ट्रान्सवाल सरकारके अन्यायी कानूनके खिलाफ सत्याग्रह शुरू किया तब वे भी अुसमें शामिल हुअे। अुनका मौजी जीवन देखकर बहुतोंने अुन्हें लड़ाअीमें शरीक होनेसे रोकनेकी कोशिश की। परन्तु वे तो निश्चय करके सत्याग्रहकी लड़ाअीमें कूद पड़े और सरकारके मेहमान बन गये।

फिर तो अमृतका स्वाद जो चखा सो चखा! अिमामसाहबने अपना सारा जीवन ही बदल डाला। सत्याग्रहकी आखिरी लड़ाअीके बाद वे कुटुम्बके

पासमें जकड़ लिया और छातीसे लगाकर खूब दबाया। अुनके सामने देखकर आंखसे आंख मिला कर गद्गद भावसे गांधीजी बोले "मेरी मांने दोको जन्म दिया। अेक मैं और अेक तुम। हम दोनों सहोदर भाजी हैं।"

अिमामसाहबकी आंखोंमें से टपटप हर्षाश्रु बरसने लगे। सचमुच गांधीजीकी माताने दोको जन्म दिया अेक हिन्दू, दूसरा मुसलमान दोनों सहोदर भाजी हैं। अिस विरले प्रसंग पर हम सबकी आंखोंसे प्रेमाश्रुओंकी धारा बहने लगी। फिरसे कब और कहां बापूजीके दर्शन होंगे अिसी विचारमें हम मग्न हुअे और अपने प्रिय बापूको हमने विदा किया।

अिस प्रसंगके बाद गांधीजीकी मैत्रीमें गुजरीमें भी अिमामसाहब वहीं रहे और प्रेमका सौंपा हुआ काम करते रहे। साबरमती आश्रम तैयार हो जानेके बाद गांधीजीने अुन्हें वहां बुलवा लिया। हिन्दुस्तानमें आनेके बाद वे अन्त तक साबरमती आश्रममें ही रहे। पिछली नमक-सत्याग्रहकी लड़ाजीमें धरासनाके अैतिहासिक प्रसंग पर अुन्होंने बड़ी हिम्मत और निडरता दिखाजी थी। श्री अब्बाससाहबके पकड़े जानेके बाद धरासना कैम्पका कार्य भी अिमामसाहबने संभाला था। स्वयंसेवक नमकके आगर पर धावा बोलें अिससे पहले अुन्होंने सबके साथ प्रार्थना करके जो पवित्र और भक्तिभावपूर्ण वातावरण पैदा किया था अुससे स्वयंसेवकोंके अुत्साहमें अनोखी वृद्धि हुअी थी। जो लोग अुस समय वहां मौजूद थे वे आज भी अुस दिनका स्मरण करके स्वर्गीय अिमामसाहबकी देशभक्ति हिम्मत निडरता और सत्याग्रहमें पूर्ण श्रद्धाकी मुक्तकंठसे प्रशंसा करते हैं।

१६

गांधीजी और धर्मकथायें

धर्मके सम्बन्धमें गांधीजीके विचार सब कोजी जानते हैं। अुनकी दृष्टिसे सब धर्म समान हैं। अिसका अर्थ यह नहीं है कि अुन्हें हिन्दू धर्म छोड़कर दूसरा धर्म स्वीकार कर लेना पसन्द है। अैसा करनेमें प्रत्येक धर्मके प्रति समानताकी भावना कहां रही? अुनका कहना यह है कि सच्चा हिन्दू सच्चा मुसलमान या सच्चा अीसाअी है। अिसी तरह सच्चा मुसलमान या अीसाअी सच्चा हिन्दू है। धर्मोंमें सत्यका जो सर्व-सामान्य तत्त्व है वह

सबके लिये कल्याणकारी है। अुसमें कोअी भेद नहीं होता। भेद तो धर्मके आचारविचारोंसे पैदा हुआ है। सब धर्म जनकल्याणके लिये हैं। सब धर्मोंके संतपुरुष वंदनीय हैं और अुन्होंने तत्त्वतः अेकसा ही अुपदेश दिया है। सब धर्मोंकी पौराणिक कथाओंका सच्चा अर्थ अगर समझ लिया जाय तो वे सब बोधप्रद हैं। गांधीजीने हिन्दू धर्मकी पौराणिक कथाओं और साथ ही दूसरे धर्मोंकी कथाओंको अपने जीवनमें किस तरह अुतारा है यह नीचेके पत्र पढ़नेसे मालूम होगा। हिन्दू धर्ममें जीवनके व्रत पालनेकी कितनी महिमा गाअी गअी है यह भी अिन पत्रोंसे जान पड़ेगा।

अुन्होंने अपने बड़े भाअीको कुटुम्बके विचार और व्यवहारके बारेमें यह पत्र लिखा था

“जो चला गया सो भले गया। सम्बन्धके कारण स्वाभाविक रूपमें यह लिखते हुअे भी मुझे रोना आ रहा है। परन्तु मेरे मनके विचार, जिनका मैं बहुत समयसे सेवन करता रहा हूँ अब बहुत प्रबल हो गये हैं। मैं देख रहा हूँ कि हम सब बड़ी जंजालमें फँस गये हैं। यह हालत जैसी परिवारकी है वैसी ही मैं देशकी भी देखता हूँ। बहुतसे विचारोंमें से अभी जो मेरे मनमें मुख्य हैं अुन्हींको यहां रखता हूँ। झूठी शरम या झूठे मोहसे हम बच्चोंकी जल्दी ब्याह देनेका विचार करते हैं। अिस झंझटमें सैकड़ों रुपये गंवाते हैं और फिर विधवाओंके मुंह देखा करते हैं। शादी करें ही नहीं यह तो मैं कैसे कहूं? परन्तु कोअी हद तो बांधें? बच्चोंकी शादी करके हम अुन्हें दुखी करते हैं। वे संतान पैदा करके मुसीबतमें पड़ जाते हैं। हमारे नियत-धर्मके अनुसार स्त्रीसंग तो सन्तानकी अुत्पत्तिके लिअे ही होना है। अन्य हेतुसे किया गया स्त्रीसंग केवल विषय-वासना है। अैसा हम कुछ भी करते नहीं दीखते। अगर यह बात सही हो तो हम बच्चोंका विवाह करके अुन्हें अपनी तरह विषयी बनाते हैं। अिस प्रकार विषय-वृक्ष बढ़ता ही रहता है। मैं तो अिसे धर्म नहीं कहता। जो मेरे जीमें आ रहा है वही छोटा भाअी होने पर भी आपके जरिये मैं सारे कुटुम्बके सामने रख रहा हूँ। मेरी कुटुम्ब-सेवा भी यही है। अिसमें अपराध हुआ हो तो क्षमा करें। चौदह वर्षके अनुभव और आठ वर्षके व्यवहारके बाद ये विचार समय देखकर आपके सामने मैं रख रहा हूँ।

नीचेके पत्र यह बताते हैं कि गांधीजी धर्मकथाओंका हमारे जीवनके साथ किस तरह मेल बैठाते हैं

प्लेगके बारेमें तुमने मुझे अच्छे सवाल पूछे हैं। राजकोटमें चूहे मरते ही मैंने सबको घर या गांव बदल देनेकी सलाह दी। मेरे ये विचार अुस समय (सं १९५८) के थे। अब मालूम होता है कि अुनमें भूल थी। मेरे ये विचार अब बहुत बदल गये हैं। हेतु सदा अेक ही था — सत्यकी खोज। अब मैं देखता हूं कि जिस तरह घर बदलना आत्माके गुणोंका अज्ञान प्रकट करता है। जिसका अर्थ यह नहीं कि किसी भी समय और कुछ भी हो जाय तो भी घर न बदला जाय। घर जल रहा हो तो खाली करेंगे ही। घरमें सांप बिच्छू अितने निकलें कि अुसमें रहना तत्काल मौतको बुलाना हो तो वैसी हालतमें भी घर बदला जाना चाहिये। हां मेरा कहना यह नहीं है कि वैसा करनेमें भी दोष नहीं है। जिसने आत्माको पूरी तरह पहचान लिया है अनुभव कर लिया है अुसके लिये तो अूपर बताया हुआ ही हो सकता है। यह जंगलमें रहनेवाले सांप-बिच्छुओंको मित्रके समान मानता है। जिस स्थितिको न भोगनेवाले हम लोग सरदी-गरमीसे डर कर घरोंमें रहते हैं जिसीलिये वहां डर पैदा होने पर घर छोड़ भी देते हैं। फिर भी मनमें यह आशा रखें कि हमें जल्दी ही आत्माके दर्शन होंगे। कमसे कम मुझे तो वैसा ही मालूम होता है। प्लेगके समय जो चले गये और अपने पटेलको घर संभालनेको रख गये। वैसा करना अनुचित है। अगर मकान जल रहा होता तब तो पटेल भी चला जाता। जिस अुदाहरण परसे तुम भेद समझ सकते हो।

प्लेग वगैराके भयको मैं मामूली भय मानता हूं। मुसलमान घर नहीं छोड़ते परन्तु अीश्वर पर भरोसा रखकर पड़े रहते हैं। अगर अुसके साथ ही वे जरूरी अुपाय भी करें तो और अच्छा हो। जब तक हम मारकाट करते हैं तब तक प्लेगके जानेकी कम ही संभावना रहती है। जिस जिस गांवमें प्लेग हो वहींसे हम अुसका कारण न ढूंढकर भाग निकलें तो यह हमारी दीनता है। जिस जवाबसे मुझे ही सन्तोष नहीं होता तब तुम्हें तो होगा ही कैसे? तुम और मैं कभी मिल जायं और अनायास प्रश्न पूछे जायं तभी तुम जान सकते हो कि मेरे मनमें क्या बसा हुआ है। मैं अपनी बात पूरी तरह नहीं समझा सकता जिसके दो कारण हैं। अभी मैं अैसे कामोंमें लगा हुआ हूं कि मुझे सोचकर लिखनेकी फुरसत नहीं है। और दूसरा कारण यह है कि मेरे कहने और करनेमें फर्क है। अगर मैं चाहता हूं

धर्म-धुरंधर कहते थे। आर्यसमाजी मंडलोंमें वे काफी प्रसिद्ध थे। अुनकी कटाक्षकी प्रवृत्ति यहांके मीठे वातावरणमें बेसुरी आवाज मालूम होती थी। गांधीजीकी समभावकी दृष्टि अुन्हें पसन्द नहीं थी। अैसे कुछ कारणोंसे अुन्होंने गांधीजीको अेक पत्र लिखा था। अुसके अुत्तरमें गांधीजीने यह पत्र लिखा था

आपका पत्र मिला। पहले आपका अेपो रोडमें दिया हुआ कर्वान सामग्री सम्बन्धी भाषण मैंने पढ़ा। शिक्षा-सम्बन्धी पत्र भी पढ़ा। ये तीनों लेख पढ़कर मुझे अफसोस हुआ। मुझे लिखा हुआ पत्र अिस्लाम धर्मके विषयमें आपके विचार बताता है। और दूसरे दो लेख अुस धर्मके माननेवालोंके प्रति आपका रुख बताते हैं। अिस्लाम धर्म सम्बन्धी आपके विचारोंके बारेमें मैं कुछ नहीं कहता। परन्तु मैं यह जानता हूं कि अिस्लाम धर्म पर आपका कटाक्ष हिन्दू धर्मके रहस्यके विरुद्ध है। कटाक्ष भले करें। पर अुसे करनेमें आपने नीतिविरुद्ध अैसा व्यवहार किया कि वह और भी दुःखद हो गया है। अंग्रेजोंको हिन्दू धर्मके रक्षक मानकर तो आपने बहुत ही दीनता दिखाओ है। अगर मैं अपने धर्मकी रक्षा करनेके लायक नहीं हूं तो पश्चिमी अुसकी क्या रक्षा करेंगे? शिक्षा-सम्बन्धी आपके विचारोंको मैं केवल हिन्दू-मुसलमानोंमें विरोध पैदा करनेवाले मानता हूं। अगर हिन्दू-मुसलमानोंके बीच जितना ज्यादा अन्तर रखनेकी जरूरत हो तब तो हिन्दुस्तानको पराधीन ही रहना चाहिये। अिसमें विरोधियोंको दोष भी कैसे दिया जाय? और जितना अन्तर रखनेसे तो हिन्दू धर्मका लोप ही हो सकता है। सौभाग्यसे हिन्दू धर्मकी स्थिति अचल है। हजारों वर्षोंसे जिसकी रक्षा होती रही है अुसका नाश हमारे धर्मगुरुओंके हाथों भी नहीं हो सकता यह मेरी अटल श्रद्धा है। आपको मैं क्या लिखूं? आपके ज्ञानके लिअे मुझे आदर है। परन्तु आपके व्यवहार पर दुःख होता है।

गांधीजीके अेक भतीजे अफ्रीकामें रहते थे। अुन्हें लिखा हुआ पत्र पढ़ कर हमें यह मालूम हो जाता है कि गांधीजी कैसी समझसे हिन्दू धर्मके आदर्शोंको अपने जीवनमें चरितार्थ करनेकी कोशिश करते हैं। वह पत्र अिस प्रकार है

तुम्हारा पत्र मुझे मिल गया। वहां रहकर भी तुम यहांके आदर्शोंमें बराबर हो सकते हो। मैं देखता हूं कि लड़ाओ वहां भी खूब लड़नी होगी। अैसा करनेके लिअे तुम्हारा चारित्र्य उज्ज्वल बनना चाहिये। तुम हमारे धर्मके मूल-

तत्त्व जानते हो? शायद तुम कहोगे कि मैं तो सारी गीताजी जबानी सुना सकता हूं और अुसका अर्थ भी मुझे आता है। फिर आप मूल तत्त्वोंकी बात क्या पूछते हैं? मूल तत्त्वोंको जाननेका अर्थ मैं यह करता हूं कि अुनके अनुसार आचरण किया जाय। दैवी सम्पद्‌का पहला गुण अभय है। यह श्लोक तुम्हें याद होगा। तुमने अभयपद किसी भी अंशमें प्राप्त किया है? जो करना अुचित है अुसे निडर होकर प्राणोंका खतरा अुठाकर भी तुम कर सकोगे? जब तक यह स्थिति न हो जाय तब तक अुसका सेवन करके अुसे प्राप्त करनेकी कोशिश करो। तब तुम जीवनमें बहुत कुछ कर सकोगे। जिस प्रसंग पर तुम्हें प्रह्लादजी और सुधन्वा वगैराके दृष्टान्त याद करनेकी जरूरत है। यह न मानना कि ये सब दन्तकथायें हैं। अैसे काम करनेवाले भारतके सपूत हो चुके हैं। अिसीलिये हम ये नामधाम जबानी याद करते हैं। आज भी प्रह्लाद और सुधन्वा हरिश्चन्द्र और भरत हिन्दुस्तानमें नहीं हैं अैसा नहीं मानना चाहिये। हम लायक हो जायेंगे तब हमारी अुनसे भेंट भी हो जायगी। वे कोअी बम्बअीके मकानमें मिलने नहीं आयेंगे। पथरीली जमीनमें गेहूंकी फसलकी आशा नहीं रखी जा सकती। बम्बअीमें रहना हो तो मनमें यह मान्यता दृढ़ बना लेना कि बम्बअी नरककी खान है। अुसमें कुछ सार नहीं।

* * *

सुदामाजीका चरित्र मैंने पढ़ लिया था। अुनकी और नरसिंह मेहताकी गरीबीसे स्पर्धा करनेका अुत्साह मुझमें पैदा हुआ था और है। अुस परसे मैंने लिखा है कि   का नाम मुख्य है और सुदामाजीका सखा और अनुचर गौण है। श्रीकृष्णको मैं परमात्माके रूपमें जानता हूं। वे श्रीकृष्ण अर्जुनके साथी सुदामाजीके मित्र और नरसिंह मेहताके रणछोड़ हैं। अुनके बारेमें आलोचना करनेका स्वप्नमें भी मेरा विचार नहीं था। तुम्हारे मनमें मेरे पत्र परसे अैसा भाव जिस हद तक आया अुस हद तक मैं पापी हूं। मेरे हाथसे अिस विषयमें अेक अक्षर भी कैसे लिखा गया यह विचार करके मैं कांप अुठता हूं। तुम्हारा पत्र आया तभीसे मैं अुद्विग्न रहता हूं।

सुदामाजीकी स्त्रीने ताने मारे, अिसे मैं अलंकृत भाषा समझता हूं। परन्तु यह प्रसंग अैसा ही बीता हो तो भी कोअी आश्चर्य या विरोध मालूम नहीं होता। स्त्री तो नहीं कहेगी। सुदामाजीका अिरादा सब कष्ट सहन करनेका

पापी बन जाता है वह न तो जिधरका रहता न उधरका। वह शास्त्रका सहारा खो बैठता है और ज्ञानका आधार उसे मिलता नहीं इसलिये वह गिरता ही है। इसीलिये गेलेशियन्स को सन्त पॉलने कहा था तुम लोग शास्त्रके अनुसार कर्म तो करो ही परन्तु ईसा पर श्रद्धा रखकर उनकी शिक्षाका अनुसरण नहीं करोगे तो शापित रहोगे। यही भावार्थ ओल्ड मेन और न्यू मेन के सम्बन्धमें है। ओल्ड यानी बन्धन। शास्त्रको स्थूल माताकी उपमा दी गयी है और कहा गया है कि वह तो गुलामीके दर्जेकी है इसलिये उसकी सन्तान भी गुलाम ही होती है।

श्रद्धा अर्थात् भक्तिको दिव्य माताकी उपमा दी गयी है और दिव्य माताकी सन्तान देवरूप होती है। यह भावार्थ समझकर आगे-पीछेके वाक्योंका विचार करना और लिखना कि अच्छी तरह समझमें आया या नहीं। पहले कोरिन्थियन के १५वें प्रकरणके ५६वें श्लोकका अर्थ यह है कि पाप ही मौतका डंक है, यानी पापी मनुष्यके लिये ही मौत डंकके रूपमें है। और दूसरे वाक्यका अर्थ यह है कि पुण्यशालीके लिये मृत्यु मोक्षका साधन है और शास्त्रोंके शुष्क ज्ञानमें पापका बल होता है। यह हम पग-पग पर देखते हैं। शास्त्रोंके नाम पर सैकड़ों पाप होते हैं। पांचवें रोमन्स के २० वें श्लोकका अर्थ तो आसान है। उसके सिवा शास्त्र उठा और अपराध बढ़ा। लेकिन जब जब पापका पुंज बढ़ा तब तब ईश्वरकी कृपा भी बढ़ी। यानी जैसे कलिकालके समय भी शुष्क ज्ञानके बन्धनसे छूटनेवाले आदमी मिल गये। उन्होंने भक्तिमार्ग बता कर शास्त्रोंका गूढ़ार्थ सिखाया यह ईश्वरकी कृपा है। जॉन के १५वें प्रकरणके तीसरे श्लोकका अर्थ यह है जो वचन मैंने तुमसे कहे हैं उन वचनोंके अनुसार चलनेसे तुम शुद्ध बनोगे। are का भविष्यत् वाचक समझो और through का अर्थ अनुसार चलनेसे करो।

जीवनमें सभ्यता-सम्बन्धी परिवर्तन करनेसे पहले विचार करना। पर मैं चाहता हूं कि परिवर्तन करनेके बाद उसमें जोंककी तरह चिपटे रहो। मि. केलनबैकके गुणों पर मुग्ध रहो। उनकी कमजोरी दिखाई दे तो उसे समझकर उससे दूर रहो। तुमने जो नया परिवर्तन किया है वह विचार पूर्वक नहीं किया। जितना परिवर्तन मि. केलनबैक करें वे सब करनेको तुम बंधे हुए नहीं हो। तुम्हें स्वतंत्र विचार करना और उस पर दृढ़ रहना

चाहिये। अैसा करनेमें कभी भूल भी होगी। अुसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। निर्मल चित्तसे खूब विचार करनेके बाद तुम्हें मेरे विचारोंका विरोध करनेका भी अधिकार है। और जहां अैसा करनेमें नीति दिखाओ दे वहां विरोध करना तुम्हारा फर्ज है। तुम मोक्षका तत्त्व समझो और मोक्षेच्छु बनो यह मेरी तीव्र अिच्छा है। और यह तब तक कभी नहीं होगा जब तक तुममें स्वतंत्र विचार करनेकी शक्ति और दृढ़ता नहीं आयेगी। अभी तो तुम्हारी हालत किसी लताके जैसी है। लता जिस वृक्ष पर चढ़ती है अुसीका रूप ले लेती है। यह दशा आत्माकी नहीं है। आत्मा तो स्वतंत्र है और मूल रूपमें सर्व-शक्तिमान है।

* * *

काम अेष क्रोध अेष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्धयेनमिह वैरिणम्॥

जब अर्जुनने श्रीकृष्ण भगवानसे पूछा कि मनुष्य अिच्छाके विरुद्ध भी किसलिये पाप करता है, तो भगवानने अुसे अुपरोक्त अुत्तर दिया। जिसका अर्थ यह है कि पापका कारण काम है, क्रोध है; यह रजोगुणसे अुत्पन्न होता है। यह बहुभक्षी है और बहुत पाप करानेवाला है। अुसे जरूर अपना वैरी समझो। यह सिद्धान्त है। अिसलिये जब मि॰ कैलन बैकको गुस्सा आया तब तुम्हें शांत रहना चाहिये था। अपने बड़े-बूढ़े क्रोध करें तब हम नम्र रहें, चुप रहें और जवाब देना पड़े तो कहें कि मैं अपनी भूल सुधारूंगा, अब मुझे माफ कीजिये। अिसमें यह स्वीकार करनेकी बात नहीं है कि तुमने जान-बूझ कर अपराध किया है। फिर जब बड़े लोग शांत हों तब जहां शंका हो वहां विनयपूर्वक अुनसे पूछा जाय। मिस्टर कैलनबैक शांत हो जायं तब तुम अुनसे पूछ सकते हो कि सेब सड़े जा रहे थे अतः अुनमें से कुछ देनेमें क्या दोष हुआ?

डेविडके साम समझने लायक हैं। अुनमें अुन्होंने दुष्टोंका नाश करनेकी जो अिच्छा बताओ है अुसका रहस्य यह है कि अुनसे बुराओ सहन नहीं हो सकती थी। यही विचार रामायणमें है। राक्षसोंका संहार देवताओं और मनुष्योंने भी चाहा है। जय राम रमा की स्तुतिमें भी यही भावना है। अुसका आध्यात्मिक अर्थ यह है कि डेविड (अर्जुन — दैवी संपत्ति) अपने शत्रु (दुर्योधन आदि — आसुरी संपत्ति) का नाश चाहता है। यह तात्त्विक

वृत्ति है और भक्तिमार्गमें यह दशा रहती है। जब ज्ञानदशा मुत्पन्न होती है तब दोनों प्रवृत्तियां बन जाती हैं और सिर्फ शुद्ध भाव — केवल ज्ञान — रहता है। अिस दशाका वर्णन बहुत करके शास्त्रोंमें नहीं आता। लेकिन दोषयुक्त होने पर भी भक्त थे। और साथ में अुनके जो मुद्गार हैं अुनकी भाषा सरल है। वे महान होने पर भी अीश्वरके सामने दीन बनकर रहते हैं और अपनेको तिनकेके बराबर समझते हैं।"

गांधीजीने मेरे अधीर मनको धीरज बंधानेके लिये सन् १९११में जोहानिसबर्गसे भीजेका पत्र लिखिमस भेजा था। अिस पत्रमें अद्भुत वस्तु है। यह बार बार पढ़कर मनन करने योग्य है

तुम्हारा पत्र पढ़ा और फिर पढ़ा। शंकराचार्यने अेक श्लोकमें कहा है कि समुद्रके किनारे बैठ कर घासके तिनके पर पानीकी बूंद रखकर समुद्र अुलीचनेवाले मनुष्यको जितने धैर्य और संयमकी आवश्यकता है अुससे ज्यादा धैर्य और संयमकी आवश्यकता मनको मारनेमें यानी मोक्ष साधनेमें है। तुम तो अुतावले हो गये दीखते हो। मैंने बहुत विचार किया है तो भी मृत्युका डर तो मेरा भी नहीं गया। परन्तु मैं अधीर नहीं होता। प्रयत्नवान रहता हूं — अिसलिये किसी न किसी दिन जरूर मुक्त हो जाअूंगा। प्रयत्न करनेका अेक भी मौका न छोड़ना हमारा कर्तव्य है। परिणाम लाना या लाहना प्रभुके अधीन है। फिर झंझट किस बातकी? माता बालकको दूध पिलाते समय परिणामका विचार नहीं करती। अुसका परिणाम तो आता ही है। मौतका डर मिटाने और मनोविकार नष्ट करनेका प्रयत्न करके प्रफुल्लित रहो तो यह मिट जायगा। नहीं तो अैसा होगा कि अवरका विचार न करनेका विचार करनेसे अुसके विचार मनमें आते ही रहते हैं। हम पापयोनिसे जन्मे हैं पापकर्मसे शरीरधारी बने हैं यह सब मैल तुम पलभरमें कैसे धो सकोगे?

> पुनर आवे तेम तुं रहे,
> जेम तेम करीने हरिने लहे।"*

"यह ज्ञान अखा भक्तने दिया है। तुलसीदासजी कहते हैं कि संयम हो या न हो परन्तु रामनाम जपनेसे सब कुछ सिद्ध हो जाता है। हमें

* तुझे जैसा भी जीवन अनुकूल आवे वैसा जीवन तू बिता। परन्तु किसी भी तरह श्रीहरिको पहचान।

तो यही अर्थ सिद्ध करता है। अिसलिअे यह जप करते रहना। राम कैसे हैं यह मनमें निश्चय कर लेना। ये राम निरंजन हैं निराकार हैं। ये राक्षसी वृत्तियोंके समूह-रूपी रावणका दैवी वृत्तियों रूपी अनेक प्रकारके शस्त्रोंसे संहार करनेवाले हैं। ये शक्तिके लिअे १२ वर्षकी तपस्या करनेवाले हैं। अन्तमें शरीर या मनको अेक क्षण भी निठल्ला न रहने देना। अुत्साहपूर्वक दोनोंको काममें लगानेसे तुम्हारी सब मुसीबतें मिट जायेंगी। वैसे तो भगवान पर भरोसा रखना। मुझ पर भरोसा रखना व्यर्थ है। ये सब भरोसे अूपरकी बातें करनेके बाद काम आयेंगे।

यह याद रखना कि जैसे देव हम चाहते हैं वैसे ही देव हमें मिलते हैं। जब तुलसीदासने रामचंद्रके दर्शन करना चाहा तब श्रीकृष्ण राम बन गये और रुक्मिणीजी सीता बन गयीं। म   की झांकी मिटाना। अुसका कारण खोजना।

* * *

हृदय पवित्र हो तो विकारेन्द्रियके विकारी होनेकी बात नहीं रहती। परन्तु हृदय क्या है? अुसे कब पवित्र मानें? हृदय ही आत्मा है या आत्माका स्थान है। अुसमें पवित्रता मानी कि शुद्ध आत्मज्ञान हुआ और अुसके रहते अिन्द्रिय-विकार संभव ही नहीं है। परन्तु साधारण मान्यता अैसी है कि जब हम हृदयको पवित्र बनानेकी खूब कोशिश करते हैं, तब अुसे पवित्र हुआ मानते हैं। तुम पर मेरी प्रेमवृत्ति है। अिसका अर्थ अितना ही है कि अैसी वृत्ति रखनेकी मैं कोशिश करता हूं। यदि अखंड प्रेमवृत्ति हो तो मैं ज्ञानी हो गया। सो तो है नहीं। जिसके प्रति मेरा सच्चा प्रेम होगा वह मेरे हेतुका या वचनका अनर्थ नहीं करेगा। वह मेरा तिरस्कार तो करेगा ही नहीं। अत अिससे यह साबित होता है कि जब कोअी मनुष्य हमें शत्रु मानता है तब दोष पहले तो हमारा ही है। यह बात हमारे और गोरोंके सम्बन्धमें भी लागू होती है। अिसलिअे सबोंमें हृदयकी पवित्रता अन्तिम स्थिति है। तब तक जैसे जैसे हम पवित्रतामें अूंचे चढ़ेंगे वैसे वैसे हमारे विकार शान्त होते जायेंगे। विकार अिन्द्रियोंमें है ही नहीं। मन अेव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयो । अिन्द्रियां तो मनोविकारोंके प्रगट होनेके स्थान हैं। अुनके द्वारा हम मनोविकारोंको जानते हैं।

जिस प्रकार अिन्द्रियोंका नाश करनेसे मनोविकार मिट नहीं जाते। हिजड़े लोगोंमें विकार पूरी तरह पाये जाते हैं। जन्मसे नपुंसक पुरुषोंमें

अितने अधिक विकार होते हैं कि वे बहुत बुरे काम करते देखे गये हैं। मेरी गंधशक्ति मन्द है फिर भी सुगन्ध लेनेको जी चाहता है और जब कोअी गुलाब वगैराकी सुगन्धकी बात करता है, तब मन गधेकी तरह अुस तरफ चला जाता है और मैं बरबस् अुसे वशमें रख पाता हूं। जब मन पर काबू न होने पर भी विचारधारा तीव्र होती है तब सुना गया है कि मनुष्य अिन्द्रियको काट डालते हैं। संभव है अुस समय यही अुनका कर्तव्य हो। मान लो कि मेरा मन विचलित होता है और मैं अपनी बहन पर कुदृष्टि डालता हूं। मुझे कामदेव चला रहा है परन्तु मैं सिर्फ मूढ़ नहीं बन गया हूं। अैसे समय अगर और कोअी अुपाय न हो तो अैसा लगता है कि अिन्द्रिय-च्छेदन कर डालना ही मेरा पवित्र कर्तव्य है। धीरे धीरे अूपर अुठनेवाले पुरुषोंका यह हाल नहीं होता। जिसे तीव्र वैराग्य हो गया हो परन्तु जिसका पूर्व आचरण ठीक न रहा हो अुसका यह हाल जरूर हो सकता है। अैसे पुरुषका विकार पैदा न हो और अिन्द्रिय विचलित न हो अिसके लिये तात्कालिक अुपाय (अिलाज) चाहना जादू द्वारा फलकी अिच्छा करनेके बराबर है। यह काम बहुत ही धीरजसे होगा। जैसे जादूका काम सिर्फ देखनेका होता है वैसे ही तात्कालिक होनेवाली मनकी शुद्धिके बारेमें समझो। हां अितना होता है मन पवित्र होनेके लिये तैयार हो गया होता है और सिर्फ संत-समागमरूपी पारसमणिको ढूंढ़ता है। अुसके मिलने पर अुसे अपनी पवित्रताके अेकाअेक दर्शन हो जाते हैं और अपवित्रता सपनेकी-सी बात मालूम होने लगती है। यह कोअी तात्कालिक दुआ नहीं माना जायगा। बल्कि साधारण थोड़ेसे थोड़े समयमें होनेवाला और शुद्ध रूप तक तात्कालिक अिलाज माना जायगा।

अेकान्त-सेवन सत्संग वृद्धि, सत्कीर्तन सद्वाचन निरंतर शरीर-श्रम, अल्पाहार, फलाहार, अल्पनिद्रा भोगविलासका त्याग — जो अितना कर सकता है अुसे मनोराज्य हस्तामलकवत् प्राप्त हो जाता है। अितना किया जाय और दूसरी चीजोंका ध्यान रखा जाय। जब जब मनोविकार अुत्पन्न हों तब तब अुपवासादि व्रत पाले जायं।

* * *

गांधीजीके हिन्दुस्तान आनेसे पहले फिनिक्स आश्रमके विद्यार्थियोंको लेकर स्व० मगनलाल गांधी यहां आ गये थे और फिनिक्स आश्रमके नियमानु-

सार कोचरब—शान्तिनिकेतनमें रहते थे। गांधीजी निर्णय होकर सन् १९१५ के फरवरी मासमें देश आये और थोड़े दिन यहां ठहरकर रंगून गये। वहांसे अुन्होंने भाओ श्री मगनलाल गांधीके नाम अेक पत्र लिख कर बताया था कि हमारे आश्रमके विद्यार्थियों और आश्रममें रहनेवालोंके व्यवहारमें कैसा नियमन रखा जाय। वह पत्र नीचे दिया जाता है। अुसे पढ़कर हमें अिस बातकी कुछ कल्पना होगी कि श्री रामायणकी कथाको हम अपने जीवनमें किस तरह चरितार्थ करें

"अहिंसाके बारेमें तुम्हारा खयाल ठीक है। दया अक्रोध अमान आदि अहिंसाके अंग हैं। अहिंसा-धर्म सत्याग्रहकी बुनियाद है। यह बहुत स्पष्ट रूपमें कलकत्तेमें मैंने देखा और वहीं विचार किया कि अिसे हमें व्रतके रूपमें आश्रम-व्रतोंमें दाखिल करना चाहिये। अिस विचारमें से यह निकल आया कि हमें सभी यम पालने चाहिये और व्रतके रूपमें पालते हुअे हम अुनको सूक्ष्म स्थितिको समझ सकते हैं। यहां सैकड़ों लोगोंके साथ मैं जो बातें करता हूं अुनमें सारे धर्मोंको सर्वोच्च स्थान देता हूं।

> सियराम-प्रेमपियूष-पूरन होत जनम न भरतको।
> मुनिमन-अगम जम नियम सम दम विषम व्रत आचरत को।।

"यह छंद मुझे अिस अवसर पर कलकत्तेमें याद आ गया और अुसका मैंने खूब मनन किया। मैं स्पष्ट देख सकता हूं कि अिन व्रतोंके पालनमें ही हिन्दुस्तानका और हमारा मोक्ष समाया हुआ है।

अपरिग्रह-व्रतके पालनमें ध्यानमें रखनेकी मुख्य बात यह है कि अनावश्यक कुछ भी संग्रह न किया जाय। खेतीके कामके लिअे बैल न हों तो बैलोंका और अुनके लिअे जरूरी सामानका संग्रह करेंगे। दुष्काल्का डर यहां हमेशा रहता होगा वहां अनाज जमा करेंगे। परन्तु यह सवाल हमेशा पूछेंगे कि बैलोंकी या अनाजकी जरूरत है या नहीं। सभी धर्मोंको हमें विचार पूर्वक पालना है। जिसलिअे अुनमें दिनोंदिन दृढ़ता बढ़ती जायगी और हमें नये नये त्याग सूझने लगेंगे। त्यागकी कोओ हद ही नहीं है। ज्यों ज्यों हमारा त्याग बढ़ेगा त्यों त्यों आत्माके दर्शन हम अधिक करेंगे। मनकी गति परिग्रह छोड़नेकी तरफ होगी और शरीरकी शक्तिके अनुसार हम त्याग करेंगे तो अपरिग्रह-व्रतका पालन हुआ माना जायगा।

अिसी तरह अस्तेयके बारेमें। अपरिग्रहमें अनावश्यक वस्तुओंके संग्रहका समावेश होता है। अस्तेयमें वैसी चीजोंके अुपयोगका समावेश होता है। मेरा काम अेक कुर्तेसे शरीर ढंककर चल जाये और फिर भी मैं दो पहनूं, तो मैं दूसरेकी चोरी करता हूं। क्योंकि जिस कुर्तेका अुपयोग दूसरे कर सकते हों वह मेरा नहीं कहला सकता। अगर मैं पांच केलोंसे गुजर कर सकता हूं तो छठा केला खाना मेरे लिये चोरी है। मान लो हमने सबके लिये जरूरी समझ कर ५ नीबुओंका परिग्रह रखा। मुझे सिर्फ दो नीबूकी जरूरत है। परन्तु ज्यादा है अिसलिये यदि मैं तीसरा ले लेता हूं तो वह चोरी हुआी।

अिस प्रकार अधिकके अुपयोगमें अहिंसा-व्रतका भी भंग होता है। अगर अस्तेयकी भावनासे अुपयोगको घटायें तो हममें अुदारता बढ़ेगी। अगर अहिंसाकी भावनासे अुपयोगको घटायें तो दयाकी भावना बढ़ेगी। प्राणीमात्र, जीवमात्रको हम अभयदान दें तो अिसमें दया-प्रेमका चिन्तन है। जो यह चिन्तन करेगा अुसका विरोध सपनेमें भी कोआी जीव नहीं करेगा यह शास्त्रोंका वाक्य निश्चय है और मेरा अनुभव है।

अिन सब व्रतोंका मूल सत्य है। मनको धोखा देकर चोरीको अचोरी माना जा सकता है और मनको धोखा देकर परिग्रहको अपरिग्रह माना जा सकता है। अिसलिये बहुत सूक्ष्म विचारसे हम पग-पग पर सत्यको प्रकट कर सकते हैं। जब किसी चीजके बारेमें यह शंका हो कि अुसका संग्रह करें या न करें, तब संग्रह न करना ही सीधा नियम है। त्यागमें सत्यका भंग नहीं है। जहां बोलनेके बारेमें शंका हो वहां मौन रहना ही सत्यव्रतीका कर्तव्य है।

मैं यह चाहता हूं कि तुम सब जो व्रत स्वतंत्र विचारसे लिया जा सकता है अुसे ही लो। अैसेकी जरूरत तो मुझे हमेशा दीखती ही है। परन्तु जब तुममें से प्रत्येकको व्रत लेना जरूरी मालूम हो तभी लेना चाहिये और जितने व्रत लेने हों अुतने ही लेने चाहिये।

रामचन्द्रजी कितने ही प्रतापी हो गये हों कितने ही पराक्रम करके अुन्होंने लाखों राक्षसोंका नाश किया हो परन्तु अुनके पीछे यदि लक्ष्मण और भरत जैसे भक्त न होते तो रामको आज कोआी न जानता। तात्पर्य यह कि रामचन्द्रजीमें केवल असाधारण क्षात्रतेज ही होता तो अुनका माहात्म्य थोड़े समय तक रहकर नष्ट हो जाता। अुनकी तरह राक्षसोंका संहार

करनेवाले तो अनेक पराक्रमी हो गये हैं। अुनमें से किसीकी कीर्ति और महिमा घर घर नहीं गायी जाती। परन्तु रामचन्द्रजीमें कोअी अनोखा तेज था। अुस तेजको लक्ष्मणमें और भरतमें वे अुतार सके अिसी कारणसे लक्ष्मण तथा भरत जैसे महातपस्वी निकले। और अिस तपका माहात्म्य गाते हुअे तुलसीदासजीने कहा कि जो तप महामुनियोंके लिये भी अगम्य है अुस तपके करनेवाले भरतजी न जन्मे होते तो मेरे जैसे मूढ़को रामके सन्मुख कौन रखता? अिसका अर्थ यह हुआ कि लक्ष्मण और भरतजी मानो रामके यशके अर्थात् अुनकी दिशाके द्वारपाल हों। और सिर्फ तपमें ही सब कुछ नहीं समा जाता। क्योंकि चौदह वर्ष तक आहार-निद्राका त्याग तो जैसे लक्ष्मणने किया था वैसे ही अिन्द्रजितने भी किया था। परन्तु तपका जो हार्द रामचन्द्रजीसे लक्ष्मणको प्राप्त हुआ था वह अिन्द्रजितको नहीं हुआ था। अितना ही नहीं अुसकी वृत्ति तपके प्रभावका दुरुपयोग करनेकी थी। अिसलिअे वह राक्षस कहलाया और भक्त तथा मुमुक्षु तपस्वी लक्ष्मणके हाथसे अुसकी पराजय हुअी। अिसी तरह गुरुसेवाका आदर्श कितना ही अूंचा हो परन्तु यदि कोअी अुस आदर्शको अमलमें लानेवाला पैदा नहीं होगा तो वह आदर्श जमानेके गहरे अंधकारमें पड़ा रहेगा। अिसके विपरीत यदि अुस आदर्श पर चलनेवाले निकल आयेंगे तो वह अपना प्रकाश अनेक गुना फैला सकेगा। तप आदर्शको व्यवहारमें लानेकी सीढ़ी है। अिसलिअे यह समझने लायक बात है कि वह तप — तितिक्षा — जीवनमें अुतारना कितना आवश्यक है।

गाधीजीकी साधना

तीसरा भाग

१

विश्वासघात !

हम पहले जान चुके हैं कि दक्षिण अफ्रीकाकी सत्याग्रहकी लड़ाअीमें मुख्यतः धार्मिक तत्त्व था। गांधीजीने यह लड़ाअी अपनी राजनीतिक विचारसरणीके आधार पर नहीं छेड़ी थी परन्तु धार्मिक विचारसरणीके आधार पर छेड़ी थी। अिसलिअे अिस बातकी खास सावधानी रखी गअी थी कि धार्मिक विचारोंसे अंकित हुअी अिस लड़ाअीके किसी भी अंगमें सत्याग्रहके सिद्धान्तोंके खिलाफ आचरण न हो। सन् १९०७में जनरल स्मट्सने गांधीजीको धोखा दिया था। गांधीजी मानते हैं कि “अैसा व्यवहार करनेमें जनरल स्मट्सका अिरादा जान-बूझकर हिन्दुस्तानियोंको धोखा देनेका नहीं था। अितनी नीचता जनरल स्मट्समें नहीं है। गोरोंकी प्रधानता और अुन्हींके हितोंकी रक्षा करना वे अपना फर्ज समझते हैं और अैसा करनेमें हिन्दुस्तानियोंके साथ अन्याय करनेकी और जरूरत पड़ने पर अुन्हें सता सता कर निकाल देनेकी नीति अुनकी सरकारने अख्तियार की। यह रीति नीति सार्वदेशिक नीतिके या मानव-प्रेमके सिद्धान्तकी दृष्टिसे घटिया दर्जेकी कही जायगी। परन्तु साधारण नैतिक सिद्धान्तकी दृष्टिसे अुसे विश्वासघात या धोखा देना नहीं कहा जा सकता। यह तो गांधीजीने अपने प्रतिपक्षीके प्रति अुदारताकी दृष्टिसे अपना विचार बताया। परन्तु अिस समाजमें जनरल स्मट्स अेक विशाल देशका कारबार चलाते थे अुस पर अुनके जीवनका क्या असर पड़ा था अिसकी जांच करनेसे अैसा जान पड़ता है कि समाज पर तो यही असर पड़ा था कि जनरल स्मट्सने सन् १९०७में हिन्दुस्तानियोंको धोखा दिया। अगर दो पक्षोंमें झगड़ा हो और अुनके बीच हुअे समझौतेके अर्थके बारेमें शंका पैदा हो तो जो पक्ष दूसरे पक्षसे अुचित न्यायकी मांग करे अुसका समझा हुआ अर्थ ही स्वीकार करना चाहिये। अर्थात् किसी सरकार और अुसकी प्रजाके बीच हुअे समझौतेके अर्थके बारेमें बादमें गलतफहमी पैदा हो तो प्रजापक्षने समझौतेका जो अर्थ समझौतेके समय समझा हो वही अर्थ माना जाना चाहिये। यही अुचित न्याय माना जायगा। परन्तु सरकारी पक्ष अपनी हुकूमतके नशेमें यह अर्थ स्वीकार न करे और अपने हितमें तथा शासकदलके हितमें ही अुसका अर्थ निकाले तो अुसे विश्वासघातके सिवा और क्या कहा जा सकता है?

(१) हिन्दू, मुसलमान और पारसी धर्मके अनुसार हुअे विवाह नाजायज माने जायेंगे क्योंकि वे ब्रिटिश अदालतोंमें दर्ज नहीं कराये गये हैं और अुन विवाहों पर सरकारकी मुहर नहीं लगी है। अिस तरह तीनों धर्मोंका अपमान होगा।

(२) जो जो हिन्दुस्तानी विवाह हुअे हैं और आगे होंगे वे सभी गैरकानूनी माने जायेंगे। अर्थात् हिन्दुस्तानी स्त्रियां अपने पतियोंकी विवाहिता पत्नी न मानी जाकर रखैल समझी जायेंगी। अिस प्रकार हिन्दुस्तानी स्त्रीत्वका भी अपमान होगा।

(३) हिन्दुस्तानी स्त्री नाजायज मानी जाय तो अुससे पैदा हुअी संतान भी नाजायज मानी जायगी। अिस प्रकार अैसी स्त्रियां या अुनसे अुत्पन्न होनेवाली संतान दक्षिण अफ्रीकाके बाकायदा निवासी नहीं माने जायेंगे। अतः अुन्हें दक्षिण अफ्रीकासे निष्कासित किया जायगा।

(४) जब सन्तान नाजायज मानी जायगी तो अुस संतानके पिताकी जायदादका कानूनी वारिस कौन होगा? कोअी नहीं।

(५) जब किसी आदमीका कोअी बाकायदा वारिस न हो तब अुस आदमीके मरनेके बाद अुसकी संपत्ति भी लावारिस मानी जायगी।

(६) अंग्रेजी कानूनके अनुसार लावारिस संपत्तिकी मालिक सरकार मानी जायगी।

यह अन्यायकी हद हो गयी। अिस अेक ही तीरसे सरकारने अनेक चिड़ियोंका शिकार करना चाहा। अुसने अैसी अधम चाल चली कि दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानी आबादीका नामोनिशान न रह जाय अितना ही नहीं अुसकी करोड़ोंकी जायदाद भी हड़प कर ली जाय।

अितनेमें ही हिन्दुस्तानियों पर अेक और बम गिरा। गिरमिटसे स्वतंत्र होनेवाले हिन्दुस्तानियों परसे तीन पौंडका मह-कर अुठा लेनेका मंत्रियोंने भी गोखलेको वचन दिया था। अुसके अनुसार अिस पार्लियामेण्टमें पेश करनेके लिअे हिन्दुस्तानी नेताओंने दबाव डाला तो यूनियन सरकारने बताया कि चूंकि तीन पौंडका कर अुठा देनेके खिलाफ नेटालके गोरोंका सख्त विरोध है अिसलिअे सरकार पार्लियामेण्टमें अैसा बिल पेश करके नेटालके गोरोंको नाराज करनेके लिअे तैयार नहीं है। अिसके अलावा गोखलेजीको दिलाये हुअे विश्वासकी बात गलत है। अैसा कोअी भी आश्वासन मंत्रियोंने गोखलेजीको अधिकृत रूपमें नहीं दिया। अिस पर गांधीजीने भी गोखलेसे यह स्पष्टी-

फिर भी गांधीजीने हिन्दुस्तानियोंके सामने जितना अूंचा नैतिक आदर्श रख दिया कि अुस आदर्श तक पहुंच सकनेमें असमर्थ होने पर भी हिन्दुस्तानी अुसका अनादर नहीं कर सके। और बादमें भी जिस लड़ाओमें गांधीजीने जितनी नैतिक सूक्ष्मता बरती कि अुसे सार्वजनिक जीवनकी बुनियाद माना जा सकता है। अुस नीतिके गहरे संस्कार जनताके हृदयमें जमते रहे। सत्याग्रहकी लड़ाओमें गांधीजीने पग पग पर मर्यादायें रखी थी। अुन मर्यादाओंसे लड़ाओ पूर्ण शुद्ध रही। ट्रान्सवालके हिन्दुस्तानी अपने सामाजिक हकोंके लिओ लड़ रहे थे अुसमें दूसरे पड़ोसी प्रान्तोंके हिन्दुस्तानी निवासी भी अुनकी मदद करनेको अुत्सुक थे। फिर भी पड़ोसी प्रान्तोंके हिन्दुस्तानियोंको ऐसा करनेसे मना कर दिया गया था। जिसका अेक ही अुद्देश्य था कि अेक प्रान्तकी सरकारके अन्यायके विरुद्ध लड़ी जानेवाली लड़ाओमें दूसरे प्रान्तोंके हिन्दुस्तानियोंको शामिल करके सरकारको घबरा देना और अुससे लाभ अुठाना गांधीजीको ठीक नहीं मालूम हुआ। और जिन प्रश्नोंके साथ सम्बन्धित लड़ाओ थी हिन्दुस्तानी गिरमिटिया मजदूरोंका हित-सम्बन्ध नहीं था अुनमें अुन्हें शामिल होनेको प्रेरित करना या फुसलाना और अुन मजदूरोंके मालिकोंको कठिनाओमें डालकर सरकार पर परोक्ष दबाव डालना और विजय प्राप्त करना भी सत्याग्रहकी दृष्टिसे गांधीजीको अनुचित मालूम हुआ। जिसके सिवा जिस लड़ाओमें हिन्दुस्तानी नौजवान और बूढ़े शामिल हुओ अुसमें अुनकी पत्नियोंमें से काफी स्त्रियां भी शरीक होनेको तैयार थीं। परन्तु लड़ाओमें स्त्रियोंको शामिल करके लड़ाकी सरकारको बदनाम कराना बेअिज्जतीसे बचनेके लिओ सरकारसे समझौता करनेकी स्थितिमें डाल देना भी गांधीजीको अनुचित प्रतीत हुआ।

अिस प्रकार गांधीजीने सत्याग्रहकी लड़ाओमें अनेक नैतिक सूक्ष्मताओंका पालन किया। गांधीजीने जिस लड़ाओमें विपक्षीकी किसी भी कठिनाओका अनुचित लाभ अुठानेकी कोशिश नहीं की। ऐसा संयम रखना किसी भी प्रजाके लिओ मुश्किल है। अनेक कठिनाअियोंमें मुट्ठीभर सत्याग्रहियोंके लिओ प्राणोंको खतरेमें डालकर सत्यकी विजय होने तक जूझना और टिके रहना आसान है परन्तु प्रतिपक्षी कठिनाओमें हो तब अपनी बात आगे रखकर अुसके विरुद्ध लड़कर तथा अुसकी कठिनाओमें वृद्धि करनेकी धमकी देकर अपना काम बना लेनेकी नीतिसे बच जाना बहुत कठिन है। लड़ाओ तो ... थी। परन्तु अुसके बाद सन् १९११

के अप्रैल मासमें यूनियन पार्लियामेण्टमें न्यू मिमिग्रेशन बिल सरकारने पेश कर दिया। यह बिल हिन्दुस्तानी जातिके लिजे बिलकुल असंतोषजनक था। अुसमें हिन्दुस्तानियोंकी अुस समय तककी सत्याग्रहकी लड़ामीके प्रश्नका फैसला नहीं हुआ था। रंगभेद कायम रखा गया था। जिस मौके पर भी हिन्दुस्तानियोंमें जिसकी खूब चर्चा हुआी। ट्रान्सवालमें तो मभी महीनेकी तीसरी तारीखको हिन्दुस्तानियोंने विराट सभा करके सत्याग्रहका प्रस्ताव पास किया।

जितनेमें अेक और चौंकानेवाली घटना हुआी। केपटाअुनके अेक मुसलमान व्यापारीकी पत्नी हिन्दुस्तानसे केपटाअुन आमी। मिमिग्रेशन-विभागने अुस महिलाको अुतरनेकी अधिकारिणी न मानकर अुतरने नहीं दिया। अुस महिलाके पतिने मिमिग्रेशन अफसरके मिस निश्चयके खिलाफ केपटाअुनके हामीकोर्टमें अपील की। हामीकोर्टके जज मिस्टर सर्लेने यह फैसला दिया कि जो आदमी मिस महिलाका पति होनेकी बात कहता है वह केपकॉलोनीका निवासी होनेका हक रखता है। मिसलिमे अुसकी पत्नीको भी यह हक होना ही चाहिये। परन्तु जिसे वह अपनी विवाहिता स्त्री कहता है वह वास्तवमें अुसकी विवाहिता स्त्री ही है मैसा कोमी कानूनी सबूत वह हिन्दुस्तानी नहीं दे सका। मिसलिमे अदालत मैसा निर्णय नहीं कर सकती कि यह महिला अुस हकदार हिन्दुस्तानीकी जायज पत्नी है। और जिसलिमे अुस स्त्रीको केपटाअुनकी हकदार निवासिनी नहीं ठहराया जा सकता। यह फैसला देकर हामीकोर्टने अुस महिलाको वापस भेज दिया। यह फैसला हिन्दुस्तानियोंके लिये भयंकर माना गया। यह फैसला कायम रहता तो आगेका अुसका प्रमाण सभी फैसलोंमें किया जाना स्वाभाविक था। मितना ही नहीं जिस फैसलेको सरकार स्पष्ट कानूनका रूप भी दे सकती थी। मैसा होने पर दक्षिण अफ्रीकासे हिन्दुस्तानियोंकी जड़ अपनी ही अुखड़ जाती। अुनकी करोड़ोंकी संपत्ति नष्ट हो जाती। मिसका अर्थ यह होता कि अपने अपने धर्मके अनुसार हुमे विवाहोंको सरकारी अदालतोंमें दर्ज कराना चाहिये। हिन्दुस्तानियोंमें मैसा कोमी रिवाज नहीं है। विवाह अुनमें अेक सामाजिक कर्तव्य माना जाता है और धार्मिक विधिसे किया जाता है। जिस प्रकार हिन्दुस्तानी लोग सामाजिक और धार्मिक संस्थाओंसे राज्यसंस्थाको ज्यादा महत्त्व नहीं देते। और अदालतोंमें विवाह दर्ज करानेकी प्रथा हिन्दुओं मुसलमानों या पारसियों किसीमें भी नहीं है। मिसलिमे अूपरके फैसलेका सीधा अर्थ यह हुआ कि

(१) हिन्दू, मुसलमान और पारसी धर्मके अनुसार हुअे विवाह नाजायज़ माने जायेंगे क्योंकि वे ब्रिटिश अदालतोंमें दर्ज नहीं कराये गये हैं और अुन विवाहों पर सरकारकी मुहर नहीं लगी है। अिस तरह तीनों धर्मोंका अपमान होगा।

(२) जो जो हिन्दुस्तानी विवाह हुअे हैं और आगे होंगे वे सभी गैरकानूनी माने जायेंगे। अर्थात् हिन्दुस्तानी स्त्रियां अपने पतियोंकी विवाहिता पत्नी न मानी जाकर रखैल समझी जायेंगी। अिस प्रकार हिन्दुस्तानी स्त्रीत्वका भी अपमान होगा।

(३) हिन्दुस्तानी स्त्री नाजायज़ मानी जाय तो अुससे पैदा हुअी संतान भी नाजायज़ मानी जायगी। अिस प्रकार वैसी स्त्रियां या अुनसे अुत्पन्न होनेवाली संतान दक्षिण अफ्रीकाके बाकायदा निवासी नहीं माने जायेंगे। अतः अुन्हें दक्षिण अफ्रीकासे निकाल दिया जायगा।

(४) जब सन्तान नाजायज़ मानी जायगी तो अुस संतानके पिताकी जायदादका कानूनी वारिस कौन होगा? कोअी नहीं।

(५) जब किसी आदमीका कोअी बाकायदा वारिस न हो तब अुस आदमीके मरनेके बाद अुसकी संपत्ति भी लावारिस मानी जायगी।

(६) अंग्रेजी कानूनके अनुसार लावारिस संपत्तिकी मालिक सरकार मानी जायगी।

बस अन्यायकी हद हो गयी। अिस अेक ही तीरसे सरकारने अनेक चिड़ियोंका शिकार करना चाहा। अुसने अैसी कपट चाल चली कि दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानी आबादीका नामोनिशान न रह जाय अितना ही नहीं अुसकी करोड़ोंकी जायदाद भी हड़प कर ली जाय।

अितनेमें ही हिन्दुस्तानियों पर अेक और बम गिरा। गिरमिटसे स्वतंत्र होनेवाले हिन्दुस्तानियों परसे तीन पौण्डका मुण्ड-कर अुठा लेनेका मंत्रियोंने भी गोखलेको वचन दिया था। अुसके अनुसार बिल पार्लियामेण्टमें पेश करनेके लिअे हिन्दुस्तानी नेताओंने दबाव डाला तो यूनियन सरकारने बताया कि चूंकि तीन पौंडका कर अुठा देनेके खिलाफ नेटालके गोरोंका सख्त विरोध है, अिसलिअे सरकार पार्लियामेण्टमें वैसा बिल पेश करके नेटालके गोरोंको नाराज़ करनेके लिअे तैयार नहीं है। अिसके अलावा गोखलेजीको दिलाये हुअे विश्वासकी बात गलत है। अैसा कोअी भी आश्वासन मंत्रियोंने गोखलेजीको अधिकृत रूपमें नहीं दिया। अिस पर गांधीजीने भी गोखलेसे यह स्पष्टी-

करण समझ लिया कि मंत्रियोंने अुनके साथ हुअी मुलाकातमें यह विश्वासपूर्ण आश्वासन दिया है कि पार्लियामेण्टकी अगली बैठकमें तीन पौंडका कर अुठा देनेका बिल पेश करके अुसे अुठा लिया जायगा। परन्तु मंत्रियोंको सच पूछो तो क्या परवाह थी? श्री गोखलेने मंत्रियोंकी मुलाकातके बाद दक्षिण अफ्रीकामें ही अनेक सार्वजनिक सभाओंमें और प्रसिद्ध गोरोंकी मुलाकातोंमें कअी बार जाहिर कर दिया था कि मंत्रियोंने तीन पौंडका कर अुठा लेनेका मुझे आश्वासन दिया है। परन्तु अुस समय अिस बातका किसी भी मंत्रीकी तरफसे जरा भी विरोध नहीं किया गया था। अिस सम्बन्धमें बहुत अूहापोह हुआ। सरकारने अिस प्रश्नको लड़ाअीमें डालनेकी चाल चलना शुरू किया और अेक बिल पेश किया। अुसमें अेक खास अुम्रसे बड़ी स्त्रियों परसे तीन पौंडका कर अुठा देनेकी सूचना की। अुस समय मि॰ मार्टिनर और मि॰ मरीमैन वगैरा सहृदय सदस्योंने अुसका सख्त विरोध किया और यह अिस हेतुसे कि तीन पौंडके करवाले जिसका जितना भाग सुधार दिया जायगा तो फिर भविष्यमें यह कर पूरी तरह अुठाया नहीं जायगा। अिससे अुन्होंने तो अैसा रवैया अख्तियार किया कि तीन पौंडका कर ही भयंकर है अिसलिअे वह बिलकुल अुठ जाना चाहिये नहीं तो भले जैसा है वैसा ही रहे। अिस प्रकार सरकारका यह प्रपंच नहीं चला और तीन पौंडका कर लगा ही रहा।

श्री गोखलेके प्रति यानी समस्त हिन्दुस्तानी प्रजाके प्रति यूनियन सरकारके अिस विश्वासघातसे हिन्दुस्तानियोंके दिलोंमें भारी खलबली मच गयी। अगर श्री गोखलेका और अिसलिअे सारे हिन्दुस्तानका घोर अपमान हिन्दुस्तानी लोग सहन कर लेते तो वे निर्वीर्य और निष्प्राण माने जाते कायर और निकम्मे समझे जाते।

सरकारकी ये भूलें सुधारने और हिन्दुस्तानियोंको सत्याग्रहकी लड़ाअीमें पड़नेको बाध्य न करनेके लिअे गांधीजीने सरकारसे बहुत कुछ कहा, अनेक सूचनाअें दीं और समझौतेके प्रयत्न किये परन्तु सरकारने अुस पर कोअी ध्यान नहीं दिया। अिसलिअे अिस विषयमें अप्रैल महीनेकी ३ तारीखमें यूनियन सरकारके मंत्री मि॰ फिशरके साथ गांधीजीने जो पत्र-व्यवहार किया वह सभी मार्चकी २८ तारीखको प्रकाशित कर दिया गया। अिससे यूनियन सरकारका विश्वास-भंग और अुसके विरुद्ध हिन्दुस्तानियोंकी तरफसे शुरू होनेवाली सत्याग्रहकी लड़ाअीकी आवश्यकता सबको मालूम हो गयी।

५

आखिरी लड़ाओकी तैयारी

सरकारने हिन्दुस्तानियोंको केवल धोखा ही नहीं दिया बल्कि भगवानसे डरकर अपना गुजर चलानेके लिअे अथक मेहनत करनेवाले हिन्दुस्तानियोंको बमिन अधिकारसे अत्यन्त क्रूरतासे कुचल फेंकनेकी बातें सोचीं। अिस बुरे व्यवहारके विरुद्ध हिन्दुस्तानियोंने अत्यंत सच्चा और शुद्ध व्यवहार करके दिखाया। आज तक जो जो समझौते हुअे अुनमें जिस कारणके लिअे लड़ाओ छेड़ी गयी थी अुस पर सत्याग्रही मजबूतीके साथ कायम रहे। मौकेका फायदा अुठाकर न तो अुन्होंने अपनी मांगको थोड़ा बढ़ाया और न अुसे थोड़ा कम किया। फिर भी नीतिके सिद्धान्तोंका ढोंग करने वाली सरकारने अैसे अनेक आरोप लड़ाओके दिनोंमें हिन्दुस्तानियों पर लगाये। जिसकी लड़ाओमें तीन पौंडका कर अुठा देनेकी और हिन्दुस्तानी विवाहोंको कायम करार देनेकी मांगें जोड़ी गयीं तब सचमुच (?) जनरल स्मट्सने यही आरोप हिन्दुस्तानियों पर लगाया। सत्याग्रहकी लड़ाओ हो रही हो और अुसके बीचमें सरकार नये नये कारण अुपस्थित करे, तो वे कारण लड़ाओमें अवश्य जोड़े जा सकते हैं और अैसा करना सत्याग्रहीके लिअे जरा भी अनुचित नहीं माना जायगा। अैसा न करें तो प्रतिपक्षी चालाकी करके थोड़ा पकड़ा कर बढ़ा ले जाय और सत्याग्रहियोंको मूर्ख बनाये साथ ही लड़ाओका अन्त भी न आवे। जनरल स्मट्स तो कानून और वकीली दोनोंमें बड़े माहिर ठहरे। वे नीति और सत्याग्रहके सिद्धान्तोंकी सूक्ष्मता अच्छी तरह समझते थे, अिसलिअे हिन्दुस्तानी निरे पोथी-पंडित होते तो अपने ही सिद्धान्तोंमें पूरी तरह फंस जाते। परन्तु जनरल स्मट्सकी यह चालाकी गांधीजीके सामने न चली। हिन्दुस्तानियों पर लगाये गये आरोपोंका करारा जवाब देकर गांधीजीने अुनका मुंह बन्द कर दिया।

अिस तरह अेक तरफ यूनियन पार्लियामेण्टकी बैठक दूसरी तरफ तीन पौंडके करके बारेमें सरकारका विश्वासघात तीसरी तरफ अिमिग्रेशन-कानूनका पार्लियामेण्टमें पास होना और चौथी तरफ जज सर्लेका हिन्दुस्तानी विवाह-सम्बन्धी निर्णय — अिस प्रकार चारों ही तरफका वातावरण गरमा

चरम था। अितनेमें ही अेक अैसी खास घटना घटी जो सत्याग्रही हिन्दुस्तानियोंकी परीक्षा करनेवाली थी। दक्षिण अफ्रीकामें अेक बड़ी हड़ताल हुआी। रेलवे वगैरा तमाम सरकारी महकमे अिस हड़तालसे अव्यवस्थित हो गये। अिस हड़तालकी जड़में राज्यक्रान्तिका अुद्देश्य था। दक्षिण अफ्रीकामें कुछ चरम दलके लोगोंको अिंग्लैंडके साथ यूनियनका सम्बन्ध जरा भी पसन्द नहीं था और वे दक्षिण अफ्रीकामें ब्रिटिश साम्राज्यका नामोनिशान भी नहीं रहने देना चाहते थे। अैसे लोगोंने अिस हड़तालका कार्यक्रम बनाकर सारे देशमें खास कर ट्रान्सवालमें अंधाधुंधी फैला दी। सरकार भी बड़ी परेशानीमें पड़ गआी। अिस विकट अवसर पर हड़तालियोंके नेताओंने गांधीजीसे कहा कि हिन्दुस्तानी भी सत्याग्रहकी अपनी लड़ाआी अिसी समय शुरू कर दें। साधारण राजनीतिकी दृष्टिसे तो यह मौका स्वागत करने लायक था। परन्तु सत्याग्रही गांधीजीने अैसी अनुचित कार्रवाआी करनेसे साफ अिनकार कर दिया और बता दिया कि सत्याग्रही विरोधीकी कठिनाआीसे फायदा नहीं अुठाना चाहेगा। अैसी कमजोरी सत्याग्रहीको शोभा नहीं देती। सरकारकी भारी कठिनाआीमें लड़ाआी शुरू करना तो मरतेको मारने जैसा होगा। सत्याग्रहीकी वीरता अैसी नीतिको निन्द्य मानती है। गांधीजीने हड़तालियोंके नेताओंको और हिन्दुस्तानियोंमें से जो भाआी अिस मौकेसे लाभ अुठानेकी सलाह दे रहे थे अुन्हें भी अैसा ही जवाब दिया।

अैसी वीरता और शुद्ध नीतिकी शत्रु भी तारीफ करता है। अिसका असर समझदार मनुष्यों पर अच्छा पड़ा। सरकार हड़तालसे निपट सकी। अुसने खास खास नेताओंको अेकदम पकड़कर और चुपचाप जहाजमें बिठाकर अिंग्लैंड भेज दिया। सेनाकी सहायता ली और देशमें फौजी कानून जारी कर दिया। १। महीनेकी लगातार कोशिशोंके बाद शान्ति स्थापित हुआी। अिस अरसेमें हिन्दुस्तानी चुप रहे और अुन्होंने अपनी लड़ाआी नहीं छेड़ी। दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी हालतको देखते हुअे यह कार्रवाआी बड़ी चतुराआी भरी कही जायगी। सत्य पर कायम रहकर चलनेवाले मनुष्यकी नीतिमें कआी तरहकी चतुराआियोंका समावेश होता है। सरकारकी अिस कठिनाआीका लाभ अुठानेको हिन्दुस्तानी सत्याग्रही लपक जाते तो सरकारकी भारी परेशानीसे छुटकारा मिलनेके बजाय हिन्दुस्तानी जाति पर गंभीर जोखिम आनेकी पूरी संभावना थी और शायद सूखेके साथ गीला भी जल जाता।

परन्तु सत्याग्रहियोंकी रक्षा अुनका धर्म करता ही है। अिसी समय श्री गोखलेकी सलाहसे अेक डेप्युटेशन विलायत भेजा गया। श्री गोखले भी वहाँ थे। अुन्होंने बहुत प्रयत्न किये। परन्तु यूनियन सरकारने अपना दुराग्रह नहीं छोड़ा और हिन्दुस्तानियोंकी मांगको भी स्वीकार न करनेका अपना निश्चय बड़ी सरकारको बता दिया।

दक्षिण अफ्रीकाकी हड़ताल खतम हुअी और सब जगह शान्ति हो गअी तो गांधीजीने हिन्दुस्तानियोंकी बात छेड़ी। लेकिन बुरा तो अपनी बुराअीसे बाज नहीं आया। सरकारने नया अिमिग्रेशन-कानून पास करके सम्राटकी मंजूरी भी हासिल कर ली। यह मंजूरी सन् १९१३ के जून मासमें मिली। जुलाअीमें यह कानून सरकारी गजटमें प्रकाशित किया गया और अगस्तमें तो अुसके अमलके लिअे अलग अलग विभाग भी स्थापित कर दिये गये। अिस कारणसे हिन्दुस्तानियोंने भी तैयारी की। अिण्डियन ओपीनियन अखबारके जरिये सारे देशके हिन्दुस्तानियोंमें गरमागरम वातावरण फैल गया। लड़ाअीके आसार दिखाअी देने लगे और सितम्बरकी १५ तारीखको गांधीजी तथा सरकारके बीच हुआ सारे महत्त्वपूर्ण मुद्दोंवाला पत्र-व्यवहार प्रकाशित करके हिन्दुस्तानी सत्याग्रहियोंने सत्याग्रहकी घोषणा कर दी और अपनी नीचे लिखी मांगें पेश कीं

१ दक्षिण अफ्रीकाके किसी भी कानूनमें रंगभेद न रखनेका सिद्धान्त सरकारको मान लेना चाहिये और अुसके अनुसार फ्री स्टेटके कानूनसे जातिभेद दूर होना चाहिये।

२ अेक पत्नीवाले हिन्दुस्तानी विवाहोंको जायज मानना चाहिये।

३ तीन पौंडका कर बिलकुल अुठा देना चाहिये।

४ दक्षिण अफ्रीकामें पैदा हुअे हिन्दुस्तानियोंके केपकोलोनीमें प्रवेश करनेके हक्कोंकी रक्षा होनी चाहिये।

५ भविष्यमें हिन्दुस्तानियों पर जो कानून लागू होंगे अुनका अमल नरमी और न्यायसे करनेकी नीति स्वीकार होनी चाहिये।

अूपरके पांच मुद्दे पेश करके हिन्दुस्तानियोंने सन् १९१३ के सितम्बर मासमें सत्याग्रहकी लड़ाअी शुरू कर दी।

९

‘चालीसके चालीस हजार’

अिन सब संधिवार्ताओं और सरकारके साथके पत्र-व्यवहारके दरमियान फिनिक्स आश्रम सत्याग्रहकी लड़ाअीकी तालीमका मुख्य केन्द्र बन गया। वहां रहनेवाले बड़ी अुम्रके सब लोग तो प्रेसका काम करते ही थे अिसलिअे अखबारके लेख और अुत्साहप्रेरक लेख कम्पोज करते करते धड़ाधड़ अुनके हृदयमें अंकित हो जाते थे। कम्पोजीटर कोअी पेशेवर लोग नहीं थे वे तो सत्याग्रही योद्धा ही थे। गांधीजीके लेख छपनेसे पहले कम्पोजीटर युवक अुनके वीररसका पान कर लेते थे और अुनके सत्यके सिद्धान्तोंको अपनी रग रगमें अुतार लेते थे। सारे दिन खेतीका या प्रेसका या और कोअी काम करनेके बाद शामको प्रार्थना पूरी होने पर दिनभरकी घटनाओंकी चर्चा होती। गांधीजी लड़ाअीके मुद्दोंको समझाते थे और अुसके सिलसिलेमें जो प्रश्न पूछे जाते अुनका जवाब देते थे। जेलकी मुश्किलें जेलकी तालीम जेलकी खुराक जेलमें सत्याग्रहीका व्यवहार वगैरा विषयों पर अनेक सवाल गांधीजीसे पूछे जाते और गांधीजी अुनका जवाब देते चले जाते। अमुक कठिनाअीके अवसर पर सत्याग्रहीको किस ढंगसे चलना चाहिये अिसका निर्णय गांधीजी नीतिकी शुद्धताको कायम रखकर देते थे। अिस प्रकार लड़ाअी शुरू होनेसे पहले डेढ़ महीने तक प्रार्थनाके बाद होनेवाली अेक अेक घंटेकी अिस चर्चामें लड़ाअी-सम्बन्धी आवश्यक ज्ञान गांधीजीसे सबको मिल गया। अनेक शंकाओंका निवारण हो गया हृदयकी कमी जाती रही और सबके दिलोंमें शुद्ध सत्यके प्रति श्रद्धा अुत्पन्न हो गअी।

अिन प्रसंगोंमें से अेक सुन्दर प्रसंग यहां लिखने जैसा है।

लड़ाअीका वातावरण गरम बना था। अेक रविवारको मैं प्रेसके कामसे डरबन गया था। जहां जहां हिन्दुस्तानियोंकी दुकान या मकान पर मैं जाता वहीं सवाल होता अब क्या करना है? यह पूछनेके पीछे किसीके हृदयमें जिज्ञासा होती किसीके हृदयमें लड़ाअीका अुत्साह मालूम होता किसीके हृदयमें लड़ाअीके प्रति श्रद्धा जाग पड़ती और किसीके हृदयमें लड़ाअीके प्रति

निरुत्साह और अुसके परिणामोंके विषयमें शंका मालूम होती थी। बहुतोंके साथ हुअी बातोंमें मुझे आखिरी बात ज्यादा मालूम हुअी और वातावरणमें हिन्दू-मुसलमानोंके बीच कुछ बेदिली भी दिखाअी दी। गंभीर झगड़ेकी कोअी बात नहीं थी परन्तु आपसमें संकोचकी वृत्ति तो थी ही। हृदयका मिलन नहीं था।

अिस सारे वातावरणका असर लेकर मैं शामकी गाड़ीसे फिनिक्स लौटा। रातको प्रार्थनाके बाद बातें हुअीं। मैंने गांधीजीसे पूछा

हमने सरकारके साथ हुआ अंतिम पत्र-व्यवहार प्रकाशित करके और अपनी मांगें पेश करके लड़ाअी शुरू कर दी। परन्तु अभी तक हममें कोअी जोश मुझे मालूम नहीं होता। डरबनमें आज मैं खूब घूमा परन्तु मुझे लड़ाअीके बारेमें कोअी अुत्साह नजर नहीं आया। अितना ही नहीं अधिकांश लोगोंमें तो लड़ाअीके बारेमें शंका ही भरी है। बहुतेरे लोग यह मानते हैं कि गांधीभाअी नाहक पेट दबाकर दर्द खड़ा कर रहे हैं। सिद्धान्तकी और मान-अपमानकी बातको छोड़कर जो कुछ रोटी पैदा होती है अुसे करने दें तो बहुत अच्छा। गोरोंके साथ झगड़ा खड़ा करनेसे तो अुलटे वे हमें ज्यादा दुःख देंगे। अिसके बजाय आजकी स्थितिमें ही रहें तो क्या अच्छा नहीं होगा? जरा मुंह नीचा रखकर चलेंगे। यहां हम रुपया कमानेको आये हैं बरबाद होनेको नहीं आये। स्वाभिमान रखना होता और अुसके लिअे जेलमें जाकर बरबाद होना होता तो यहां किसलिअे आते! अैसी जो साफ साफ बातें बहुतसे भाअियोंने मुझसे की थी वे सब मैंने गांधीजीको सुना दी। अुन परसे मेरे हृदय पर जो असर हुआ था अुससे दुःखी होकर मैंने पूछा बापूजी अिस यूनियन सरकारके साथ लड़नेमें हमारी ताकत कितनी है? सात सालसे सत्याग्रहकी लड़ाअी शुरू हुअी है परन्तु अुससे हमें कितना बल मिला? और अितनी बड़ी सरकारके साथ लड़नेके लिअे हमारे पास आदमी कितने हैं? क्या आपने अिसका हिसाब लगाया है?

गांधीजीने हंसते-हंसते जवाब दिया मैंने तो रात-दिन हिसाब लगाया है। फिर भी तुम गिन लो। हमारे सत्याग्रही कौन अपरिचित हैं?

मैंने फिनिक्ससे ही शुरुआत की। नेटाल ट्रान्सवाल और फिर केप कॉलोनीमें से सत्याग्रहकी लड़ाअीमें अन्त तक जूझनेवाले योद्धाओंके नाम मैं अंगुलियोंके पोर पर गिनने लगा। तीनों प्रान्तोंके नाम गिन लेनेके बाद जब

४

शुभ आरम्भ

लड़ाअीकी रणभेरी बजने लगी। हिंसक लड़ाअी हो तो हजारों आदमी केसरिया बाना पहनकर निकलें, शस्त्रास्त्रके भंडार खाली हो जायं, तोपखाने खाली हो जायं, भयंकर और प्राण-घातक बहुतेरे शस्त्रोंसे मनुष्य अपने मानव-बंधुओंका खून चूसनेके अुत्साहमें पागल बन जायं। जो विपक्षका है वह हमारा शत्रु है, अैसा मानकर अुसमें से जितनोंको मारा जा सके अुतनोंको मारकर वाहवाही या जिनाम लेनेकी जिच्छासे प्रेरित होकर मनुष्यके बजाय पशुवृत्ति धारण किये हुअे मानव-पशुओंके झुंडके झुंड रणक्षेत्रमें झोंक दिये जायं और आपसमें अेक-दूसरे पर भूखे गीधोंकी तरह टूट पड़ें। परन्तु जिस तरहकी कोअी बातकी फिकिर आश्रममें नहीं थी। थोड़े दिन बाद दक्षिण अफ्रीकाकी यूनियन सरकारको हिला देनेवाली जो लड़ाअी लड़नी थी अुसकी तैयारी देखनेके लिअे कोअी फिकिर आश्रममें आता तो अुसे कुछ भी पता न चलता। वह बेचारा जैसे आता वैसे ही लौट जाता! किस बातकी तैयारी? औरोंको मारनेकी? यहां तो औरोंको मारनेकी मनाही थी। तब तैयारी किस बातकी? स्वयं मर मिटनेकी? हां, पर अुसके लिअे बाहरी शस्त्र-साधनोंकी या बाहरी तालीमकी कोअी जरूरत नहीं थी। जिसके अलावा जिस अहिंसक लड़ाअीमें मर्द ही अकेले भाग ले सकते हों अैसी बात नहीं थी। सिर्फ नौजवान ही भाग ले सकते हों अैसी भी बात नहीं थी। स्त्री-पुरुष फिर वे शरीरसे बलवान हों या कमजोर, तन्दुरुस्त हों या रोगी सभी भाग ले सकते थे। अरे, बड़ी मां या छोटा बच्चा तक अुसमें भाग ले सकता था। अुनके लिअे केवल हृदयकी सत्याग्रही वृत्ति ही आवश्यक थी। अुसे सिखानेके लिअे शिक्षा-शालाअें खोलनेकी जरूरत नहीं थी। आश्रमका वातावरण ही अुसकी तालीम दे रहा था।

जिस आखिरी लड़ाअीमें दो प्रबल शक्तियोंकी वृद्धि हो गयी। आज तक तो किसी स्त्रीकी जिच्छा होने पर भी अुसे लड़ाअीमें शामिल होनेकी मनाही की जाती थी। परन्तु जिस लड़ाअीमें हिन्दुस्तानी स्त्रियोंने स्वयं पर

किये गये हमलेका विरोध करता था। जिसमें तो हिन्दुस्तानी स्त्रियोंके स्वाभिमानकी रक्षा करनेका सवाल था। जिसीलिओ यह फैसला हुआ कि स्त्रियोंको भी जरूर शरीक होना चाहिये। जिसी तरह गिरमिटिया मजदूरोंको आज तक लड़ाईमें शामिल होनेकी सलाह या प्रेरणा नहीं दी जाती थी परन्तु तीन पौंडके करकी लड़ाईमें भाग लेना अनुका भी फर्ज हो गया। और हजारों गिरमिटिया मजदूर भी जिस लड़ाईमें भाग ले सके। जिस प्रकार ये दो शक्तियां जिस लड़ाईमें और जुड़ गयीं।

परन्तु जिन शक्तियोंको पैदा करके अनुका संग्रह करनेकी भी ताकत होनी चाहिये। गांधीजीको विश्वास तो था कि बहुतसी हिन्दुस्तानी बहनें जेल जानेको तैयार होंगी। परन्तु स्वयं मरे बिना स्वर्ग जानेकी बात किसीने सुनी है? गांधीजीको लगा कि कस्तूरबा जिस लड़ाईके लिये तैयार हो जाय और जेलमें चली जाय तो सारी बाजी जीत ली जाय। परन्तु बाको तैयार कैसे किया जाय? अन्हें हुक्म देकर जबरदस्ती तैयार करनेमें क्या मजा है? बादमें अैसे बल पर विश्वास कैसे रखा जा सकता है? कस्तूरबामें यह शक्ति तो जरूर है कि अेक बार किसी बातको वह समझ ले तो फिर अुस पर डटी रहती है। परन्तु यह भी सवाल है कि अुस बातको समझा कर अुसके लिये बामें दृढ़ता कैसे पैदा की जाय? गांधीजी जिसीका विचार करते रहते थे और मौका मिलने पर अुन्होंने यह कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया।

अेक दिन सदाके नियमानुसार पाखाना साफ करनेके बाद नहा धोकर मैं लगभग साढ़े नौ बजे भोजनालयमें गया। गांधीजी भी अुसी समय पाकशालामें आये। कस्तूरबा तो वहां थीं ही। रोटीका आटा गूंथ कर अुन्होंने रख दिया था। अुन्होंने रोटियां बेलना शुरू किया और मैंने सेंकना शुरू किया। गांधीजी फुटकर काम कर रहे थे। काम करते करते गांधीजीने अेकाअेक कस्तूरबासे पूछा "तुम्हें कुछ मालूम हुआ?"

"क्या?" कस्तूरबाने जिज्ञासासे पूछा।

गांधीजीने जरा हंसते-हंसते जवाब दिया "आज तक तुम मेरी विवाहिता स्त्री थीं। लेकिन अब तुम मेरी विवाहिता स्त्री नहीं रहीं।"

कस्तूरबाने जरा भौंहें चढ़ाकर कहा "यह किसने कहा? तुम तो रोज नयी नयी समस्यायें दूढ़ निकालते हो।

गांधीजी हंसते हंसते बोले "मैं कहां ढूंढ निकालता हूं? यह जनरल स्मट्स कहता है कि अीसाअी विवाहकी तरह हमारा विवाह अदालतमें दर्ज नहीं हुआ अिसलिअे वह गैरकानूनी माना जायगा। और अिसलिअे तुम मेरी विवाहिता स्त्री न मानी जाकर रखैल मानी जाओगी।"

कस्तूरबाने गुस्सेमें आकर कहा "कहा अुसने अपना सिर! मुअे निठल्लेको अैसी-वैसी बातें कहांसे सूझती हैं?"

गांधीजीने संक्षेप करके कहा "परन्तु अब तुम स्त्रियां क्या करोगी?

हम क्या करेंगी?" कस्तूरबाने पूछा।

"हम सहते हैं वैसे तुम भी सहो। सच्ची विवाहिता स्त्री बनना हो और रखैल न बनना हो साथ ही तुम्हें अपनी अिज्जत प्यारी हो तो तुम भी सरकारके खिलाफ लड़ो।"

तुम तो जेलमें जाते हो।"

तुम भी अपनी अिज्जतके खातिर जेलमें जानेको तैयार हो जाओ। गांधीजीका वाक्य सुनकर कस्तूरबा आश्चर्यमें पड़ कर बोलीं "जेलमें! औरतें भी कहीं जेलमें जाती हैं?

"हां जेलमें। स्त्रियां जेलमें क्यों नहीं जा सकतीं? पुरुष जो सुख दुःख भोगते हैं, वह स्त्रियां क्यों नहीं भोग सकतीं? रामके पीछे सीता गयी। हरिश्चन्द्रके पीछे तारामती गयी। नलके पीछे दमयन्ती गयी। और सबने जंगलमें बेहद दुःख भुगते।

गांधीजीका विवेचन सुनकर कस्तूरबा बोल अुठीं वे सब तो देवियोंके समान थीं। अुनके कदमों पर चलनेकी शक्ति हममें कहां है?

गांधीजीने गंभीरतापूर्वक कहा अिसमें क्या है? हम भी अुनकी तरह व्यवहार करें तो अुनके जैसे हो सकते हैं, देवता बन सकते हैं। रामके कुलका मैं और सीताके कुलकी तुम। मैं राम बन सकता हूं और तुम सीता बन सकती हो। धर्मके खातिर अगर सीता रामके पीछे न गयी होती और महलमें ही बैठी रहती तो अुसे कोअी सीतामाता न कहता। हरिश्चन्द्रके सत्यव्रतके खातिर तारामती बिकी न होती तो हरिश्चन्द्रके सत्य-व्रतमें कमी रह जाती। अुसे कोअी सत्यवादी न कहता और तारामतीको कोअी सती न कहता। दमयन्ती नलके पीछे जंगलोंके दुःख सहनेमें शामिल न हुअी होती तो अुसे भी कोअी सती न कहता। अब अगर तुम्हें अपनी

नायक रखनी हो मेरी विवाहिता स्त्री बनना हो और रखैल समझी जानेके कलंकसे मुक्त होना हो तो तुम सरकारके खिलाफ लड़ो और जेलमें जानेको तैयार हो जाओ।

कस्तूरबा चुप रहीं। मैं देखता रहा कि वा क्या जवाब देती हैं। यह सब सुननेमें मुझे मजा आ रहा था। जितनेमें कस्तूरबा बोल अुठीं तो तुम्हें मुझे जेलमें भेजना है न? अब जितना ही बाकी रहा है। खैर! परन्तु जेलका खाना मुझे अनुकूल आयेगा?"

मैं तुमसे नहीं कहता कि तुम जेलमें जाओ। तुम्हें अपनी जिज्जतके खातिर जेलमें जानेकी अुमंग हो तो जाओ। और जेलका भोजन अनुकूल न आये तो फलाहार करना।

जेलमें सरकार फलाहार देगी?

गांधीजी फलाहार प्राप्त करनेका अुपाय बताते हुये बोले

फलाहार न दे तब तक वहां अुपवास करना।

कस्तूरबाने हंसकर कहा "क्या खूब! यह तो तुमने मुझे मरनेका रास्ता बता दिया। मुझे लगता है कि जेलमें गयी तो मैं जरूर मर जाअूंगी।"

गांधीजी खिल खिला कर खिलखिला पड़े और बोले

हां हां मैं भी यही चाहता हूं। तुम जेलमें मर जाओगी तो मैं जगदम्बाकी तरह तुम्हें पूजूंगा।

अच्छा तब तो मैं जेल जानेको तैयार हूं। कस्तूरबाने दृढ़तासे अपना निश्चय बताया।

गांधीजी खूब हंसे। अुन्हें बड़ा आनन्द हुआ। कस्तूरबा किसी कामसे बाहर गयीं कि मौका देखकर गांधीजीने मुझसे कहा "बामें यही खूबी है कि वह मन या बमनसे मेरी जिच्छाके अनुसार चलती है।

गांधीजीने तो यह वाक्य अपने गृहस्थाश्रम धर्मके सिलसिलेमें कहा था। परन्तु अुनकी जिच्छानुसार कस्तूरबाने व्यवहार किया जिससे भारतीय स्त्रियोंके अुद्धारका मार्ग खुल गया। और आज हिन्दुस्तानमें स्त्रीशक्तिकी जो पवित्र और प्रचंड ज्वाला प्रगट हो गयी है मुझे लगता है कि अुसका बीज किसी अवसर पर बोया गया था।

पिछले प्रकरणवाली घटना हुयी अुसी दिन श्री मगनलाल गांधी और श्री छगनलाल गांधीकी पत्नीसे पूछा गया। वे भी तैयार हो गयीं। गांधीजीके

रंगूनवाले मित्र डॉ॰ प्राणजीवनदास मेहताकी पुत्री थीं। जयाकुंवर बहन भी वहीं रहती थीं। अुनकी भी लड़ाअीमें शामिल होनेकी प्रबल अिच्छा थी। फिर तो यह व्यवस्था होने लगी कि कौन जेलमें जाय और कौन फिनिक्समें रहकर प्रेसकी अखबारकी और वहां रहनेवाले छोटी अुम्रके बच्चोंकी देखरेख करे। जेल जानेमें स्पर्धा होने लगी। अन्तमें सारा निर्णय गांधीजीकी अिच्छा पर छोड़ा गया। गांधीजीने श्री मगनलाल गांधीको हुक्म दिया कि तुम जेल जानेकी अिच्छा न करो। जेलसे भी जेलके बाहर ज्यादा विकट कर्तव्य पूरा करना था। और अुस कामको कर सकनेकी शक्तिवाले तो भी मगनलाल गांधी अकेले ही थे। अुन्होंने गांधीजीकी यह अिच्छा मान ली। अिस तरह योद्धाओंकी तैयारी करके गांधीजी जोहानिसबर्ग गये और अिसका भी विचार किया कि वहांके योद्धाओंका कैसा व्यूह रचा जाय। परन्तु अिस बार तो सारी लड़ाअी नेटालमें ही होनेवाली थी अिसलिअे लड़ाअीका मुख्य केन्द्र नेटालमें ही रहना जरूरी था। फिनिक्सको लड़ाअीका केन्द्रस्थान बनाया गया। दूसरी ओर हिन्दुस्तानमें श्री गोखलेको भी लड़ाअीकी चिन्ता हुअी। तीन पौण्डके करके मामलेमें यूनियन सरकार द्वारा श्री गोखलेके साथ विश्वासघात करनेसे गांधीजीके दिलको कितनी सख्त चोट लगी होगी अिसका खयाल भी गोखलेको था। और अुन्हें ऐसा भी लगा कि जब सरकारने ऐसी निन्द्य कार्रवाअी की है तो यह हिन्दुस्तानियोंको कुचलनेके लिअे अपनी पूरी शक्ति काममें लेगी और लड़ाअी लंबे समय तक चलेगी। अिस प्रकार लड़ाअी लम्बी चली तो रुपयेकी भी जरूरत पड़ेगी। श्री गोखलेने गांधीजीसे हिसाब मांगा कि फिलहाल कितने आदमी लड़ाअीमें भाग लेनेको तैयार हैं और कितने रुपयेकी जरूरत होगी। गांधीजीने बताया कि अभी तो ज्यादासे ज्यादा साठ और कमसे कम सोलह सत्याग्रही हैं। और रुपयेके लिअे आप कोअी चिन्ता न करें। यह सोलहकी संख्या जो अुन्होंने बताअी वह फिनिक्स आश्रमके दलकी थी। अिस दलके बारेमें गांधीजीको ऐसा विश्वास था कि धधकती आगमें कूद पड़नेका हुक्म अुनकी तरफसे मिले तो भी अुसमें कोअी पी नहीं [illegible]। सभी आश्रममें रहनेवाले गांधीजीके अपने आदमी थे। बाहरके दो सज्जन थे (१) प्रसिद्ध देशभक्त पारसी रुस्तमजी सेठ और (२) जोहानिसबर्ग वाले बैरिस्टर जोसफ रॉयपनके भाअी सोलोमन रॉयपन। श्री रुस्तमजी सेठ तो यह जानकर कि लड़ाअीका

निश्चय हो गया है और कस्तूरबा भी तैयार हो गयी हैं, आग्रहपूर्वक अुम्मीदवारी करने लगे। परन्तु अुनके साथ अुनके पुत्र और सोराबजीने स्पर्धा शुरू कर दी। अन्तमें श्री रुस्तमजी सेठ बोले। "बा जेलमें जायें तब मैं किसकी व्यवस्था करनेको रहूं? व्यवस्था करनी हो तो तुम करना। व्यवस्था न हो तो भले अव्यवस्था हो जाय। परन्तु मैं तो पहले ही जेलमें जाअूंगा।" अैसा निश्चय मुझको बताकर वे डरबन छोड़कर दस दिन पहले ही फिनिक्समें आ डटे थे। श्री सोराबजी भी पिताजीको जेलमें भेज कर घर नहीं बैठे रहे। अुन्होंने जेलसे भी ज्यादा कठिनाअियां अुठाअीं और अधिक काम किया। बादकी बड़ी हड़तालमें बेकार होनेवाले मजदूरोंको भोजन बांटनेके लिअे वे सारे नेटालमें घूमे और गरीब मजदूरोंको अुन्होंने लड़ाअीमें टिकाये रखा। श्री सोलोमन रॉयपन पिछले दो माससे फिनिक्समें आकर रह रहे थे। अिसलिअे अुनके बहुत आग्रहके कारण अुन्हें भी शामिल किया गया। अिस प्रकार पहला दल चार स्त्रियों और बारह पुरुषोंका बना। अुनके नाम ये हैं

(१) श्री कस्तूरबा गांधी
(२) श्री जयाकुंवर मणिलाल डॉक्टर
(३) श्री काशीबहन छगनलाल गांधी
(४) श्री संतोकबहन मगनलाल गांधी
(५) सेठ पारसी रुस्तमजी जीवनजी घोरखोडू
(६) श्री छगनलाल खुशालचन्द गांधी
(७) श्री रावजीभाअी मणिभाअी पटेल
(८) श्री मगनभाअी हरिभाअी पटेल
(९) श्री सोलोमन रॉयपन
(१) श्री रामदास मोहनदास गांधी
(११) श्री राजू गोविन्द
(१२) श्री शिवपूजन बदरी
(१३) श्री गोविन्द राजुलु
(१४) श्री कुप्पूस्वामी मुदालियार
(१५) श्री गोकुलदास हंसराज
(१६) श्री रेवाशंकर रतनसी सोढा

भिन सोलह आदमियोंका दल निश्चित हुआ। यह भी तय हुआ कि लड़ाभी कब शुरू की जाय। किसीको पता नहीं था। जैसे दो हाथोंसे ताली बजती है अेक हाथसे नहीं बजती अुसी तरह लड़नेवाले पक्ष भी दो चाहिये। अेक पक्ष दूसरे पक्षको लड़नेका मौका ही न दे तो लड़नेकी भिच्छा रखनेवाला पक्ष भी कुछ नहीं कर सकता। भिसलिये कुछ भी शोर मचाये बिना अचानक हमला करना था।

जहां तक मुझे याद है सन् १९१३ के सितम्बरकी १४ तारीख थी। गांधीजीके फिनिक्सके मकानमें सुबहसे अैसी तैयारियां हो रही थीं मानो कोअी विवाहोत्सव हो। सबको अपने-अपने पहननेके कपड़े ओढ़ने-बिछानेके लिये कम्बल और चादर, पानी पीनेके लिये प्याला वगैरा सामान फौजी सिपाहियोंकी तरह अपने साथ ही रखना था। सबने साथ कर करके अपनी अपनी गठरियोंमें सामान भिस तरह बांधा कि कंधेसे लटकाया जा सके। कस्तूरबाने सबको कुमकुमका तिलक लगाया। दोपहरके बारह बजे। आश्रमके सभी निवासी वहां आ पहुंचे। सब मुख्य खंडमें बैठे। गांधीजीने काले रंगका सूती पतलून और वैसा ही कमीज पहन रखा था। सारे खंडमें शान्ति छायी हुअी थी। प्रार्थना शुरू हुअी। सबने अेकाग्रतासे भक्त नरसिंह मेहता रचित गांधीजीका प्रिय भजन 'वैष्णवजन' गाया। दूसरा भजन 'सुखदुःख मनमां न आणीअे घट साथे रे घडिया' गाया। प्रार्थना पूरी हुअी। हम सबने अेकके बाद अेक झुककर गांधीजीको प्रणाम करके अुनके आशीर्वाद लिये। प्रफुल्ल चित्त और हृदयकी साक्षामरी अुमंगसे आशीर्वाद देते हुअे गांधीजीने किसीको थप्पा मारा किसीका कान अैंठा और किसीकी पीठ थपथपाअी। भिस प्रकार सबको अमृत-रस पिलाया। सबने अेक-दूसरेका आलिंगन किया। बिछुड़नेवाले आश्रममें रहनेवालोंसे प्रेमपूर्वक मिले। भिस पवित्र प्रसंगका वर्णन करनेकी शक्ति मुझमें नहीं है। केवल अुसका स्मरण ही कर सकता हूं। हमारे हृदयके अुत्साहका पार नहीं था — मानो रणमत्त रणवीरोंको स्वर्गके द्वारके समान धर्मयुद्ध प्राप्त हुआ हो! अैसे अुत्साहमें अेक घंटा बीत गया। हमने आश्रमको प्रणाम किया। अब तो विजयके आनन्दमें ही भगवान आश्रमके दर्शन करायें अैसी प्रार्थना करते हुअे हम सब स्टेशनकी तरफ रवाना हुअे। गांधीजी भी अेक छोटे बच्चेको गोदमें लेकर स्टेशन तक हमें विदा करने आये। हम स्टेशनके नजदीक पहुंचे कि गाड़ी आ गयी। गाड़ी दो मिनट ही ठहरनेवाली थी भितनेमें डिब्बेकी तलाश

कहा करें? वहांकी रेलोंमें दूसरे दर्जेके डिब्बे हिन्दुस्तानियोंके लिये अलग रखे जाते थे। परन्तु अिस छोटी लाअिनमें अेक ही डिब्बा होता था। अुसमें आठ मुसाफिर बैठ सकते थे। हम तो शुरूसे ही सोलह आदमी थे। अिसलिये अलग डिब्बा ढूंढनेकी झंझटमें न पड़ कर जो डिब्बा सामने दिखा अुसीमें बैठ गये। हमारा यह कदम रेलके नियमके विरुद्ध था। रेलवे अिन्स्पेक्टरका ध्यान हमारी तरफ जानेसे पहले गाड़ीकी सीटी हो गअी और गाड़ी चल पड़ी। गांधीजीको दूरसे प्रणाम करते करते हम अुनकी दृष्टिसे ओझल हो गये।

परन्तु यहां अेक मुश्किल पैदा हुअी। गाड़ी दूसरे स्टेशन पर खड़ी हुअी कि अिन्स्पेक्टर आया और अुसने हमसे डिब्बेमें से अुतर जानेको कहा। मैंने कारण पूछा तो अुसने कहा "यह डिब्बा रिजर्व्ड नहीं है यह गोरोंके लिये है।" हमने कहा "सोलह मुसाफिरोंको बैठने लायक रिजर्व्ड स्थान तुम्हारे पास है ही नहीं। हमें तुम कहां बिठाओगे?"

अुसने कहा "दूसरी जगह बिठाकर रिजर्व्डका लेबल लगा दूंगा और अुस जगहको रिजर्व्ड बना दूंगा।"

मैंने कहा "तो फिर भले आदमी अिसी डिब्बे पर लेबल लगा दो तो यही डिब्बा रिजर्व्ड हो जायगा।"

परन्तु अुसने मेरी बात मानी नहीं। हम काले आदमी चाहे जहां कैसे बैठ सकते थे?

हमने तो निश्चयपूर्वक कह दिया "हम नहीं अुतरेंगे। तुमसे जो हो सके सो कर लो।

अुसने स्टेशन-मास्टरको बुलाया। स्टेशन-मास्टरने हमें पहचान लिया और वह समझ गया कि अिन लोगोंको छेड़नेमें सार नहीं है। अुसने अुस अिन्स्पेक्टरको भी यही सलाह दी। पर मदमें चूर अिन्स्पेक्टरने अुसकी सलाह नहीं मानी। अुसने पुलिसको बुलाया और हमें अुतार देनेको कहा।

हमने कहा कि हमें अुतारना हो तो हमें गिरफ्तार किया हुआ जाहिर करो या हरअेकको अलग अुठा कर बाहर फेंक दो। अुसके बिना हम नहीं अुठेंगे। वह दोनोंमें से अेक भी काम नहीं कर सकता था। पन्द्रह मिनिटकी बकझकके बाद गाड़ी आगे चली। तीसरे स्टेशन पर भी यही तमाशा हुआ। परन्तु वह सफल न हुआ। हम मजबूत रहे। हम अिस निश्चयसे अटल रहे

था। जिसके पास वैसा परवाना न होता अुन्हें पुलिसके हवाले कर दिया जाता था। जिस प्रकार पुलिसकी देखरेखमें जांच करके अिमिग्रेशन-अफसर अनुमति देता तब गाड़ी वहांसे आगे बढ़ती। हमें ट्रान्सवालका यह अिमिग्रेशन-कानून तोड़ना था। परन्तु हमें भय था कि कहीं सरकारकी अिच्छा न हो तो वह हमें पकड़ भी सकती है। हमारे दलमें लगभग सभी गांधीजीके सगे-सम्बन्धी और अपने आदमी थे। अुनके नाम जान लेती तो सरकार किसीको न पकड़ती और जाने देती। वैसा होता तो हमारा पहला ही वार व्यर्थ जाता। अिसलिअे हमने निश्चय किया कि किसीका पूरा नाम न बतायें और झूठ भी न बोलें। यानी कस्तूरबा अपना नाम सिर्फ कस्तूरबा ही बतायें और कुछ न कहें। और, सबकी तरफसे अेक ही आदमी बात करे यह भी तय किया। अुसके लिअे श्री छगनलाल गांधीको चुना गया। और किसीसे पूछा जाय तो हमने पूछनेवालेसे यह कहनेका निर्णय किया "क्या पूछते हो? तुम गुजरातीमें बोलो।

स्टेशन आया। अिमिग्रेशन-अफसर हमारे डिब्बेमें आया। अुसने ट्रान्सवालका पास मांगा। श्री छगनलालने बताया पास हमारे पास नहीं है।"

अमलदारने कहा पासके बिना तुम कैसे जा सकते हो?"

श्री छगनलाल हमें जोहानिसबर्ग जाना है और पास तो किसीके पास नहीं है।

अफसर "अिस प्रकार मैं कैसे जाने दूं? तुम सब नीचे अुतर जाओ।

श्री छगनलाल हम यों तो नीचे नहीं अुतरेंगे। हमें नीचे अुतारना हो तो गिरफ्तार कर लो।

यह वाक्य सुनकर वह चौंका। अुसने सबकी तरफ ताक ताक कर देखा। कोअी भी चोर-डाकू नजर नहीं आया। सब अुसे सीधे-सादे देहाती जैसे मालूम होते थे। परन्तु वह सोचमें पड़ गया। दूसरे अफसरके साथ कुछ सलाह करके अुसने हमसे फिर पूछा तुम अुतरोगे नहीं?

श्री छगनलाल "हमें गिरफ्तार नहीं करोगे तो हम नहीं अुतरेंगे। हमें तो जोहानिसबर्ग जाना है। हमें अपराधी मानकर पकड़ लो तो हम फौरन अुतर जायेंगे।"

अफसर — अच्छा तो मैं तुम्हें पकड़ता हूं। तुम सब मेरे कैदी हो। सब नीचे अुतर जाओ।

हम सब तैयार ही थे। चुपचाप नीचे अुतर गये। स्टेशन पर गोरों और हिन्दुस्तानियोंकी भीड़ जमा हो गयी। यह क्या मामला है? क्या सत्याग्रहकी लड़ाओी छिड़ गयी? अफसरोंको यह शंका हुओी। हमें नीचे अुतारनेके बाद अुन्होंने सबके नाम श्री छगनलाल गांधीसे जान लिये। अुन्होंने संकेतके अनुसार सबके नाम दे दिये। बादमें अफसर सभ्यतासे बोला

“आप सब मेरे कैदी जरूर हैं परन्तु आपको रखनेके लिये मेरे पास जगह बिलकुल नहीं है। सिर्फ दो हब्शियोंके पड़े रहने लायक [illegible] स्थान मेरे पास है। अिसलिये आप यहां अपनी सुविधायें जुटा लें तो आपके लिये ठीक रहेगा। आप जैसे लोगोंको मैं मुसीबतमें नहीं डालना चाहता।

श्री छगनलालने कहा — परन्तु हम आपको वचन नहीं देते कि हम भागे नहीं चल देंगे।

अफसर हँसकर बोला — मुझे विश्वास है कि आप भागेंगे नहीं। परन्तु कल दस बजे सब मेरे दफ्तरमें आ जाअिये।”

श्री कैलनबैकने पहलेसे ही अिंतजाम कर रखा था और फोक्सरस्टके हिन्दुस्तानी व्यापारी हमें लेनेके लिये स्टेशन पर आये भी थे। अुनमें से मि॰ ओ॰ अेम॰ बदात नामके अेक मुसलमान व्यापारीके यहां हमें ठहराया गया।

दूसरे दिन दस बजे हम अिमिग्रेशन-विभागके दफ्तरमें गये। अफसरको जो विधि करनी थी अुसे करके वह हमसे कहने लगा — अब आप छूट जाअिये। अेक दो दिन आपको रुकना पड़ेगा। मुझे जब तक सरकारका हुक्म न मिल जाय तब तक मैं कोअी कार्रवाई नहीं कर सकता।”

हमें वहां कुछ दिन हो गये। परन्तु अफसर कोअी फैसला नहीं दे सका। नैटाल और जोहानिसबर्गसे सब हमें पूछते रहते कि तुम्हारा क्या हुआ? क्यों अभी तक निपटारा नहीं हो रहा है? हमारे बारेमें सरकारकी कलम अुठती अुस परसे हमें आगेका व्यूह रचना था। दूसरी तरफ सरकारके लिये भी यह कोअी खेल नहीं था। यह हमें सजा देती तो यह निश्चय हो जाता कि सरकारने हिन्दुस्तानियोंके साथ लड़ाअी छेड़ दी है। जनरल स्मट्सको लड़ाअीके रंगका कुछ अनुभव था। अिसलिये हमें सजा देनेका

कदम अुनके लिअे गंभीर विचारका विषय बन गया। लगभग चार-पांच दिनके सलाह-मशविरेके बाद वहांका मंत्रि-मंडल निर्णय पर पहुंचा और रविवारके दिन सवेरे अिमिग्रेशन-अफसरको हुक्म मिला कि पहले तो हमें ट्रान्सवालसे निर्वासित किया जाय और फिर भी यदि हम अुसका हुक्म न मानें तो हमें पकड़कर सजा दे दी जाय। रविवारको सुबह ९ बजे दो पुलिस अफसर हमारे मकान पर आये और अुन्होंने वारंट दिखाये। निर्वासनके वारंटका अर्थ हम समझते थे। हमने सोच लिया था कि सरकार अैसा भी कर सकती है। वारंट मिलते ही हम सब तैयार हो गये। पुलिस अफसरोंने कहा कि आपका सामान हो तो ले लीजिये। हमने कहा अिस तरह क्यों तंग करते हो? बादमें हमें यहीं होकर तो ले जाओगे। तब लौटते हुअे हम अपना सामान ले जायेंगे।”

पुलिस अफसर समझ गये। वे हंसे और हम सब रवाना हुअे। अखबारोंमें पैसिव रेजिस्टर्सका वोक्सरस्टमें आगमन जैसे बड़े शीर्षकसे खबर छपी। पैसिव रेजिस्टर्स कैसे हैं, यह देखनेको बहुतसे गोरे झुंड बनाकर आये। शायद देखनेके बाद अुन्होंने अपने मनमें हमें मूर्ख या पागल समझा होगा। गांवसे करीब अेक मील पर बोअर नदी बहती है। छोटेसे झरने जैसी है। अुस पर अेक पक्का पुल बना हुआ है। अुस पुलके बीचमें सफेद पत्थरकी लकीर खींची हुअी है। अुस लकीरको ट्रान्सवाल और नेटालके बीचकी हदका निशान माना गया है। वहां हमें ले गये। अुस लकीरके अन्दर हमें खड़े रखकर दोनों तरफकी दीवारों पर खड़े रहकर पुलिस अफसरोंने सम्राटके नाम पर हमें निर्वासन देनेका लिखित पढ़कर सुनाया और फिर हलकेसे हाथसे पीछेसे जरा नेटालकी हदकी तरफ हमें धकेल दिया। हमने अेक कदम नेटालकी हदमें रखकर वापस दूसरा कदम ट्रान्सवालमें रखा। अिसलिअे पुलिस अफसरोंने कहा “तुम सरकारका हुक्म तोड़कर ट्रान्सवालमें घुसे अिसलिअे हम तुम्हें पकड़ते हैं।

यह तो छोटे बच्चोंका खेल हो गया। जितनी क्रियामें हमें निर्वासित कर दिया सम्राटकी सरकारका अनादर करके हम वापस देशमें भी आ गये और हमें पकड़ भी लिया गया। हम सब जैसे गये थे वैसे ही वापस आ गये। हम मुकामके सामने आये और अपना सामान हमने ले लिया। हमें ले जाकर अेक बंगलेमें रखा गया और बताया गया कि हमारा मुकदमा मंगलवार २१ ता० को चलेगा।

मंगलवारको हमें वोक्सरस्टके मजिस्ट्रेटकी अदालतमें ले जाया गया। सोलहों आदमियोंको अिकट्ठा खड़ा रखा गया। हम पर यह आरोप लगाया गया कि तुम ट्रान्सवालके निवासी होनेका हक नहीं रखते। तुम खुद भी अिससे अिनकार करते हो कि तुम्हारे पास अैसा हक है। तुम्हारे पास अैसा परवाना है अिससे भी तुम अिनकार करते हो। अिसलिअे तुमको निर्वासित किया गया। अुस हुक्मका अनादर करके तुम वापस ट्रान्सवालमें घुसे। यही आरोप तुम पर लगाया जाता है।

हमने अिस आरोपको स्वीकार किया।

हमसे पूछा गया "तुम्हें अिस बारेमें कोअी सफाअी देनी है?

हमने कहा हमें कोअी सफाअी नहीं देनी है।"

मजिस्ट्रेटने फैसला सुनाया तुम सबको तीन तीन महीनेकी सख्त सजा दी जाती है।

आजकल हिन्दुस्तानकी सत्याग्रहकी लड़ाअीमें मजिस्ट्रेटोंकी अदालतोंमें चलनेवाले हमारे मामलोंमें जो नाटक होता है अुसके साथ तुलना करने पर ट्रान्सवालका हमारा यह मुकदमा बहुत ही हंसने लायक मालूम होगा। सोलह आदमियोंका अिकट्ठा मामला सब पर अिकट्ठा अभियोग सबके खिलाफ अेक ही अिकट्ठी शहादत और सबको अेक ही अिकट्ठी सजा। अिस तरह सोलह आदमियोंको मुकदमा चलाकर सजा देनेमें अदालतको कोअी आधा घंटा लगा होगा।

स्टारके प्रतिनिधि और अखबारोंके प्रतिनिधि वहां मौजूद ही थे। अुन्होंने देश-विदेशोंमें चारों ओर समाचार भेजे कि कस्तूरबा वगैरा सोलह आदमियोंके पहले दलको सजा दी गयी। बाहर कैसा अूहापोह मचा होगा अिसका हमें पता नहीं चला। चार बहनोंके सिवा सभी पुरुषोंको हथकड़ियां पहना दी गयीं और वहांकी जेलमें ले गये।

६

दक्षिण अफ्रीकाके जेलखाने

अब आगे क्या लिखा जाय यह सवाल पैदा हो गया है। बाहर क्या क्या हुआ यह लिखूं या जेलके भीतर हमें क्या क्या अनुभव हुअे वह लिखूं। अिस समाजमें यह पढ़ा जायगा अुस समाजके बहुतसे भाअी बहनोंको कअी बार जेलका अनुभव हुआ होगा। अुन्हें मेरे अिस वर्णनमें रस आयेगा या नहीं यह भी अेक सवाल है।

लेकिन मुझसे सुनी हुअी बातों परसे मित्रोंने यह लिखनेका मुझसे आग्रह किया है। अिसलिअे मैं दक्षिण अफ्रीकाकी जेलोंका बयान देनेकी यहां कोशिश करता हूं। लड़ाअीका क्या हुआ वगैरा बातें तो गांधीजीके ही शब्दोंमें दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका अितिहास के दो भागोंमें मिल जाती हैं। अुससे ज्यादा मैं और क्या दे सकता हूं? लेकिन गांधीजीने स्वयं अिंडियन ओपीनियन के गुजराती अंकमें सन् १९१४में आखिरी लड़ाअीका जो अनुभव थोड़ेमें सुन्दर ढंगसे चित्रित किया है, वह अिस पुस्तकके अंतमें परिशिष्ट–१ में दिया गया है। वह अिस पुस्तककी पूर्तिके रूपमें और दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहकी लड़ाअीकी अैतिहासिक दृष्टिसे भी अुपयोगी मालूम होगा।

मुझे कहना चाहिये कि हम सब मामूली दर्जेके कैदी थे। आदर्श कैदी तो हम कहला ही नहीं सकते थे। हिन्दुस्तानकी जेलोंमें जैसे व्यवहारके लिअे हम तिकड़म शब्दका अिस्तेमाल करते हैं अुसमें विश्वास रखनेवाले तो हम नहीं थे। लेकिन कमजोरीके कारण वैसा व्यवहार करनेका मौका आता तब हम पीछे भी नहीं रहते थे। अितना ही नहीं हमें अपने अैसे व्यवहारके लिअे पछतावा भी नहीं होता था। परन्तु मेरे यह स्वीकार करनेसे अैसा मान लेनेकी जरूरत नहीं कि सज्जनोंको शोभा न देनेवाले अुस व्यवहारको हम अच्छा समझते थे। नैतिक दृष्टिसे अशोभनीय आचरण हम कभी नहीं करते थे। लेकिन जेलके नियमोंकी दृष्टिसे जो करने लायक नहीं होता अुसे जेल-कर्मचारियोंके जाने बिना हम कर लेते थे। अैसा करते पर हम पकड़े जाते तो झूठ कभी न बोलते थे। सच बात कह देते थे और नियम तोड़नेका

अपराध स्वीकार करके अुसकी सजा भी खुशीसे भोग लेते थे। अिससे अधिक सूक्ष्म दृष्टिसे सत्य और नीतिका आचरण करनेकी हमने कभी अपेक्षा तो नहीं की परन्तु अपनी शक्तिकी मर्यादा समझकर हमने अपने व्यवहारकी भी मर्यादा बना ली थी। अिसलिअे यह प्रकरण लिखनेका हेतु किसीको कोअी अनुकरणीय आचरण बताना नहीं है बल्कि दक्षिण अफ्रीकाकी जेलोंका वर्णन करना वहांके अनुशासन पर प्रकाश डालना और वहां हमारे दिन किस तरह बीते अिसका थोड़ासा वर्णन देना है।

वोक्सरस्टकी जेल घर जैसी थी। जेलर भले आदमी थे। बाहरसे भी फिनिक्समें अिस्तेमाल होनेवाली रोटी और केक—मीठी रोटी तथा केले वगैरा फल मिल सकते थे। बहनोंके रहनेका भाग अलग था। परन्तु वहां तो हमें छह दिन ही रखा गया। सातवें दिन हम सबको वहांसे हटा दिया गया। बहनें भी हमारे साथ ही थीं। नेटालकी राजधानी मेरित्सबर्गकी सेंट्रल जेलमें हमें ले जाया गया। जेलमें घुसते ही बहनोंको अलग कर दिया गया। अुसके बाद हमने अुनकी परछाअी तक नहीं देखी। बाहर आनेके बाद ही अुनके दर्शन किये।

मुझे तो जेलकी कोअी कल्पना भी नहीं थी। वज्र जैसी कठोर बड़ी बड़ी दीवारें और चारों ओर सुनसान! मेरा पहला ही अनुभव कड़वा रहा। हमें एक खानेमें ले जाया गया। सबकी जांच की गअी। जांचमें रुस्तमजी सेठकी सदरी और जनेअू (कस्ती) देखा गया। अब तक हिन्दुस्तानियोंको ट्रान्सवालकी जेलोंका अनुभव था। नेटालकी जेलमें हम सत्याग्रही हिन्दुस्तानी पहले ही पहल आये थे अिसलिअे जेलके कर्मचारी हमसे अपरिचित थे और हम जेलके प्रबन्धसे अन-जान थे। पहलेकी लड़ाअीमें जेलके अधिकारियोंने रुस्तमजी सेठकी सदरी और जनेअू धार्मिक चिह्नके रूपमें अुनके पास रहने दिये थे परन्तु यहां तो नया ही नियम था। अिसलिअे डॉक्टरने अुनकी सदरी और जनेअू अुतार डालनेकी सूचना की। अुससे कहा गया कि ट्रान्सवालकी जेलमें अिन्हें रखने दिया गया था और अुनके टिकिट पर अिस बारेमें जो कुछ लिखा हुआ था वह भी बताया गया। परन्तु डॉक्टरने कुछ नहीं सुना। यह ट्रान्सवाल नहीं यह तो नेटाल है। अिसलिअे विभागके मुखियाकी तरफसे जब तक अैसा हुक्म न मिलेगा तब तक हम अैसा करनेकी अिजाजत नहीं देंगे। अिस तरह डॉक्टर गरजने लगा। और पुलिसको अुसने हुक्म दिया यह सुदरा अपने

ही सब कैदी रहते हैं। पुलिसमें गोरे और काले दोनों होते हैं। काले पुलिसवालोंमें मुख्यतः यहांके मूल निवासी हब्शी होते हैं। अैसा होनेके कारण हिन्दुस्तानकी जेलोंमें नीच वृत्तिके जॉब-वार्डर जैसा आतंक फैलाते हैं वैसा आतंक यहां नहीं पाया गया। अिन पुलिसवालोंको वार्डर नाम दिया जाता है। जमादारको हेड वार्डर कहते हैं। हवालदारको चार्ज-वार्डर कहते हैं। गोरे पुलिसवालोंको सार्जेण्ट-वार्डर कहते हैं। और काले पुलिसवालोंको वार्डरके सादे नामसे पुकारा जाता है। अिसके सिवा हेड जेलर और डिप्टी-जेलर भी होते हैं। जो गवर्नर होता है अुसका अधिकार यहांकी जेलोंके सुपरिण्टेण्डेण्टके बराबर ही होता है।

खुराकमें सुबह मक्कीके आटेका दलिया होता — जरा गाढ़ा अंगुलियोंसे खाने जैसा। अुसमें सिर्फ नमक होता था। अुसे यहां पुपु कहा जाता है। दोपहरको हिन्दुस्तानियोंके लिअे चावल और साग रहता। चावल और साग जल्दीसे अच्छा खानेकी जरूरत नहीं। चावल बहुत ही हलकी किस्मके और कंकरोंसे भरपूर। हम अूपर अूपरसे बचाकर खाते और बाकी जो बाकी रहते अुनमें पानी डाल देते। टीनके जिस कटोरेमें खानेको दिया जाता अुसे हिलानेसे सब कंकर नीचे बैठ जाते। फिर चावलका अेक अेक दाना बीनकर खा जाते। कोअी पूछे कि सागका क्या हाल था? सागका अर्थ था अेक बैंगन या अेक गोभीका टुकड़ा या किसी दिन अेक-दो आलू। जो भी हो अुबालकर दे देते थे। नमक थोड़ासा चावल पर अेक तरफ रखा होता अुतना ही। स्वादमें बिलकुल संयमी कहूं या सात्त्विक कहूं? जरा भी सन्तोष न हो अैसा दोपहरका भोजन होता था। सुबह तो कुछ सन्तोष हो भी जाता था। शामको छः औंस डबल रोटी और मक्कीके आटेकी नमकीन कांजी दी जाती। अिसे तीन महीनेसे ज्यादाकी सजा होती अुसे कांजीके बजाय दूधके बिना तैयार की हुअी चाय दी जाती थी। रविवारको मटरके जैसी बीन्स नामकी अेक तरहकी दाल दी जाती जो यहांकी चना की दालसे ज्यादा स्वादिष्ट होती थी। अुसे अुबालकर अुसमें मसाला डालकर अच्छी तरह पकाया जाता और चावलके साथ दिया जाता था। अुसे ही हमारा पक्वान कहिये या मेवा कहिये। यह खाना खानेके बाद यहां अेक आश्वासन मिलता था और वह यह कि खानेके बाद जूठे कटोरे हटा कर रख देने होते थे। वे खानेवाले अुन्हें ले जाते और धोनेवाले धो डालते थे।

हमने पहला दिन पूरा किया और रात बीती। छत्तीस घंटेका अुपवास था जिसलिअे हमें कहीं बाहर नहीं निकाला गया। हमने भोजन किया तब तक हमारी कोठरीके सिवा और कुछ दिखाअी नहीं दिया। नहाना-धोना भी कैसे होता? परन्तु खानेके बाद गवर्नर फिर आया। मैंने अुससे नहानेकी व्यवस्था कर देनेकी प्रार्थना की। अुसने हेड वार्डरको हुक्म दिया कि हरअेकको बड़ा तौलिया दिया जाय और शामको काम करके आना उनके लिअे भोजनालय जानेसे पहले हमें नहा लेने दिया जाय।

पहले दिनके अुपवाससे कुदरती हाजतका कुछ ठिकाना नहीं था। परन्तु दूसरे दिन सुबह हम अुठे कि तुरन्त दरवाजा खुला। कोठरीके भीतर जो बाल्टी पेशाब या पाखानेके लिअे दी गयी थी वह हमीको अुठानी पड़ी। हमें अुसकी कोअी सूचना तो थी नहीं। अुस बाल्टीको साफ करनेके बाद जिसे पाखाने जाना था अुसे ले गये। मैं तो वहांका दृश्य देखकर घबरा गया। गली लगभग छह फुट चौड़ी थी। अुसके दोनों ओर छोटी पानीकी नालियां थीं। अुनमें हमेशा पानी बहता रहता था। वहां किसी भी मर्यादाके बिना साथ साथ और आमने-सामने बैठना पड़ता था। जितना ही काफी नहीं था। पाखाने बैठे हुओंके सिरमें हब्शी वार्डर थप मार मार कर जल्दी करनेको कहते रहते। जिस जंगली तरीकेसे हम तंग आ गये। फिर तो हम कभी वहां पाखाने गये ही नहीं। जहां काम पर जाते वहीं चले जाते या रातको बाल्टीका अुपयोग करते थे।

तीसरे दिनसे हमें काम पर ले गये। जेलके बाहर जेलका अेक बगीचा था। वहां लगभग सौ आदमी काम करते थे। हमें अुस बगीचेके अेक कोनेमें हब्शी पुलिसके साथ भेजा जाता था। बगीचेके अेक कोनेसे लगा हुआ सुन्दर मीठे पानीका छोटासा झरना बहता था। वह झरना लगभग पच्चीस फुट चौड़ा था। अुसमें से झारेमें पानी लेकर हम साग-भाजीके पौधोंको सींचने मिट्टी खोदने और नये पेड़ लगाते। जिस तरह हमारा काम चला। दातुन करने और झरनेके पास अूंची-नीची जमीनमें पाखाने जानेकी भी अच्छी सुविधा थी। जिस प्रकार हमारे दिन बीतने लगे।

७

जेलमें तिकड़म

हमारे दिन तो गुजरने लगे। कोओी खास तकलीफ नहीं थी। परन्तु दिल बेचैन रहता था। "हम जेलमें आ गये अिसका असर बाहर क्या हुआ होगा? लोगोंका अुत्साह कैसा होगा? सोचते थे कि जेल स्वर्ग जैसा होगा परन्तु यह तो नरक जैसा है। यहां जीभका संयम रखना पड़ता है वह भी जबरदस्तीसे। तू-तड़ाक सुनना पड़ता है। बापूजी कहते हैं कि जेलमें बाहरसे भी कभी मुझे अधिक अपमान सहने पड़ेंगे। तो क्या अिस प्रकार जीवन बितानेसे कौमकी जो सेवा करनेको बापूजी कहते हैं वह हो सकेगी? किस तरह? हमारे दुःख अुठानेसे किसीका फायदा होता हो हमारे जीवन-समर्पणसे किसीको जीवन-दान मिलता हो हमारे दुःख सहन करनेसे दूसरे लोगोंका खून सुलगता हो और हमारे बाद हमारी तरह अन्य लोग मरनेको तैयार होकर लड़ाओीमें पड़ते हों तब तो जेलमें हमारा आना भी कामका है दुःख अुठाना भी सार्थक है। परन्तु निश्चिन्त भावसे और बिना सोचे-विचारे विश्वास रखकर जेलमें जानेसे हमारे दुःख मिट जायेंगे और कौमकी जीत हो जायगी यह कैसे माना जाय? अिस तरहके विचार आते रहते थे। फिर आश्वासन मिलता अैसी अधीरता न रखनी चाहिये। हम तो सिपाही हैं। सिपाहीको सरदारके हुक्मकी तामील करनी चाहिये। प्रश्न या आपत्ति करना मूर्खका काम नहीं है। फिर यह खयाल आता बाहर क्या हाल होगा? क्या वातावरण बिलकुल ठंडा होगा? कोओी आता जाता मालूम नहीं होता। क्या लोग लड़ाओीमें भाग नहीं लेते होंगे? अिस प्रकार हृदयमें प्रश्नोत्तर होते ही रहते थे। परन्तु कोओी रास्ता नहीं सूझता था। हम बारहमें से दस रह गये थे। हममें से कोओी जेल-जीवनका अनुभवी नहीं था। किसीसे हमारा परिचय नहीं था। बाहरकी नयी पुरानी खबरें कैसे जानी जाय और किनसे कैसे पूछी जायं? यही बात रोज मनमें रमी रहती। जिनकी रटन सत्यकी सी होती तो सत्यके मूर्तस्वरूपमें दर्शन हो जाते। परन्तु आज दिन समझता है मुझे नहीं मिलता है। सब अपने स्वभावके अनुसार रटन करते हैं। हमारी भावना राजसी थी। और हृदयकी

दीनताके कारण यह भावना किस तरह सफल हुआी यह विचार करने पर सचमुच आश्चर्य होता है।

अुस मीठे झरनेके दूसरी ओर दूर दूर छोटे छोटे घर दिखाआी देते थे। वहांसे कभी कभी लड़कियां पानी भरने आती दिखाआी पड़ती थीं। वे घर स्वतंत्र हिन्दुस्तानियोंके—मद्रासियोंके थे। अेक दिन मैं बागके पौधोंकी क्यारियां खोद रहा था। अितनेमें दूरसे दो मद्रासी युवकोंको हाथोंमें लम्बी लकड़ी और अुसके सिरे पर मछली पकड़नेका कांटा लटकाये आते हुअे मैंने देखा। अुस झूलू सिपाहीको विश्वास था कि हम सब सज्जन हैं और भाग नहीं जायेंगे। गोरा वार्डर बहुत दूर था। किसी भी तरह देखा नहीं जा सकता था। अिसलिअे झूलू वार्डर हमारे बारेमें निश्चिंत था। अुन दो जवानोंको झरनेके परले किनारे खड़े देखकर मैं भी हाथमें झारा लेकर नीचे अुतरा। धीरेसे मैंने अुनसे पूछा: तुम कहां रहते हो?

अुन्होंने जवाब दिया: मैरित्सबर्गमें। ये हमारे घर दीख रहे हैं।

तुम दोनों शालामें पढ़ते हो?

हां।

मैरित्सबर्गमें हिन्दुस्तानी कांग्रेसका दफ्तर है, अुसे तुम जानते हो? "

हां।

तुम मि. नायडू और मि. पी. अेम. पटेलको जानते हो?

हां वे ही तो कांग्रेसका सब काम करते हैं।

हम सत्याग्रही हैं। मैं तुम्हें अेक सन्देश देता हूं अुसे अुनके पास पहुंचा दोगे?

जरूर, बड़ी खुशीसे।

तो मेरी तरफ अेक कागजका टुकड़ा और पेंसिल फेंको। कागजमें पेंसिल रखकर, सामने छोटासा पत्थर रखकर और डोरी लपेट कर मेरी ओर फेंको तो वह यहां पहुंच जायगा।

अुन युवकोंने बड़े अुत्साहसे वैसा ही किया। मैंने बहुत छोटासा पत्र लिख दिया

हम यहां हैं। यह पत्र लानेवाला जहां बतावे वहां आअिये। साथमें अिंडियन ओपीनियन और लड़ाआीसे सम्बन्ध रखनेवाली अखबारोंकी दूसरी कतरनें भी लेते आअिये।

वे युवक तुरंत चल दिये। सामिकों पर गये मुझे पूरा अेक घंटा भी नहीं हुआ होगा कि मैंने दूसरे चार सामिकोंसे घिरे हुअे चार आदमियोंको देखा। दो युवक वही थे और दो दूसरे थे। जरा दूरसे मैंने पहचान लिया कि ये तो वही आ गये। वे झरनेके अुस पार खड़े हो गये। मैं भी हाथमें छाता लेकर झरनेमें अुतरा और अुन्हें प्रणाम किया। मेरे सभी साथी दूरसे अुन्हें देखते रहे।

मैंने पुकारकर ही कहा — तुम्हारे पास सिगरेटकी डिबिया हो तो अुसमें कुछ पेन्स रखकर मेरी तरफ फेंक दो।

अुन्होंने वैसा ही किया। अुन्हें आश्चर्य तो हुआ। मैं सिगरेटका भूखा था। मैंने डिबिया लेकर अुस बूढ़े सिपाहीको दे दी और कह दिया — तुम दूर जाकर बैठो। यहांसे किसीको आते देखो तो मुझे खबर देना। तुम्हें यह तो विश्वास है न कि मैं भागकर नहीं जाअूंगा? मुझे अिन लोगोंसे बातें करनी हैं।

अुस सिपाहीने मेरा आभार माना। और "मुझे पूरा भरोसा है कि तुम भागकर हरगिज नहीं जाओगे। तुम्हें जो बातें करनी हों आरामसे करो" यह कहते कहते वह मेरी बताओ हुअी जगह पर जा बैठा। अुन आदमियोंसे अिंडियन ओपीनियन और दूसरे अंग्रेजी अखबारोंकी कतरनें मैंने लीं। बहुतसी बातें कीं और हर तीसरे दिन अिसी जगह मुकर्रर की हुअी सामग्री लेकर नियमित आनेका वचन देकर वे विदा हुअे। वे भी बहुत दिनोंसे सोच रहे थे कि हमसे किस तरह मिला जाय।

बस जिसकी जरूरत थी वह खुराक मिल गयी। सबके दिनोंकी तमाम अुदासी और शिथिलता दूर हो गयी। अिस घटनाके बाद बाहरका गरमागरम वातावरण जानकर हमें खूब आनंद हुआ और हमारे दिन भी अुमंगमें बीतने लगे।

८

जेलमें सत्याग्रह

मुझे कितनी ही जेलोंका अनुभव हुआ। परन्तु देश और विदेशकी सभी जेलोंमें हर बातका अेकसा ही अनुभव हुआ मानो वे सब अेक ही पक्षीके पंख हों। सभी जगह कर्मचारियोंकी अेक ही मनोवृत्ति। अैसा लगा कि सिर्फ हृदय ही नहीं बल्कि अुसके साथ जिसे हम साधारण बुद्धि — Common sense — कहते हैं अुसे भी गिरवी रखकर वे नौकरी करते हैं। और छोटेसे मामूली सिपाहीसे लेकर बड़े अफसर तक सब अेक-दूसरेके प्रति सन्देह और भयकी नजरसे देखते हैं। सरलता और सचाई तो किसीमें होती ही नहीं। जेल मेन्युअल ही अुनकी धर्म-पुस्तक होती है। कोअी जिज्ञासु हृदय जितनी अंधतासे कहिये या वफादारीसे कहिये बाअिबल गीताकी या अन्य किसी धर्मग्रंथका अध्ययन करे और अुसके अनुसार चले तो जरूर अुसके जीवनका कल्याण हो जाय। अिन तीन मामलोंमें मैंने सभी जेलोंमें समानता देखी। जो बात जेलके डॉक्टरोंके बारेमें हम यहाँकी जेलोंमें अनुभव करते हैं वही अनुभव मुझे दक्षिण अफ्रीकामें भी हुआ। अैसा लगा जैसे डॉक्टरके धंधेको शोभा देनेवाला प्रेमपूर्ण हृदय वे जेलके दरवाजेके बाहर रखकर ही जेलमें घुसते हैं। लेकिन यह सब वर्णन करनेकी यह जगह नहीं। अिसलिअे मैं मूल बात पर आता हूँ।

अब तो जेलमें सत्याग्रहियोंकी बाढ़ आने लगी। परिचित स्नेही आने लगे। हृदयकी भारी अुदासी जाती रही। परन्तु जेलके कुछ कष्ट खटकते थे। जो सत्याग्रही वहाँ जमा हुअे — हिन्दू या मुसलमान — वे मांस नहीं खाते थे। मांसाहारियोंको सप्ताहमें दो बार मांस दिया जाता था। और डॉक्टरोंकी रायके अनुसार शरीरकी शक्ति बनाये रखनेके लिअे शरीरमें जितने पदार्थ अेक खास मात्रामें पहुँचना जरूरी था। सख्त मेहनत करनेवाले कैदियोंके लिअे तो यह और भी जरूरी था। अिसलिअे हम घीकी मांग करने लगे। गवर्नरने हमारी मांगको हंसीमें अुड़ा दिया। हमने डॉक्टरसे प्रार्थना की कि हमारी तन्दुरुस्तीके ख्यालसे हम जो मांसाहारी नहीं हैं अुन्हें घी मिलना चाहिये। वे ताने मारने लगे — यहाँ तुम घी खाने आये हो? कौन तुम्हें

न्योता देने गया था कि जेलमें चलो? आज घी मांगा है, कल शक्कर और मक्खन मांगोगे। तुम्हें जेलको खालाका घर बना देना है क्यों?

अब क्या किया जाय? क्या लड़ना चाहिये? अिसकी चर्चा होने लगी। अितनेमें मुझे किसी कारणसे चार-पांच दिन दवाखानेमें जाना पड़ा। वहां भाअी प्रागजी देसाअी मिले। अुन्हें दूसरी जेलमें चेचकका टीका लगाया गया था अिसलिये बुखार आता था। अिस कारणसे अुन्हें सीधे दवाखाने ही ले आये थे। हमने अेक-दूसरेका आलिंगन किया। फिर दो-चार दिनमें ही भाअी सुरेन्द्रराय मेढ और भाअी मणिलाल गांधी आये। ये सब तो ट्रांसवालकी जेलके योद्धा थे। भाअी प्रागजी देसाअीने पूछा: यहां क्या हाल है? मैंने सब हाल कहा और बताया कि हमें कुछ न कुछ करना चाहिये। घी और स्वाभिमान दोनोंके लिये लड़ना चाहिये। और भी कुछ बातें शामिल करके लड़ना चाहिये। मुझे जेलके जीवनका अनुभव नहीं है। मैं तो नया ही हूं। अब आप सब आ गये, अिसलिये मेरी जिम्मेदारी कम हो गयी।"

सबको अलग अलग बन्द किया जाता था, परन्तु दिनमें तो सब मिलते ही थे। वातावरण गरम होने लगा। हमने अधिकारियोंसे विनती करनेका अेक भी अुपाय बाकी न छोड़ा। अिसलिये आखिरमें अुपवास करनेका ही निर्णय किया। यह तय हुआ कि रविवारके चावल और बीन्स लेकर सोमवारसे अुपवास शुरू किया जाय। सत्याग्रहियोंकी संख्या लगभग अेकसौ हो गयी थी। सबसे कहा गया, सबको समझाया गया कि जेलकी लड़ाई कठिन होती है। अुपवास करते हुअे भी काम करना पड़ता है। काम करते करते शरीर लाचार हो जाय तब वह अपने-आप काम बन्द कर देता है। अुपवास कितने करने पड़ेंगे यह निश्चित रूपमें नहीं कहा जा सकता। धर्म-प्रतिज्ञा करनी होगी। कमसे कम मांग रखी जायगी, परन्तु अिस मांगके लिअे सत्याग्रही प्रतिज्ञा ली हो वह तो जानको जोखिममें डालकर भी पूरी करनी होगी। अुसमें समझौता नहीं हो सकता। अैसा करनेमें शरीरके चले जानेकी भी संभावना है। अिसमें चालाकी करें तो आत्माकी अधोगति होती है। बहुतसे भाअी तैयार हो गये। सोमवारकी राह देखने लगे।

सोमवारकी सुबह हुअी। खुलनेका घंटा बजा। दरवाजे खुले। सब दातुन-कुल्ला करने लगे। दातुन-कुल्ला करनेके बाद लौटने पर भोजनालयके

पास अेक कतारमें खड़े रहना पड़ता था और पुपु के तैयार रखे कटोरोंमें से अेक अेक अुठाकर अपनी कोठरीमें ले जाना पड़ता था। हमने वहीं वार्ड-वार्डरको बता दिया कि हमने फैसला किया है कि जब तक हमारी मांग पूरी न की जायगी तब तक हम अुपवास करेंगे जिसलिये हम पुपु नहीं लेंगे। आप गवर्नर साहबको खबर दे दीजिये। वार्ड-वार्डर हम सबको अेक तरफ खड़े रहनेका कहकर साहबको बुलाने गया। गवर्नरको सुबह सात बजेके बजाय छह बजे अुठना पड़ा। वे शरीरसे जरा गोलमटोल थे। स्वभावसे चिल्लानेवाले। अपनी सत्ताका पूरा भान होनेके कारण जरा ढोंगी थे। फिर भी दिल अुनका कमजोर था। वे जल्दी जल्दी वहां आये। मैं तो अुनकी आंखोंमें पहले से ही आया हुआ था। कभी मौकों पर मैंने दूसरोंकी तरफसे शिकायतें की थीं और यहां भी अुन्होंने मुझे देखा। मराठोंको तो वे जानते भी नहीं थे। मेरा बिस्तर सवा महीने पुराना हो गया था जिसलिये वे मुझे ही भला-बुरा सुनाते हुअे आये — ये सब तुम्हारे ही काम हैं। नये कार्यकर्ताओंके आते ही अुन्हें भड़काकर तुम झगड़ा करने लगे।

क्यों तूफान शुरू कर दिया? अुन्होंने पूछा।

मैंने नम्रतासे कहा — साहब तूफान नहीं मचाया। हमने प्रतिज्ञा की है कि जब तक हमें घी न मिलेगा और अपमानजनक व्यवहार न होनेका आश्वासन नहीं मिलेगा तब तक हम खाना नहीं लेंगे।

अच्छा घी खाना है! खाना खाना! अब तो तुम्हें घी ही खिलाअूंगा — सीधे घर दूंगा। जाओ बिलकुल मूर्ख न बनो। खाना ले लो। अुन्होंने पहले धमकीकी आवाजमें बोलकर बादमें जैसे मायसे कहा मानो सिखावन दे रहे हों।

मैंने शांतिसे जवाब दिया — जब तक घी न मिलेगा तब तक न खानेका ही हमारा निश्चय है।

साहबका पारा अूपर चढ़ गया। खूब चिल्लाये और बादमें बड़े रोबके साथ हुक्म दिया — मैं जेलके गवर्नरकी हैसियतसे हुक्म देता हूं कि जेलके नियमके अनुसार हर कैदीको अपना अपना खाना यहांसे ले ही जाना चाहिये और कोठरीमें अपने सामने अेक घंटे पड़ा रहने देना चाहिये। जिसलिये सब खाना लेकर अपनी अपनी कोठरीमें जाओ।

मैंने कहा — हम आपका हुक्म मान लेते हैं।

अेक अेक करके खानेका कटोरा अुठाकर हम अपनी कोठरियोंमें घुसे। सब कोठरियां बन्द करके हमें अेक घंटे तक बन्द रखा गया। बादमें

सात बजते ही घंटी हुअी। कोठरियां खोलकर चौकमें सब कैदियोंको कतारमें खड़ा करके अलग अलग धर्मोंमें काम पर भेजनेका अिन्तजाम हो रहा था। अुस समय गवर्नर आये। जेलमें गवर्नरका बड़ा दबदबा होता है। वे फौजी ठाठमें रहते हैं। अुन्होंने हुक्म दिया जिसने खाना न खाया हो वह यहां अलग कतारमें खड़ा रहे।" हम लोग अलग कतारमें खड़े हो गये। कुल ७२ आदमी थे। जो छोटी अुम्रके थे अुन सबको अलग कर दिया और हुक्म दिया कि बाकी सबको पत्थरके पहाड़ पर ले जाओ। वहां अिन्हें पत्थर फोड़नेका काम सौंपो। जिससे सख्त काम लिया जाय। जेलमें अुपवास करके तूफान मचाना कितनी मूर्खताका काम है, यह मैं तुम्हें अच्छी तरह बता दूंगा। यह कहकर वे चले गये। हमने तो दिन इन बातोंकी आशा रखी ही थी अिसलिअे हमें अुनसे कोअी डर नहीं लगा। परन्तु पत्थरकी खानों पर पहुंचे तो वहां मालूम हुआ कि वार्डरोंको खानगी तौर पर हुक्म दिया गया है कि हममें से किसीको काम करते करते चक्कर आ जाय तो अुसे झोलीमें डालकर तुरंत दवाखाने ले जाया जाय। यह जानकर और झोली देखकर हमें आश्चर्य हुआ हम समझ गये कि साहब बहादुरका दिल धड़क रहा है। कोअी खास अुल्लेखनीय सख्ती मालूम नहीं हुअी।

अुन लड़कोंको तो बपोरेमें ही भेजा गया। अुसी दिन वे दोनों भाअी मिलने आये। लड़कोंने अुन्हें अुपवासका सारा हाल सुनाया और यह भी कहा कि गवर्नरने धमकी दी है और सबको पत्थरके पहाड़ पर भूखे पेट ले गये हैं। फिर क्या था? दोनों वहांसे भागे। शहरमें आकर हिन्दुस्तानी बाजारोंमें जोरदार हड़ताल करायी। बड़ी भारी सभा हुअी। मेरित्सबर्गकी जेलमें सत्याग्रहियों पर बड़ा अत्याचार हो रहा है। बिलकुल निकम्मी खुराक खानेको दी जाती है और अुनका अपमान किया जाता है। अिसलिअे सत्याग्रहियोंने जब तक अिस तरहका व्यवहार बंद न हो तब तक भूखों रहनेका निश्चय करके अुपवास शुरू कर दिया है। वगैरा मतलबके भाषण हुअे। मंत्रियों पर विरोधके तार भेजे गये और अिस मामलेमें तुरंत हस्तक्षेप करनेकी अुनसे प्रार्थना की गअी। औसी हड़तालें औसी सभायें और औसे प्रस्ताव दक्षिण अफ्रीकाके सभी बड़े गांवोंमें हुअे। मंत्रियोंके नाम अनेक तार गये। अखबार तो अिसी बातसे भर गये। जेलके कर्मचारी चौंक अुठे और घबरा गये। मुझे भी औसा अनुभव पहली ही बार हुआ। मेरित्सबर्गकी जेलमें दिये गये

अुपवासकी बात पांच हजार मील पार करके हिन्दुस्तानमें भी पहुंच गयी। अुस दिन शामको काम परसे लौटने पर भाअी श्री मापजी देसाअी सुरेन्द्रराय मेढ मणिलाल गांधी पंडित भवानीदयाल (अब संन्यासी भवानीदयाल) और मैं अिस तरह पांच आदमियोंको अलग कर दिया और खूनी अपराधी कैदियोंके अंधेरे ब्लाकमें बन्द कर दिया गया। हममें से कोअी अेक-दूसरेका मुंह नहीं देख सकता था। काम भी हमको अिसी वार्डमें अलग अलग सौंपा गया। अिस तरह दूसरा दिन भी बीत गया। दूसरे दिन सिटी मजिस्ट्रेट आकर हमारा हालचाल पूछ गये और हमें थोड़ी धमकी भी दे गये। तीसरा दिन बुधवार शुरू हुआ। दवाखानेमें मिस्टर डीक नामके अेक कम्पाअुण्डर थे। हमारा अुपवास अुन्हें कुछ खटका। मेरे साथ वे कुछ हिलमिल गये थे अिसलिअे कहने लगे — तुम यह सब बेवकूफी कर रहे हो। जेलके गवर्नरकी स्थिति भी विषम बना रहे हो। तुम्हें घी देना अुसके हाथकी बात नहीं है। यूनियन पार्लियामेंटने जो खाना निश्चित किया है, वह तुम किस तरह बदलवाओगे? तुम मर जाओ तो भी पार्लियामेंट जेलकी खुराक क्यों बदलेगी? अिसलिअे तुम्हें अपनी मर्यादा समझनी चाहिये। अब भी चेत जाओ और घीके सिवा दूसरी मांगें स्वीकार हो जाय तो अुपवास छोड़ दो। मैंने अुसे मि॰ डीकके भाषणके जवाबमें अितना ही कहा — अिसमें हमारी बड़ी परीक्षा हो सकती है। लेकिन हमें विश्वास है कि अन्तमें सरकारको हमारी मांग स्वीकार करनी ही पड़ेगी। जब आप यह बात साबित हुअी देखेंगे तब आप ही हमें नमस्कार करेंगे। आपकी सद्भावनाके लिअे मैं आपका आभार मानता हूं।

जब हम पांच आदमियोंको अलग किया गया तब हमने विचार किया — बहुत अच्छा हुआ। हमारी लड़ाअीका आधार अब पांच आदमियों पर ही रह गया है। सब हार जायं तो भी जब तक हम पांच अटल रहेंगे तब तक हमारी जीत है। लेकिन दूसरे ही दिन सवेरे बहुत बीमार हो जानेके कारण पं॰ भवानीदयालको दवाखाने भेज दिया गया। अिनके सिवा अुपवासके कारण काम करते करते बेहोश हो जानेवाले पांच-सात अन्य लोगोंको भी दवाखाने ले जाया गया। तीसरे दिन बारह बजे भाअी रामदास गांधी अन्य विद्यार्थियोंके साथ कतारमें बैठे थे। अुपवासको बावन घंटे हो गये थे। रामदास जरा सिर घूमनेके कारण जमीन पर लेटे हुअे थे। सामने

भूखसे भरे हुअे कटोरे पड़े थे। अितनेमें जेलका बड़ा जेलर वहांसे गुजरा। रामदासको पड़ा हुआ देखकर वह रुका और पूछने लगा: अिस तरह क्यों पड़े हो? रामदासने कहा: सिरमें चक्कर आ रहा है। यह सुनकर वह विचारमें पड़ गया। तुरंत ही लौट पड़ा। गवर्नरके दफ्तरमें गया और गवर्नर साहबसे कहा: साहब, अिन सत्याग्रहियोंका कुछ न कुछ निपटारा कीजिये। अिन लोगोंको बावन घंटे तो हो गये। मेरी स्त्री मुझे सुबहकी चाय देनेमें पांच मिनटकी भी देर कर देती है तो मेरे पैर लड़खड़ाने लगते हैं और मेरा सिर चक्कर खाता है। अिन्हें तो बावन घंटे हो गये हैं। अुस पारसीके लड़केके सिरमें चक्कर आ रहे हैं। अिस तरह भूखों मरनेसे किसी लड़केको कुछ हो गया तो मेरी और आपकी क्या दशा होगी? मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप अिसका जल्दी निपटारा करें, नहीं तो कोअी अघटित घटना हो जायगी और अिन छोटे लड़कोंमें से कोअी मर गया तो अुसकी जिम्मेदारी मेरे सिर नहीं होगी।

डेप्युटी जेलरकी बात सुनकर गवर्नर और दूसरोंने कुछ विचार किया और वे शामके लिअे जिन कोठरियोंमें हमें बन्द किया गया था वहां आये। अेकाअेक समयसे पहले दरवाजा खुला। हमने जेलके अनुशासनके खातिर खड़े होकर अुन्हें सलाम किया। गवर्नरने मुझसे कहा: तुम जानते हो कि सारी बात मेरे हाथमें नहीं है? मुझे हुक्म मिलनेमें देर भी हो सकती है। मैं तो मानता हूं कि सरकार तुम्हारी मांग स्वीकार नहीं करेगी और आखिर तुम्हें थक कर भी अुपवास छोड़ना पड़ेगा। परन्तु अिन छोटे बच्चोंको तुमने किसलिये अुलझाया है? अुनसे कह दो कि वे खाना खावें।"

मैंने जवाब दिया: साहब, आपका अनुमान गलत है। वे लड़के तो ऐसे हैं कि मैं यदि अुन्हें खानेकी सलाह देने जाअूं तो वे तिरस्कार करके मुझे निकाल दें। अुन्होंने जो प्रतिज्ञा ली है अुसकी जोखिम भी वे अच्छी तरह समझते हैं। अिसलिअे अिस विषयमें वे किसीका कहना नहीं मानेंगे। और मानें तो भी अुन्हें अपनी प्रतिज्ञा तोड़नेकी सलाह देना मेरा धर्म नहीं है।

मेरा निश्चित जवाब सुनकर साहब चिढ़े: "हां हां मैं समझ गया। तुम मुझे धोखा देने चले हो! यह सब शरारत तुम्हारी ही है। अिनमें से कोअी लड़का मर गया तो अुसकी जिम्मेदारी तुम लोगों पर होगी।

मैने तुरंत कहा नहीं साहब हममें से किसीकी भी मृत्युके लिये हम जिम्मेदार नहीं होंगे बल्कि सरकार होगी। यहां सरकारके प्रतिनिधि आप हैं। अिसलिये सारी जिम्मेदारी आपके सिर मानी जायगी।"

अच्छा नहीं मानना हो तो न मानो" यह कहकर वे वहांसे चले गये। कोठरी बन्द हो गयी। अुसके बाद भाअी रामदासको तुरत दवाखाने ले जाया गया।

अिस तरह बुधवारका दिन भी बीत गया। अंतमें गुरुवारका सूर्य अुगा। तलाश करने पर मालूम हुआ कि ७२ के बजाय ४१ अपनी प्रतिज्ञा पर टिके रहे। अुनमें से छब्बे तो १ थे। बाकी लोगोंने खाकाकी थी। बन्द कोठरीमें तीन चारको बन्द करके खाना दिया जाता था अिसलिये अधिकारियोंको पता न चलता था कि किसने खाया और किसने नहीं खाया। अुन्हें तो सिर्फ अितना मालूम होता था कि अमुक संख्याने नहीं खाया। अिससे फायदा अुठाकर कुछ लोग बारी बारीसे खाते थे। अिस प्रकार संख्या बनाये रखना सर्वथा अनुचित था। जो प्रतिज्ञा ली गयी हो अुसे शुद्ध स्वरूपमें पालना चाहिये। अुसमें चालाकी शोभा नहीं देती। गुरुवारकी सुबह हमें काम करने बिठाया गया। काम तो नामको ही था। वहां अेक सार्जेण्ट-वार्डर बन्दूक लेकर आया और मेरे पास मेज पर बैठ गया। बैठते ही अुसने मुझसे कहा सुनो मुझे साहबकी तरफसे हुक्म मिला है कि तुम जरा भी किसीसे बात करो तो मैं तुम्हें गोलीसे अुड़ा दूं। अुसके बोलनेके ढंगसे मैं समझ गया कि किसीसे बात न करने देनेकी गवर्नरकी सूचनाकी वह हंसी अुड़ा रहा है। थोड़ी देर हुअी कि मि डीक आ गये। वे मेरे सामने बैठ गये और मुझसे कहने लगे मुझे सचमुच तुम्हारे साथ हमदर्दी है। तुमने कमाल कर दिया।" अिस प्रकार हमें भूखे मरनेवालोंका विचार कैसे बदला यह मैं कुछ समझा नहीं। परन्तु थोड़ी देरमें वे बोल अुठे मि गांधी बड़ा खतरा अुठा रहे हैं। पांच हजार आदमियोंकी जान और अुसमें डेढ़ सौ छोटे छोटे बच्चोंवाली स्त्रियां! डॉक्टरी दृष्टिसे यह बड़ा खतरा है।" मैं समझ गया कि बाहर कोअी न कोअी भारी गड़बड़ होनी चाहिये। पिछले चार दिनोंकी हमें कोअी खबर नहीं थी। मि डीक तो और कुछ बोले बिना चले गये। थोड़ी देर हुअी और अस्पतालका जूलू वार्डर आया। मुझे पाखानेकी हाजत हो रही थी। मैंने सार्जेण्ट-वार्डरसे अिजाजत मांगी "मुझे पाखाने जाना है। तुम अिजाजत दो

तो मैं दवाखानेके साफ पाखानेमें जिस वार्डरके साथ हो जाऊँ। अुसने अुस वार्डरसे मुझे ले जानेको कह दिया। वार्डर पाठान था। दवाखानेमें कोअी था नहीं। अुसने मुझे पाखानेके पास ठहरनेको कहा और आफिसमें जाकर 'स्टेट्समैन' नामका अंग्रेजी दैनिक लाकर पाखानेमें रख दिया और मुझे कहा — जिस पाखानेमें जाओ। मुझे आश्चर्य हुआ। मुझे तो दस्त भी लगा नहीं था। मैंने अखबार मांगा भी नहीं था। परन्तु अुसके हृदयमें कैसी अुमंग अुठी होगी। मैंने दरवाजा खोला। पाखानेमें घुसकर दरवाजा बन्द करके वह अखबार हाथमें लिया। गांधीजी मि० पोलाक मि० कैलनबैक और कूच करनेवाले हजारों मनुष्योंके फोटो और कूचका विस्तृत वर्णन, तीनों नेताओंकी गिरफ्तारी और अुन्हें दी गयी सजा वगैरा समाचारोंसे भरा अखबार भरा था। मैंने जल्दीसे पढ़ा। ठीक पौन घंटा लगाया और फिर बाहर निकला।

फिर तो बेलकी पत्रिकाकी आवृत्ति निकलती ही। जिस प्रकार अुपवासमें भी खूब आनन्ददायक घटनाओंके समाचार मिल जानेसे हमें अुपवासकी कमजोरी कुछ मालूम नहीं होती थी। यह न पूछिये कि मुझे जो समाचार मिले वे अुन्हें मैंने सब जगह कैसे पहुंचाया था। लेकिन तीन दिनका अुपवास हमसे डॉक्टर और गवर्नरके लिये ज्यादा भारी हो गया। फिर तो डॉक्टरको अस्पतालमें स्थायी रूपसे रख लिया गया। कुल मिलाकर १८ अुपवासी दवाखानेमें पड़े थे। डॉक्टर और गवर्नर दोनोंको चिन्ता होने लगी। गवर्नर साहब दस दस मिनटमें दवाखानेमें आकर अुपवासियोंकी तबीयतके बारेमें पूछताछ करते थे। डॉक्टर चिन्तातुर होकर सबकी जांच करते थे। चार दिनके अुपवास! अुनका भरोसा नहीं। कमजोर दिल घड़ीभरमें बन्द हो सकता है। जिसलिये यह तो बड़ा खतरा माना जायगा। जिस गांधीके लड़केको कुछ दूध पिलाया जाय तो बहुत अच्छा हो। अुसके गलेकी नली सूख गयी है। जैसे-जैसे अुपवास लम्बा होगा वैसे-वैसे ज्यादा मुश्किली और अन्तमें श्वास लेना भी मुश्किल हो जायगा। यह थोड़ा दूध पीले तो खतरेसे बच जाय। जिन लड़कोंने तो गजब कर दिया! अुपवासको १ घंटे होने आये। कैसे रहा जाता है जिन लोगोंसे? जिस प्रकार चिन्तातुर होकर डॉक्टर बोलते और गवर्नर घबराते। यह सब तमाशा देखकर खुद वार्डरोंका जमादार मेरे पास आया। ७ फुट अूंचा जवान

२५ पौंडसे भी ज्यादा वजन। मानो त्रेतायुगके भीमसेनका कलियुगी संस्करण हो! हाथमें सीसमकी चमकीली गदा घुमाता हुआ वह आया। गोरा वार्डर अुस समय नहीं था। वह जमादार मेरे सामने बैठ गया। हंसते हुअे चेहरेसे मानो प्राण-विनिमय कर रहा हो अिस तरह मेरे सामने देखता रहा और मेरे कंधेको थपथपाते हुअे कहने लगा: मर्थोता म खूला मर्थोता (सच्चा मर्द सच्चा मर्द)। मैंने पूछा: "क्यों जमादार, क्या है?" अुसने फिर अिधर अुधर नजर डालकर मुझे शाबाशी देते हुअे कहना शुरू किया: "अिन गोरे लोगोंको तुमने खूब सीधा किया है। वह बड़ा साहब दिनमें शायद ही अेक बार जेलमें घूमने आता था। अुसके बजाय अब बार-बार जेलमें भाग-दौड़ करता है। और अुसका दिल तो जैसे सूख ही गया हो अिस तरह परेशान दिखाअी देता है। परन्तु तुम सच बात बताओ। अितने अधिक दिन खाना खाये बिना रहा जा सकता है? तुम लोगोंने कुछ मंत्र साध रखा सीखा है। तुम्हारे पास कोअी मंतर-जंतर होना चाहिये। मैं तो अेक दिनकी भूखसे ही मर जाअूं। परन्तु तुम चार चार दिनके अुपवासके बाद भी शान्तिसे काम कर रहे हो!" मैंने कहा: "जमादार, हमारे पास कोअी मंतर-जंतर नहीं है। परन्तु भगवानके प्रति हमें श्रद्धा है और वही हमें बचाता है।"

"सच बात है, सच बात है। तुम भगवानके बंदे हो।" यह कहकर वह चला गया।

अुसको गये ज्यादा देर हुआ होगा कि जेलके गवर्नर मार्शके दरवाजेमें घुसे। वे अकेले ही थे। अुनकी मुखमुद्रा पर घबराहटकी छाया फैली हुअी थी। वे मेरी तरफ आने लगे। मेरे नजदीक आ पहुंचे तो अनुशासनके खातिर मैं खड़ा होने लगा। परन्तु अुन्होंने लम्बा हाथ करके मुझे पकड़कर वापस बिठा दिया। "बैठ जाओ, तकलीफ न करो" यह कहकर वे मेरे सामने अुकड़ू बैठ गये। फिर मुझसे कहने लगे: "मेरा अेक काम करो। गांधीका यह लड़का दवाखानेमें है। डॉक्टर कहता है कि यह लड़का थोड़ा भी दूध न पियेगा तो अुसकी अंतोंकी नली सूख जायगी और साफ नहीं किया जायगा। अिसका अुल्टा नतीजा होगा। वह मेरा कहना नहीं मानता। तुम चलो और अुसे थोड़ा दूध लेनेको कहो। अैसा करनेसे अुसकी या तुम्हारी प्रतिज्ञा हरगिज नहीं टूटेगी। मेरे और परमेश्वरके खातिर भी

तुम मेरे साथ चलो।" गवर्नरकी आवाज और बोलनेके अुनके ढंगसे अुनके हृदयकी घबराहट मैं समझ गया। अुन्हें अिनकार करनेकी मेरी हिम्मत नहीं हुअी। अिसी तरह रामदाससे कहने जानेका साहस भी नहीं हुआ। लेकिन अिस धर्म-संकटसे बचनेका अुपाय मुझे सूझ गया। भाअी मणिलाल गांधीको मुझसे कोअी पचास फुट दूर बिठा रखा था। अुनकी तरफ अिशारा करके मैंने कहा — वे मणिलाल गांधी बैठे हैं। वे मुझ लड़केसे बड़े भाअी हैं। मेरे बजाय आप अुन्हें ले जायेंगे तो संभव है यह काम बन जाय। मेरे यह कहते ही गवर्नर साहब मेरे पाससे अुठ गये। मणिलालका हाथ पकड़कर अुन्हें समझाने ले गये। मणिलालने रामदासको गवर्नर साहबकी बात सुनाअी। रामदास सोते सोते बोल अुठे — तुम क्या समझकर मुझे कहने आये हो? क्या मैं अितना कमजोर हूँ कि जीनेके लिअे भी ली हुअी प्रतिज्ञा तोड़ दूँगा? अिसलिअे तुम जिस दरवाजेसे आये हो अुसीसे वापस चले जाओ। रामदासने जो कुछ कहा वह मणिलालने गवर्नर साहबको समझाया। वे निराश हो गये। यह बात लगभग दोपहरके ढाअी-तीन बजे हुअी। दो घंटे बीत गये। साढ़े चार या पांच बजे होंगे कि हेड वार्डर हमें बुलाने आया — तुम चारोंको गवर्नर साहब यार्डमें बुला रहे हैं। हम अुठे। धीरे-धीरे यार्डमें गये। दूसरे अुपवासी भी यार्डमें लाये गये थे। वहां गवर्नर साहब पहलेकी तरह ही रोबसे हमें कहने लगे — मुझे अभी तार मिला है कि सरकारने तुम्हारी घीकी मांग मंजूर की है। तुम्हें रोज आधी छटांक घी मिलेगा। आज हमारे पास घी नहीं है। परन्तु मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि कलसे तुम्हें घी मिलेगा। आअिन्दा तुम वैसा मूर्खताका काम कभी न करना। तुमने कोअी फसाद किया होता अुद्दतता की होती तो मैं तुम्हें सीधा कर देता। पर तुम तो मूर्खतापूर्ण कदम अुठाकर अुपवास करने लगे। मैं तुम्हें सजा भी किस बातकी दूँ?

गवर्नर साहबका कहना सुनकर हमें हंसी आ गअी। फिर तो हमने सारी बातोंकी सफाअी की। घी अच्छी किस्मका होना चाहिये। अुसका नमूना भी हमने ही पसन्द किया। दूसरा मुद्दा हमारे स्वाभिमानका था। कुछ गोरे वार्डर हमें कुली कहकर हमारा अपमान किया करते थे। यह अपमान अब न हो अिसका हमने आश्वासन मांगा। गवर्नर साहबने घंटी बजाकर सबको अिकट्ठा किया और वैसा अपमान न करनेकी और साथ ही

हमें कोअी तकलीफ न देनेकी सख्त हिदायत दी। फिर हममें से कुछ लोगोंको तकिये गद्दे और जूते नहीं मिले थे अिन सबकी हमने मांग की। जेलके भंडारमें जितना सामान मौजूद था वह सब वहीं हमारे सामने रख दिया गया और बाकी तैयार करा देनेका वचन दिया गया। फिर आखिरी मांग हमने यह की कि सत्याग्रहके पहले हम सब जैसे अेक साथ रहते थे वैसे ही सबको फिरसे अेक साथ कर दिया जाये। यह भी अुन्होंने मंजूर किया। बस काम पूरा हुआ। सब जगह आनंद ही आनंद छा गया। गवर्नर साहबके सामने ही जेलके अनुशासन जैसी कोअी चीज नहीं रही। कितने ही वार्डर-वार्डर और हेड वार्डर तो हमें जीत पर मुबारकबाद देने आये। चार दिन पहलेकी जेल चार दिनकी तपस्याके बाद मंदिर जैसी लगने लगी। अुसकी सारी भयानकता दूर हो गयी और स्वाभिमानके साथ हमारे दिन बीतने लगे।

अुपवासके बाद भोजनके मामलेमें असंतोष रहा परन्तु वह भोजनालयके कर्मचारियोंकी बदमाशीके कारण रहा। मौका मिलने पर वह भी सब ठीक हो गया। जेलवालोंने भोजनालयकी देखरेख रखनेके लिये सत्याग्रहियोंमें से किसी अेकको रखना मंजूर किया। और हम सबने भाअी सुरेन्द्रराय मेढको रख दिया। अिस प्रकार भोजनालयकी शिकायत भी दूर हुअी।

परन्तु यहां हमारी तीन महीनेकी मियाद पूरी नहीं हुअी। लगभग पचीस दिन रहे कि हममें से दो साथियोंको यरवडा सेंट्रल जेल भेज दिया गया। वहां फिर नया दूल्हा और नयी बारातवाली बात हुअी। वहां भी चार दिनके अुपवास हुअे। वहांके सुपरिन्टेन्डेन्टको डौन कहा जाता था। वह बड़ा क्रूर और जालिम आदमी था। अुपवासके दिनोंमें भाअी भागवी देसाअी पर हमला हुआ जिससे अुन्हें अेक महीने खाटमें पड़ा रहना पड़ा। चार दिनके अुपवासके अन्तमें डौन समझौता करने आया। वह बोला मेरे मातहत दो हजार दस फौजी कैदी रह चुके हैं लेकिन किसकी मजाल थी जो मेरा अनुशासन तोड़ सके? तुम्हींने मेरा अनुशासन भंग किया है। तुमने मुझे जितना तंग किया अुतना और किसीने नहीं किया। अुसके कहनेका हेतु भी यही था कि अुसे यह नहीं सूझता कि वह किससे कैसे निपटे। हमने अुसे गालियां दी होंगी अुसके साथ अुद्धत बरताव किया होगा या अुसका हुक्म न माना होगा तो अुसने हमें

जमीनका सौदा कर लिया होता। परन्तु हमने अपनी नम्रता और स्वयं दुःख अुठा लेनेकी कार्रवाअीसे अुसके सब रास्ते बंद कर दिये थे।

सत्ताअीस दिनके निवाससे यह जेल भी जो पूनी-पुरानी थी और जहां पृथ्वीके नरक जैसा कष्ट था रहने लायक बन गयी और २२ दिसम्बर १९११ को पहले-पहल पकड़ी गयी टोलीका छुटकारा हुआ।

९

स्त्रिओंका रंग जमा

पहले दलको सजा होनेके बाद पहलेसे की हुअी व्यवस्थाके अनुसार और स्त्री-पुरुष क्या करनेवाले थे? खास तौर पर अिमिग्रेशन और व्यापारी परवानोंके कानून तोड़नेके रास्ते तो सबको मालूम ही थे। दूसरे कानून तोड़नेकी कल्पना तक नहीं की गयी थी। श्री कस्तूरबाके जेलमें जाते ही ट्रान्सवालमें ग्यारह बहनोंका अेक दल तैयार हो गया। अिन बहनोंने पहलेसे ही तैयारी कर रखी थी। गांधीजीने अुन्हें बहुत चेतावनी दी। अुन्होंने जेलकी असुविधाओं और कष्टोंका वर्णन अिन बहनोंको सुनाया। खाने-पहनने ओढ़ने-बिछाने और बैठने-अुठने तकमें हर घड़ी अंकुशमें रहना पड़ता है। सख्त काम करना पड़ता है। कपड़े धोनेका पीसनेका और अन्य काम वहां जब करना पड़ता है वगैरा बहुतेरी चेतावनियां दीं। पर अुनमें से कोअी बहन पीछे हटनेवाली नहीं थी। सबके मनमें बड़ी अुमंग थी। अुनमें से कुछ बहनोंके पास दूध पीते बच्चे थे। फिर भी वे सब तैयार हो गयीं। अुनके नाम ये हैं

१ श्रीमती थंबी नायडू, २ श्रीमती अेन पिल्ले ३ श्रीमती के मुरुगेसा पिल्ले ४ श्रीमती अे पी नायडू, ५ श्रीमती पी के नायडू, ६ श्रीमती चिन्नस्वामी पिल्ले ७ श्रीमती अेन अेस पिल्ले ८ श्रीमती आर अे मुदलिंगम् ९ श्रीमती भवानीदयाल १० श्रीमती अेम पिल्ले, और ११ श्रीमती अेम बी पिल्ले।

ये बहनें जेलमें जानेको तैयार हुअीं लेकिन जायं कहां? जोहानिसबर्गमें बिना परवानेके फलोंकी फेरी लगाने पर सरकार पकड़ नहीं रही थी। अिसलिअे ये बहनें ऑरेंज फ्री स्टेटमें गयीं जहां अिमिग्रेशन-कानून कड़ाअीके साथ अमलमें लाया जा रहा था। वहां भी किसीने अुन्हें नहीं पकड़ा। तब वे

सब वहां फेरी लगाने लगीं। फिर भी कोअी नतीजा नहीं आया। अिस पर ये सब ट्रांसवालमें होकर परवानेके बगैर नेटालमें घुसीं परन्तु वहां भी नहीं पकड़ी गयीं। सरकार अुन्हें कैसे पकड़ती? अुनके लिअे तो भविष्यके गर्भमें महान कार्य निहित हो चुका था।

नेटालमें जब अुन्हें पकड़ा नहीं गया तो अुन्होंने न्यूकैसल नामके गांवमें जाकर रहनेका निश्चय किया। वहां कोयलेकी खानें हैं। खानोंमें हजारों हिन्दुस्तानी गिरमिटिये थे। अुन्हें काम छोड़कर हड़ताल करनेको अुकसाना था। जब बहनें न्यूकैसल गयीं और मि. लेजरस नामके अेक हिन्दुस्तानी अीसाअी सज्जनके यहां ठहरीं। ये भाअी मध्यम श्रेणीके थे। जमीनके अेक छोटेसे टुकड़े पर मेहनत करके अपना गुजारा करते थे। अुन्होंने अिन बहनोंका आदर-सत्कार किया। बहनोंने दिनभर मजदूरोंके बीचमें घूमना शुरू किया। लगभग सभी बहनें मद्रासी थीं और मजदूरोंमें भी अधिकांश मद्रासी ही थे। बहनोंके प्रेमपूर्वक समझानेसे मजदूरोंके दिल पिघल गये। अुन्हें जीवनमें आज तक जो बात समझमें नहीं आयी थी वह अब समझमें आ गयी। अुनके हृदयमें विश्वास हो गया कि "यह लड़ाअी तो हमारे धर्मके लिअे है। हम परसे तीन पौंडका कर अुठवा देनेके लिअे पापी राजा न मर लड़ाअी छेड़ी है। राजाके समान बड़े भाअी रामाकी रानीको सरकारने जेलमें डाल दिया है, अुनके पुत्रोंको जेलमें डाल दिया है, यह सब हमारे धर्मके लिअे हो रहा है, तब हम कैसे बैठे रह सकते हैं? और जो बहनें हमें कहने आयी हैं अुन्हें तो तीन पौंडका कर देना नहीं पड़ता। अिसलिअे अुनकी शिकायत अुनके स्वार्थके लिअे हरगिज नहीं है। अिन सीधी-सादी समझसे अुन भोले-भाले लोगोंका हृदय लड़ाअीमें शरीक होनेके लिअे प्रेरित हुआ। धीरे-धीरे वातावरण गरम हुआ और हड़ताल शुरू हो गयी। अब सरकारको यकीन हो गया कि अिन बहनोंको आजाद रहने देनेमें लाभ नहीं होगा। अिसलिअे अब ग्यारह बहनोंको अलग पकड़ लिया। अुन्हें भी तीन-तीन महीनेकी सजा देकर मेरित्सबर्गकी जेलमें भेज दिया गया।

सरकारकी अिस कार्रवाअीका असर जैसे सोचा था अुससे अुलटा हुआ। और बहनोंकी जेलयात्राने हजारों मजदूरोंके दिलोंमें जोश भर दिया। अुन्होंने अेकके बाद अेक खानोंमें हड़ताल करना शुरू कर दिया। खानोंकी हड़तालके बाद भी बड़ी मालूम नहीं पड़ा, पर रंग जमाया। हड़तालियोंकी तादाद

बढ़ने लगी। यह सब हकीकत गांधीजीको हर रोज मिलती रहती थी। गांधीजी फिनिक्समें रहते हुअे वहाँसे अेक दो बार जोहानिसबर्ग हो आये थे। अुन्हें जाते-जाते अिमिग्रेशन-अफसरको परवाना नहीं बताया तो भी अुन्हें पकड़ा नहीं गया। जब थंबी नायडूके सिर पर हड़तालियोंकी जिम्मेदारी आ पड़ी तो अुन्होंने गांधीजीको न्यूकैसल बुलाया। गांधीजी वहाँ गये। जिन सज्जनने सत्याग्रही बहनोंका सत्कार किया था अुन्हींके यहाँ वे ठहरे। वहाँ यह जानकर कि गांधी राजा आये हैं मजदूरोंकी भीड़ अुमड़ पड़ी। खानोंके मजदूरोंकी सारी कोठियोंमें तुरन्त हड़ताल हो गयी। मि० लेजरसके घरवालोंने तो हद ही कर दी। अुनका घर अेक तीर्थस्थान बन गया। अुन्होंने अपने घरकी सारी सामग्री तमाम सामान लानेवाले लोगोंकी सेवामें हाजिर कर दिया। सैकड़ों मनुष्योंको खिलानेका काम भी अुन्होंने अपने कंधों पर ले लिया। लेकिन दो चार दिनमें ही लोगोंका जोर बढ़ गया। अिन सबका प्रबन्ध कैसे किया जाय? अितने ही में खानोंके मालिकोंने गांधीजीको बुलाया। अुनसे गांधीजीने कहा हिन्दुस्तानियोंको अनेक दुःख हैं परन्तु अुनके लिये मैं अिस सत्याग्रहकी लड़ाईमें मजदूरोंका अुपयोग करना नहीं चाहता। सरकार मजदूरों परसे तीन पौंडका कर अुठा दे तो मैं खुशीसे मजदूरोंको काम पर जम जानेकी सलाह दे दूंगा। मालिकोंने बताया कि यह अुनके हाथकी बात नहीं है, पर अैसी हड़तालका नतीजा खराब होगा। हड़तालियोंको बहुत दुःख अुठाना पड़ेगा वे परेशान होंगे आदि बहुतसी चेतावनियां और धमकियां अुन्होंने गांधीजीको दीं। खानोंके मालिकों और गांधीजीकी अिस मुलाकातकी बात सुनकर हड़ताली और भी अुत्तेजित हो गये।

गांधीजीने सोचा कि जिन लोगोंने हड़ताल की है अुन्हें अपनी कोठरियां छोड़ ही देनी चाहिये नहीं तो मालिक अुन्हें तंग करेंगे अभी कठिनाअियां खड़ी करेंगे और हड़ताली टिक न सकेंगे। अिसलिअे गांधीजीने अुन लोगोंको अपनी कोठरियां बन्द करके अपने साथ सिर्फ पहनने-ओढ़नेका सामान लेकर बाहर निकल आनेकी सलाह दी। यह सलाह सुनकर हजारों स्त्री-पुरुष गठरियां ले लेकर तैयार हो गये। वे सब न्यूकैसलमें अिकट्ठे हुअे। अुन्हें पहले ही समझा दिया गया कि हड़ताल करोगे तो तुम्हें जेलमें जानेकी तैयारी रखनी पड़ेगी। जेलमें जो भी कष्ट अधिकारी देंगे अुन सबको सहन करना पड़ेगा। यह सब सहन करनेकी शक्ति न हो तो हड़तालमें शामिल न हों और

वापस काम पर चले जाओ। परन्तु अुनमें से कोअी भी अैसा कमजोर न निकला। अुन्होंने यही कहा कि "आप जब तक लड़ेंगे तब तक हम भी नहीं बदलेंगे।" लेकिन अिस तरह जमा हुअे मनुष्योंका फिर क्या किया जाय? अुन्हें भी पुलकी सोलह आदमियोंकी टोलीकी तरह सरहद पार करना हो तो सरकार पकड़ेगी और अिस तरह छोटे-छोटे कभी दल पकड़े जायेंगे। लेकिन अधिक विचार करने पर यह खयाल गलत मालूम हुआ। अुनमें देर होनेका और सरकारके न पकड़नेका भी डर था। तो क्या अिन लोगोंकी भीड़को अेक जगह टिका रखा जाय? जिससे तो वे नुकसान करने लगेंगे। अुनमें कअी तरहकी कुटिल आदमी थे। चोरीका अपराध किये हुअे थे, हत्याके मुजरिम थे, व्यभिचारके अपराधी थे और शराबके व्यसनमें चूर रहनेवाले भी थे। अैसे लाचार निराश्रित समूहको लम्बे समय तक मुफ्त-खातिरी बात पर टिकाये रखना बहुत मुश्किल था। अिसलिअे गांधीजीको अेक विलक्षण विचार सूझा। सभी लोगोंकी अेक कूच टॉल्सटॉय फार्मकी तरफ ले जाअी जाय। वहाँ जाते हुअे सरहद पर वोल्क्सरस्ट आये सबको सरकार पकड़ ले तो भी अच्छा और ठेठ तक जाने दे और पांच हजार मनुष्योंके सरकारको चुनौती देकर कानून तोड़ने पर भी सरकार अुनका कुछ न करे, तो अुस कानूनकी कीमत ही क्या रहेगी? जितनी बनावटी अैसी जबरदस्त कूचसे खुशहाली और आपत्ति भी खूब होगी। अुन्होंने अपना यह विचार सबको बताया। सबने सम्मति दी। गांधीजीने कूचमें शामिल होनेवाले सब भाअियों और बहनोंके लिअे नीचे लिखी शर्तें रखीं

१ कोअी भी शराब न पिये और बीड़ी वगैरा व्यसनकी चीजोंके लिअे दाम न मांगे।

रास्तेमें चोरी या दंगा-फसाद न किया जाय।

३ जहाँ पड़ाव डाला हो वहाँ आसपासको छप्पर और जमीनको बिछौना समझकर सब रहें।

४ खानेकी सुविधा की जायगी परन्तु जो कुछ और जितना कुछ दिया जाय अुसीमें सन्तोष मानना पड़ेगा।

मुकर्रर की हुअी जगह पहुँचनेसे पहले या रास्तेमें गांधीजीको सरकार पकड़ ले तो शान्ति रखी जाय और अुनकी जगह पर जिसे नियत किया जाय अुसके अधिकारमें रहकर अुसकी आज्ञाका पालन किया जाय।

६ सबको या चोरोंको पुलिस पकड़ने आये तो झगड़ा किये बिना खुशीसे पुलिसके अधीन हो जायं।

७ अैसा करते हुअे भी पुलिस जुल्म करे और शायद मारपीट करे, तो अुसे भी सहन कर लिया जाय परन्तु अुसका सामना न किया जाय और पलटकर वार न किया जाय।

अूपरकी सब शर्तें अुन लोगोंने मंजूर कर लीं। आखिरी शर्त अुनमें से कुछ लोगोंको कड़ी लगी फिर भी सबने अपने नेताकी बात मान ली। फिर कूच आरंभ हुआ। रंग-बिरंगी पोशाकवाले अपढ़, अज्ञान कुछ हद तक जंगली जैसे व्यसनी नीति या अनीतिका कुछ भान न रखनेवाले चरित्र क्या और धर्म क्या जिसका भी जिनमें से अधिकांशको पता नहीं अैसे हजारों आदमियोंकी भीड़ चली। चमड़ीसे ढंकी हुअी मुट्ठीभर हड्डियोंके कंकालवाले अेक अलौकिक पुरुषके हाथमें सबकी डोर थी। अुसके पास कोअी सत्ता नहीं थी केवल हृदयका प्रेम था। वह सरदार होते हुअे भी सरदार न बना परन्तु सेवक बना। अुसने लोगोंकी सरदारी नहीं की बल्कि सेवा की। सबकी सेवा करके अुन्हें सेवक बनाया। फिर तो कोअी भी किसीके लिअे भार न बना। अिस प्रेम और सेवाभावके अप्रतिम बन्धनके कारण विशाल मानव-समुद्र अिस पुरुषकी मर्यादामें रहा। जहां पड़ाव डाला जाता वहां ढेरों अनाजकी बोरियां पड़ी ही होतीं। व्यापारियोंने भी गजब कर दिया। आवश्यकतासे कभी दूना अधिक अनाज और भोजन वे तैयार रखते थे। जहां ठहरते वहां मसजिदके चौकमें खाना बनाया जाता और पांच हजारके लिअे खानेवाला भोजन गांधीजी बांट देते थे। कम हो या ज्यादा हो अच्छा हो या बुरा हो कच्चा हो या पक्का हो परन्तु गांधीजीके हाथसे बांटा हुआ भोजन लेकर सब बड़े संतोषके साथ खाते और किसी भी शिकायत या झगड़ेके बिना आगे बढ़ते चले जाते। न्यूकैसलसे रवाना होकर चार्ल्सटाअुन पास आया। यहां ज्यादा ठहरना पड़ा। यह गांव नेटालकी सरहदमें था। अुसके बाद जो गांव आता था वह ट्रांसवालकी सरहदमें था। अिसलिअे ट्रांसवालकी सरहदमें घुसनेसे पहले सरकारको सूचना देना गांधीजीने अुचित समझा। गांधीजीकी मर्यादा और विवेक-दृष्टिने अुन्हें बहुतेरी गलतफहमियों और अनर्थोंसे बचाया है। अिस गांवमें पड़ाव डालकर गांधीजीने ट्रांसवालकी सरकारको नीचे लिखा सन्देश भेजा

हम ट्रान्सवालमें बसनेकी गरजसे प्रवेश नहीं करना चाहते। हमारा प्रवेश सरकारके वचन-भंगके खिलाफ असली पुकार है और हमारे स्वमान-भंगसे होनेवाले दुःखकी शुद्ध निशानी है। हमें आप यहीं वार्ल्सटाअुनमें पकड़ लेंगे तो हम निश्चिन्त हो जायेंगे। अगर आप अैसा नहीं करेंगे और हममें से कोओी गुप्त रूपमें ट्रान्सवालमें घुस जायगा तो अुसके लिअे हम जिम्मेवार नहीं होंगे। हमारी लड़ाअीमें कोओी भी गुप्त चीज नहीं है। किसीका व्यक्तिगत स्वार्थ साधना नहीं है। कोओी छिप कर प्रवेश करे यह हमें पसंद नहीं है। परन्तु जहां हजारों आदमियोंसे काम लेना हो और जहां प्रेमके सिवा दूसरा कोओी बंधन नहीं हो वहां किसीके कार्यके बारेमें हम जिम्मेवार नहीं हो सकते। और आप यह भी समझ लीजिये कि आप तीन पौंडका कर हटा देंगे तो गिरमिटिये वापस अपने काम पर चले जायेंगे और हड़ताल बन्द हो जायगी। अपने दूसरे दुःख मिटवानेके लिअे हम अुन्हें सत्याग्रहमें शरीक नहीं करेंगे।

सरकारको जिस तरहका संदेश भेजनेके बाद यह निश्चित भी था कि हड़तालियोंको पकड़ सकती थी। परन्तु अैसा कुछ मालूम नहीं हुआ। निमंत्रण भी नहीं आया और पत्र भी नहीं आया। पांच हजारकी आबादीवाले चार्ल्सटाअुन गांवमें दूसरे पांच हजार आदमियोंको लेकर अधिक समय पड़ा रहना सलामत नहीं था। हमारी जरूरतें भी कुछ विचित्र होती हैं। सफाअी हम रख नहीं सकते। अपने रहनेके या सार्वजनिक स्थानोंको हम स्वच्छ नहीं रख सकते। जिन सब कुटेवोंके कारण भी और अधिक समय तक अस्थिर दशामें पड़े रहनेसे अुपद्रव होनेकी संभावना थी। जिसलिअे गांधीजीने ट्रान्सवालकी सीमा पार करनेकी तैयारी की। तैयारी करनेसे पहले फिर गांधीजीने मिन्नता दिखाअी। जनरल स्मट्सके मंत्रीको टेलीफोनसे सारी बात बताअी। परन्तु आधे ही मिनटमें गांधीजीको अशिष्ट अुत्तर मिला — जनरल स्मट्स आपके साथ बात भी नहीं करना चाहते — आपकी जिच्छा हो वैसा कीजिये। अब तो सरकारकी तरफसे किसी कार्रवाअीकी आशा नहीं रही। कच शुरू हुआ। रास्तेमें कभी बाधायें आअीं। सबको जोहानिसबर्ग पार करके टॉलस्टॉय फार्ममें पहुंचना था। रास्तेमें जो बीमार पड़ जाता अुसे गाड़ीमें रवाना कर देते। सबको गाड़ीमें ले जाना संभव नहीं था। जिसलिअे यह यात्रीसंघ पैदल ही रवाना हुआ। रास्तेमें दो बच्चे मृत्युकी शरणमें चले गये। अक बालकको सर्दीका बुखार

पड़ा और वह मर गया। दूसरा बच्चा अेक छोटेसे पानीके झरनेको पार करते हुअे अपनी माताके हाथसे गिर पड़ा, प्रवाहमें बह गया और मर गया। लेकिन अिससे न किसीने हार मानी और न कोअी निराश हुआ। सब बोल अुठे "हम जानेवालोंका शोक करेंगे तो अुससे वे वापस तो आयेंगे ही नहीं। जीनेवालोंकी सेवा करना ही हमारा धर्म है।" अिस तरह साधुओं और स्त्रियोंकी यह जमात आगे बढ़ती रही। अंतमें ट्रान्सवालकी हद आयी। वोक्सरस्टके नाकेके पास घुड़सवार पुलिसका दल खड़ा था। वह अिस संघको रोकनेके लिअे नहीं खड़ा था, परन्तु अिसलिअे कि वोक्सरस्टके गोरोंने अुत्पात शुरू कर दिया था। अुनका अिरादा था कि गांधीजी अिस संघको लेकर ट्रान्सवालमें घुसें तब बंदूकें लेकर सामने आयें और तूफान मचाकर अुन्हें वापस निकाल दें। दो दिन पहले वहां अेक सभा हुअी थी। अुसमें सभी गोरोंको बुलाया गया था। मिस्टर कैलनबैक वहां जानेवाले संघके लिअे व्यवस्था करनेको पहलेसे ही पहुंच गये थे। वे भी सभामें गये थे। खूब गरमागरम भाषण हुअे और सभाका पारा खूब अूंचा चढ़ गया तब मि. कैलनबैक खड़े हुअे। अुन्होंने सबके रवैयेके खिलाफ अपना विरोध प्रगट किया। अुन्होंने कहा कि "हिन्दुस्तानी राजनीतिक हकोंके लिअे नहीं लड़ रहे हैं। वे तो सामाजिक हकोंके लिअे लड़ रहे हैं। वे अपने स्वाभिमानके लिअे लड़ रहे हैं। अुनकी लड़ाअी बिलकुल अुचित है। अितने सारे गोरोंमें मैं अेक अैसा हूं कि तुम्हारी अमानुषिक वृत्तिके विरुद्ध अपनी आवाज अुठा रहा हूं।" अिस तरह अुन्होंने गोरोंका खूब विरोध किया। बहुतसे गोरे गरमा गये, कुछ दब गये, कुछ गुस्सेमें आकर अुन्हें गाली देने लगे और मारनेको अुठे। अेक आदमीने तो मि. कैलनबैकको द्वन्द्वयुद्धकी चुनौती भी दे डाली। मि. कैलनबैक अैसे पहलवान थे कि अुससे अच्छी तरह निपट सकते थे। परन्तु अुन्होंने शान्तिसे जवाब दिया, "मैंने शान्तिधर्म स्वीकार न किया होता तो मैं तुम्हारी चुनौती बड़ी खुशीसे स्वीकार करता। फिर भी तुम्हें मुझ पर जितने वार करने हों, तुम कर सकते हो।" अंतमें सब ठंडे पड़े और बिखर गये। अिस सभाके कारण सरकार सावधान हो गयी और अुसने सत्याग्रहियोंके नाकेके आसपास बड़ा पुलिस-दल भेज दिया। गांधीजीको अिस सभाकी बात पहलेसे मालूम हो गयी थी। अुन्होंने सबको बता दिया था कि अगर वोक्सरस्टके गोरे हमला करने आ जायं तो किसी भी हालतमें पीछे न हटकर सब मार

ही पकड़े जायें। लेकिन वॉल्क्सरस्ट गांवमें से गुजरने पर असी कोओी बात नहीं मालूम हुओी। सभी गोरे अिन यात्रियोंके संघको खड़े खड़े देखते रहे। सारा संघ वॉल्क्सरस्ट पार करके आगे बढ़ा और वहांसे आठ मील दूर जाकर अुसने पड़ाव डाला।

पड़ाव पर रातके अंधेरेमें पुलिस अफसर आया और अुसने गांधीजीको जगाया। कोओी न जान सके अिस तरह गांधीजी भी पी. के. नायडूको अिस सारे संघकी जिम्मेदारी सौंपकर पुलिस अफसरके साथ चले गये। पासके स्टेशनसे गाड़ीमें बैठकर वॉल्क्सरस्ट पहुंचे। वहां अदालतमें दूसरे दिन सवेरे अुन पर मुकदमा चला। गांधीजीने अदालतमें मजिस्ट्रेटके सामने बयान दिया: मेरी देखरेखमें हजारों पुरुष, सैकड़ों स्त्रियां और छोटे छोटे बच्चे हैं। अुन्हें जंगलमें निराधार रखकर मुझे पकड़ लिया गया है। अिसलिये सरकारको मुझे पकड़ना ही हो तो या तो अुन सबको जोहानिसबर्गके पास टॉल्स्टॉय फार्ममें पहुंचा देना चाहिये या सबको पकड़ लेना चाहिये। अिन दोनों बातोंमें से सरकार अेक भी न कर सके तो जब तक वे टॉल्स्टॉय फार्ममें पहुंच न जायें तब तककी मुझे मोहलत मिलनी चाहिये। मजिस्ट्रेटने गांधीजीकी यह मांग स्वीकार करके अुन्हें जमानत पर छोड़ दिया और वे फिर कूचमें शामिल हो गये। कूच फिर शुरू हुओी। जब स्टैण्डर्टन गांवके पास सारा संघ पहुंचा तो वहां गांधीजीको फिर गिरफ्तार कर लिया गया। साथ ही कुछ साथियोंको भी पकड़ लिया गया। स्टैण्डर्टनके मजिस्ट्रेटने भी गांधीजीको अूपर बताये कारणसे ही छोड़ दिया। फिर कूच आगे बढ़ी। अब संघ लगभग जोहानिसबर्ग पहुंच गया। हैडलबर्ग नामके स्थानके पास फिर अिमिग्रेशन-अफसर आ पहुंचा और गांधीजी पर नेटालके डंडी गांवके मजिस्ट्रेटका वारंट तामील किया। अिस समय मि. पोलाक हिन्दुस्तान जानेवाले थे। रवाना होनेसे पहले वे गांधीजीसे मिलने आये थे। हिन्दुस्तानकी जनताके सामने अिस अन्यायका सब विवरण रखनेके लिये ही गोखलेजीने मि. पोलाकको हिन्दुस्तान आनेके लिये लिखा था। मि. पोलाक जानेसे पहले सारा मामला समझ लेनेके लिये कूचमें गांधीजीसे मिलने और अन्तिम कुछ सलाह लेने आये थे। अिसी समय गांधीजीको तीसरी बार गिरफ्तार किया गया। गांधीजीने मि. पोलाकसे कहा: अब तो तुम्हारा जाना स्थगित ही हो सकता है। तुम्हीं मेरी जगह ले लो।"

मि॰ पोलाकने गांधीजीकी जगह ले ली। गांधीजीको डंडी ले जाया गया। वहां अुन पर खानोंके मजदूरोंको खानोंसे निकलवाकर हड़ताल करानेका अभियोग लगाया गया जिसमें अुन्हें नौ महीनेकी सजा हुआी। वहांसे अुन्हें वॉल्क्रस्ट ले गये। गांधीजीको पकड़नेके बाद हेडक्वार्टर स्टेशन पर संघके सभी लोगोंको तुरंत गिरफ्तार घोषित कर दिया गया और वो तैयार रखी हुआी स्पेशल गाड़ियोंमें बिठाकर सबको न्यूकैसलकी अपनी अपनी खानोंमें ले जाकर मुक्त कर दिया गया। खानोंको जेल-प्रदेश घोषित करके सबको वहीं रखा गया।

मि॰ पोलाकको भी मुक्त रखकर हिन्दुस्तान जाने देना सरकारको पसन्द नहीं था। अिसलिअे अुन्हें भी पकड़ लिया गया। मि॰ कैलनबैक सबके सबसे नेता बनकर कूच कर रहे थे। अुन्हें भी अुनके साथ पकड़ लिया गया। अिस प्रकार दोनों मित्रोंको भी वॉल्क्रस्ट ले जाया गया। वॉल्क्रस्टकी जेलमें गांधीजी मि॰ पोलाक और मि॰ कैलनबैक अिकट्ठे हो गये। परन्तु अिन तीनोंको साथ ही रोज वहां साथ रहने दिया गया। बादमें गांधीजीको ऑरिंज रिवर फ्री स्टेटके ब्लोमफोन्टीन शहरके अेकान्त जेलमें रखा गया। मि॰ पोलाकको जरमिस्टन जेलमें रखा गया और मि॰ कैलनबैकको प्रिटोरिया जेलमें रखा गया। अिस प्रकार सभी दलोंको अुनके नेताओंके हाथ पकड़कर सरकारने कूच करनेवाले हिन्दुस्तानी मजदूरोंको अपनी अपनी खानोंमें बिदा कर दिया, खानोंको जेलकी हद घोषित कर दिया और बैरकोंको जेल बनाकर वहां सबको रख दिया।

१०

पुरानी संस्कृतिका प्रताप

नेटालके अुत्तरी भागमें जो जागृति पैदा हुआी और लड़ाआी जमी अुस पर हम पिछले प्रकरणमें लिख चुके हैं। लेकिन हिन्दुस्तानियोंकी आबादी तो सारे नेटालमें फैली हुआी है। नेटालके दक्षिण और नैऋत्य प्रदेशमें गन्नेकी पैदावार खूब होती है और सारा प्रदेश अिस तरह दिखाआी देता है जैसे कोआी अलौकिक अुद्यान हो। यह प्रदेश हिन्दुस्तानियोंके पसीनेके प्रतापसे रमणीय बना है और अुत्तरके हिन्दुस्तानी किसानोंसे ये नैऋत्य और दक्षिण भागके हिन्दुस्तानी किसान ज्यादा नस्कारी और होशियार हैं। गिरमिटिया मजदूरोंकी

हालत तो सभी जगह जैसी ही है। गांधीजीकी धारणा थी कि यूनियनकी तरफसे हिन्दुस्तानियोंकी हड़ताल और अुसके कारण होनेवाली जागृति तथा लड़ाअीसे पैदा होनेवाला जोश लड़ाअीको सफल बनानेके लिअे काफी है। अिसके सिवा सारे नेटालमें सब जगह हड़ताल फैल जाय तो हड़तालियोंको काबूमें रखना भी मुश्किल हो जायगा। गिरमिटियोंकी संख्या लगभग ५५से ६० हजार थी। ये सब हड़ताल कर दें तो अुन्हें शान्त रखना अुनकी हड़तालको टिकाये रखनेके लिअे अुनके खानेका बन्दोबस्त करना अुसके लिअे जरूरी आर्थिक सहायता काफी सेवक और व्यवस्था करनेके लिअे आवश्यक जिम्मेदार आदमी जुटाना भी जरूरी था। परन्तु अिनमें से कुछ भी गांधीजीके पास नहीं था। जो कुछ था वह सिर्फ आरम्भ की हुअी कूचके लिअे ही काफी था। गांधीजीके पास जो कार्यकर्ता थे अुन्हें सरकारने गांधीजीके साथ या आगे-पीछे पकड़ लिया था। अब तो श्री काछलिया सेठ सारे ट्रान्सवालके आन्दोलनकी देखरेख करनेवाले अकेले ही रह गये थे। मिस श्लेसिन [illegible] हर [illegible] व्यवस्था करनेवाली और सारी लड़ाअीका तफसीलवार हिसाब रखनेवाली अकेली रही थी। अिंडियन ओपीनियन सत्याग्रहकी लड़ाअीका अमूल्य मुखपत्र था। अुसके गुजराती विभागकी जिम्मेदारीके सिवा आश्रममें रहनेवाले छोटे-छोटे बच्चोंकी देखरेख करने वाले और दूसरी दृष्टियोंसे विचार करके अनेक कामोंकी निश्चित व्यवस्था करनेवाले सिर्फ श्री मगनलाल गांधी ही रह गये थे। अिंडियन ओपीनियनके अंग्रेजी विभागकी जिम्मेदारीके सिवा लड़ाअीके रोजमर्राके सारे समाचार तार या पत्र द्वारा हिन्दुस्तानमें श्री गोखलेको भेजनेवाले और सारे आन्दोलनकी विगतवार सच्ची खबरें जुटाकर अुनका अुचित प्रकाशन करनेवाले श्री वेस्ट अकेले थे।

अिस तरह गिनेगिनाये आदमी ही बाहर रहे थे। अुनसे क्या काम हो सकता था? फिर भी गांधीजीको पकड़कर, श्री कैलनबैक और श्री पोलाकको पकड़ कर तथा सभी प्रसिद्ध और कम हुअे योद्धाओंको जेलखानेमें बन्द करके सरकारने आरामकी सांस लेकर यह समझा होगा कि अब शान्ति हो जायगी। परन्तु राष्ट्रीय जागृति कभी अकेला आदमी भी कर सकता है? मनुष्योंके — अुनके नेताओंके पीछे कोअी अलौकिक दृष्टबल होता है जो विलक्षण काम करता है। गांधीजीको असी बेरहम जेलमें बन्द

किया था कि अुनके विचारोंकी बूत तक हिन्दुस्तानी जनताको न लगने पावे। परन्तु गांधीजीकी गिरफ्तारीके बादका सप्ताह तो सत्याग्रहकी ज्वालाने भभकता हुआ काम पड़ा। बमरजिस्टो स्टेशनपर, बेटकम वगैरा परगनोंमें न्यूकैसलके मजदूरोंके गांधीसंबंधी कथा बिजलीकी तरह घर-घर पहुंच गयी। जिन्होंने कभी गांधीजीका नाम तक न सुना होगा जिन्हें यह कल्पना भी नहीं होगी कि गांधीजी कौन हैं और कैसे हैं, बैसे हजारों अज्ञान और कुछ हद तक जंगली वातावरणमें रंगे हुअे गिरमिटिया मजदूरोंके दिल सुलग पड़े। गांधी राजा जेलमें क्यों गये? अुनकी रानी जेलमें कैसे गयी? अुनके कुंवर जेलमें किसलिये गये? सरकारने जिस राजा जैसे आदमीको अुनके कुटुम्बके साथ कारावास क्यों दिया? हमारे लिये! तीन पौण्डका कर अुठवानेके लिये! अैसी सीधी और सरल समझसे वे प्रेरित हुअे। अुन्हें कोअी दूसरा रास्ता दिखानेवाला नहीं था कोअी समझानेवाला नहीं था कोअी नुकसानेवाला नहीं था। अपने अपने कारखानेमें लोगोंने जमा होकर हड़ताल करनेका निश्चय किया। हड़तालें की गयीं। जितना ही नहीं था कुछ कारखानोंमें से दो दो सौ हिन्दुस्तानी मजदूर हड़ताल करके परगनेकी अदालतके चौकमें जाकर बैठ जाते और पुलिस तथा मजिस्ट्रेटको पकड़नेकी चुनौती देते हमें सजा दो हमें जेलमें भेजो। हमने गिरमिटका कानून तोड़ा है हम गिरमिटिया मजदूर हैं और हड़ताल करके अपने मालिकोंकी जिजाजतके बिना भाग आये हैं। जिसलिये हम पर मुकदमा चलाकर हमें जेलमें भेजो। जिस प्रकार वे निडर होकर बोलते रहते थे। पुलिसवाले कोड़े लिये फिरते रहते कुछको मारते, मगर वे अुठते ही नहीं थे। मजिस्ट्रेट कहता तुमने कोअी गुनाह नहीं किया तुम चले जाओ। जवाबमें वे कहते हमारे गांधी राजा और अुनकी रानी तथा कुंवरोंने क्या अपराध किया था? हमें भी अुनके साथ जेलमें भेजो या अुन्हें छोड़ो। अन्तमें मजिस्ट्रेट कहता जाओ तुम्हें अेक दिनकी जेलकी सजा दी जाती है। वह अुग्र आग्रह करता "नहीं तीन महीनेकी सजा दीजिये। अन्तमें मजिस्ट्रेट हारकर अेक अेक मासकी सजाका हुक्म देकर सबके नाम वगैरा लिखकर पुलिसको सौंप देता। पुलिस सबको जेलमें भेज देती और वे जेलके दरवाजेमें घुसते ही गांधी राजाकी जय बन्देमातरम्की जय बोल कर भारी जयघोष गुंजा देते थे।

व्यसनी अज्ञान और चरित्रहीन माने जानेवाले अिन मजदूरों पर क्या क्या बीती अिसका अेक प्रतिष्ठित सज्जनका आंखों देखा और सुनीका अिस हुआ वर्णन यहां लिख जाऊं, तो मैं जो कहना चाहता हूं वह स्पष्ट हो जायगा।

सत्याग्रहका प्रताप यूनियन सरकारसे सहन नहीं हुआ। अुसने समझौता करनेके लिअे अेक कमीशन नियुक्त किया। सब नेताओंको छोड़ दिया सत्याग्रहियोंको भी छोड़ दिया। अिसी बीच हिन्दुस्तानसे दीनबन्धु अेन्ड्रूज और सुनक मित्र मि पियर्सन यहां पहुंचे। अेन्ड्रूज तो गांधीजीके साथ प्रिटोरिया गये। मगर मि पियर्सन फिनिक्स आश्रममें हमारे साथ रहे। फिनिक्ससे मील डेढ़ मील दूर झूलू युवक-युवतियोंको आधुनिक प्रगतिशील युगके लिअे तैयार किया जाता था। खेती बढ़ओीगिरी लुहारी मोचीगिरी और साथ ही दिमागके अलग अलग विभागोंका ज्ञान कराकर प्रत्येक युवक-युवतीको भावी जीवनके लिअे तैयार किया जाता था। अिस संस्थाके संस्थापक और व्यवस्थापक जेम्स डूबे और जॉन डूबे नामक प्रेस्पुमेटकी पद्धतिवाले दो सेवाभावी सज्जन थे। अमरीकाके हब्शी अिस संस्थाको अपनी संस्था मानकर खूब मदद करते थे। ये दोनों सज्जन दक्षिण अफ्रीकाके मूल निवासियोंकी महासभाके मुख्य अध्यक्ष भी हैं और अुसका सारा कारबार वे ही चलाते हैं। अिस संस्थाको नाम्बा अिन्स्टिट्यूशन कहते थे। अिसके कार्यकर्ता फिनिक्स आश्रमके साथ अच्छा सम्बन्ध रखते थे। अमरीकाकी हब्शी महिला मिस ब्लैकबर्न कन्याशालाकी सुपरिन्टेन्डेन्ट थीं। वे फिनिक्स आश्रममें बार बार आती थीं। वहांसे दक्षिण अफ्रीकाके झूलू लोगोंकी तरफसे अेक साप्ताहिक पत्र भी निकलता था। यह पत्र अंग्रेजी लिपि और झूलू भाषामें छपता था। मि पियर्सनने अिस संस्थाको देखनेकी अिच्छा प्रगट की। हम दोनों वहां अेक दिन गये। सारी संस्थाका कामकाज देखनेके बाद झूलू लोगोंकी स्थितिके सम्बन्धमें जाननेके लिअे हम मि जॉन डूबेके पास बैठे। सामाजिक और आर्थिक स्थितिके बारेमें बातें करते करते झूलू लोगोंकी राजनीतिक स्थिति जाननेके लिअे मि पियर्सनने पूछा आपको सरकारकी तरफसे कोअी राजनीतिक अधिकार दिये गये हैं या नहीं?

कुछ नहीं। अिसमें तो हमारी हालत हिन्दुस्तानियोंसे भी बुरी है। जहां समानताका नामोनिशान न हो वहां राजनीतिक समानताकी तो बात ही क्या की जाय?

लड़ाअी चल रही थी। तब अेक दिन मैं डरबनसे आ रहा था। फिनिक्स स्टेशन पर अुतरा। यहां आते हुअे स्टेशनसे थोड़ी दूर पर रास्तेमें अेक मैदान पड़ता है। वहां लगभग पांच सौ हिन्दुस्तानी अिकट्ठे बैठे थे। वे अपने कारखानेमें हड़ताल करके वहां आये हुअे थे। गोरे मैनेजर, अुनके कर्मचारी और गोरी पुलिस अुनको चारों तरफसे घेरे हुअे थी। मैं वहां आधे घंटे तक यह देखनेके लिये रुक गया कि देखें अब क्या होता है? बैठे हुअे हिन्दुस्तानियोंकी पीठ पर सटासट कोड़े पड़ने लगे। गोरे लाठियोंसे अुन्हें मारते थे और कहते थे "अुठो काम करो। काम पर जाते हो कि नहीं?" परन्तु कोअी अुठता नहीं था। अुनका रोआं तक नहीं हिलता था। वे शान्तिसे जवाब देते थे "जब तक गांधी राजा जेलमें है तब तक हम काम नहीं करेंगे।" कोड़ों और लाठियोंसे काम न चला तो बंदूकोंके कुन्दोंका अुपयोग हुआ। पुरुषोंके साथ स्त्रियों और बच्चोंको भी गोरे मारने लगे। कुछ लोग रोते-चिल्लाते थे परन्तु वहांसे हटे नहीं। अंतमें घुड़सवार आये और अुन पर घोड़े दौड़ाने लगे। "अुठो नहीं तो कुचल जाओगे।" वे चिल्लाये। घोड़े कुछ आदमियोंके पैरों और पीठ परसे गुजर गये। अुनकी चमड़ी अुधड़ गअी। घोड़ोंके पैरोंके घाव पड़ गये परन्तु वे वहांसे अुठे नहीं। अितनेमें पुलिस अेक हिन्दुस्तानी जमादारको वहां पकड़ लायी। वह अुन मजदूरोंका नेता माना जाता था। अुसने हिम्मतसे जवाब देना शुरू किया। अुसके निडर जवाबोंके अिनाममें अुस पर जुल्म होने लगा। अुस पर होनेवाला जुल्म देखकर मैं कांप अुठा। अितनेमें अेक पुलिस अफसरने मेरी जातिके पुलिसवालेको हुक्म दिया "अिसे भालेसे छेद डाल। तू क्या देख रहा है? यह सब अिसी बदमाशकी शरारतसे है!" अुस पुलिसने हुक्मकी फौरन तामील की और मजदूरोंके अुस नेताको भालेसे छेद डाला। मजदूरोंमें थोड़ी अुत्तेजना फैली तो अुसके बहाने गोली चलाकर अेक दोको और छेद डाला। वह नेता यमराजके दरबारमें पहुंच गया। दूसरे घायल हुअे। परन्तु वे जहां बैठे थे वहांसे जरा भी नहीं हिले। मैं अुन गोरोंकी क्रूरतासे कांपता हुआ और हिन्दुस्तानियोंकी अिस हिमालय जैसी दृढ़ता पर आश्चर्य करता हुआ यहां आया। मि पियर्सन, मैं अपने लोगोंको अिस भयंकर रास्ते पर चलाअूं तो हमारा सर्वनाश हो जाय। हिन्दुस्तानी मजदूर कितने ही अपढ़ अज्ञान असंस्कारी और जंगली क्यों न हो परन्तु हिन्दुस्तानियोंकी प्राचीन संस्कृतिके प्रतापसे

पुस संस्कृतिसे रंगा हुआ खून अुनकी रगोंमें दौड़ रहा है। गांधीजी जैसे नेताके अेक आनेसे वह संस्कृति जागी हो गयी। अुनकी मूल दैवी शक्ति प्रकट हो गयी और वे बिलकुल सहनशक्ति दिखा सके। अुनकी जगह हमारे इतनी कौम हों तो अुनका सामना स्वभाव किसीके भी हाथमें नहीं रह सकता। अपने बचावके खातिर भी वे सामना जरूर करेंगे। और यहाके गोरोंको तो मिलना ही चाहिये। मेरा कोओ भाओ भुत्तजित होकर किसी गोरेको मार दे तो हमारी शामत आओ समझिये! अेक ही क्षणमें मेरे हजारों भाओियोंका शिकार हो जाय और हमारा सर्वनाश हो जाय। सत्याग्रहकी लड़ाओ लड़नेका हमारा बूता नहीं है। अिसमें हिन्दुस्तानियोंकी शक्ति ही टिक सकती है।"

मि. पियर्सन और मैं मि. जॉन डूबेके अिस हृदयद्रावक वर्णनको सुनकर गद्गद हो गये। श्रीशास्त्रीजीके सन्देश अनुयायी मि. पियर्सन हिन्दुस्तानियोंने किये कार्यों बन्द करके औश्वरसे दुआ मांगते हुअे मुझे। जिस प्रकार अुन दोनों सज्जनोंसे मिलकर हम फिनिक्स आश्रमको लौटे आये।

११
हिन्दुस्तानकी मदद

पिछले प्रकरणमें जिस घटनाका वर्णन किया गया है वैसी कुछ घटनायें नेटालमें भी हो गयी। फिनिक्स आश्रमकी भी कड़ी परीक्षा हो गयी। सारी लड़ाओका केन्द्रस्थान फिनिक्स है, यह बात तो सभीको मालूम थी। और बहुतसे भड़के हुअे गोरे जमींदारों और पुलिस कर्मचारियोंकी वक्र-दृष्टि भी फिनिक्स पर ही थी। फिनिक्सके चारों ओर जमींदारोंके अड्डे थे। आश्रममें बड़ी अुम्रके लोग बहुत नहीं थे। भी मगनलाल गांधी और मिस वेस्ट दो ही थे। मिस वेस्टका पूरा नाम मिस आडावेस्ट वेस्ट था। य बहुत बहुत ही सरल भली ममतालु और भद्रभावी थीं। आश्रममें छोटी अुमके बच्चोंकी देखरेखका काम अुन्होंने लिया। खाना बनाना परोसना बरतन साफ करना वगैरा सारे काम वे ही करती थीं। अिसके सिवा विद्यार्थियोंको अंग्रेजीकी शिक्षा देना प्रेसका काम करना प्रेसका हिसाब रखना और पेटीका काम करना — अिस तरह मिस माडाटकी वेस्टने बहुत

बड़ी सेवा की। लड़कोंने भी आश्रममें रहकर लड़ाअीमें पूरा हिस्सा लिया। भयवाले वातावरणमें ढाअी मील दूर स्थित स्टेशन तक डाक ले जाना और वहांसे लाना, अखबारकी प्रतियां नियमित रूपसे पहुंचाना, सामान ले जाना व लाना और आसपासके सैकड़ों हड़ताली मजदूरोंके फिनिक्समें आकर रहनेके दिनोंमें सबके लिये खानेका अिन्तजाम करना, रहनेकी व्यवस्था करना वगैरा बेहद मेहनतका काम अिन बहादुर बच्चोंने निडरतासे किया। फिनिक्सकी संस्था भी अेक धामाधामके समान हो गयी थी। सैकड़ों हड़तालियोंका वहां जमाव हो गया था। मि. वेस्ट सारे आन्दोलनका पूरा हाल अपने तारों द्वारा श्री गोखलेको हिन्दुस्तान भेजते थे, अिसलिये सरकारको वे बहुत खटकते थे। यह सूचना शुरूसे ही कर दी गयी थी कि फिनिक्स संस्थामें जो लोग हैं वे जेल जानेकी अुम्मीदवारी हरगिज न करें। परन्तु जब बुलावा आ जाय तब कौन और अुसका अनादर कर सकता था?

अिस प्रकार जब नेटालमें चारों तरफ आग सुलग अुठी तब हिन्दुस्तानने भी कमाल किया। हिन्दुस्तानके विशाल क्षेत्रमें काम करनेवाले सभी दल — सामाजिक क्षेत्रके दल और राजनीतिक क्षेत्रके दल — दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी सत्याग्रहकी लड़ाअीमें अेक-दूसरेसे हाथ मिलाकर अपनी मदद देने लगे। रुपयेकी तो वर्षा ही होने लगी। श्री गोखलेने जनतासे रुपयेकी मांग नहीं की, परन्तु जनतासे हृदयभेदी अपील की। और हिन्दुस्तानी जनताने अुसका कितना सुन्दर जवाब दिया! अुसमें साहूकारोंने दिया और गरीब बूढ़ी विधवाओंने भी दिया। पुरुषोंने दिया और स्त्रियोंने भी दिया। युवकोंने दिया और युवतियोंने भी दिया। बाल-बालाओंने बच्चोंने मिठाअीका त्याग करके अुस पर खर्च होनेवाली रकम पांच हजार मील दूर दक्षिण अफ्रीकाकी जेलोंमें दुःख भोगनेवाले और गोलियोंके सामने छाती खोलकर खड़े रहनेवाले अपने गरीब भाअियोंकी लड़ाअीमें दी। गुरुकुल कांगड़ी और शान्तिनिकेतनके सैकड़ों विद्यार्थियोंने अिस लड़ाअीमें सहायता देनेके लिये गांवोंसे चन्दा करनेको हाथोंमें झोली धारण की। हिन्दुस्तानका अेक भी भाग अैसा नहीं होगा जहां अिस सत्याग्रहकी लड़ाअीकी बात न पहुंची हो। हिन्दुस्तानमें अेक भी सार्वजनिक सेवक अैसा नहीं होगा जिसने दक्षिण अफ्रीकाकी सरकारके अिस जुल्मके बारेमें अपना विरोध प्रकट न किया हो। श्री गोखले तो रोगशय्या पर पड़े होने पर भी किसी कामके पीछे पागल

बन गये थे। अुन्होंने रात-दिन कुछ न देखा और दक्षिण अफ्रीकाका छोटेसे छोटा समाचार जानकर देशके कोने कोनेमें पहुंचा दिया। अिसके सिवा अुस समयके वाअिसरॉय लॉर्ड हार्डिंजका भी गोखलेजी लड़ाअीके पूरे तथ्योंसे परिचित रखते थे। देशके तमाम बड़े गांवों और शहरोंमें सभायें हुअीं। सभाओंमें सार्वजनिक रूपसे बिकट्ठा हुआ दक्षिण अफ्रीकी सरकारके जुल्मोंका सख्त विरोध हुआ। लाहौरकी अेक विराट सभामें दीनबन्धु सी अेफ़ अेण्डूजने श्रोताओंको दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके दुःखोंका वर्णन करके करुणरससे रुला दिया और अुनकी वीरताका वर्णन करके श्रोताओंको अुत्साहित किया। अिसी सभामें दीनबन्धुने अपनी अुस समयकी बचतके दो हजार रुपये दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहके फण्डमें दे दिये। करोड़ोंका स्वामी लाख रुपये दे अुससे दीनबन्धुने लाखों गुना अधिक दे दिया। अपना सर्वस्व दे दिया। दीनबन्धुकी अैसी तीव्र सहानुभूति देखकर श्री गोखलेने मि० पोलककी गिरफ्तारीकी खबर मालूम होने पर अुनकी जगह काम करनेके लिअे दीनबन्धु अेण्डूजको भेजनेका विचार किया। दीनबन्धु तैयार हो गये और अुनके साथ अुनके मित्र मि० पियर्सन भी तैयार हो गये। दोनों आदमी अेकदमके लिअे रवाना हो गये। सारे देशमें वातावरण अितना गरम हो गया कि लॉर्ड हार्डिंज चेत। अुन्होंने जनताकी तीव्र भावनाको पहचाना और जनताकी आवाजके साथ अपनी आवाज मिलाकर हिन्दुस्तानियोंके प्रतिनिधिके रूपमें अपना फर्ज अदा किया। मद्रासके अपने स्मरणीय भाषणमें अुन्होंने दक्षिण अफ्रीकाकी सरकारकी कड़ी टीका की और बड़ी सरकारको बतलाया कि १८५७ के बाद हिन्दुस्तानमें अैसा असन्तोष कभी भी सर्वव्यापी नहीं हुआ था। ब्रिटिश सरकारको बीचमें पड़कर कोओी निर्णय जरूर करना चाहिये। औपनिवेशिक स्वराज्य भोगनेवाले अुपनिवेशोंकी अितनी सख्त आलोचना और हस्तक्षेपके लिअे ब्रिटिश सरकारसे की गअी विनती अुस जमानेमें ज्यादा मालूम हुअी। परन्तु लॉर्ड हार्डिंज अपनी बात पर डटे रहे और हिन्दुस्तानियोंकी सत्याग्रहकी लड़ाअीको अुचित बताकर अुसकी बड़ी तारीफ करने लगे। अिस तरह सारे हिन्दुस्तानने दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी अिस लड़ाअीके प्रति सहानुभूति दिखाअी और अपूर्व अुत्साहसे अुसमें मदद दी।

१२

समझौतेकी राह पर

हिम्मते मरदां मददे खुदा — यह सूत्र जितना अिस लड़ाअीमें सच्चा साबित हुआ अुतना और किसी मौके पर नहीं हुआ होगा। लड़ाअी शुरू करते समय जिन बलोंका जरा भी खयाल नहीं था अैसे बल भी लड़ाअीकी मददमें दौड़ पड़े। गांधीजी तो शुरूसे ही कहते थे कि हम खूब सच्चे होंगे तो सारा संसार हमारी तरफ दौड़ता आयेगा। मि० पोलाक डेप्युटेशनके सदस्यके रूपमें हिन्दुस्तान आनेसे पहले कूचमें गांधीजीसे मिलने गये थे। और अुसी समय गांधीजीको सरकारने पकड़ लिया था। तब अेक ही क्षणमें हिन्दुस्तानका सफर रोक कर अपनी जगह लेनेकी सूचना देते हुअे गांधीजीने मि० पोलाकसे कहा था कि "हमारा सच्चा डेप्युटेशन तो अब यहीं रहनेमें है। हम अपनी शक्ति बतायेंगे तो डेप्युटेशनके बिना ही सारा हिन्दुस्तान हमारी सब बातें जान लेगा।" यह कहकर हिन्दुस्तानके लिअे रवाना होनेवाले मि० पोलाकको जो पांच-सात मिनटके लिअे मिलने आये थे अपनी जगह सौंपकर गांधीजी पकड़नेके लिअे आये हुअे अफसरके अधिकारमें चले गये। मि० पोलाकने यह जगह ले ली और बादमें सरकारने अुन्हें भी पकड़ लिया। हिन्दुस्तानकी जनताने जब यह जाना कि डेप्युटेशनमें आनेवाले मि० पोलाक जेलमें चले गये तब अुनके हिन्दुस्तानमें अुपस्थित रहनेसे जो असर होता अुससे कहीं ज्यादा असर अुस पर हुआ। अिस प्रकार गांधीजीने अिस लड़ाअीका आधार अुसके नेताओंकी अपेक्षा जनताकी शक्ति पर ज्यादा रखा था। अिस शक्तिने हिन्दुस्तानमें जबरदस्त सभा की और विलायतमें भी ताकतवाली सभा की। लॉर्ड अेम्टहिलने ब्रिटिश सरकार पर खूब दबाव डाला और अुस सरकारको भी आखिर ढीला पड़ना पड़ा।

यूनियन सरकारकी तो सांप-छछूंदर जैसी गति हो गयी। अुसे हिन्दुस्तानियोंकी अैसी प्रचंड शक्तिका खयाल ही नहीं था। अुसने सोचा था कि गांधी अपने कुछ साथियोंको लेकर लड़ाअी करेगा परन्तु अुनको जेलमें बन्द करके हम अिस लड़ाअीको दबा देंगे और शान्त कर देंगे। परन्तु

दो ही मासमें अुसे वस्तुस्थितिका पता लग गया। हिन्दुस्तानियोंको कुचल कर किसी भी तरह दक्षिण अफ्रीकासे निकाल देनेके लिअे नये-नये कानून बना कर जनरल स्मट्सने वहांके गोरोंको बहुत भड़काया था। ट्रान्सवालका खूनी कानून और नया अिमिग्रेशन-कानून वगैरा पार्लियामेण्टमें पेश करते हुअे सन् १९०७ से १९०९ तक जनरल स्मट्सने जो जो अुद्गार प्रकट किये थे अुन परसे हम समझ सकेंगे कि जनरल स्मट्सने गोरोंको अुभाड़कर यह मुसीबत खड़ी की थी। परन्तु अब तो हालत अुलटी हो गयी। हिन्दुस्तानी सत्याग्रहियोंका यह प्रचार बल यूनियन सरकारसे हजम नहीं हो सकता था। हजारों आदमियोंको जेलमें बन्द रखनेकी अुसकी शक्ति नहीं थी। और निःशस्त्र सत्याग्रही लोगों पर अुसने जो जुल्म गुजारे अुससे दुनियाके सभ्य देशोंमें अुसकी निन्दा होने लगी। अितना ही नहीं, खुद दक्षिण अफ्रीकामें भी समझदार गोरे सरकारकी अिस जालिम नीतिको धिक्कारने लगे। अिससे जनरल स्मट्स और अुनके साथी सब घबरा गये थे। अुन्हें भी अिसका कुछ न कुछ निपटारा करना ही था। परन्तु कैसे किया जाय? केवल सरकार झुकती है तो अिज्जत जाती है और वहांके गोरे अुसे भला-बुरा कहते हैं। यह तो खासी तगड़ी बात लगती थी। अिसलिअे लोकमतसे डर कर चलनेवाली सरकार अिस ढंगसे अैसे झगड़ोंका निपटारा करती है वही ढंग यूनियन सरकारने अख्तियार किया।

यूनियन सरकार जानती तो थी ही कि हिन्दुस्तानी क्या मांगते हैं क्योंकि अुसके पास पूरी मांगें मौजूद थीं। वह यह भी जानती थी कि अिस लड़ाओमें हिन्दुस्तानियों पर क्या क्या जुल्म हुअे हैं क्योंकि वे सब अुसकी मर्जीसे ही हुअे थे। फिर भी अुसने अिन सब बातोंकी जांच करके अुनका निपटारा किस तरह किया जाय अिसकी रिपोर्ट देनेके लिअे अेक कमीशन नियुक्त किया। कमीशनके अध्यक्ष सर विलियम सॉलोमन नामक अेक प्रसिद्ध सज्जन थे। अिसलिअे कमीशन सॉलोमन कमीशन कहलाया। अुसके दो और सदस्योंमें मि० अेसलीन और मि० वायली नामक दो [illegible] सज्जन थे। यह कमीशन नियुक्त करके अुसकी सूचना ब्रिटिश सरकारको दे दी गयी। भारत-सरकारने अिस मौके पर यह आग्रह किया कि अिस कमीशनका सारा फैसला अधिक न्यायी हो और हिन्दुस्तानियोंके हितोंकी रक्षा हो अिसके लिअे भारत-सरकारकी तरफसे भी कोअी समझदार प्रतिनिधि रहना

चाहिये। ब्रिटिश सरकारकी मंजूरीसे दक्षिण अफ्रीकाने अुस समयके संयुक्त प्रान्तके अेक गवर्नर सर बेन्जामिन रॉबर्टसनको भारत-सरकारके प्रतिनिधिके रूपमें भेजा।

कमीशनको तो वैसा ही काम करना था जैसी यूनियन सरकारकी तरफसे प्रेरणा मिले। अिसलिअे पहले तो अुसने यह सिफारिश की कि हिन्दुस्तानियोंकी मांगोंकी जांच करनेका जो काम कमीशनको सौंपा गया है वह हिन्दुस्तानी नेता जब तक जेलोंमें होंगे तब तक नहीं हो सकेगा। अिसलिअे कमीशनके कामकी सरलताके लिअे सर्वश्री गांधी पोलाक और कैलनबैकको छोड़ दिया जाय। सरकारने अिस सिफारिश पर तुरन्त अमल किया। गांधीजीको ब्लोमफोन्टीनसे प्रिटोरिया लाकर बताया गया कि आप रिहा कर दिये गये हैं। गांधीजी जोहानिसबर्ग पहुंचे कि मि. पोलाक और मि. कैलनबैक भी अुन्हें मिल गये। तीनों नेता डरबन पहुंचे। ये तीनों नेता १९ दिसम्बरकी शामको डरबन स्टेशन पर अुतरे। सारे नेटालमें बड़ा अुत्साह फैल गया। घर घर रोशनी की गभी और आनन्दोत्सव मनाया गया। गांधीजी डरबन पहुंचे तब तक अुन्होंने अपनी कोअी राय जाहिर नहीं की। वहां पहुंचनेके बाद जो कार्यकर्ता बाहर थे अुनसे वे मिले परिस्थिति पर विचार किया और अब क्या किया जाय अिसका निर्णय किया। बात यह थी कि नेताओंको छोड़नेसे पहले या बादमें सरकारने अुनके साथ कोअी बातचीत नहीं की और न नेताओंको अुसने यही बताया कि सरकार क्या करना चाहती है। तब अिसे समझौता कैसे कहा जाय?

सरकारने घोषणा की कि हिन्दुस्तानियोंके प्रश्नकी जांच करके अुनकी शिकायतोंका निपटारा करनेके खातिर अुचित सूचनायें देनेके लिअे कमीशन नियुक्त किया गया है। परन्तु अुसमें हिन्दुस्तानियोंका क्या हाथ होगा? कमीशनमें हिन्दुस्तानियोंका अेक भी प्रतिनिधि-सदस्य नहीं था। कमीशन नियुक्त करनेमें हिन्दुस्तानियोंकी सलाह नहीं की गअी थी। सबसे बड़ी कठिनाअी तो यह थी कि कमीशनमें जो दो सदस्य मि. अेसलीन और मि. वायली नियुक्त किये गये थे अुन दोनोंके पिछले कार्यों पर हिन्दुस्तानियोंके हित-विरोधी होनेका कलंक लगा हुआ था और अुन्हें सब कोअी जानता था। अिसलिअे पहले तो सब नेताओंने निश्चय किया कि अैसा कमीशन स्वीकार करनेमें हिन्दुस्तानियोंका अपमान है अतः अुसे अस्वीकार करके अुसका बहिष्कार किया जाय।

अैसा निर्णय करनेका और भी अेक कारण था। हिन्दुस्तानियोंकी सत्याग्रहकी लड़ाअीसे पहले दक्षिण अफ्रीकामें मजदूर-वर्गका बड़ा फसाद हुआ था। अुसमें बहुतसे आदमी मारे गये थे। लोगोंके जान-माल भी खतरेमें पड़ गये थे। आम जनताका और सरकारका बहुत नुकसान हुआ था। सरकारको फौजी कानून घोषित करना पड़ा था। अिस फसादके बाद अुसकी जांच करके फैसला देनेके लिये जो कमीशन सरकारने नियुक्त किया था अुसमें दोनों पक्षोंसे पूछकर दोनों तरफके प्रतिनिधि नियुक्त किये गये थे और बादमें मामलेकी जांच हुअी थी। हिन्दुस्तानियोंका सवाल भी अैसा ही था। लेकिन दोनोंमें बहुत बड़ा फर्क था। और वह यह था

(१) हिन्दुस्तानियोंको गोरे मजदूरोंकी तरह राज्यसत्ता नहीं लेनी थी। अुन्हें तो हिन्दुस्तानियोंके प्रति जो अन्यायपूर्ण व्यवहार किया जाता था और अन्याय तथा रंगभेदवाले जो कानून बनाये जाते थे अुन्हींको हटवाना था।

(२) हिन्दुस्तानियोंने जान-मालको कोअी हानि नहीं पहुंचाअी थी।

(३) अुलटे हिन्दुस्तानियोंने अेक मुद्दत तक, मार-पीट सहकर और अपने जान-मालका खतरा अुठा कर भी अहिंसक व्यवहार किया था और शान्ति कायम रखी थी।

अिसलिये सीधा न्याय प्राप्त करनेकी हिन्दुस्तानी अधिक पात्रता रखते थे। फिर भी जैसी स्वाभिमानपूर्ण संधिवार्ता करके गोरे मजदूरोंके प्रश्नकी जांचके लिये कमीशन नियुक्त किया गया था वैसी संधिवार्ता हिन्दुस्तानियोंके प्रश्नके लिये सरकारने नहीं की। बल्कि कमीशनमें जो सदस्य नियुक्त किये गय वे भी विरोधी मनोवृत्तिवाले ही नियुक्त किये गये। हिन्दुस्तानियोंके प्रति यह खुला अन्याय था और अुनका खुला अपमान था। अिस आशयसे कि भविष्यमें यह कमीशन किसी न किसी तरहका काम पहुंचायगा अुसे स्वीकार कर लेना अपमानजनक समझौता होगा और जिसमें स्वाभिमानकी हत्या होगी — अिस बातको पूरी तरह समझकर हिन्दुस्तानियोंके नेताओंने कमीशनका बहिष्कार करनेकी प्रतिज्ञा लेनेका निश्चय किया।

हमने गांधीजीकी आज तककी देशसेवा या जनसेवाकी सभी प्रवृत्तियोंमें देखा है कि आत्मशुद्धिका हेतु अुनमें मुख्य होता है। गांधीजीको छोड़नेसे पहले नेटालमें सरकारने हिन्दुस्तानी मजदूरों पर जो जुल्म ढाया और जिसके

परिणामस्वरूप कौमी चार हत्यायें हुआीं और कुछ लोग घायल हुअे। अुसके बारेमें सारा हाल जानकर गांधीजीको बहुत दुःख हुआ। अुनके हृदयमें जो वेदना हुअी अुसका वर्णन अुनके हृदयसे बाहर होनेके कारण मैं भला कैसे कर सकता हूं? परन्तु अुस वेदनाके कारण कमीशनके साधारण बहिष्कारके साथ अुन्होंने दो व्यक्तिगत प्रतिज्ञायें कीं

(१) जिस तीन पौण्डके अत्याचारपूर्ण करको अठवानेकी लड़ाअीमें चार भाजियोंने अपना बलिदान दिया है वह कर जब तक न अुठे तब तक मैं अेक बार ही भोजन करूंगा और वह भी सिर्फ फल ही खाअूंगा।

(२) जब तक वह कर अुठ न जाय तब तक मरे हुअे चारों मद्रासी भाजियोंके शोकमें मद्रासी रिवाजके मुताबिक मैं शोककी पोशाक पहनूंगा। यानी कोट-पतलून छोड़कर पांच हाथकी लुंगी और मोटे कपड़ोंका घुटनों तकका कुर्ता ही पहनूंगा तथा सिरके बाल और मूंछें मुंडवाअूंगा।

ये दो व्रत भी गांधीजीने साथियोंसे पूछकर अुनकी सम्मतिसे लिये। २ दिसम्बरकी रातको डरबनमें हिन्दुस्तानियोंकी अेक विराट सभा हुअी। वहां गांधीजी अूपरकी विचित्र लगनेवाली पोशाकमें अुपस्थित हुअे और अुन्होंने अपने पुण्यप्रकोपकी जो *ज्वाला सभामें प्रकट की अुससे हजारों श्रोतागण स्तब्ध हो* गये। अुनके जीवनमें जिस पुण्यप्रकोपके प्रतापसे अनोखी शक्ति पैदा हुअी। और जब गांधीजीने कमीशनके बहिष्कारका प्रस्ताव पेश करके अुसके कारण समझाये तब अेक भी बेसुरी आवाजके बिना हिन्दुस्तानियोंने अेकमतसे अुस प्रस्तावका स्वागत किया।

जिस प्रस्तावसे हिन्दुस्तानियोंने यह घोषित किया कि यूनियन सरकारने जो कमीशन नियुक्त किया है वह अेकतरफा है। अुसमें हिन्दुस्तानियोंकी राय नहीं ली गअी है। जितना ही नहीं बल्कि हिन्दुस्तानियोंके हितकी दृष्टिसे देखनेवाले सदस्योंकी नियुक्ति भी नहीं की गअी है। जिसलिये जिस कमीशनमें जब तक हिन्दुस्तानियोंके प्रतिनिधि या हिन्दुस्तानियोंके प्रति हमदर्दी रखनेवाले सिनेटर डब्ल्यू॰ पी॰ श्राअिनर और सर जेम्स रोजअिन्स जैसे सज्जनोंको नियुक्त न किया जाय तब तक जिस कमीशनका बहिष्कार किया जायगा।

अुन्होंने यह भी निश्चय किया कि सरकारकी तरफसे हिन्दुस्तानियोंकी मांगोंका आशाजनक अुत्तर किसी महीनेमें न मिल जाय तो १ जनवरी १९१४ के दिन डरबनसे ट्रान्सवाल तककी अेक बड़ी कूच शुरू की जाय और

युद्धमें यथासंभव अधिकसे अधिक हिन्दुस्तानियोंको शामिल होनेका निमंत्रण दिया जाय।

ये दो प्रस्ताव अुस रातको पास हुअे जिसलिअे दक्षिण अफ्रीकाके अंग्रेजी अखबारोंमें अैसा शोर मचाया मानो अेक नया धड़ाका हुआ हो। हिन्दुस्तानके राजनीतिक हलकोंमें और जिंग्लैण्डमें भी अैसा ही असर हुआ। जिन दोनों प्रस्तावोंके बारेमें कैसा अूहापोह मचा यह हम आगे देखेंगे। अभी तो मैं जिन प्रस्तावके बादके दो दिनोंमें हुअी अेक अपूर्व घटनाकी तरफ मुड़ूंगा।

१३

प्रेम और शौर्यकी प्रतिमा

ता. २२-१२-१३ के दिन पहले दलको जेलमें गये तीन मास पूरे हुअे। श्रीमती कस्तूरबा वगैरा बहनें मेरित्सबर्गकी सख्त जेलमें थीं। गांधीजी डरबनसे मेरित्सबर्ग जाकर सब बहनोंका स्वागत करनेके लिअे जेलके दरवाजे पर खड़े थे। साथमें मि. कैलनबैक भी थे। अस्थि-पंजर पर मढ़े गये चमड़ेमें प्रबल आत्माको लेकर माता कस्तूरबा दूसरी बहनोंके साथ ता. २२-१२-१३ के रोज सुबह जेलके बाहर निकलीं। अुन्हें लेकर गांधीजी डरबन पहुंचे। अुसी दिन दूसरे भाअी भी डरबन जेलसे छूटे।

शामके पांच बजे होंगे। डरबनमें रुस्तमजी सेठका मकान लोगोंसे खचाखच भरा था। आगे दफ्तरके मकानके नीचे पीछेकी ओर खुला चौक था। वहां हड़तालमें बलिदान होनेवालोंके आप्तजनों और स्वजनोंकी अेक बड़ी भीड़ बैठी थी। अुन सबको साथ मिलनेके लिअे ही बुलवाया गया था। सभी गांधीजीके दर्शनोंकी अभिलाषाके साथ मृत आत्माओंके शोकपूर्ण स्मरणमें बैठे थे। मैं गांधीजीके पास ही बैठा था। थोड़े समय बाद गांधीजी अुठे। मि. सेजरसु नामके अेक मद्रासी भाअीको अपना दुभाषिया बनाकर अुन्होंने साथ लिया। मैं भी पीछे पीछे गया।

गांधी राजा को आते देखकर विलाप करते हुअे सब खड़े हो गये। अेक बाअी जिसका निर्दोष पति जालिम सरकारकी पुलिसकी गोलीसे मारा गया था अेकदम आगे बढ़ आअी, 'गांधी राजा' के चरणोंमें लट पड़ी और करुण विलापाश्रुओंसे 'गांधी राजा' के चरणोंको भिगोने लगी।

वह कितना करुण था! अुस समय मैंने क्या देखा? कोअी अनोखी बात देखी। भगवान बुद्ध या अीसाके जीवनमें जो पढ़ा और सुना था परन्तु देखा नहीं था वही दृश्य यहां देखा। सैकड़ों वर्षोंकी गुलामी पराधीनता और भूखके दुःखोंसे पीड़ित मारकाट और लूटसे दीन बनी हुअी झोपड़ोंके भीतर करुण दशामें खड़ी अेक अपूर्व स्त्रीकी मूर्तिके सामने अुसके कंधों पर अपने दोनों हाथ रखकर अुसका अुद्धार करनेवाला कोअी अलौकिक पुरुष मैंने वहां खड़ा देखा। दुःखी दीन पुत्रोंसे लुटी हुअी और अनेक प्रहारोंसे जर्जरित भारतमाताकी अपूर्व आंखोंकी ओर वह पुरुष टकटकी लगाकर देखता ही रहा। वातावरण बिलकुल शान्त था। अपूर्व पवित्रता गंभीरता दुःख और प्रचंड पुण्यप्रकाश अुस वातावरणमें भरा था। प्रेम और धैर्यकी अुस प्रतिमाने भारतमाताके सारे दुःखोंका दर्शन अुस मूर्तिमें किया। आंखोंमें आंसुओंके मोती चमक अुठे। अन्तमें मृदु स्वरसे वह पुरुष बोला "बहन रो मत। तुझे विधवा बनानेवाला मैं हूं। अपना सिर मैं तेरी गोदमें रखता हूं। मुझे तू माफ कर। तेरा पति अमर हो गया है। वह देशकी सेवामें जालिमोंके हाथों मारा गया है। फिर भी वह अमर है। बहन शान्त रह। रो नहीं। अिस दुःखका अन्त क्या अिस तरह होगा? मेरी हजारों बहनें लड़कियां और मेरी अपनी पत्नी भी जब तेरी तरह प्यारी मातृभूमिके अिस सेवायज्ञमें विधवा होंगी तभी अिस दुःखका अन्त होगा। अितना कहकर वह पुरुष शान्त हो गया। अुसने अुस माताके आंसू करुणार्द्र होकर पोंछे अुस माताको नमस्कार किया और वहांसे हटकर दूसरोंकी तरफ गया।

मैं तो स्तब्ध होकर खड़ा ही रहा। दूसरी तरफ घूमकर मैंने अपनी आंखोंके आंसू पोंछ डाले। मैंने अिस बातका अितमीनान किया कि मैं जाग रहा हूं या सपना देख रहा हूं।

अुस बहनको आश्वासन मिला और वह शान्त हुअी। मैं भी अिस घटनाको याद करता हुआ अुस पुरुषके पीछे पीछे घूमा।

अिस पवित्र प्रसंगके दूसरे ही दिन दीनबन्धु अेण्ड्रूज और भाअी पियर्सन डरबनके बन्दरगाह पर अुतरनेवाले थे। गांधीजी और दूसरे सब लोग रातको फिनिक्स जाते थे और सुबह डरबन वापस आते थे। दीनबन्धु और पियर्सन हिन्दुस्तानसे रवाना हुअे तब तो अिस जानकारीके साथ जहाजमें बैठे थे कि गांधीजी वगैरा सब जेलमें हैं। पन्द्रह दिनके सफरके दरमियान

आलोचना हुअी। मि गांधी कैसे ही सन्त या महात्मा हों फिर भी वे हिन्दुस्तानी हैं। दक्षिण अफ्रीकाकी भूमि पर अुतर कर रेवरेन्ड अेण्डूज जैसे अंग्रेज सज्जन अैसा व्यवहार करें तो अिससे गोरोंकी अिज्जतको नुकसान पहुंचता है। रेवरेन्ड अेण्डूजको जानना चाहिये कि यह हिन्दुस्तान नहीं परन्तु दक्षिण अफ्रीका है।" दीनबन्धुने अिसका करारा जवाब देकर अुनके मुंह बन्द कर दिये।

१४

कमीशनका बहिष्कार क्यों?

दीनबन्धु अेण्डूज आये और अुसी रात फिनिक्समें देर तक जागकर अुन्होंने गांधीजीसे सारा हाल जान लिया। पहले तो कमीशनके बहिष्कारकी बात अुन्हें अच्छी नहीं लगी। अिस लड़ाअीके लिअे हिन्दुस्तानमें भी गोखलेने जो कुछ किया और वाअिसरॉयकी भी लड़ाअीके प्रति सहानुभूति प्राप्त की तथा वाअिसरॉयने भी जिस अच्छे भावसे बड़ी सरकार पर दबाव डाला अुस सबके परिणामस्वरूप यूनियन सरकारने जो कुछ करनेका विचार किया हो अुसे वह कमीशनके जरिये कराये तो अुसमें क्या बुराअी है? अैसे कमीशनका हिन्दुस्तानी लोग बहिष्कार करें, तो अुसका असर भारत-सरकार पर, बड़ी सरकार पर और हिन्दुस्तानके राजनीतिक क्षेत्रोंमें कितना बुरा होगा यह विचार दीनबन्धुके मनमें अुठने लगा। परन्तु जब गांधीजीने सत्याग्रहकी रीति-नीति हिन्दुस्तानियों द्वारा की गअी प्रतिज्ञाओंके विस्तृत कारण और कमीशनको मान देनेमें हिन्दुस्तानियोंके भयंकर अपमानकी बात विस्तारसे बताअी तो दोनों मित्रोंको यकीन हो गया कि हिन्दुस्तानियोंका बहिष्कारका कदम सत्य और सिद्धान्तके अनुसार है। जब यह विश्वास हो गया तो दोनों मित्रोंने कमीशनके बहिष्कारमें पूरी सम्मति दी। अितना ही नहीं अीसाअी नववर्षके मंगल-दिवस पर गांधीजी जो कूच आरम्भ करनेवाले थे अुसमें शामिल होनेकी अपनी तैयारी भी बताअी।

परन्तु कमीशनके बहिष्कारकी बातने सभी जगह बड़ी गलतफहमी पैदा कर दी। दक्षिण अफ्रीकाके अखबार तो यही कहने लगे कि हिन्दुस्तानी

लोग मूढ़ता और मूर्खता कर रहे हैं। हिन्दुस्तानके अखबार कहने लगे गांधीने कमीशनका बहिष्कार घोषित करनेमें जल्दबाजी की है। अिसमें अुनका हठीलापन है। सत्याग्रहीका अैसा कदम भले ही अुचित माना जाता हो परन्तु राजनीतिक सूझ-बूझवाला पुरुष अैसा पागलपन नहीं करेगा।" बम्बईके शेर सर फीरोजशाह मेहता तो नाक-भौंह सिकोड़ कर कहने लगे यह तो गांधीका हठ और अविचारीपन माना जायगा।

अिस तरह सारे हिन्दुस्तानका वातावरण डांवाडोल हो गया। अिंग्लैंडमें भी लॉर्ड अेम्पथीलकी कमेटी नाराज हुअी। अुन्होंने गांधीजीको तार दिया हिन्दुस्तानियोंको कमीशनकी बात स्वीकार कर लेना चाहिये। अुनके अिस निश्चयके लिअे हमें बड़ा अफसोस है। गांधीजीने अिस तारका अुतनी ही दृढ़तासे जवाब दिया हिन्दुस्तानी लोग कौमके स्वाभिमानकी रक्षाके लिअे दृढ़ हैं। कमीशनको स्वीकार कर लेनेमें हिन्दुस्तानका अपमान है। आपकी सलाहके लिअे हम आपका आभार मानते हैं। परन्तु हमें अफसोस है कि हम आपकी सलाहको मान नहीं सकते। अिस तरह पत्र तार और अखबारोंमें आलोचनायें आती रहती और अुन्हें पढ़कर अुन पर चर्चायें होती रहती। रातका समय अिन चर्चाओंमें ही जाता। अितनेमें हिन्दुस्तानसे भी गोखलेका तार आया। तारका भावार्थ यह था कि कमीशनको न मानकर नअे वर्षके दिनसे दूसरी कूच शुरू करनेके समाचारोंसे मुझे बड़ा दुःख हुआ। आपके अिस निश्चयसे मेरी और वाअिसरॉय लॉर्ड हार्डिंगकी स्थिति बड़ी विषम हो गअी है। यह विश्वास रखकर कि यूनियन सरकार आपके मसलोंका निपटारा जरूर करेगी कमीशनको स्वीकार कर लीजिये। अुसके सामने जरूरी सबूत दीजिये और कूच बन्द रखिये।

अैसा स्पष्ट तार, अुसमें गोखलेजीकी हार्दिक प्रार्थना अिस प्रसंगके साथ अुनकी तीव्र सहानुभूति आदि बातोंको सोच कर सभीका दिल बदलने लगा। गोखलेजीकी सलाह न मानी गअी तो अुन्हें कितना बुरा लगेगा और अुनकी तबीयत पर अिसका कितना बुरा असर होगा? परन्तु गांधीजी जैसे कुसुमकी भांति कोमल थे वैसे ही वज्रकी भांति कठोर भी थे। वे तो दृढ़ ही रहे। रातकी चर्चाके समय अुनसे पूछा गया कि

श्री गोखले वाअिसरॉयके आश्वासन पर यकीन दिलाते हैं कि कमीशनको स्वीकार करके कूच बन्द रखनेसे कमीशन अच्छी सिफारिशें

ही करेगा और सरकार अुन्हें मंजूर करके हमारे प्रश्नका फैसला करेगी तो फिर भी गोखलेके आश्वासन पर विश्वास रख कर अुनकी सलाह माननेमें क्या हर्ज है ?"

गांधीजीने अटल रहकर जवाब दिया सम्राट् महोदय खुद आकर मुझे आश्वासन दें कि यह कमीशन स्वीकार करनेसे तुम्हें हिन्दुस्तानका स्वराज्य दे दूंगा तो भी मैं कहूंगा कि अैसा निकम्मा और अपमानभरा स्वराज्य मुझे नहीं चाहिये। हिन्दुस्तानको अपमानित करके नीचा मुंह रखकर मैं स्वराज्य लूं तो वह स्वराज्य कैसा होगा? और कितने दिन तक टिकेगा? हिन्दुस्तानका स्वाभिमान पहले। अैसा होगा तो हिन्दुस्तानका स्वराज्य स्वाभिमानके पीछे पीछे अपने-आप चला आयेगा।"

हम तो सब चुप रहे। अिन वचनोंके सामने क्या कहा जा सकता था? गांधीजीने तुरंत ही श्री गोखलेके तारके जवाबमें अेक लम्बा तार अिस तरह भेजा

आपके दुखको मैं समझ सकता हूं। बड़ीसे बड़ी बातको छोड़कर आपकी सलाहका आदर करनेकी मेरी अिच्छा रहती है। लॉर्ड हार्डिंजने जो सहायता दी है वह अमूल्य है। मैं यह भी चाहता हूं कि वह सहायता आखिर तक मिलती रहे। परन्तु मैं चाहता हूं कि आप हमारी स्थितिको समझें। अिसमें हजारों आदमियोंकी प्रतिज्ञाका सवाल है। प्रतिज्ञा शुद्ध है। सारी लड़ाअीकी रचना अिस प्रतिज्ञा पर हुअी है। अगर प्रतिज्ञाका बन्धन न होता तो हममें से बहुतसे लोग आज तक गिर गये होते। हजारोंकी प्रतिज्ञा पर अेक बार पानी फिर जाय तो फिर नीति-बंधन जैसी कोअी चीज ही नहीं रहती। प्रतिज्ञा लेते समय लोगोंने पूरा विचार कर लिया था। अुसमें किसी प्रकारकी अनीति तो है ही नहीं। बहिष्कारकी प्रतिज्ञा लेनेका कौमको अधिकार है। मैं चाहता हूं कि आप भी अैसी सलाह दें कि अिस प्रकारकी प्रतिज्ञा किसी भी व्यक्तिके लिअे न टूटे और हर तरहका खतरा अुठाकर भी अुसका पालन होना चाहिये। यह तार लॉर्ड हार्डिंजको बता दीजिये। मैं चाहता हूं कि आपकी स्थिति विषम न हो। हमने लड़ाअी अीश्वरको साक्षी रखकर अुसीकी सहायता पर आधार रखकर आरंभ की है। अिसमें बुजुर्गोंकी और बड़े आदमियोंकी मदद हम मांगते हैं और चाहते हैं। वह मिले तो हमें खुशी होती है। परन्तु मदद मिले या न मिले मेरी नम्र राय यह है कि

प्रतिज्ञाका बन्धन हरगिज न टूटना चाहिये। अुसके पालनमें मैं आपका समर्थन और आशीर्वाद चाहता हूं।"

अिस तरह गांधीजी पर बड़े दबाव पड़े परन्तु वे हिन्दुस्तानके स्वाभिमान और ली हुअी प्रतिज्ञाके नाम पर दृढ़ रहे। यी मोखलेको और वाअिसरॉयको यह पसन्द नहीं आया। फिर भी अुनमें से किसीने अपनी हमदर्दी वापस नहीं ली। दूसरी तरफ जनरल स्मट्स भी मजबूत रहे परन्तु अुनकी मनोदशामें बड़ा फर्क पड़ गया। जो जनरल स्मट्स अेक महीने पहले गांधीजीके साथ बात भी नहीं करना चाहते थे वे अब किसी तरह हिन्दुस्तानियोंके सवालका सच्चे दिलसे निपटारा करना चाहते थे। अिसलिअे जब गांधीजीने जनरलको लिखकर यह बताया कि वे कमीशनको स्वीकार न करनेकी सलाह कौमको क्यों दे रहे हैं तब अुन्होंने भी साफ दिलसे अपने कारण बता दिये कि वे कमीशनमें परिवर्तन क्यों नहीं कर सकते। गांधीजीने नीचेका प्रथम पत्र लिखा था

हम कमीशनका स्वागत करते हैं। परन्तु अुसमें दो सदस्य जिस ढंगसे नियुक्त किये गये हैं अुसके विरुद्ध हमें सख्त अेतराज है। अुनके व्यक्तित्वके प्रति हमारा कोअी विरोध नहीं है। वे प्रसिद्ध और समझदार नागरिक हैं। परन्तु अुन दोनोंने बहुत बार हिन्दुस्तानियोंके प्रति अपनी अरुचि प्रगट की है। अिसलिअे अनजानमें भी अुनसे हमारे साथ अन्याय हो सकता है। मनुष्य अपना स्वभाव अेकाअेक नहीं बदल सकता। ये दो सज्जन अपना स्वभाव बदल डालेंगे यह मानना कुदरतके कानूनके खिलाफ है। फिर भी हम यह नहीं चाहते कि अुन्हें हटा दिया जाय। हमारी तो अितनी ही सूचना है कि अुसमें कोअी तटस्थ पुरुष और बढ़ा दिये जायं और अिसी हेतुसे हम सर जेम्स रोज़अिन्स और माननीय डब्ल्यू पी श्राअिनरके नाम सुझाते हैं। ये दोनों प्रख्यात व्यक्ति हैं और अपनी न्यायवृत्तिके लिअे मशहूर हैं। हमारी दूसरी प्रार्थना यह है कि तमाम सत्याग्रही कैदियोंको छोड़ दिया जाय। अगर अैसा न हुआ तो हमारे लिअे जेलसे बाहर रहना मुश्किल हो जायगा। अब अुनको जेलमें रखनेका कोअी कारण नहीं रह जाता। और अगर हम कमीशनके सामने सबूत दें तो हमें खानोंमें जहां-जहां गिरमिटिये काम करते हैं वहां जानेकी छूट होनी चाहिये। अगर हमारी प्रार्थना स्वीकार न हो, तो हमें अफसोसके साथ फिर जेलमें जानेके अुपाय ढूंढने पड़ेंगे।

गांधीजीके अिस पत्रके जवाबमें जनरल स्मट्सने कमीशनमें किसी भी तरहका फेरबदल करनेसे साफ अिनकार कर दिया। फिर भी अुन्होंने अेक दलील बहुत ही अुचित दी कि "कमीशन किसीके पक्षके संतोषके लिअे नहीं है। वह सरकारके संतोषके लिअे है। जैसे हिन्दुस्तानियोंकी सम्मति नहीं ली गयी वैसे ही जमींदारों या गोरोंकी अन्य किसी संस्थाकी सम्मति भी नहीं ली गयी। फिर भी कमीशनको निष्पक्ष और अदालती बनाया गया है।" गांधीजीने जनरल स्मट्सके जवाबकी अिस दलीलको पसन्द किया। अिस मुद्देमें गांधीजीने देखा कि हिन्दुस्तानी प्रजा अपनी प्रतिज्ञा पर कायम रहकर भी समझौता कर सकती है। अिसलिअे अुन्होंने जनरल स्मट्ससे मुलाकात की।

अैसा करके गांधीजीने समझौता भी किया और कमीशनका बहिष्कार करनेकी हिन्दुस्तानियोंकी प्रतिज्ञाका पालन भी हुआ।

अिस लड़ाईका समझौता होनेके बाद गांधीजीने अपनी विचारधाराके अेक नयी खोज की। ली हुयी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेसे अुसके कितने मीठे परिणाम आये अिस बारेमें अुन्होंने 'अिंडियन ओपीनियन' में अेक लेख लिखा था। अुसका सार यह था

हिन्दुस्तानी प्रजाने कमीशनको स्वीकार किया होता तो क्या होता? हिन्दुस्तानी अपनी सारी शक्ति कमीशनके सामने अपने कामके सबूत पेश करनेमें लगाते। हम पर कितने कितने जुल्म हुअे तीन पौंडका कर कितना अनुचित है हिन्दुस्तानियोंका कितना अपमान किया जाता है, वगैरा सभी बातें साबित करनेकी हम कोशिश करते। गोरी प्रजा जमींदार और व्यापारी अिससे अुल्टी बात साबित करनेका प्रयत्न करते। जो जुल्म हुअे अुन्हें बतानेमें भी किसी हद तक अतिशयोक्ति हो सकती थी। हमारी बात भी अतिशयोक्तिवाली होती तो वे अुस सारी बातको गलत ठहरानेकी कोशिश करते। अैसा करनेमें स्पर्धा होती। अेक-दूसरेके खिलाफ कीचड़ अुछाला जाता। अेक-दूसरेको झूठा साबित करनेकी कोशिश की जाती। अंग्रेजी अखबार जमींदारों और व्यापारियोंकी मालिकीके ठहरे, अिसलिअे वे तो अुन्हींका पक्ष लेते और अभी जो थोड़ा-बहुत पक्ष वे हमारा लेते हैं अुसके बजाय वे भी हम पर धूल अुड़ाने लगते। अिस प्रकार दोनोंके हृदयकी बुरी वृत्तियाँ जाग्रत होतीं और स्पर्धामें अेक-दूसरेके प्रति शिष्टाचारका पालन करना भी हम भूल जाते। अैसी हालतमें प्रमाण देते देते छह महीने तो बातमें ही पूरे हो जाते। शायद

१५

सुलहके मूल

जनरल स्मट्सकी धारणा थी कि लड़ाअीको लंबे अरसे तक चलाने देकर सत्याग्रहियोंको थका दिया जाय। सत्याग्रहकी लड़ाअीमें हार तो हो ही नहीं सकती। जीत अुसमें निश्चित है। परन्तु अुसमें समयका प्रश्न रहता है। समयका प्रश्न सत्याग्रहियोंके जोर पर निर्भर है। सत्याग्रहकी लड़ाअीमें ज्यादा आदमी शामिल हों तो अुसका परिणाम जल्दी आता है और थोड़े आदमी हों तो अुसमें देर लगती है। अिसी तरह हमने देखा कि दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानियोंने अैसी शक्ति बताअी कि तीन ही मासमें सरकारको झुकनेके सिवा कोअी चारा नहीं रहा। अिसलिअे अिस आखिरी समझौतेकी वृत्ति जनरल स्मट्सके दिलमें पैदा करनेवाली प्रथम वस्तु तो हमारी शक्ति ही कही जायगी। जब हमने पर्याप्त शक्तिका अुपयोग किया और अुचित पुरुषार्थ किया तब हमारी मदद पर दूसरी शक्तियाँ भी आ गअीं। ये शक्तियाँ कौन कौनसी थीं अिसे अब हम देखें।

हिन्दुस्तानका लोकमत हमारा सहायक बना यह हमने देख लिया। अुस लोकमतको तैयार करनेवाले श्री गोखले अिस लोकमतके जनक माने जायेंगे।

हिन्दुस्तानके लोकमतके जोरके कारण माननीय वाअिसरॉय लॉर्ड हार्डिजको भी हमारी मदद पर आना पड़ा। लोकमतने अुनके हृदयमें बसी हुअी न्यायवृत्तिको जाग्रत किया।

हिन्दुस्तानके लोकमतकी शक्ति और लॉर्ड हार्डिजकी दृढ़ताके कारण ब्रिटिश सरकारको भी हमारी सहायतामें आना पड़ा। अिन तीनों बलोंका हाल हम पहले जान चुके हैं। अिसके सिवा कअी व्यक्तियोंने सुलहके दूतके रूपमें जो सुंदर काम करके दिखाया अुसीको बताना अिस प्रकरणका हेतु है।

पहले तो आते हैं दीनबंधु अेण्ड्रूज और भाअी पियर्सन। अुन्होंने दक्षिण अफ्रीकामें जो काम किया वह हृदयकी अुमंगसे और भ्रातृभावसे किया। अुन्होंने आज तक हिन्दुस्तानियोंके बीच रहकर हिन्दुस्तानमें और अुसके बाहर हिन्दुस्तानियोंके हितैषियोंके रूपमें नहीं बल्कि हिन्दुस्तानियोंके रूपमें

ही काम किया है। दक्षिण आफ्रीकामें समझौता सरल और अच्छा हो, जिस लिये अन्होंने जी-तोड़ मेहनत की। अन्होंने गांधीजीका रास्ता पकड़ लिया। गांधीजीका दृष्टिबिन्दु समझने और बादमें गोरे नेताओं, मंत्रियों और अखबारोंके प्रतिनिधियोंसे मुलाकात करने, अुनके विचार जानने और जिन सबके साथ गांधीजीके दृष्टिकोणका मेल बैठानेके लिये अन्होंने अथक प्रयत्न किया। जब प्रारंभिक समझौतेकी बातचीत खत्म हुआी, तब अेक घटना हो गयी। सब मंत्रियों और गांधीजीके साथ समझौतेकी शर्तें तय हुआीं। बातचीतके अनुसार समझौतेकी शर्तोंके विषयमें अेक-दूसरेको लिखे गये पत्रोंके मसौदे मंजूर हुअे। जिन पत्रोंको बाकायदा लिखकर और अुन पर हस्ताक्षर करके अेक-दूसरेके पास पहुंचाना बाकी था। जितनेमें फिनिक्ससे गांधीजीके नाम प्रिटोरियाके पते पर तार गया कि कस्तूरबा बहुत बीमार हैं और खतरनाक हालतमें हैं। जिसलिये जल्दी आजिये। गांधीजीने तार पढ़ा और मि० अेण्ड्रूजको बताया। मि० अेण्ड्रूजने कहा, "हमें किसी वक्त चलनेके लिये तैयार हो जाना चाहिये।

गांधीजी : समझौतेके पत्रोंका क्या होगा?

मि० अेण्ड्रूज : "वे डाकके जरिये भेज दिये जायेंगे और प्राप्त किये जायेंगे।

गांधीजी : अैसा कैसे हो सकता है? कौमका समझौता होना हो और यह निश्चित हो कि चौबीस घंटोंमें पत्रोंका आदान-प्रदान हो जायगा, तब किसी भी कारणसे यहांसे जाकर समझौतेको कच्ची स्थिति तक भाग लेनेके बदलेमें हिन्दुस्तानी कौमको खतरेमें डालनेका मुझे क्या अधिकार है?

मि० अेण्ड्रूज : लेकिन तारमें यह लिखा है कि मिसेज गांधीकी भयंकर स्थिति है। आजमें दो दिन देर करनेसे कुछ भी परिणाम आ सकता है।

गांधीजी : "मेरे अपने कर्तव्यको छोड़कर अेक दिन जल्दी चले जानेसे यह बच ही जायगी, जिसका भी क्या भरोसा है?"

मि० अेण्ड्रूज : तब क्या करें?

गांधीजी : "यह काम पूरा करके ही यहांसे हटना चाहिये और कुछ हो ही नहीं सकता।

मि० अेण्ड्रूज चुप रहे। वे चिन्तित हो गये। तुरंत ही वहांसे अुठे। टेली फोन घुमाया। जनरल स्मट्सको बुलाकर बात की : यहां हम घर

अेक धर्म-संकट आ पड़ा है। फिनिक्ससे तार आया है कि श्रीमती गांधी भयंकर रोगमें फंस गयी हैं। और मि॰ गांधीको तुरंत ही बुलाया है।

जनरल स्मट्सने जवाबमें कहा — मि॰ गांधी खुशीसे जा सकते हैं। हमारा समझौता अब निश्चित है।

मि॰ अेण्ड्रूज — आप मि॰ गांधीको तो जानते ही हैं। अुनका यह कहना है कि चाहे फिनिक्स जानेमें चौबीस घंटेकी देर हो परन्तु अिसका काम छोड़कर मैं किसी हालतमें नहीं जा सकता। अिसलिअे आप मेरी अेक विनती सुनेंगे?

जनरल — "हां जरूर आप कहें वैसा करनेको मैं तैयार हूं।

मि॰ अेण्ड्रूज — काम तो होनेवाला है फिर भी मि॰ गांधीकी तरफका पत्र तैयार करके अुस पर अुनके हस्ताक्षर करवाकर मैं आपके पास आता हूं। आप अपना पत्र तैयार करवाकर और अुस पर हस्ताक्षर करके मुझे दे देंगे?

जनरल — देर तो बहुत हो जायगी। मुझे और भी दूसरे जरूरी काम हैं। फिर भी आप मि॰ गांधीका पत्र ले आिअे। मैं अपना पत्र यथासंभव जल्दी ही तैयार करके दे दूंगा।

शाम हो गयी थी। मि॰ अेण्ड्रूजने तुरंत हिन्दुस्तानियोंकी तरफसे खरीता तैयार कराया, अुस पर गांधीजीके हस्ताक्षर कराये और स्वयं अुसे लेकर गये। रात हो जाने पर भी जनरल स्मट्स आफिसमें ही थे। अुन्हें बहुत रुकना पड़ा। अुन्होंने गांधीजीका पत्र पढ़ा और निर्णयके अनुसार सरकारकी तरफसे स्वयं पत्र लिखकर और अुस पर हस्ताक्षर करके मि॰ अेण्ड्रूजको दे दिया। मि॰ अेण्ड्रूजने जनरल साहबका बड़ा आभार माना और पत्र लेकर रातके दस बजे वापस डेरे पर आये। गांधीजी और अेण्ड्रूज तुरंत रातकी गाड़ीसे फिनिक्सके लिअे रवाना हुअे।

कस्तूरबाकी हालत बड़ी गंभीर थी। गांधीजी ठीक वक्त पर आ पहुंचे। अैसे समय भी अुन्होंने डॉक्टरको नहीं बुलाया। खुद ही अुनकी बीमारीका अिलाज किया और कस्तूरबा खतरेसे पार हो गयीं।

दीनबन्धु अेण्ड्रूजने अिस तरह भ्रातृभावसे ही काम किया। अुन्होंने दक्षिण अफ्रीका जाकर वहांके वातावरणमें बड़ा सुन्दर परिवर्तन कर दिया। अिसमें भी केपटाअुनके गोरे श्रोताओंकी अेक विराट सभामें जिसमें दक्षिण अफ्रीकाके गवर्नर जनरल लॉर्ड ग्लैडस्टन दीनबन्धुका भाषण सुनने गये थे

दीनबन्धुने कमाल कर दिया। हिन्दुस्तानियों, हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तानकी संस्कृतिके बारेमें अुन्होंने अैसा भावपूर्ण प्रवचन दिया कि अुसे सुनकर बहुतोंकी आंखोंसे आंसू बहने लगे। अिस तरह अनेक सेवायें करके दीनबन्धु और भाअी पियर्सन वहांसे सीधे अिंग्लैण्ड चले गये।

अिन दोनों साधु पुरुषोंके अलावा हिन्दुस्तानसे गये हुअे भारत-सरकारके प्रतिनिधि सर बेंजामिन रॉबर्ट्सनने भी समझौतेके लिअे अच्छा काम किया। अुसके लिअे अेक अलग प्रकरण बनेगा। मैं आशा रखता हूं अिसलिअे यहां अिस सम्बन्धमें नहीं लिखता।

अूपर लिखे व्यक्तियोंके सिवा कुछ अज्ञात व्यक्तियोंने जो काम किया है अुसके बारेमें दुनिया कुछ नहीं जानती। पाठकोंने अुनके विषयमें कभी लिखा मालूम नहीं होता। अुन व्यक्तियोंके बारेमें मैं जो कुछ जानता हूं अुसे यहां बता दूं तो अुपयोगी होगा। ये दो स्त्री व्यक्ति हैं मिस हॉबहाअुस और मिस मोल्टीनो नामक दो सहेलियां। अुनके बारेमें मैं अगले प्रकरणमें लिखूंगा।

१६

सेवाभावी सखियाँ

श्रीमती कस्तूरबाके जेलसे छूटनेके बाद अेक महिला प्रिटोरियामें आयी। लगभग सत्तर वर्षकी अुम्र होने पर भी अुनके शरीरमें जवानीका जोश भरा था। शरीरसे खूब हृष्टपुष्ट और गोरी-भूरी थीं। चलनेमें अैसी तेज मानो अनुपम तीर छूटा हो। हास्य तो अुनके मुंह पर सदा ही बना रहता था। हृदय प्रफुल्लित और अत्यन्त स्नेहपूर्ण था। सत्तर वर्षकी बूढ़ी होने पर भी वे बच्चे जैसे नौजवानोंको शरमिन्दा करने वाली तन और मनकी स्फूर्तिसे भरपूर थीं।

अुन्होंने कस्तूरबाको पहचाना। हमारे रोजमर्राके कामोंमें वे घुलमिल गयीं। बातमें जोशकी बातें थीं। बड़े नम्र और स्नेहपूर्ण प्रश्न करके कस्तूरबासे जेलका हालचाल पूछने लगीं। खान-पीनकी तकलीफ अुनके लिअे किये गये अपमान और जेलके सख्त काम वगैराकी बातें कस्तूरबाने टूटी-फूटी अंग्रेजीमें सुनायीं। मानो सब कुछ समझ गयी हों, अिस तरह अुन महिलाने अेक तीव्र

निश्वास लिया और बोल अुठीं "गजब हो गया! यह भारी निर्दयता कही जायगी। यह सरकारको क्या सूझा? अिस महिलाको जेलमें डालनेकी बात मुझे कैसे सूझी? अिसने क्या अपराध किया था? यह अपराध करे, असी कोओ चीज ही अिसमें नहीं है। अिसके चेहरे पर तो बिलकुल निर्दोषता ही झलक रही है। निर्दोष पवित्र देवी जैसी यह कस्तूरबा जनरल स्मट्सका क्या अपराध कर सकती थी? देखो न अिसके शरीरमें भी क्या रह गया है? सिर्फ अस्थिपंजर अुनकी अेक बूंद भी कहीं नजर आती है? अरेरे, जनरल स्मट्सको यह क्या सूझा? मिसेज गांधी मैं तो दूर केपटाअुनसे खास आप ही को देखने आयी हूं। मैं जनरल बोथासे सब हाल कहूंगी और अुनकी तो अच्छी तरह खबर लूंगी। अगर वे असी पवित्र निर्दोष देवियोंको जेलमें डालेंगे तो राज्य कैसे चला सकेंगे?

यह महिला अिस तरह बोलती ही रही और कस्तूरबाकी तरफ देख देखकर पूछती रही "मिसेज गांधी मुझे सच कहिये आपको जेलमें सरकारने बहुत सताया? आपका शरीर कितना दुबला हो गया है! बिलकुल पीला मालूम होता है।

अुनका नाम था मिस माल्टीनो। अुनका माल्टीनो कुटुम्ब दक्षिण अफ्रीकामें मशहूर था। अुनके भाओका नाम मि जेम्स माल्टीनो था जो दक्षिण अफ्रीकाकी पार्लियामेण्टके अध्यक्ष थे। मिस सत्तर वर्षकी मुझ कुमारीने सारी जिन्दगी समाजकी सेवामें ही बितायी है। या यों कहिये कि समाज-सेवाके साथ ही अुसने विवाह किया है। दक्षिण अफ्रीकामें सिआग्रह सत्याग्रहकी लड़ाओ हुआी और अुसके सामने अंतमें यूनियन सरकारको भी झुकना पड़ा। जिसका असर दूर दूर तक हुआ। बहुतोंने यह लड़ाओ बड़े चमत्कारके समान देखी। मिस माल्टीनो और अुनकी सहेली मिस हॉबहाअुसको भी असा ही लगा। मिस हॉबहाअुसने अपनी सहेली मिस माल्टीनोको खास करके सब बात मालूम करनेके लिअे प्रतिनिधि जैसा था। मिस हॉबहाअुस अेक अंग्रेज महिला है। अुनका नाम दक्षिण अफ्रीकाके बोअर लोगोंमें घर घर मशहूर है। बोअर लोग, छोटे-बड़े सभी जिस महिलाको बड़ी बहनके नामसे सम्बोधन करते हैं। अंग्रेजों और बोअर लोगोंमें तो वैसे जन्मसे ही वैरभाव था। असा वेसुरा सम्बन्ध होने पर भी यह अंग्रेज महिला बोअर स्त्री-पुरुषों बालकों बूढ़ों और युवक-युवतियों सबकी बड़ी बहन कैसे बन गयी जिसका अेक अितिहास है।

सन् १९ २ में दक्षिण अफ्रीकामें बोअर-युद्ध हुआ। लॉर्ड किचनर अुस समय सेनाके सेनापति थे। अुनकी अधीनतामें अंग्रेज सेनाने दक्षिण अफ्रीकामें अनेक निन्द्य अत्याचार किये थे। अन्याय अत्याचार और दुराचार — किसी भी अुपायसे ट्रान्सवालके बहादुर और वीर मुट्ठीभर बोअर लोगोंको कुचल देना ही अंग्रेजोंका संकल्प था। अिसलिअे बोअर-युद्ध शुरू करनेमें अंग्रेज राजनीतिज्ञोंने धर्म-अधर्म या नीति-अनीतिको नहीं देखा। अिसी तरह लड़ाअी छिड़नेके बाद अंग्रेज सेनाने भी अत्याचार और निर्दय राक्षसी कृत्य करनेमें कोअी कसर नहीं रखी। बोअर लोगोंने अपने स्त्री-बच्चोंको अेक जगह जमा करके और अलग निवासस्थान बनाकर अिसलिअे वहां रख दिया था कि वे सही सलामत रहें और अुन्हें लड़ाअीके कष्ट न अुठाने पड़ें। बोअर योद्धा वेधड़क अलग अलग भागोंमें बहादुरीसे लड़नेमें मशगूल थे। अंग्रेज सेनाने अिसका लाभ अुठाया। अुसने बोअर स्त्री-बच्चोंके रहनेकी जगह पर हमला करके अुनके कैम्पको आग लगा दी। अंग्रेज सेनाके जंगली पशुओं जैसे सैनिकोंने अनेक स्त्रियों पर अत्याचार करके अुनकी लाज लूटी। और अनेक बालकों तथा कैम्पकी रक्षाके लिअे रखे हुअे गिनतीके वीर बोअर योद्धाओं पर अंग्रेज सेनाके डाकू टूट पड़े और अुन्हें कत्ल कर डाला। जब तक मानव-जाति जीवित रहेगी तब तक यह निन्द्य कार्य अंग्रेज जातिके अितिहासमें अुसका काला कलंक बनकर रहेगा।

यह सच्चाअी धीरे धीरे प्रकाशमें आअी। तार या अखबारोंके जरिये तो अैसे समाचार अधिकारी लोग अिंग्लैण्डमें जाने नहीं देते थे। परन्तु पत्रव्यवहारके जरिये और धर्म तथा नीतिके प्रेमी मनुष्योंके मारफत ये समाचार अिंग्लैण्ड पहुंचे। अुनकी चर्चा होने लगी। न्यायप्रिय और सहृदय अंग्रेजोंने अपने जातिभाअियोंके अिस निन्द्य व्यवहारका विरोध किया। अुस समय अेक अंग्रेज युवा कुमारीका हृदय अुबल अुठा। पुण्यप्रकोपसे अुसके हृदयमें आग लग गअी। अुसने दूर दक्षिण अफ्रीकामें जाकर अैसे निर्दोष बच्चों और स्त्रियोंकी हत्याके बारेमें जांच करके अुनकी सेवामें ही सारा जीवन बितानेका निश्चय किया। अुसने अिंग्लैण्डमें भी अिन निन्द्य अत्याचारोंका खूब प्रचार किया। जब वह दक्षिण अफ्रीकाके जहाजमें डरबन बन्दरगाह पर अुतरी अुस समय दक्षिण अफ्रीकाके अंग्रेजोंका मिजाज हाथमें नहीं रहा। अपने देशकी अेक पवित्र दयाकी मूर्ति जैसी दयामयी कुमारीको दक्षिण अफ्रीकाके अंग्रेजोंने दुष्टतापूर्ण गालियां दीं

और देशद्रोही बताया । कुछने मुंह पर सड़े हुये अंडे फेंककर हमला किया। फिर भी अिन सब अपमानों तकलीफों और खतरोंकी परवाह न करके यह कुमारी ट्रान्सवालमें आयी। अुसने सारी हालत भर रही लड़ाईके भयानक वातावरणमें भी खुद देखी और वहां बोअर स्त्रियों और बच्चोंका कैम्प था वहां जाकर अुनकी देखरेख और सेवाका काम अपने हाथमें लिया। अिसी वीर और न्यायप्रिय दयालु अंग्रेज कुमारीका नाम मिस हॉबहाअुस था। वह अिस महिलाकी मदद करनेवाली दूसरी सेवाभावी बहनें भी मिल गयी और अुन्होंने बोअर-युद्धके बीचमें पशुवृत्तिवाली अंग्रेज सेनाके खतरेसे सैकड़ों बोअर स्त्री-बच्चोंकी रक्षा की। जो काम सैकड़ों सत्ताधारी योद्धा नहीं कर सके वह काम अिस वीर युवतीने अपने नैतिक बलसे कर दिखाया।

अुसके बादसे मिस हॉबहाअुस बोअर जातिकी जीवन-मित्र बन गयीं। अुन्होंने अुन्हींके बीच जीवन बिताया। और अुदारहृदय बहादुर बोअर जातिने अुन्हें अपनी बड़ी बहन का प्यारभरा नाम दिया। बोअर जाति जनरल बोथाको बड़ा भारी मानती थी और अिस अंग्रेज रमणीको बड़ी बहन समझती थी।

मिस मार्स्टीनो पिनिक्स आयी तारा हाल जानकर केपटाअुन गयीं और मिस हॉबहाअुसको सब बातें सुनायीं। अुन दयालु और नीतिप्रिय बहनका हृदय पक अुठा। अुन्होंने खानगी तौर पर जनरल स्मट्स और जनरल बोथासे हिन्दुस्तानियोंके मसलेका निपटारा करनेका आग्रह किया और अुन आश्वासन प्राप्त करके १ जनवरी १९१४के दिन हिन्दुस्तानियोंकी योजनानुसार कूच शुरू होनेसे पहले गांधीजीको नीचेके आशयका तार दिया

मेरे जैसी अेक बहनकी प्रार्थना पर अपनी कूच पन्द्रह दिनके लिये मुल्तवी रखिये। वगैरा

जनरल स्मट्सके पक्षमें बतायी हुअी समझौतेकी कुछ आशाके साथ अिस तारसे भी गांधीजीके दिल पर बहुत अच्छा असर हुआ। गांधीजीका मिस हॉबहाअुसके साथ कोअी परिचय नहीं था परन्तु वे अिस महिलाकी अच्छी प्रतिष्ठाके बारेमें कुछ जानते थे। अैसी निर्मल न्यायनिष्ठ नीतिप्रिय सहृदय और वीर रमणीकी मांगका अनादर करना गांधीजीको पसन्द नहीं आया। अुन्होंने तुरन्त सबके साथ सलाह-मशविरा करके जाहिर कर दिया कि "कूच १५ जनवरी तक मुल्तवी रखी जाती है।"

तो भी अुससे मुझे या मेरी कौमको कोअी नुकसान नहीं होगा। आज तक मुझे लाभ हुआ है और आपकी भेदनीति या चालाकीसे अुलटे मेरी कौमको ज्यादा लाभ होगा।"

फिर दोनों विरोधियोंने बातचीत करके प्रश्नका निपटारा कर डाला। क्या निपटारा किया यह हम अगले प्रकरणमें देखेंगे।

१७
प्रारंभिक समझौता

प्रारम्भिक समझौता होनेसे पहले गांधीजी और जनरल स्मट्सकी मुला-कातें कभी बार हुअी थीं और अुन्होंने काफी बातचीत की थी। जिसमें सर बेंजामिन रॉबर्ट्सनने भी मदद दी थी। अन्तमें समझौतेके चिह्नस्वरूप एक-दूसरेको पत्र लिखनेका फैसला हुआ। वह पत्रव्यवहार जिस प्रकार है।

हिन्दुस्तानियोंकी तरफसे गांधीजीका जनरल स्मट्सको लिखा पत्र

हम अपनी प्रतिज्ञाके कारण कमीशनमें आपके बताये अनुसार मदद नहीं दे सकते। जिस प्रतिज्ञाको आप समझ सकते हैं और अुसकी कद्र भी करते हैं। आप कौमके साथ संधिवार्ता करनेका सिद्धान्त स्वीकार करते हैं जिसलिये सबूत देनेकी बातके सिवा दूसरी तरहसे कमीशनको मदद देने और अन्तमें अुसके काममें बाधक न बननेकी सलाह तो मैं अपने देशभाअियोंको दे सकता हूँ। और जब तक कमीशनका काम जारी रहे और नये कानून बनें तब तक सरकारकी स्थितिको विषम न बनानेके लिये सत्याग्रहको मुलतवी रखनेकी सलाह मैं अुन्हें दे सकता। हम पर जेलमें और हड़तालके दिनोंमें जो जुल्म पड़े अुनके बारेमें मुझे कहना चाहिये कि अपनी प्रतिज्ञाके कारण हम जिन जुल्मोंको साबित नहीं कर सकेंगे। सत्याग्रहीकी हैसियतसे जहां तक हो सके हम अपने दुःखोंकी शिकायत नहीं करते और न अुनका मुआवजा मांगते हैं। परन्तु जिस समय तक हमारे मौनका यह अर्थ न होना चाहिये कि हमारे पास साबित करनेके लिये कोअी सामग्री ही नहीं है। मैं चाहता हूँ कि आप हमारी स्थितिको भी समझ सकें। और जब हम सत्याग्रह मुलतवी करते हैं तो जो लोग अभी सत्याग्रहके सिलसिलेमें जेलमें बन्द हैं वे छूटने चाहियें। हमारी मांगें क्या हैं यह भी मैं यहां बता देना अुचित समझता हूँ

(१) तीन पौण्डका कर रद हो।

(२) हिन्दू मुसलमान अित्यादि विधियोंके अनुसार हुअे विवाह जायज माने जायें।

(३) पढ़े-लिखे हिन्दुस्तानी अिस देशमें आ सकें।

(४) ऑरेन्जियाके विषयमें जो करार हुअे हैं अुनमें सुधार हों।

(५) यह आश्वासन दिया जाय कि प्रचलित कानूनका अमल अिस तरह होगा कि हमारे मौजूदा हकोंको नुकसान न पहुंचे।"

यह पत्र २१ जनवरी १९१४को गांधीजीने लिखा। अुसी दिन जो जवाब जनरल स्मट्सकी तरफसे गांधीजीको मिला अुसका आशय यह था

आप कमीशनके सामने गवाही नहीं दे सकते जिसके लिअे सरकारको अफसोस है। परन्तु वह आपकी स्थितिको समझ सकती है। आपने कष्टोंकी बात छोड़ देनेका अिरादा जाहिर किया अुसका हेतु भी सरकार समझती है। सरकार तो अिन कष्टोंसे अिनकार ही करती है परन्तु जब आप अुनका सबूत पेश नहीं कर रहे हैं तो सरकारके लिअे अिस मामलेमें कुछ करनेकी जरूरत नहीं रह जाती। सत्याग्रही कैदियोंको छोड़नेके बारेमें आपका पत्र मिलनेसे पहले ही सरकार हुक्म भेज चुकी थी। कौमको होनेवाले कष्टोंकी जो सूची आपने दी है अुसके बारेमें कमीशनकी रिपोर्ट मिलने तक सरकार अपनी कार्रवाई मुल्तवी रखेगी।

अिस प्रकार प्रारंभिक समझौता हुआ। परन्तु जैसे दूधका जला छाछको भी फूंक कर पीता है अुसी तरह बहुतसे हिन्दुस्तानियोंको भी डर लगा। अुन्हें अिस समझौते पर पूरा विश्वास नहीं हुआ। वे गांधीजीसे कहने लगे

आप फिर जनरल स्मट्सके जालमें फंस गये। वह बड़ी चालोंवाला बड़ा बदमाश है। आप बहुत सरल हैं। आपको वह दो बार धोखा दे चुका है, फिर भी आप अुस पर विश्वास कर बैठे। हिन्दुस्तानियोंकी शान्त लड़ाअीमें जाग्रत हुआ हमारा जोश अुससे हिन्दुस्तानमें अुत्पन्न हुआ असंतोष और यहांके पादरियों तथा अुनके कारण ब्रिटिश सरकार द्वारा यूनियन सरकार पर डाला हुआ दबाव — अिन सबके कारण जनरल स्मट्सने हां भर ली है। परन्तु सब कुछ शान्त हो जानेके बाद आप देखना वह जैसाका तैसा ही हो जायगा। जब तक धारासभामें कानून पास नहीं हो जाता तब तक आपको सत्याग्रह बन्द ही नहीं करना था।

जिस प्रकार बहुतसे मित्र कहते रहे। परन्तु दीनबन्धु अेण्ड्रूज जैसे साधु पुरुष और सर बेंजामिन रॉबर्ट्सन जैसे भारत-सरकारके प्रतिनिधिके बीच-बचावसे यह समझौता हुआ था जिसलिअे गांधीजीको भविष्यमें धोखा होनेका डर नहीं था। और जिस बार तो जनरल स्मट्सने खुदने ही बहुत शुद्ध हृदयसे काम लिया था। अुसका भी गांधीजी पर अच्छा असर पड़ा था।

यह समझौता हो जानेके बाद थोड़े ही दिनोंमें कमीशनका काम शुरू हुआ। अुसमें अुन्हीं मित्रोंके हिन्दुस्तानियोंने गवाही दी जो सत्याग्रहकी लड़ाओके बहुत विरोधी थे और यह गवाही भी कौमके विरुद्ध तो थी ही नहीं। कमीशनने तुरन्त अपनी रिपोर्ट तैयार कर ली। अुस रिपोर्टके प्रकाशित होने और अुस पर कमीशनके सदस्योंके हस्ताक्षर होनेसे पहले जनरल स्मट्सकी तरफसे अुसकी अेक प्रति गांधीजीको मिली। गांधीजीने अुसमें कुछ सुधार सुझाये और अुन सुझाये हुअे सुधारोंके अनुसार रिपोर्टमें परिवर्तन भी हुआ। रिपोर्ट जैसा सोच रहे थे अुससे भी ज्यादा संतोषजनक निकली। अुसमें तीन पौंडका कर रद करने हिन्दुस्तानी विधिसे हुअे विवाहोंको कायम मानने भविष्यमें हिन्दुस्तानियोंके मौजूदा हकोंकी रक्षा करने वगैराकी कितनी ही छोटी-मोटी सिफारिशें भी थीं। अब अिन सिफारिशोंको केवल पार्लियामेण्टमें कानूनके रूपमें पास ही करना बाकी था। अैसा करनेमें मदद देनेका आश्वासन भी पार्लियामेण्टके बहुतसे प्रमुख सदस्योंकी तरफसे गांधीजीको मिल चुका था। जिसलिअे गांधीजीको अब अंतिम समझौतेके बारेमें जरा भी शंका नहीं रही थी।

१८

सर बेंजामिन रॉबर्ट्सन

सर बेंजामिन रॉबर्ट्सन अेक प्रख्यात आओ॰ सी॰ अेस॰ थे। मध्यप्रान्तके कमिश्नर कहिये या गवर्नर कहिये परन्तु वहांके मुखिया वे ही थे। वे लॉर्ड कर्जनके कथित फौलादी ढांचेके अेक सुदृढ़ अंग हिन्दुस्तानके सरकारी नौकरोंके मुकुट और ब्रिटिश साम्राज्यवादके अेक कट्टर पुजारी थे। भारत-सरकारने दक्षिण अफ्रीकामें अुन्हें भेजा तो था हिन्दुस्तानियोंके हितोंकी रक्षाके लिअे प्रतिनिधि बनाकर परन्तु सर बेंजामिनसे दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके हितोंकी रक्षामें कुछ मदद हुआी हो तो वह मजबूरीसे ही हुआी। वे

परन्तु वे हिन्दुस्तानियोंकी आबादीका अेक फीसदी भाग भी नहीं थे। सारे हिन्दुस्तानी अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहे। सर बेंजामिनकी यह पहली चाल असफल रही। अुन्होंने यह भी देख लिया कि जनरल स्मट्सका गांधीजी पर सिर्फ बहुत विश्वास ही नहीं है बल्कि गांधीजीको संतुष्ट किये बिना अब सरकारका काम ही नहीं चल सकता। सबको हिन्दुस्तानियोंकी शक्तिका भरोसा हो गया था और अुस शक्तिका सामना करनेकी अुनकी ताकत नहीं थी। अुन्होंने यह भी देखा कि शुरूमें मंत्रियों और गांधीजीके बीचकी बातचीतमें जनरल स्मट्सने सर बेंजामिनको शामिल रखनेकी भी जरूरत नहीं समझी। अुन्हें प्रिटोरियाके अेक होटलमें ही पड़ा रहना पड़ा। अुन्होंने यह भी देख लिया कि हिन्दुस्तानियोंके नेता अुनकी खुशामद करने या अुनका आदर-सत्कार करने या सभाओंमें अुन्हें निमंत्रण देने या अुन्हें सलाम करने नहीं जाते। तब अुन्हें लगा कि हिन्दुस्तानके नेता कुछ दूसरी ही मिट्टीके बने हैं। शिष्टाचारके खातिर जब गांधीजी अुनसे मिलने अुनके निवासस्थान पर गये तब गांधीजीकी विनम्रता देखकर अुन्हें कुछ आश्चर्य हुआ और बातचीतमें ही गांधीजीके मनोभाव और काम करनेकी पद्धतिसे वे मंद पड़ गये।

अितनेमें अेक महत्त्वपूर्ण प्रसंग पैदा हो गया। समझौतेकी शर्तोंमें हिन्दुस्तानी विवाहको जायज साबित करानेवाली जो कलम थी अुसके बारेमें कुछ मुसलमानोंका यह आग्रह था कि मुसलमानोंके मजहबके अनुसार चार स्त्रियां करनेकी अिजाजत है अिसलिये किसी मुसलमान हिन्दुस्तानीके चार स्त्रियां हों तो वे चारों शादियां जायज मानी जानी चाहिये। गांधीजीने यह स्पष्ट कह दिया था कि मैं अैसी मांग हरगिज नहीं कर सकता। अुनकी दलील यह थी कि मौजूदा जमानेमें अेक स्त्रीके साथका विवाह ही कानूनकी दृष्टिसे जायज और नीतिमय माना जाता है और ज्यादा स्त्रियोंके साथ की गयी शादी गंदी समझी जाती है। अिस मान्यताके विरुद्ध जाकर, अनुचित मांग करके मैं विरोधी लोगोंके सामने हिन्दुस्तानियोंकी नैतिक दुर्दशाको स्पष्ट नहीं बताअूंगा। वे अैसी कोअी मांग करनेके लिये तैयार नहीं थे जिससे हिन्दुस्तानी प्रजा नैतिक दृष्टिसे पाश्चात्य लोगोंसे नीची सिद्ध हो। मुस्लिम मजहबके बारेमें गांधीजीकी यह दलील थी कि पैगम्बर मुहम्मद साहबके फरमान — चारसे ज्यादा स्त्रियोंके साथ शादी करे वह मुसलमान ही न समझा जाय — का अर्थ नैतिक दृष्टिसे यही हो सकता है कि सच्चा और नेक मुसलमान दूसरी

आपका आदर करके अुसे मान लें तो मैं अुसका भी विरोध नहीं करूंगा। अितना ही नहीं मैं आपका और सरकारका अेहसान मानूंगा।"

गांधीजीका अैसा साफ जवाब सुनकर और अुनकी निखालसता देखकर सर बेंजामिन समझ गये। और जिस कमीशनका गांधीजीने बहिष्कार किया अुसी कमीशनकी रिपोर्ट गांधीजीके पास पहले भेजी गयी और अुसमें अुन्होंने जो जो सुधार सुझाये अुन्हें मंजूर करनेके बाद ही कमीशनके सदस्योंके हस्ताक्षर रिपोर्ट पर हुये यह जान कर तो सर बेंजामिन आश्चर्यचकित हो गये। और तभी वे साहब गांधीजीके प्रतापको समझ सके। बादमें तो अुन्होंने गांधीजीका जरा भी विरोध नहीं किया और भेदनीति या चालाकीसे कभी काम नहीं लिया। तबसे वे गांधीजीके साथ अधिक घुलने-मिलनेकी कोशिश करने लगे और गांधीजीके साथ अुन्होंने पत्र-व्यवहार भी शुरू कर दिया। अितना ही नहीं दक्षिण अफ्रीका छोड़नेसे पहले फिनिक्सकी संस्था देखनेकी अिच्छा भी अुन्होंने प्रकट की।

अेक दिन गांधीजीने श्री मगनलाल गांधीको और मुझे बुलाकर कहा "आज मि॰ पोलाकका पत्र आया है। वे आज शामकी बजेकी गाड़ीसे सर बेंजामिन रॉबर्टसन और अुनके मंत्री मि॰ स्लेटरके साथ यहां आनेवाले हैं। अुनके साथ मि॰ पोलाक तो रहेंगे ही फिर भी हमारी तरफसे तुम अुन्हें स्टेशन तक लेने जाओ तो ठीक रहेगा।" हम तीन-चार आदमी गये। स्टेशन पर गाड़ी आयी और मेहमान अुतरे। मि॰ पोलाकने हम सबका अुनसे परिचय कराया। सबके साथ हाथ मिला लेनेके बाद हम सीधे चले। अुन्होंने शायद यह मान लिया होगा कि किसी सवारीमें बैठ कर फिनिक्स जाना होगा। परन्तु मि॰ पोलाकने स्टेशनकी हदसे बाहर निकल कर रास्ते पर आते ही यह कहा कि संस्थामें सवारी नहीं रखी जाती। यहांके लोग सब आना-जाना पैदल ही करते हैं। हम सब बातें करते हुये चलने लगे। संस्थाके मकान आ गये। गांधीजी जहां खुद रहते थे अुस मकानके दरवाजेमें खड़े थे। अुन्होंने सर बेंजामिनका स्वागत किया। सब बीचके कमरेमें बैठे। जमीन पर हमेशा बिछायी जानेवाली धुली हुयी स्वच्छ चादर बिछी थी। बीचके बगीचेके फूलोंको फूलदानियोंमें सजाकर मेज पर रखा गया था। वहां बैठकर बातें कीं। कुछ मिनटके बाद गांधीजीने फल वगैराके नाश्तेका सामान मंगाया। सबके सामने संतरे, नारंगी, पपीता, आम वगैरा ताजे फल लाकर रखे गये। गांधीजीने अपने वे

कुछ फल लेनेको सर बेंजामिनसे प्रार्थना करते हुअे कहा — ये फल मेरे और मेरे साथियोंके लगाये पाले और बड़े किये हुअे पेड़ोंके हैं। अिसलिये शुद्ध स्वदेशी हैं। हमारे ही जमीनमें हमारी ही मेहनतसे बड़े हुअे वृक्षोंके फल प्रेमसहित अर्पण करनेसे अधिक अच्छा स्वागत हम आपका क्या कर सकते हैं? अिसके सिवा आपको पसन्द आये तो हम यहां जो गेहूंकी नमून बेद गाममें लेते हैं और यहीं तैयार करते हैं वह भी आपके लिये हाजिर करें। जो कुछ हम आपकी सेवामें अर्पण करें अुसे स्वीकार करके हमें आभारी कीजिये। सर बेंजामिन रॉबर्ट्सनको गांधीजीका शुद्ध शिष्टाचार देखकर बहुत आनन्द हुआ और तीनों ही मेहमान नाश्ता करने लगे। सर बेंजामिन फलोंकी मिठासका बखान करते जाते थे और खाते जाते थे। गांधीजीने हंस कर कहा — यहांकी मीठी जमीनके फल मीठे होते हैं। परन्तु अिन फलोंमें हमारे पसीनेकी मिठास मिल गयी है अिसलिये वे और भी मीठे लगते हैं। सर बेंजामिन गांधीजीके कहनेका भावार्थ समझ गये और आश्रमके सादे तथा स्वावलम्बी जीवनकी प्रशंसा करने लगे। लगभग पौन घंटा हो गया। सर बेंजामिनको संस्थामें घुमाना चाहिये प्रेस वगैरा दिखाना चाहिये अिस हेतुसे गांधीजीने नम्र भावसे क्षमा मांगते हुअे कहा — मुझे माफ कीजिये सर बेंजामिन संस्थाकी सब जगहें प्रेस पुस्तकालय वगैरा आपको मि॰ पोलाक बतायेंगे। मिसिस गांधी बीमार हैं अिसलिये मैं आपके साथ नहीं आ सकूंगा। आशा है कि आप अिसके लिये मुझे क्षमा करेंगे।

सर बेंजामिन साहबने खड़े होकर अचानक ही घबड़ाते कहा "हां हां मुझे याद आया। यह बात तो मैं भूल ही गया था कि मिसिस गांधी बीमार हैं। अब अुनकी तबीयत कैसी है? मेरी अुनसे मुलाकात हो सकती है?

गांधीजीने कहा — जरूर, बड़ी खुशीसे। आअिये वे यहीं पासवाले कमरेमें हैं।

कस्तूरबा बिस्तर पर सोयी हुयी थीं। संस्थामें पलंग काममें नहीं लिया जाता था। दो लकड़ीके पटियोंको अिकट्ठा करके अुन पर कम्बल और अूपर चादर बिछाकर बिछौना बनाया गया था। सर बेंजामिनको वहां ले जाया गया। अुन्होंने कस्तूरबासे अुनकी तबीयतके बारेमें पूछा। गांधीजी और कस्तूरबाके घरकी यह सादगी और मान-सम्मान देखकर अिन साहबके हृदय पर कैसा असर हुआ होगा यह तो वे ही जानें। परन्तु सर बेंजामिनने

कहा — मि गांधी आप मिसिस गांधीकी सेवामें ही रहिये। हम मि पोलाकके साथ सब जगह घूम आयेंगे। आप हमारे साथ चलनेकी जरा भी तकलीफ न कीजिये।

यह कह कर सर बेंजामिन वगैरा वहांसे चले गये। प्रेस पुस्तकालय बगीचा वगैरा देखा। लौटकर गांधीजीके पास गये और अुनसे विदा ली। गांधीजीने मकानके द्वार पर खड़े रहकर अुनका स्वागत किया था और वहीं खड़े रहकर अुन्हें शिष्टतापूर्ण विदा दी। हिन्दुस्तानके मध्यप्रान्तके सर्व-सत्ताधारी राजा सर बेंजामिन रॉबर्ट्सन गांधीजीके फिनिक्स आश्रममें आये और चले गये। जिन पैरों चलकर वे आये थे अुन्हीं पैरों चल कर वापस गये। अुन्होंने कोअी अेक घंटा वहां बिताया। अुसमें अेक चीज वे छोड़ गये वह था अुनका अपना वेश। और अेक वस्तु वे अपने साथ ले गये। वह था वहांकी सब बातें देखकर अुनके दिल पर हुआ यह असर — हिन्दुस्तानमें ब्रिटिश साम्राज्यका कोअी भयंकर शत्रु हो तो वह मि गांधी है।

१९

लड़ाअीका अन्त

प्रारम्भिक समझौतेके कारण सब सत्याग्रही छोड़ दिये गये। दोनों पक्ष शान्तिसे यूनियनकी सिनेटकी जून मासकी बैठकमें रिलीफ बिल पास होनेकी बाट देखने लगे। सन् १९१४के जून मासमें सिनेटकी जो बैठक हुअी अुसमें जनरल स्मट्सने रिलीफ बिल पेश किया। अुस बिलको पेश करते समय वहांके अवसर जनरल स्मट्सने जो नम्रतापूर्ण छोटासा भाषण* दिया अुससे सत्याग्रहकी संपूर्ण विजय प्रकट होती है। अुन्होंने गांधीजीको दिलाये हुअे विश्वासके अनुसार खूब कोशिश की और अुस बिलको पास कराया। अुस बिलमें भी कलमें हैं। अुसमें यह तय किया गया कि जो शादी हिन्दुस्तानमें जायज मानी जाती है वह दक्षिण अफ्रीकामें भी जायज मानी जायगी। अेकसे ज्यादा स्त्रियोंकि साथकी शादी जायज नहीं मानी जायगी और वे स्त्रियां भी पतिकी जायज पत्नियां नहीं मानी जायेंगी।

* जिज्ञासु पाठकोंको यह भाषण अिंडियन ओपीनियन के स्वर्ण-जयंती अंकमें मिल जायगा।

गिरमिटिया मजदूरोंकी मियाद पूरी होनेके बाद अुन्हें स्वतंत्र नागरिकके रूपमें दक्षिण अफ्रीकामें रहना हो तो तीन पौण्डका मुंड-कर अुन्हें नहीं देना पड़ेगा अैसा तय किया गया।

दक्षिण अफ्रीकामें बाकायदा रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंको सरकारकी तरफसे जो प्रमाणपत्र दिये गये हों अुनका मूल्य अिस बिलमें आंका गया है। यानी जिन हिन्दुस्तानियोंके पास अैसे प्रमाणपत्र हों अुन प्रमाणपत्रोंका हक़ यहां तक सिद्ध हो सकता है अिसकी स्पष्ट व्याख्या अिस बिलमें की गयी है। अिन सब बातोंके बारेमें सिनेटमें प्रेमपूर्ण चर्चा हुआी और कानून पास हुआ। जिन-जिन बातोंको कानूनमें शामिल करना जरूरी न जान पड़ा अुनके बारेमें जनरल स्मट्सने सरकारके प्रतिनिधिकी हैसियतसे गांधीजीको लिखे अपने पत्रमें सन्तोषजनक स्पष्टीकरण किया है। अुनमें केप कॉलोनीके अन्दर शिक्षित हिन्दुस्तानियोंके आनेके हककी रक्षाके बारेमें जिन्हें दक्षिण अफ्रीकामें आनेकी खास अिजाजत मिले अुनके बारेमें जो शिक्षित भारतीय सन् १९१४ से पहले आ चुके हों अुनके बारेमें और अेकसे ज्यादा स्त्रियोंसे शादी करनेवालोंको अपनी दूसरी स्त्रियोंको मेहरबानीके तौर पर लाने देनेके बारेमें स्पष्टीकरण हुआ है। अिसके सिवा जनरल स्मट्सके पत्रमें यह भी बता दिया गया है कि मौजूदा कानूनोंके बारेमें यूनियन सरकारकी सदा यह अिच्छा रही है और अब भी यह अिच्छा है कि अिन कानूनोंका अमल न्यायपूर्वक और जिनके हक़ हों अुन हकोंकी रक्षा करके ही किया जायगा।

अूपरके पत्रके जवाबमें १ जूनको गांधीजीने जनरल स्मट्सके नाम जो पत्र लिखा अुसका सार अिस प्रकार है:

आपका आजकी तारीखका पत्र मुझे मिला। आपने धीरज और सभ्यतापूर्वक मेरी बात सुनी अिसके लिअे मैं आपका आभारी हूं। हिन्दुस्तानियोंको राहत पहुंचानेवाला कानून और हमारे बीचका यह पत्र-व्यवहार सत्याग्रहकी लड़ाईका अंत करते हैं। यह लड़ाई सन् १९०६ में शुरू हुई। अिसमें हिन्दुस्तानियोंको भारी दुःख सहन करने पड़े और आर्थिक हानि अुठानी पड़ी तथा सरकारको भी चिन्ताग्रस्त रहना पड़ा है। मैं जानता हूं कि मेरे कुछ भाअियोंकी आशा बहुत ज्यादा थी। अलग अलग प्रान्तोंके व्यापारिक परवानोंके कानून — जैसे ट्रान्सवालका गोल्ड लॉ, ट्रान्सवालका

टाअुनशिप अेक्ट और सन् १८८५ का ट्रान्सवालका कानून नम्बर ३ — अैसे हैं जिनमें कोअी अैसा फेर-बदल नहीं हुआ है जिससे रहनेके मकानोंके बारेमें हिन्दुस्तानियोंको पूरा हक मिले व्यापारकी छूट मिले और जमीनके स्वामित्वका अधिकार मिले। अिससे मुझे असन्तोष हुआ है। कुछ लोगोंको तो अिसी कारणसे असंतोष रहा है कि अेक प्रान्तसे दूसरे प्रान्तमें जानेकी अुन्हें पूरी आजादी नहीं दी गयी है। कुछको अिस बातका असंतोष रहा है कि हिन्दुस्तानियोंको राहत देनेके कानूनमें शादीके प्रश्नके बारेमें जो कुछ हुआ अुससे अधिक होना चाहिये था। अुनसे अुन्होंने यह मांग की थी कि अूपरके सब मामले सत्याग्रहकी लड़ाअीमें शामिल किये जायें। परन्तु मैंने अुनकी मांग मंजूर नहीं की। अिस प्रकार सत्याग्रहकी लड़ाअीके मुद्दोंके रूपमें तो ये बातें शामिल नहीं की गयी फिर भी अिससे अिनकार नहीं किया जा सकता कि किसी दिन सरकारको अिन बातों पर अधिक विचार करके राहत देनी होगी। जब तक यहां रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंको नागरिकताके पूरे हक नहीं दिये जायेंगे तब तक पूरे संतोषकी आशा नहीं रखी जा सकती। मैंने अपने भाअियोंसे कहा है कि आपको धीरज रखना चाहिये और हर अुचित अुपायसे अैसा लोकमत बनाना चाहिये जिससे भावी सरकार अिस पत्र-व्यवहारमें बताअी हुअी शर्तोंसे भी ज्यादा आगे जा सके। मैं आशा रखता हूं कि दक्षिण अफ्रीकाके गोरे जब समझेंगे कि हिन्दुस्तानसे गिरमिटिया मजदूर अब आने बंद हो गये हैं और दक्षिण अफ्रीकामें नये आनेवालोंसे सम्बन्धित कानूनके द्वारा स्वतंत्र हिन्दुस्तानियोंका यहां आना भी रोक दिया गया है और जब वे समझेंगे कि यहांके राजकाजमें किसी भी तरहका हस्तक्षेप करनेकी हिन्दुस्तानियोंकी महत्त्वाकांक्षा है ही नहीं तब अुन्हें अैसा लगेगा कि मेरे बताये हुअे हक हिन्दुस्तानियोंको देने ही चाहिये और अिसीमें न्याय है। अिस बीच अिस प्रश्नका निपटारा करनेमें पिछले कुछ महीनोंमें सरकारने जो अुदार रवैया अख्तियार किया है वही अुदार रवैया आपके पत्रमें बताये अनुसार मौजूदा कानूनोंका अमल करनेमें बना रहेगा तो मुझे विश्वास है कि सारे यूनियनमें हिन्दुस्तानी कुछ शान्तिसे रह सकेंगे और सरकारके लिअे परेशानीका कारण नहीं बनेंगे।

२०

गांधीजीका वसीयतनामा

भी अुन्हें मंजूर करना ही पड़ता है। जनताका सच्चा नैतिक बल और समझ कर लिये हुअे त्यागका बल जनताको सतेज और जाग्रत रखता है। मनुष्य जिस बलसे अिच्छित वस्तु प्राप्त कर सकता है अुस वस्तुको टिकाये रखनेके लिये अुसी बलको सतेज रखना पड़ता है। पशुबलसे प्राप्त की हुअी वस्तुको टिकाये रखनेके लिये पशुबलकी ही तैयारी रखनी पड़ती है। युद्धके बाद तलवारों और तोपोंको जंग लगने देनेसे काम नहीं चलता। अिसी तरह सत्याग्रहसे प्राप्त की हुअी वस्तुको टिकाये रखनेके लिये सत्याग्रहके हथियारको जंग लगने देनेसे काम नहीं चल सकता। जनतामें अैसा सामर्थ्य होना चाहिये कि वह किसी भी समय किसी भी अन्यायके विरुद्ध लड़ सके। अैसी तैयारीसे जनता नष्ट नहीं होती बल्कि समृद्ध बनती है।

परन्तु पैसेको परमेश्वर माननेवाले कुछ बेसमझ भाअी अिसे न समझ सके। समझे हों तो भी जान-बूझकर फसाद करनेके लिये असंतोष फैलाने लगे गांधी तो तीन पौण्डके करके लिये ही लड़े और अुसे अुठवा दिया परन्तु अुसका फायदा सिर्फ हिन्दुओंको ही मिला। कारण गिरमिटिया मजदूरोंमें अधिकांश हिन्दू ही हैं। और दूसरी बातोंमें मुसलमानोंको कोअी खास लाभ नहीं हुआ। कुछ विघ्न-सन्तोषी और द्वेषी मनुष्य अिस तरहका शोर मचाने लगे। परिणाम स्वरूप सन् १९०७में जैसा वातावरण पैदा हो गया था वैसा ही वातावरण जोहानिसबर्गमें पैदा हो गया। कुछ गुण्डे गांधीजी पर हमला करके अुन्हें मार डालनेकी बातें खुले आम करने लगे। जोहानिसबर्गसे यह बात फिनिक्समें पहुंची। गांधीजी अिस मौके पर केपटाअुनमें थे। फिनिक्ससे गांधीजीको अेक पत्र लिखकर किसीने जोहानिसबर्गके खतरेका समाचार दे दिया। जोहानिसबर्गसे भी अैसे पत्र वहां गये। मि॰ कैलनबैक अुस समय जोहानिसबर्गमें थे। वे यही कहते थे कि गांधीजीकी रक्षा करनेकी चिन्ता हमें करनेकी जरूरत नहीं। वे स्वयं अपना बचाव करनेकी ताकत रखते हैं। कुछ लोगोंका गांधीजीसे यह आग्रह था कि केपटाअुनसे अुन्हें सीधा नेटाल जाना चाहिये और जोहानिसबर्गमें नहीं अुतरना चाहिये। परन्तु गांधीजी अैसे डर पोक नहीं थे कि अपने पर हमला होनेके डरसे जोहानिसबर्ग न जाकर सीधे फिनिक्स जानेको तैयार हो जाते। अुन्होंने निश्चय कर लिया कि जोहानिसबर्ग जाना ही चाहिये। वहां जानेसे अुन पर हमला हो और अुसमें अुनकी मौत हो जाय तो भी वह सत्याग्रहके सिलसिलेमें ही होगी और अैसी मौत तो

"जिसमें कैसे सुधार हो? हो सके तो रास्ता बदल दिया जाय। प्रथम तो जितना ही बना जाय। अुसमें हमारे कठोर माप्यके कारण असह्य कष्ट सहने पड़ें तो हम अुनाइँ घनैराकी मजदूरी करें। जिस हालतमें शिविरमें रहते हैं अुसी हालतमें रहें। अपनी जरूरतें कमसे कम रखें। भोजनकी पद्धति जैसी सोची गओ है अुसे यथासंभव कायम रखें। दूधको हमने पवित्र वस्तु मान लिया है। दूध हम लें परन्तु अपवित्र समझकर लें। यह महान परिवर्तन है। जिसमें वर्षों लगते हैं। जिसके परिणाम ठोस हैं। यह दूसरी बात है कि तब जिस बातको मानेंगे या नहीं। परन्तु यह जान कर भी कि दूध करोड़ोंके लिये अलभ्य है वह छोड़ने लायक है। यह विचार कभी मेरे मनसे नहीं निकल सकता कि दूध पशु मांस है और अहिंसा-धर्मका विरोधी है। यह बात मुझे नहीं जंचती कि जिस शरीरसे अब दूध भी बगैरा लेना चाहिये। मावका यथासंभव कम अुपयोग करके गुजर किया जाय। परिवारके जो लड़के आना चाहते हों अुन्हें हम लें और रखें। वे अूपरके विचारोंके साथ न चलें तो यहां नहीं रह सकते। जो जिसकामें जिस तरहके जीवनमें शामिल न होना चाहें अुन्हें आदरके साथ कह दिया जाय कि जिस रहन-सहनके अनुसार हर आदमी पर जो खर्च होता है अुसका ज्यादा खर्च अुन्हें देकर हम अपना ऋण चुका देंगे। जिसके सिवा और कुछ नहीं दे सकते। किसीकी शादी-ब्याहके झगड़ेमें हम न पड़ें। बड़े होने पर जो विवाह करना चाहेंगे वे खुद जिस बारेमें देख लेंगे। लड़कियां होंगी तो अुनके लिये वर ढूंढने ही पड़ेंगे परन्तु जो वर अुनमेंसे पसंद सन्तुष्ट होकर विवाह करेंगे अुन्हें कन्यायें देंगे। अेक पाओ भी खर्च नहीं करेंगे। जैसा वर न मिलेगा तब तक हम जिन्तजार करेंगे और लड़कियोंको धीरज रखना सिखायेंगे। जैसा करनेमें लोगोंकी बातें सुननी पड़ेंगी और तिरस्कार होगा तो सब प्रेमपूर्वक सह लेंगे। अगर हमारा आचरण अटल रहेगा तो कोओ कठिनाओ नहीं आयेगी। संतान पैदा करना हमारा धर्मका अंग नहीं है। गृहस्थीको चलाना हमारा कर्तव्य नहीं है। जो गृहस्थी है अुनसे मोहमें फंसे बिना जिस तरह जीवन जीना चाहिये कि हमारे और दूसरोंके लिये मोक्ष सुलभ हो जाय। यही जीवनका अेकमात्र रहस्य मालूम होता है। जिसीमें अपनी सेवा कुटुम्बकी सेवा कौमकी सेवा और राष्ट्रकी सेवा आ जाती है। यह स्थिति आ जाय तो हमें कहीं रुकना नहीं पड़ता है बल्कि जितना काम बढ़ता है।

जिस आश्रममें जो शामिल होगा वह भी हमारा कुटुम्बी ही बन जायगा। अुसमें रावजीभाओी मगनभाओी प्रागजीभाओी और जो कोओी दूसर लोग आवेंगे अुन्हें हम लेंगे। मेरी अकाल मृत्यु हो जाय तो मेरी सिफारिश है कि तुम लोग अूपर लिखे अनुसार आचरण करना। तुम्हें फिनिक्स अेकाअेक नहीं छोड़ना चाहिये परन्तु अुद्देश्योंको ध्यानमें रखकर जीवन जीना चाहिये। मगनलालसे मुझे पूरी आशा है। जमनादास तालीमसे तैयार हो जाय तो अुसमें यह सत्त्व है। अुसमें आग्रह भी है।

मेरी मृत्यु हो जाने पर जिन विधवाओंका बोझा खास तौर पर मुझे अुठाना चाहिये अुनके लिये रुपया तुम डॉक्टर मेहतासे मांगना। वहांसे न मिले तो तुम लोगोंको जो अूपरके अुद्देश्योंको मानते हो अनेक संकट सह कर, अुधार करके भी जितना रुपया जुटाना चाहिये। हरिलालको अपना निर्वाह स्वयं करना पड़ेगा। बच्चोंको वह तुम्हारे या जो लोग देशमें हों अुनके सुपुर्द कर दे। कूबीके पास रुपया है जिसलिये अुसे कुछ देनेकी जरूरत नहीं। अब रह गयी गोकीबहन नन्दकुंवर भाभी गंगा भाभी और गोकुलदासकी बहू। वे साथ रहें तो अुनकी मेहरबानी होगी अुनकी शोभा बढ़ेगी। साथ न रहें तो हरअेकको अलग अलग निर्वाहका साधन किया जाय। बच्चे अुन्हें दे दिये जाय। परन्तु जहां दूसरे रहते हों वहां वे भी आ जायं तो ज्यादा ठीक होगा। अैसा करने पर अुनके गुजरका खर्च कुल मिलाकर ४ रुपया भी नहीं होगा। काका भी यही हिस्सा समझना चाहिये। काको समझना चाहिये कि अुनके साथ ही रहना ठीक होगा। अुसे भी बच्चे सौंप देना चाहिये। जो लड़के अपनी माका बोझा अुठा सकें अुन्हें अैसा करनेकी स्वतंत्रता है ही। अूपरका जवाब जो बच्चे हमारी मदद मांगें अुनके लिये है। हरिलाल बाबा मार अुठाकर अुसे रख ले तो बहुत अच्छा। नन्दकुंवर भाभीको रखे तो और अच्छा। फिर तो गोकीबहन गोकाकी बहू और गंगा भाभीका ही प्रश्न रह जाता है। काक अपनी मांका बोझा अुठा ले तो ठीक ही है। और रामदास अपनी माका अुठा न। जो निराधार रह जाय अुसके लिये अूपरका रास्ता है। तुम जिस ढंगसे रहते हो अुसमें ज्यादाकी आशा कोओी नहीं रख सकता और न किसीको रखनी चाहिये। मैं जिसी तरहके जीवनको श्रेष्ठ मानता हूं जिसलिये अूपरके विचार मुझे क्रूर नहीं लगते। यह न्याय गरीबीके आधार पर है और यही आधार मुझे सही मालूम होता है।

मेरे मरनेके बाद अिस पत्रका अुपयोग किसीको भी बतानेमें कर सकते हो। अभी तो मगनलाल रावजीभाअी मगनभाअी प्रागजी और जमुनादास अिसे पढ़ें। मैं चाहता हूं कि अिन लोगोंके सिवा और किसीके सामने अिसकी चर्चा न हो। अितने आदमियोंको भी न पढ़ना चाहिये अैसा तुम्हें लगे तो अिसे तुम ठीक समझो अुसीको पढ़ाना।

"मेरे खयालसे यह पत्र अितना सम्पूर्ण है कि तुम्हारे मनमें जो सवाल अुठें अुनका जवाब तुम्हें अिसीमें मिल जायगा। फिर भी कोअी बात यदि अैसी जान पड़े तो मुझसे पूछना। मुझसे चर्चा करनी हो तो प्रश्न लिख कर रखना। मुझसे मतभेद हो तो निस्संकोच बता देना। यह जिम्मेदारी तुम्हें अपनी शक्तिसे अधिक मालूम हो तो यह भी बता देना। तुम्हें जो सूझे वह सारी आलोचना करना।

मोहनदासके आशीर्वाद

पुनश्च मणिलाल यहां नहीं है। नहीं तो अुसे भी पढ़नेकी अिजाजत देता। अभी अिस पत्रकी नकल कर लेना। ठीक लगे तो रजिस्ट्रीसे अुसे पढ़नेके लिये भेज देना और वापस मंगा लेना।"

अूपरका पत्र लिखकर गांधीजी जोहानिसबर्ग चले गये। वहां पहुंचने पर बहुत लोग अुनसे मिले। कुछ सभायें हुअीं। वहां अुनका स्वागत हुआ। दूसरे या तीसरे दिन अुन्हें अेक सभामें निमंत्रण दिया गया। सभा मुसल-मान भाअियोंने की थी। कुछ लोगोंने गांधीजीको वहां न जानेकी सलाह दी। परन्तु अुन्होंने कहा — मालिक नौकरको बुलाये और नौकर न जाये तो वह कितना अुद्धत और हरामी माना जायगा? देशभाअी मेरे मालिक हैं वे मुझे किसी भी समय बुलायें तो मुझे जाना चाहिये। गांधीजी वहां गये। सभामें अुनसे समझौतेकी शर्तें समझानेके लिये कहा गया। समझाते वक्त अुनसे बीच बीचमें प्रश्न पूछना शुरू हुआ। और फिर असभ्यता शुरू करके अुत्पात बढ़ने लगा। अैसा मालूम होने लगा कि अभी दंगा हो जायगा। अितनेमें अेकाअेक अेक मजबूत पठान हाथमें अेक बड़ा खुला छुरा लेकर सामने निकल आया और बोल अुठा — खबरदार, कुछ बदमाश गांधीभाअी पर हमला करनेको तैयार हैं। परन्तु किसीने अुन्हें जरा भी नुकसान पहुंचाया तो वह मेरे अिस छुरेका शिकार होगा। यह कहकर विख्यात पठान मीर आलम हाथमें छुरा लिये हुअे सिंहके समान खड़ा हो गया।

स्थान पानेके लिअे अधीर हो अुठे। अिस सम्मेलन और स्वदेश-गमनके बीचका समय अुन्होंने फिनिक्समें बिताया। अिस बीच अनेक हृदयस्पर्शी घटनायें हो गयीं। रातको प्रार्थनाके बाद अनेक विषयों पर चर्चायें तो होती ही थीं और अब तो कभी-कभी ये बातें भी होने लगीं कि हिन्दुस्तान जाकर क्या किया जाय। हिन्दुस्तानमें भी बंगभंगके बाद राजनीतिक नवयुग आरम्भ हुआ था। हिन्दुस्तानके नेता भी अेक-दूसरेकी बराबरीके माने जाते थे। लाल, बाल और पाल — *की त्रिमूर्तिका नाम घर-घर याद किया जाता था।* बंगालमें सुरेन्द्रनाथ बेनर्जी सिंहकी-सी गर्जना करके बंगालको गुंजा रहे थे। बम्बअीमें नेताओंके बादशाह माने जानेवाले सर फीरोजशाह मेहताका प्रभुत्व था। श्री गोखले बड़ी धारासभाको हिलाते रहते थे। श्री अरविन्द घोष युवकोंके हृदयोंमें नवचेतना अुंडेल रहे थे। अिसके सिवा जब जब कांग्रेस या प्रान्तीय परिषदें होती थीं तब तब अनेक विद्वान और बुद्धिमान नेताओंकी बाढ़ आ जाती थी। कोअी बैरिस्टर, कोअी प्रोफेसर और कोअी रसायनशास्त्री कोअी सर और कोअी नाअिट कोअी माननीय कोअी रायबहादुर कोअी खान बहादुर और कोअी दीवान बहादुर अिस प्रकार विद्वत्तामें भाषामें लेखनमें भाषण देनेमें वकीलें करनेमें और पदवियां प्राप्त करनेमें जनताको आश्चर्यमें डालने-वाले अनेक नेताओंकी कतार कांग्रेस और परिषदोंके मंच पर जमा होती थी। यह सब सोचकर फिनिक्समें रहनेवाले अेक भाअीने गांधीजीसे पूछा

प्रश्न बापूजी हम देशमें कहां रहेंगे?"

अुत्तर जहां अनुकूलता और अुचित स्थान मिल जायगा वहीं।

प्रश्न अनुकूलता और अुचित स्थान तो बहुत होंगे। परन्तु हमें अेकाअेक अैसा स्थान कैसे मिल जायगा?

अुत्तर कोअी स्थान न देगा और अैसा स्थान प्राप्त करनेके लिअे हमारे पास पूंजी नहीं होगी तो अन्तमें क्या गांधीका राजकोटका ओसरा तो है ही। अुसीको हजम कर लेंगे। वहीं जाकर डेरा डाल देंगे।"

अेक और भाअीने सवाल किया "वहां जायेंगे तब हम बिलकुल अनजान होंगे। अैसी हालतमें देशसेवाका क्या काम करेंगे?

अुत्तर जहां रहेंगे वहां अेक खेत ले लेंगे। अुसमें खेती करेंगे। कातने और बुननेका काम करेंगे। आसपासकी गंदगी हटा कर जगह साफ करेंगे और भगवानकी प्रार्थना करके वातावरणको शुद्ध और पवित्र बनायेंगे।"

पड़ेगी तो ये लोगोंका मजमून साफ करनेमें भी की नहीं चुरायेंगे और जरूरत हुआी तो हिन्दुस्तानके लिये जेक मामे या फांसीके तख्ते पर चढ़नेमें भी अिन्हें हिचकिचाहट नहीं होगी।

"अैसे अैसे वीर योद्धाओंको मैं हिन्दुस्तानकी जनताके चरणोंमें अर्पण करूंगा और यह भी देखूंगा कि अुनके मुकाबलेमें कौंसिलों और असेम्बलियोंके हिमा देनेवाले नेता कैसे योद्धा पेश करते हैं। हिन्दुस्तानकी मुक्तिके लिये राजा महाराजा राय बहादुर और खान बहादुर, सर और नाअिट या वकील और बैरिस्टर काम नहीं आयेंगे। हिन्दुस्तानके भुद्धारके लिये कौंसिलों और असेम्बलियोंको हिमा देनेवाले भी काम नहीं आयेंगे। हिन्दुस्तानकी मुक्तिके लिये प्राण निछावर करनेवाले लोग चाहिये त्यागी वीर और वीरांगनायें चाहिये। अपना सारा जीवन देशसेवाकी आगमें तपा देनेवाले साधुचरित निडर, निर्भय विरोधियोंकी बन्दूककी गोलियां खुली छाती पर झेलनेवाले और फांसीके तख्ते पर दौड़ते दौड़ते चढ़नेवाले वीर सत्याग्रही योद्धा चाहिये। मेरे पास जो पूंजी है वह तो मैं देशके चरणों पर धर ही दूंगा। लेकिन मैं यह भी तो देखूंगा कि सारे देशमें अैसी पूंजी कभी और कितनी है?

अिस तरह विनोदमें गांधीजीने बहुत कुछ कह दिया। अेक बात तो वे बार-बार कहा करते थे देशसेवाका मनोरथ दिलमें रखनेवाला कोओी भी युवक और कुछ नहीं तो वह आनेकी कुदाली खरीदकर खेतमें काम करेगा। यह बड़े वकील-बैरिस्टरसे भी ज्यादा देशसेवा करता है, यह नया पाठ तो मैं देशके सामने रखूंगा ही।

अिस प्रकार बातचीत और हंसी-दिल्लगीमें हमारे आखिरी दिन बीते और स्वदेश-गमनकी तैयारी की गयी। फिनिक्समें प्रेस चलता रहे साप्ताहिक पत्र 'अिन्डियन ओपीनियन' नियमित निकला करे, सत्याग्रह-सम्बन्धी दूसरा साहित्य भी प्रकाशित होता रहे जिसके लिये हममें से कुछके वहीं रहनेका प्रबन्ध किया गया। अन्य लोगोंके लिये यह निर्णय हुआ कि वे गांधीजीके साथ हिन्दुस्तान जायें। अुस समय श्री गोखले विलायतमें थे। अुनकी यह अिच्छा थी कि गांधीजी हिन्दुस्तान जानेसे पहले विलायतमें अुनसे मिल लें। श्री गोखले बीमार थे जिसलिये तुरन्त हिन्दुस्तान आ नहीं सकते थे। अतः यह निश्चय हुआ कि गांधीजी विलायत जायें और बाकी लोग

ठंडी आहें भरते हैं — अैसे नाजुक समय पर सत्याग्रहकी जो वृत्ति निर्भय और भयभीत आत्माओंको विश्वास और आश्वासन देती है, अुस सत्याग्रह-वृत्तिकी साधना गांधीजीने अिन आठ वर्षोंमें की।

आज भी संसार अैसी अुथल-पुथलसे थक कर अब शान्ति चाहता है। अैसी शान्ति आज तक भारतवर्ष संसारको देता आया है। भारतभूमिने जगतकी आध्यात्मिक माताके रूपमें आज तक अपना कर्तव्य पूरा किया है। दुनियाकी अलग अलग प्रजाओंकी अपनी कोअी न कोअी विशेषता होती ही है। और कुदरतकी अिस देनके आधार पर अिस जमानेमें प्रत्येक राष्ट्र प्रगतिके मार्गमें आगे बढ़ रहा है। पश्चिमके राष्ट्रोंने अपने पुरुषार्थसे प्रगतिका विलक्षण ढंग बताकर संसारको दिङ्मूढ़ बना दिया है। अितने पर भी प्रगति करनेवाले राष्ट्रोंको, साहसके साथ अपनी नाव भर-समुद्रमें छोड़ कर तूफानमें फंस जानेवाले नाविककी तरह, कहीं भी अपने जीवनका किनारा दिखाअी नहीं देता। भारत-भूमि अिन राष्ट्रोंको आश्वासन देने और अुनकी जीवन-नौकाको तूफानसे बचानेके लिये पैदा हुअी है। दक्षिण अफ्रीकाकी सत्याग्रहकी लड़ाअीके आठ वर्षोंका काल भविष्यकी महान क्रान्तिके प्रयोगका काल माना जा सकता है। अैसा मालूम होता है कि भगवानने गांधीजीको अिस प्रयोग-यज्ञकी वेदीका पुरोहित (अध्वर्यु) बनाया है। दक्षिण अफ्रीकाकी संस्कारहीन भूमिमें २१ वर्षकी कठिन तपश्चर्या करनेके बाद गांधीजीने सारे संसारके शान्तियज्ञके पुरोहितकी दीक्षा ली। जगतको सामाजिक आर्थिक राजनीतिक या धार्मिक अधोगतिके अंधकारसे बाहर निकाल कर अूंचे अुत्क्रान्तिके प्रकाशमें लानेका अेकमात्र रामबाण अुपाय सत्याग्रह ही है, यह पाठ अुन्होंने जगतको सिखाया। हिन्दुस्तानने अज्ञानरूपी अंधकारसे आर्थिक अधोगतिसे और विदेशियोंकी गुलामीसे मुक्त होकर बिलकुल स्वतंत्र होनेके लिये जो शान्तिमय महायुद्ध छेड़ा है, अुसकी विजय निश्चित है। अुस विजयके मीठे और दीर्घजीवी फल भोगकर जगत शान्तिको प्राप्त करेगा। हजारों वर्ष बीत जायेंगे, गंगा यमुनाके पुण्य प्रवाहके घर्षणसे बजनेके समान पर्वतोंकी चट्टानोंकी रेतके कण महासागरमें जम जायेंगे। जलकी जगह स्थल और स्थलकी जगह जल हो जायगा। फिर भी भारतभूमिके अिस सत्याग्रह-युद्धका मुक्तिदाता मंत्र महासागरोंके अुस पार देश-देशान्तरमें और निर्जन वन या जंगलके वातावरणमें गूंजा करेगा। हजारों वर्ष बादकी प्रजायें सत्याग्रहके अिस

सहन किये। अुसमें कुछ लोगोंके बलिदान दिये गये और बहुतोंकी जमीन-जायदादको नुकसान पहुंचा। परन्तु अुन्होंने अैसा कोअी काम नहीं किया जिससे विरोधी पक्षके जानमालकी हानि हो और स्वयं अपने जानमालकी कमसे कम हानिसे अिच्छित वस्तु प्राप्त की। अुसके परिणामस्वरूप दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानी आज तक वहां टिके हुअे हैं। अितना ही नहीं दूसरे अुपनिवेशोंमें भी वे टिके हुअे हैं। यह अुस लड़ाअीका स्थूल परिणाम है। अुसका सूक्ष्म परिणाम अुसकी आध्यात्मिकता है जिसके बल पर जिस समय हिन्दुस्तानकी जनता निर्भय होकर अुसी अहिंसाके रास्ते पैंतीस करोड़ मनुष्योंकी आजादी हासिल करनेके लिअे लड़ रही है। भगवान अुसे वीरतासे लड़नेकी शक्ति दे और विजयी बनाये।

या पछतानेकी बात ही नहीं रहती। यह लड़ाई हमेशा मनुष्यको अधिक बलवान बनाती है। अुसमें थकान नहीं लगती और हर मंजिल पर आदमीकी ताकत बढ़ती है। अगर हममें सच्चाई होगी तो हिन्दुस्तानी कौम अिस बार ज्यादा काम करेगी और अपना नाम ज्यादा रोशन करेगी। जब मैंने यह जवाब दिया तब मुझे सपनेमें भी खयाल नहीं था कि बीस हजार दलित-पीड़ित हिन्दुस्तानी जाग अुठेंगे और अपना नाम तथा अपने देशका नाम अमर कर देंगे। जनरल बोथाने अपने अेक भाषणमें कहा है कि हिन्दुस्तानियोंने जैसी हड़ताल की और कायम रखी वैसी गोरे न तो कर सके और न कायम रख सके। अिस अन्तिम लड़ाईमें स्त्रियां शामिल हुअीं, सोलह बरसके जवान लड़के बड़ी संख्यामें सम्मिलित हुअे और लड़ाईने बहुत बड़ा धार्मिक रूप ग्रहण किया। दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी बात सारी दुनियामें फैल गयी और हिन्दुस्तानमें गरीब और अमीर, जवान और बूढ़े पुरुष और स्त्री राजा और प्रजा हिन्दू, मुसलमान पारसी और अीसाअी बम्बअीवाले मद्रासवाले, कलकत्तेवाले और लाहौरवाले सब जाने सब हमारे अितिहाससे परिचित हुअे और सब हमें मदद देने लगे। बड़ी सरकार भीजी और वाअिसरॉयने जनताका रुख देखकर जनताका पक्ष लिया। ये सब विश्वविदित बातें हैं। ये बातें मैं लड़ाईका महत्त्व बतानेके लिये लिख रहा हूं। यह लेख लिखनेमें मेरा मुख्य हेतु यह है कि जिन बातोंसे मैं अधिक परिचित हूं जिनका हिन्दुस्तानको पता नहीं है और जिनका दक्षिण अफ्रीकामें रहनेवाले हिन्दुस्तानी भाअियोंको भी पूरा भान नहीं है अुन बातोंका मैं वर्णन करता हूं।

टॉल्स्टॉय फार्ममें जो तालीम दी गयी वह सब अिस अन्तिम लड़ाईमें काम आयी। सत्याग्रहियोंने जो जीवन वहां बिताया वह अिस लड़ाईमें अमूल्य साबित हुआ। अुसी जीवनकी झलक अधिक अच्छे रूपमें फिनिक्समें दी गयी। जब टॉल्स्टॉय फार्म बन्द किया गया तब अुसमें रहनेवाले जो विद्यार्थी आनेको तैयार थे वे फिनिक्समें आ गये। फिनिक्समें नियम कठोर बने। प्रत्येक विद्यार्थी और अुसके मां-बापके साथ यह शर्त थी कि जो विद्यार्थी फिनिक्समें रहेंगे वे यदि बालिग हों तो अुन्हें दुबारा लड़ाई छिड़ने पर अुसमें शरीक होना पड़ेगा। सच पूछा जाय तो फिनिक्समें मुख्य शिक्षा ही सत्याग्रहकी हो गयी। फिनिक्समें रहनेवाले कुटुम्बों पर भी यह नियम लागू हो गया। अुससे सिर्फ अेक ही परिवार अलग रहा। जिनका

जाना होनेका डर रखते हुअे भी निडरतापूर्वक काम करते रहना दूसरी बड़ी विशेषता थी। पुलिस वहां गअी और मि० वेस्टको पकड़ ले गअी और औरोंके पकड़े जानेकी भी संभावना थी। जिन सब बातोंकी तैयारी रखी परन्तु अेक भी आदमी फिनिक्समें विचलित नहीं हुआ। मैं अूपर कह चुका हूं कि जिसमें सिर्फ अेक ही कुटुम्ब अपवाद रहा। जिस अवसर पर फिनिक्सके कार्य-कर्ताओंने कौमकी जो सेवा की अुसका अन्दाज हिन्दुस्तानी कौम लगा नहीं सकती। यह पुण्य जितिहास अभी तक लिखा नहीं गया है जिसलिअे अुसका कुछ भाग मैं यहां दे देता हूं यह जिस आशासे कि किसी दिन कोअी जिज्ञासु ज्यादा हकीकतें जानकर फिनिक्सके कार्यकर्ताओंके कार्यका मूल्य कुछ हद तक आंक सकेगा। मुझे अधिक लिखनेका लोभ होता है परन्तु फिनिक्सको यहीं छोड़ देता हूं।

फिनिक्सका दल जेल भेजा गया तो जोहानिसबर्गसे नहीं रहा गया। वहां भी औरतें अधीर हो गयीं। अुनमें जेल जानेका बहुत ही अुत्साह था। मि० थंबी नायडूका सारा परिवार तैयार हो गया। अुनकी पत्नी साली, साथ मि० मुरगसकी सम्बन्धी बहनें श्रीमति पी० के० नायडू अपना नाम अमर कर जानेवाली बहन वालिअम्मा और दूसरी स्त्रियां तैयार हुआीं। वे गोदमें बच्चोंको लेकर निकल पड़ीं। मि० कैलनबैक अुन्हें लेकर फ्रीनीखन गये। वहां जानेमें यह आशा थी कि वे फ्री स्टेटकी सरहद पर जाकर लौटते समय पकड़ी जायेंगी लेकिन अुनकी अुम्मीद बर न आयी। अुन्होंने कुछ दिन दुःख-सुखमें फ्रीनीखनमें बिताये। वहां टोकरियोंमें सामान लेकर फेरी लगाते हुअे पकड़े जानेकी कोशिश की लेकिन किसीने अुन्हें पकड़ा नहीं।

परन्तु जिस निराशामें अमर आशा छिपी हुअी थी। अगर अुन स्त्रियोंको सरकारने फ्रीनीखनमें ही पकड़ लिया होता तो शायद हड़ताल न होती। यह तो निश्चित है कि जिस पैमाने पर हड़ताल पड़ी अुस पैमाने पर तो वह हरगिज न पड़ती। लेकिन कौमके सिर पर ईश्वरका हाथ था। यह सदा सत्यका बेली है। अुन स्त्रियोंको न पकड़ा गया जिसलिअे यह तय हुआ कि वे नेटालकी हदको पार करें। अगर वहां भी अुन्हें न पकड़ा जाय तो वे मि० थंबी नायडूके साथ न्यूकैसलको अपना केन्द्र बनायें। वे नेटालके लिअे रवाना हुअीं। सरहद पर भी पुलिसने अुन्हें नहीं पकड़ा। अब न्यूकैसलको अुन्होंने अपना घर बनाया। वहां मि० डी० लेजरसने अपना घर अुनको सौंप दिया और अुनकी

जब तक मजदूर अपनी अपनी खानोंमें रहते थे। न्यूकैसलकी कार्यकारिणीने सोचा कि जब तक गिरमिटिये अपने मालिकोंकी जमीन पर रहेंगे तब तक हड़तालका पूरा असर नहीं पड़ेगा। यह डर था कि वे लालच या डरसे जाकर काम शुरू कर देंगे। और मालिकका काम न करते हुअे भी अुसके मकानमें रहना या अुसका नमक खाना अनीति होगी। अिस तरह गिरमिटियोंका खानों पर रहना दोषपूर्ण था। अन्तिम दोष सत्याग्रहके शुद्ध प्रयोगको मलिन बनानेवाला मालूम हुआ। दूसरी तरफ, हजारों हिन्दुस्तानियोंको कहां रखा जाय और अुन्हें कैसे खाना खिलाया जाय यह अेक बड़ा प्रश्न था। मि. लेजरसका मकान अब बहुत छोटा मालूम होने लगा। अैसा लगा कि बेचारी दो स्त्रियां रात-दिन मेहनत करके भी काम नहीं निपटा सकती थीं। फिर भी हर तरहकी जोखिम अुठाकर भी सही चीज ही करनेका निश्चय हुआ। गिरमिटियोंको अपनी खानें छोड़कर न्यूकैसल आ जानेके समाचार भेज दिये गये। यह खबर मिलते ही खानोंमें से कूच शुरू हो गयी। अेकेकी जानकर हिन्दुस्तानी पहले आ पहुंचे। न्यूकैसलमें अैसा दृश्य खड़ा हो गया जैसे सदा यात्रियोंका संघ ही आता रहता हो। जवान बूढ़े और औरतें। कोअी स्त्री अकेली और कोअी गोदमें बच्चोंवाली परन्तु सब अपने सिरों पर गठरी लिये होती थी। क्योंकि सिर पर पेटियां होती थीं। कोअी दिनको आ पहुंचते तो कोअी रातको। अुनके लिअे भोजनका प्रबन्ध करना पड़ता था। अिन गरीब आदमियोंके संतोषका मैं क्या वर्णन करूं? जो मिल गया अुसीमें वे खुश मान लेते थे। शायद ही कोअी रोता देखा जाता था। सबके चहरों पर हंसी खिली रहती थी। मेरी दृष्टिमें तो वे तैंतीस करोड़ देवताओंमें से थे। स्त्रियां देवीरूप थीं। अुन सबको आश्रय कहां दिया जाय? सोनेके लिअे जमीन पर घास और अूपर आकाशका छत्र था। अीश्वर अुनका रक्षक था। किसीने बीड़ी मांगी। मैंने समझाया कि वे गिरमिटियाके रूपमें नहीं निकले हैं वे हिन्दुस्तानके सेवकोंके रूपमें निकले हैं। वे धार्मिक लड़ाअीमें शामिल हुअे हैं। अैसे समय अुन्हें शराब तम्बाकू वगैरा व्यसन छोड़ने चाहिये। जो न छोड़ें अुन्हें सार्वजनिक रुपयेसे अपनी जरूरतें पूरी करनेकी आशा नहीं रखनी चाहिये। अुन साधु पुरुषोंने मेरी यह सलाह मान ली और अुसके बाद किसीने बीड़ीके लिअे पैसे खर्च करनेकी मुझसे मांग नहीं की। अिस प्रकार रातमें भी मजदूरोंकी कतार पर कतार आनी शुरू हुअी। जिनमें अेक

मातरम्‌ आदि नारे लगाता हुआ चलता था। दो दिन चल सकने लायक दाल-चावल हरअेकके पल्लेमें बांध दिये गये। सब अपनी अपनी गठरियां बांधकर चल पड़े। अुन्हें नीचे लिखी शर्तें सुना दी गयी थीं

(१) मैं पकड़ा जाअूं अैसी संभावना है। अगर अैसा हो जाय तो भी इसको कूच जारी रखनी चाहिये और जब तक वे खुद न पकड़े जायें तब तक चलते रहना चाहिये। रास्तेमें खाने-पीनेका बन्दोबस्त करनेकी पूरी कोशिश की जायगी। फिर भी किसी दिन खानेको न मिले तो भी संतोष रखना चाहिये।

(२) लड़ाअीमें शामिल रहने तक शराब वगैराका व्यसन छोड़ देना चाहिये।

(३) मरते दम तक पीछे न हटना चाहिये।

(४) रास्तेमें रात पड़ जाय तो मकानकी आशा न रखकर बाहर पड़े रहना चाहिये।

(५) रास्तेमें आनेवाले पेड़-पत्तोंको जरा भी नुकसान न पहुंचाना चाहिये और पराअी चीजको बिलकुल न छूना चाहिये।

(६) सरकारी पुलिस पकड़ने आये तो गिरफ्तार हो जाना चाहिये।

(७) पुलिसका या किसीका भी सामना नहीं करना चाहिये। मार पड़े तो अुसे सहन करना चाहिये और बदलेमें मार करके अपना बचाव नहीं करना चाहिये।

(८) जेलमें जो दुख आयें अुन्हें सहन करना चाहिये। और जेलको महल समझकर अुसमें दिन बिताना चाहिये।

जिस संघमें सभी धर्मोंके लोग थे। हिन्दू थे मुसलमान थे ब्राह्मण थे क्षत्रिय थे वैश्य थे और शूद्र भी थे। कलकतिया थे और तामिल थे। कुछ पठानों और अुत्तरकी तरफके सिन्धियोंको मार खाकर भी अपना बचाव न करनेकी शर्त कड़ी लगी थी। परन्तु अुन्होंने यह शर्त खुशीसे मान ही नहीं ली बल्कि परीक्षाका समय आने पर अपना बचाव भी नहीं किया।

यात्रा इसकी ठीक अैसी स्थितिमें शुरू हुअी। पहली ही रातको जंगलमें घास पर सोनेका अनुभव हुआ। रास्तेमें लगभग डेढ़ सौ आदमियोंके लिये वारंट मिले। वे खुशीसे गिरफ्तार हो गये। पकड़नेको अेक ही पुलिस अफसर आया था। अुनके साथ और कोअी मदद न थी। पकड़े हुअे लोगोंको लिय

खानेको चावल, दाल और शाक दिया जाता था। दक्षिण अफ्रीकामें लगभग सभी लोग तीन समय खानेवाले होते हैं। गिरमिटिये हमेशा तीन बार खाते हैं। परन्तु लड़ाअीमें अुन्होंने दो बारसे सन्तोष किया। वे खूब स्वाद लेनेवाले भी होते हैं। परन्तु यह स्वाद भी अुन्होंने यहां छोड़ दिया।

अिस झुण्डके झुण्ड जमा हुअे लोगोंका क्या किया जाय यह विचार करने लायक प्रश्न बन गया। चार्ल्सटाअुनमें सुविधा-असुविधा सहकर भी अितने ज्यादा मनुष्योंको लम्बे अर्से तक रखा जाय तो रोगके फूट निकलनेकी संभावना थी। हमेशा काम करनेवाले हजारों मनुष्य बेकार बैठे रहें, यह भी ठीक नहीं था। यहां यह कह देना जरूरी है कि अितने गरीब आदमियोंके जमा होने पर भी चार्ल्सटाअुनमें अुनमें से किसीने चोरी नहीं की। पुलिसकी जरूरत किसी समय नहीं पड़ी। और न पुलिसको किसी समय ज्यादा काम करना पड़ा। तो भी अुत्तम मार्ग यही मालूम हुआ कि अब चार्ल्सटाअुनमें बैठे न रहें। अिसलिअे ट्रान्सवालमें घुसनेका और अगर अंत तक न पकड़े जायं तो टॉल्स्टॉय फार्म पहुंचनेका निश्चय किया गया। कूच करनेसे पहले हमने सरकारको खबर दी कि हम गिरफ्तार होनेके खातिर ट्रान्सवालमें घुसेंगे। हमें वहां रहना नहीं है, वहांके हकोंकी अिच्छा भी नहीं है। परन्तु जब तक सरकार हमें नहीं पकड़ेगी तब तक हम अपनी कूच जारी रखेंगे। अंतमें हम टॉल्स्टॉय फार्म पर डेरा डालेंगे। अगर सरकार तीन पौण्डका कर अुठा देनेका वचन दे तो हम वापस जानेको तैयार रहेंगे। सरकारके मनकी अैसी स्थिति नहीं थी कि वह अिस नोटिस पर ध्यान देती। अुसके जासूस अुसे बहका रहे थे। वे यह समझा रहे थे कि लोग थक जायेंगे। सरकारने सब भाषाओंमें नोटिस छपवाकर हड़तालियोंमें बांटे थे।

अंतमें चार्ल्सटाअुनसे भी आगे बढ़नेका समय आ पहुंचा। ६ नवम्बरको तड़के ही तीन हजार लोगोंका संघ रवाना हुआ। सारी कतार अेक मीलसे ज्यादा लम्बी थी। मि. कैलनबैक और मैं पिछले हिस्सेमें थे। संघ सरहद पर पहुंचा तब पुलिस दल वहां मौजूद था। हम दोनों वहां जा पहुंचे और पुलिसके साथ हमारी बातचीत हुई। अुसने हमें पकड़नेसे अिनकार कर दिया। अिसलिअे संघ अनुशासनसे शांत और शान्तिपूर्वक वोल्क्सरस्टके बीचसे निकला। शहरके बाहर स्टैण्डर्टन रोड पर जाकर सबने पड़ाव डाला। सबने भोजन किया। यह प्रबन्ध किया गया था कि रिवपी कम्पनी

शामिल न हों फिर भी अुनके जोशकी बाढ़को रोकना मुश्किल हो गया और कुछ स्त्रियां भी शामिल हो गयीं। परन्तु कुछ स्त्रियां और बच्चे अभी तक चार्ल्सटाअुनमें ही थे। अुनकी देखभाल करनेके लिये मि. कैलनबैकको फोक्सरस्टकी हद लांघनेके बाद वापस भेज दिया।

दूसरे दिन पामफर्डसे आगे पुलिसने मुझे पकड़ लिया। मुझ पर प्रवेशका अधिकार न रखनेवाले आदमियोंको ट्रान्सवालमें लानेका अिलजाम था। औरोंको पकड़नेका अुसे हुक्म नहीं था। अिसलिये फोक्सरस्ट पहुंचनेके बाद सरकारको मैंने नीचे लिखा तार दिया: "सत्याग्रहकी लड़ाअीके मुख्य प्रचारकको सरकारने पकड़ लिया, जिससे मुझे खुशी हुअी। परन्तु साथ ही मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि जिसके लिये जो मौका चुना गया वह दयाकी दृष्टिसे देखते हुअे अत्यन्त विषम है। सरकार शायद जानती होगी कि जिस कूचमें १२२ स्त्रियां और ५० बच्चे हैं और सब जितनी ही खुराक पर गुजर कर रहे हैं कि ठिकाने पहुंचने तक जिन्दा रह सकें। ठंड और धूपसे अुनकी रक्षाके कोअी साधन नहीं हैं। अैसी हालतमें मुझे अुनसे अलग करना न्यायकी हत्या करना है। जब कल रातको मुझे पकड़ा गया तब अपने साथके आदमियोंको बताये बिना ही मैं अुन्हें छोड़ आया हूं। वे शायद जोशसे पागल हो जायें। अिसलिये मैं चाहता हूं कि या तो मुझे अुनके साथ कूच करनेकी अिजाजत दी जाय या सरकार अुन्हें रेलगाड़ीसे टॉल्स्टॉय फार्म पहुंचा दे और खाना भी दे। जिन पर अुन लोगोंका विश्वास है अुन्हें अुनसे अलग कर देना और साथ ही अुनके लिये भोजन वगैराका कोअी बन्दोबस्त न करना अनुचित माना जायगा। मैं आशा रखता हूं कि फिरसे विचार करनेके बाद सरकार अपना निश्चय बदल लेगी। अगर कूचके दरमियान कोअी अनिष्ट घटना हो गयी और खास तौर पर दूधपीते बच्चोंवाली महिलाओंमें से किसीकी मृत्यु हो गयी तो अिसकी जिम्मेदारी सरकारकी होगी।"

मुझे भी ले जाया गया। मुझे वोल्क्स्रस्टके न्यायाधीशके सामने खड़ा किया गया। मुझ पर गवाही तो कुछ देनी ही नहीं थी। परन्तु जो लोग पामफर्डमें आगे गये थे और जो अुस समय चार्ल्सटाअुनमें पड़े थे अुनकी कुछ बातें सुनानी थी। अिसलिये मैंने जिमानत मांगी। सरकारी वकीलने अिस पर अेतराज किया। न्यायाधीशने बताया कि जमानत सिर्फ हत्याके अभियोगमें ही नामंजूर की जा सकती है। अिसलिये अुसने ५० पौण्डकी जमानत मांगी और अेक

हफ्तेकी मियाद थी। जमानत अुसी समय फोक्सरस्टके अेक व्यापारीने दे दी। मैं रिहा होकर सीमा पार करनेवालोंसे जा मिला। अुनका अुत्साह दुगुना हो गया। अिस बीच प्रिटोरियासे तार आ गया कि मेरे साथके हिन्दुस्तानियोंको पकड़नेका सरकारका अिरादा नहीं है, नेताओंको ही गिरफ्तार किया जायगा। अिसका अर्थ यह नहीं था कि और सबको छोड़ दिया जायगा। परन्तु सरकार सबको पकड़ कर हमारे कामको सरल बनाना या हिन्दुस्तानमें सनसनी पैदा करना नहीं चाहती थी।

पीछेसे दूसरी अेक बड़ी टोलीको लेकर मि. कैलनबैक आ रहे थे। हमारी दो हजारसे अधिककी टोली स्टैण्डर्टन जा पहुंची। यहां मुझे फिर पकड़ लिया गया और मुकदमेकी २१ तारीख रखी गयी। हम आगे बढ़े। परन्तु अब सरकारसे यह सब हजम नहीं हो सकता था। अिसलिअे अुसने पहले मुझे अिन सबसे बिलकुल अलग कर देनेकी कार्रवाअी की। अिस समय मि. पोलाकको डेप्युटेशन लेकर हिन्दुस्तान भेजनेकी तैयारी हो रही थी। अुसके लिअे रवाना होनेसे पहले वे मुझसे मिलने आये। परन्तु हरि करे सो होय वाली बात हो गयी। मुझे रविवारको वेलिंग्स्टाअुनमें फिर तीसरी बार पकड़ लिया गया। अिस बारका वारंट डंडीसे निकला हुआ था और अभियोग गिरमिटियोंसे काम छुड़वानेका था। यहांसे मुझे बहुत ही जल्दीसे डंडी ले जाया गया। अूपर मैं बता चुका हूं कि मि. पोलाक हमारे साथ कूचमें थे। अुन्होंने यह काम संभाल लिया। डंडीमें मंगलवारको मुकदमा चला। मेरे विरुद्ध लगाये गये तीनों अभियोग मुझे पढ़कर सुनाये गये। मैंने अुन्हें स्वीकार किया और अिजाजत लेकर बताया कि मेरे अपने प्रति और सभी लोगोंके प्रति न्यायके खातिर मुझे कहना चाहिये कि मुझ पर जो अभियोग लगाये गये हैं अुनकी सारी जिम्मेदारी अेक वकीलके नाते और नेटालके पुराने निवासीके नाते मैं अपने पर लेता हूं। मैं मानता हूं कि अिन लोगोंको कोलोनीके बाहर ले जानेसे लोगोंके मन पर जो असर पड़ा है अुसका हल अुत्तम था। मालिकोंके खिलाफ हमारी कोअी शिकायत नहीं है। अिस लड़ाअीसे अुन्हें भारी हानि हो रही है अिसका मुझे अफसोस है। मैं हिन्दुस्तानी मजदूरोंको रखनेवाले मालिकोंसे भी विनती करता हूं कि तीन पौण्ड कर मेरे देशभाअियों पर भार स्वरूप है और अिसलिअे वह रद होना चाहिये। मुझे लगता है कि माननीय श्री गोखले और जनरल स्मट्सके बीच जो स्थिति पैदा

जानता है। प्रभुकी अिच्छाके बिना पत्ता भी नहीं हिलता, परन्तु अपरिपक्व मनका भ्रम दूर नहीं होता — वह अपनेको ही कर्ता मानता है।

मोहनदास करमचन्द गांधी

[अिस लेखका शेष भाग मि. गांधीकी तरफसे लिखा जानेवाला था परन्तु यूरोपीय युद्धके कारण अुन्हें जरूरी अवकाश नहीं मिला। — सं. अिं. ओ.]

२
सत्याग्रह-युद्धके अितिहासकी नोंध

१९०६

४ अगस्त — ट्रान्सवाल लेजिस्लेटिव कौंसिलमें अेशियाटिक अमेण्डमेण्ट अेक्ट पेश करनेका मि. डंकनने प्रस्ताव रखा।

११ सितम्बर — जोहानिसबर्गके अेम्पायर थियेटरमें हिन्दुस्तानियोंकी खास सभा हुअी। यह हत्यारा कानून (खूनी कानून) पास हो जानेकी सूरतमें अुपस्थितोंमें से हरअेकने अुसे न मानकर जेल जानेकी शपथ ली। विलायत डेप्युटेशन भेजनेका प्रस्ताव पास हुआ।

१२ सितम्बर — ट्रान्सवालकी धारासभामें हत्यारा कानून पास हुआ।

१ अक्तूबर — हिन्दुस्तानियोंका डेप्युटेशन जोहानिसबर्गसे रवाना हुआ।

८ नवम्बर — डेप्युटेशन औपनिवेशिक मंत्री लॉर्ड अेल्गिनसे मिला।

२९ नवम्बर — लंदनमें साअुथ अफ्रीका ब्रिटिश अिण्डियन कमेटी कायम हुअी। सर लेपेल ग्रिफिन अुसके पहले अध्यक्ष और मि. रीच मंत्री नियुक्त हुअे।

१ दिसम्बर — डेप्युटेशन विलायतसे रवाना हुआ।

३ दिसम्बर — हत्यारे कानूनको सम्राटने नामंजूर कर दिया।

१९०७

२२ मार्च — बड़ी सरकारके नामंजूर किये हुअे हत्यारे कानूनको ट्रान्सवालकी नयी पार्लियामेण्टने २४ घंटेमें पास कर दिया।

२ मअी — अिस कानूनको सम्राटकी मंजूरी मिल गअी।

१ जुलाअी — हत्यारे कानूनका अमल शुरू हुआ और अुसके अनुसार प्रिटोरियामें पहले-पहल नाम दर्ज करनेको रजिस्ट्रेशन आफ़िस खोला गया। बादमें यह आफ़िस चार महीने तक गांव-गांव घूमा लेकिन लगभग सभी जगहों पर अुसका बहिष्कार हुआ। ८ की आबादीमें से लगभग ४ से भी कम लोगोंके नाम दर्ज हुअे। अिस मियादके बाद पकड़-धकड़ शुरू हो गअी।

१८ सितम्बर — माननीय श्री गोखलेका अेसोसियेशनको यह तार मिला आपकी लड़ाअीका मैं अच्छी तरह अवलोकन करता रहता हूं। चिन्तातुर होकर अुस पर ध्यान दे रहा हूं। अत्यंत सहानुभूति रखता हूं। लड़ाअीकी तारीफ़ करता हूं। अीश्वरकी अिच्छा पर पूरा आधार रखना।

२५ अक्तूबर — हत्यारे कानूनके विरुद्ध ट्रान्सवालके ७ या ८ हज़ार हिन्दुस्तानियोंमें से ४५२२ हस्ताक्षरोंवाला अेक लम्बा प्रार्थनापत्र अेसोसियेशनकी तरफ़से सरकारको भेजा गया।

१ नवम्बर — बादमें रजिस्ट्रेशनकी अर्जियां लेना बन्द हो गया।

११ नवम्बर — सत्याग्रहियोंकी धरपकड़ पहले-पहल शुरू हुअी।

२७ दिसम्बर — मि गांधीको अदालतमें हाजिर होनेका नोटिस मिला।

२८ दिसम्बर — जोहानिसबर्गमें मजिस्ट्रेट मि जोर्डनने मि गांधीको ४८ घंटेमें ट्रान्सवाल छोड़नेका हुक्म दिया।

१९ ८

१ जनवरी — जोहानिसबर्गमें मि जोर्डनने मि गांधीको दो मासकी सादी कैदकी सजा दी।

३ जनवरी — सत्याग्रही कैदियोंको छोड़ा गया। ट्रान्सवाल सरकारने हिन्दुस्तानियोंकी स्वेच्छापूर्वक नाम दर्ज करानेकी मांग मंजूर कर ली और हत्यारा कानून रद करनेका वचन दिया।

१ फरवरी — मि गांधी मि थंबी नायडू और कुछ अन्य लोग रजिस्ट्रेशन आफ़िस जा रहे थे अुस समय मि गांधी पर हमला हुआ।

२४ जून — सरकारने हत्यारा कानून रद करनेसे अिनकार कर दिया अिसलिअे सत्याग्रहकी लड़ाअी फिर शुरू हुअी। मि सोराबजी पहले-पहल

नेटालसे ट्रान्सवालमें घुसे। और २ जुलाईको अुन्हें वॉल्क्सरस्टके मजिस्ट्रेटने अेक महीनेकी जेलकी सजा दी।

१२ जुलाई — स्वेच्छापूर्वक नाम दर्ज करानेके बाद मिले हुअे लगभग दो हजार परवाने जोहानिसबर्गकी विराट सभामें जलाये गये।

२२ जुलाई — लॉर्ड सेल्बोर्नके नाम बड़ी सरकारका अैसा तार आया कि रोडेशियामें बने हुअे नये अेशियाअी कानूनको सम्राटकी मंजूरी नहीं दी जा सकती।

२२ अगस्त — स्वेच्छापूर्वक दर्ज कराये गये नामोंको कायम मानने और दूसरे *हिन्दुस्तानियोंके नाम दर्ज करानेके बारेमें ट्रान्सवाल पार्लियामेण्टके* दोनों सदनोंमें कानून पास हो गया।

१ अगस्त — प्रिटोरियाकी सार्वजनिक सभामें और २ स्वेच्छापूर्वक लिये गये प्रमाणपत्र जलाये गये।

७ सितम्बर — मि० गांधी वॉल्क्सरस्टमें गिरफ्तार हुअे और अेक सप्ताह बाद अुन पर मुकदमा चला। अुसमें अुन्हें दो महीनेकी सख्त कैदकी सजा मिली।

९ नवम्बर — आजसे ५ दिनमें २२७ हिन्दुस्तानी जेल गये। अुनमें से ज्यादा तो हिन्दू और मुसलमान व्यापारी थे। जिस संख्यामें १४ जोहानिसबर्गके ७९ जर्मिस्टनके और १ प्रिटोरियाके हिन्दुस्तानी थे।

१४ नवम्बर — जिस सप्ताहमें २२७ हिन्दुस्तानी जेलमें गये। जिस संख्यामें १४ जोहानिसबर्गसे ९७ जर्मिस्टनसे १ प्रिटोरियासे और १ दूसरे स्थानोंसे गये थे।

१७ नवम्बर — ५१ तामिल लोग फेरी लगाते हुअे पकड़े गये और अुन्हें ७ दिनकी जेल मिली।

२२ नवम्बर — कलकत्तेमें मि० [illegible] की अध्यक्षतामें [illegible] वासियोंके प्रति सहानुभूति दिखानेकी अेक बड़ी सभा हुअी।

११ दिसम्बर — मि० गांधी दो मासकी दूसरी बारकी कैद पूरी करके छूटे।

४ मअी — सत्याग्रही हिन्दुस्तानियोंको जेलमें घी देना शुरू हुआ।

२४ मअी — मि गांधी तीसरी बार तीन मासकी कैदकी सजा पाकर जेल गये।

७ जून — जर्मिस्टनमें गोरोंकी लिटरेरी अेण्ड डिबेटिंग सोसायिटीमें मि गांधीने सत्याग्रहकी नीति विषय पर मार्मिक भाषण दिया।

१६ जून — जोहानिसबर्गकी आम सभामें अे अेम काछलिया हाजी हबीब वी अे चेटियार और अेम के गांधीको विलायत तथा सर्वश्री अेम जे कामा अेन जी नायडू, भी अेस कुवाड़िया तथा अेच अेस पोलकको हिन्दुस्तान भेजनेका प्रस्ताव पास हुआ। अिस डेप्युटेशनके रवाना होनेसे पहले ही सर्वश्री काछलिया कुवाड़िया कामा और चेटियारको पकड़ लिया गया।

४ जुलाओी — जोहानिसबर्गकी जेलसे छूटनेके बाद जेलमें भोगे हुअे कष्टोंके कारण नागापनकी मृत्यु हो गयी।

१६ जुलाओी — युमस्लटी जहाजमें १४ हिन्दुस्तानियोंको हिन्दुस्तानमें निर्वासित किया गया।

१ सितम्बर — बम्बअीके शेरीफने दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहके बारेमें चर्चा करनेके लिअे जो सार्वजनिक सभा बुलाओी अुस पर बम्बओी सरकारने रोक लगा दी। आखिर यह सभा ११ दिन बाद हुओी।

१६ सितम्बर — ट्रान्सवालके डेप्युटेशनने विलायतमें लॉर्ड क्रूसे मुलाकात की।

१३ नवम्बर — विलायत गया हुआ हिन्दुस्तानी डेप्युटेशन किल्डोनन कैसल जहाजमें रवाना हुआ।

१ दिसम्बर — हिन्दुस्तानमें श्री रतन टाटाने २५ हजार रुपयेका जो दान दिया था अुसकी घोषणा हुओी।

१९१०

२५ फरवरी — हिन्दुस्तानकी बड़ी धारासभामें मि गोखलेका गिरमिटकी प्रथा बन्द कर देनेका प्रस्ताव पास हुआ।

१ जून — दक्षिण अफ्रीकाका यूनियन बना। अुसी दिन मि सोराबजी शापुरजी अडाजणिया सातवीं बार गिरफ्तार हुअे।

१ मयी — जोहानिसबर्गकी सार्वजनिक सभामें सत्याग्रह शुरू करनेका प्रस्ताव पास हुआ। किसी हदतेमें स्त्रियोंकी तरफसे भी अैसा प्रस्ताव गृहमंत्रीको भेजा गया।

२४ मयी — १ अप्रैलसे मि. गांधी और मि. फिशर (गृहमंत्री) के बीच हुआ पत्र-व्यवहार प्रकाशित हुआ।

७ जून — अपरोक्त पत्र-व्यवहारका अधिक भाग प्रकाशित हुआ।

२१ जून — नये अिमिग्रेशन-कानूनको सम्राटकी मंजूरी मिल गयी।

१५ जुलायी — यूनियन गजटमें नये कानूनकी धारायें प्रकाशित हुयी।

१ अगस्त — नये कानूनके अनुसार तीनों कॉलोनियोंमें अपील-बोर्ड स्थापित हुये। जिन बोर्डोमें अेक अेक अिमिग्रेशन अफसर भी सदस्य थे।

११ सितम्बर — सत्याग्रहकी शुरूआत। सरकार और मि. गांधीके बीचका तमाम जरूरी मुद्दोंवाला पत्र-व्यवहार प्रकाशित हुआ।

२२ सितम्बरसे १५ अक्तूबर — नेटाल और ट्रान्सवाल दोनोंसे बड़ी संख्यामें सत्याग्रही पुरुष और स्त्रियां फेरी लगाकर या सरहद पार करके पकड़े गये और जेल गये।

१६ अक्तूबर — न्यूकैसलकी तीन पौण्डके करके विरुद्ध हड़ताल शुरू हुयी और सब जगह फैल गयी।

६ नवम्बर — मि. गांधी हड़तालियोंके साथ ट्रान्सवालमें घुसे।

११ नवम्बर — डंडीमें मि. गांधीको ९ महीनेकी सजा हुयी।

२८ नवम्बर — हिन्दुस्तानके वाअिसरॉयका भाषण हुआ

११ दिसम्बर — कमीशन नियुक्त हुआ।

१९ दिसम्बर — सर्वश्री गांधीजी, कैलनबैक तथा पोलाक छोड़ दिये गये।

१९१४

१६ फरवरी — समझौतेके अनुसार यूनियनकी जेलोंमें सारे सत्याग्रही कैदी छोड़ दिये गये।

१८ मार्च — कमीशनकी रिपोर्ट प्रकाशित हुयी।

१ जून — रिलीफ बिल प्रकाशित हुआ।

३ जून — अन्तिम समझौता हुआ।

सत्याग्रहका अर्थ समझते समय हम देखते हैं कि पहली शर्त तो यह है कि यह लड़ाअी लड़नेवालोंको सत्यका आग्रह — सत्यका बल — रखना चाहिये। यानी अुस आदमीको केवल सत्य पर ही आधार रखना चाहिये अेक पैर दहीमें और अेक पैर दूधमें अैसा नहीं चल सकता। अैसा मनुष्य बीचमें कुचल दिया जायगा। सत्याग्रह कोअी मायरकी बांसुरी नहीं है कि जब तक मर्जी बजाते रहे नहीं तो भाग गये। अैसा माननेवाले कहींके नहीं रहते। शरीर-बलकी कमीवाले लोग या शरीर-बल काम न देनेके कारण लाचारीसे सत्याग्रही बनना पड़ता है अैसा माननेवाले लोग ही सत्याग्रहकी लड़ाअी लड़ते हैं अैसा कहना बिलकुल निरर्थक है। यह कहा जा सकता है कि अैसा माननेवालोंको अिस लड़ाअीका कोअी ज्ञान नहीं है। सत्याग्रह शरीर-बलसे अधिक तेजस्वी है और शरीर बल अुसके सामने अेक तिनकेके समान है। शरीर-बलमें मुख्य बात यह है कि मनुष्य अपने शरीरकी परवाह न करके लड़ाअीमें घुसता है यानी वह डरपोक नहीं होता। सत्याग्रही तो अपने शरीरको कुछ गिनता ही नहीं। अुसमें डर घुस ही नहीं सकता। अिसीलिये वह बाहरके हथियार धारण नहीं करता और मौतका डर रखे बिना अंत तक लड़ता है। अतः सत्याग्रहीमें शरीर-बलवालेसे ज्यादा हिम्मत होनी चाहिये। अिस प्रकार सत्याग्रहीके लिये पहले तो सत्यका सेवन और सत्य पर आस्था होना जरूरी है।

अुसमें पैसेके प्रति अुदासीनता होनी चाहिये। दौलत और सत्यमें सदा अनबन रही है और अंत तक रहेगी। जो दौलतको पकड़े रहता है वह सत्यका पालन नहीं कर सकता यह हमने ट्रान्सवालमें बहुतसे हिन्दुस्तानियोंके अुदाहरणसे देख लिया। अिसका अर्थ यह नहीं कि सत्याग्रहीके पास धन हो ही नहीं सकता। अुसके पास धन हो सकता है परन्तु पैसा अुसका परमेश्वर नहीं बन सकता। सत्यका पालन करते हुअे पैसा रहे तो ठीक है नहीं तो अुसे हाथका मैल समझ कर छोड़ देनेमें पलभरके लिये भी हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिये। जिसने मनको अैसा नहीं बना लिया है अुससे सत्याग्रह हो ही नहीं सकता। और जिस देशके राजाके खिलाफ सत्याग्रही बनना पड़ता है अुस देशमें सत्याग्रहीके पास धन होना मुश्किल बात है। राजाका जोर मनुष्य पर नहीं चलता परन्तु अुसकी दौलत पर या अुसके घर पर चलता है। या तो जायदाद लूट लेनेके डरसे या अुसके शरीरको नुकसान पहुंचानेके डरसे राजा प्रजासे जो भी कराना चाहे करा लेता है। अिसलिअे अन्यायी

धर्मका नाम लेकर धर्मसे अुल्टे काम करना धर्म नहीं है। परन्तु जो लोग धर्म दीन या अीमानका हृदयसे पालन करते हैं अुन्हींसे सत्याग्रह हो सकता है। यानी जो मनुष्य खुदा या अीश्वर पर ही सब कुछ छोड़ देता है अुसके लिअे संसारमें हारनेकी बात रह ही नहीं जाती। लोग अुसे हारा हुआ कहें जिससे वह हारा हुआ नहीं माना जा सकता। लोगों द्वारा जीता हुआ कहनेमें अुसकी जीत भी नहीं है। जिसे तो जो समझता है वही समझता है।

यह सत्याग्रहका सच्चा स्वरूप है। अुसे दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंने कुछ हद तक जाना है। जानकर अुसका थोड़ा-बहुत पालन भी किया है। अुनमेंसे भी हम सत्याग्रहका अमूल्य रस चख सके हैं। जिसने सत्याग्रहके खातिर सब कुछ छोड़ा है अुसने सब कुछ प्राप्त किया है। क्योंकि वह संतोष मानता है। संतोष ही सच्चा सुख है। दूसरा सुख किसने देखा है? दूसरा सुख तो मृगतृष्णाकी तरह है। जैसे-जैसे हम अुसके पास जाते हैं वैसे-वैसे वह दूर ही दूर दिखाअी देता है।

हम चाहते हैं कि अिस तरह विचार करके प्रत्येक हिन्दुस्तानी सत्याग्रही बने। यह हथियार हाथ लग जायगा तो अन्यायमात्रसे होनेवाले सारे दुःखोंको दूर करनेके काममें अुसका अुपयोग हो सकेगा। यह हथियार यहीं नहीं हिन्दुस्तानमें भी अुपयोगी होगा। और वहां अधिक अुपयोगी होगा। सिर्फ अुसका सच्चा स्वरूप समझ लेना चाहिये। अुसे समझना आसान भी है और कठिन भी है। करोड़ोंमें धनवान भी कुछ ही लोग होते हैं और सत्यका बल रखनेवाले तो अुनसे भी कम होते हैं।

मो० क० गांधी

गये हैं। अैसा होनेके कारण अुन्होंने जेलमें चोरियां की हैं मानो सत्यको छोड़ा है या दूसरी बार जेल जानेका नाम नहीं लिया है। अिसलिये सभी व्यसनोंसे दूर रहना चाहिये। जेलमें अेक ही व्यसनकी छूट हो सकती है और वह है अीश्वरके नामकी रटन।

सत्याग्रह नामर्दोंसे नहीं हो सकता। अिसी प्रकार कमजोर शरीरवाले लोग कड़ी मेहनतके काम नहीं कर सकते। शारीरिक शक्ति न होने पर भी मनोबलसे भिन्न-भिन्न लोगोंने संकट झेले हैं। अैसे अुदाहरण असाधारण ही माने जा सकते हैं। साधारण नियम तो यही है कि शरीर नीरोग और दृढ़ होना चाहिये। अैसा न होनेसे कभी लोग घबरा गये हैं। सत्याग्रही समझता है कि अुसका शरीर अुसे किराये पर मिला है। अुसे साफ और तेजस्वी रखकर अच्छा किरायेदार साबित होना अुसका फर्ज है।

जिसे नरमीसे पलंग और गरम गद्दे वगैरा सोनेके लिये चाहिये वह आदमी अेकाअेक जमीन पर नहीं सो सकता यह समझमें आ सकता है। अिस लिअे अैसी आरामतलबी भी छोड़नी चाहिये।

भोजनका सवाल लगभग बड़से बड़ा सवाल बन गया दीखता है। परन्तु अिसमें आश्चर्यकी बात नहीं है। जिसने बोलनेमें और स्वादमें जीभको जीत लिया है अुसने बहुत कुछ जीत लिया है। अैसे बहुत ही कम लोग होते हैं, जिन्हें स्वादिष्ट भोजन नहीं चाहिये। गरीब रूखी तक खानेके लिये मरे जाते हैं। यह छोटा-मोटा सवाल नहीं है। फिर भी जो परमार्थ करनेके लिये जेल जाना चाहते हैं अुन्हें स्वादेन्द्रियको जीतना ही पड़ेगा। जो मिल जाय अुसके लिये अीश्वरका आभार मानना चाहिये। हर हिन्दुस्तानीको यह विचार करना है कि हिन्दुस्तानमें बीस करोड़ हिन्दुस्तानियोंको अेक ही बार खानेको मिलता है। और वह भी रोटीके अेक टुकड़े और नमकके सिवा दूसरा कुछ नहीं होता। तब जेलमें तीन तीन बार भरपेटवाला खाना मिले तो अुसमें नखरे करना कोअी बड़ी बात नहीं होनी चाहिये। भूखमें सब कुछ अच्छा लगता है। हो सकता है कि थोड़े दिन ठीक मालूम न हो परन्तु बादमें जल्दी आदत पड़ने लगती है। जो हिन्दुस्तानी सत्याग्रही बनना चाहता है, अुसे सादे भोजनकी आदत डालनी चाहिये।

झूठा अभिमान रखनेवाला जेलमें नहीं जा सकता। वहां हाथोंपैर अधीन रहना पड़ता है। जो हुक्म माने जाते हैं वे पालन करने पड़ते हैं। अैसे काम

करनेमें हिम्मत चली जायगी अुन्हें हमने कभी किया ही नहीं अैसा सोचकर जेलमें भी अुन्हें न किया जाय तो नतीजा बुरा होता है। पराधीनता या अपराधीनता मनके कारण होती है। जिसका मन आजाद — स्वतंत्र — है वह जेलकी कालकोठरी भोगते हुअे भी राजाके समान है। कालकोठरी भोगनेमें वह परा-धीनताके बजाय जेलमें अपनी प्रतिष्ठा समझता है।

अन्तमें रही धीरजकी बात। जेलमें पहुंचते ही सब लोग दिन गिनने लग जाते हैं। अैसा करनेसे दिन लम्बे मालूम होते हैं। बाहर बरसों बीत जाते हैं और हम अुन्हें नष्ट कर देते हैं फिर भी वे भारी नहीं लगते। पर जेलके तीन दिन भी तीन साल जैसे लगते हैं। यह क्यों? जवाब यह है कि जेल जाना पसन्द नहीं आया। सच बात यह है कि जेल जानेमें सुख मानना चाहिये। जैसे मां बच्चेके लिअे दुःख अुठाकर सुख मानती है वैसे ही हमें देशके खातिर — सत्यके खातिर — दुःख अुठा कर सुख मानना चाहिये। जैसे दिन जेलमें बीतेंगे वैसे बाहर नहीं बीत सकते थे हमेशा अैसा विचार करके और धीरज रखकर जितनी जेल मिली हो अुसे भुगत लें और वहां समयका अच्छा अुपयोग करें — यानी अीश्वरके भजनमें अच्छे विचारोंमें और अपनी कमियां ढूंढनेमें दिन बितायें। अिस प्रकार अेक पंथ दो काज हो जायंगे।

अिसलिअे ये चार गुण तो जेल जानेवालोंमें होने ही चाहिये। बादमें दूसरे गुण भी अपने-आप सूझ जायेंगे।

मो० क० गांधी

सूची